# जुमा के ख़ुतबे

(अरबी-हिन्दी)

मौलाना मुहम्मद अब्दुल हई (रह०)

# जुमा के ख़ुत्बे

## (अरबी हिन्दी के साथ)

लेखक :
मौलाना मुहम्मद अब्दुल हई
(रहमतुल्लाह अलैही)

मकतबा अल हसनात (देहली)

# अपनी बात

जुमा के ख़ुत्बे को अगर इस्लामी जीवन का भोजन कहा जाए तो ग़लत न होगा। इस के ज़रिए हर हफ़्ते ईमान में ताज़गी और इस्लाम में ताक़त पैदा करने का एक ऐसा अनोखा इन्तिज़ाम किया गया है, जिस की मिसाल शायद ही किसी जगह मिल सके। लेकिन इस्लामी निज़ाम के कमज़ोर होने के साथ उम्मत को जहां और बहुत-सी नेमतों से हाथ धोना पड़ा, वहां जुमा के ख़ुत्बों की बरकतों से भी महरूमी हो गयी। अब हमारे पूरे निज़ाम की तरह हमारे ख़ुत्बे भी बे-जान हैं और उन की हैसियत बस एक रस्म की-सी हो कर रह गयी है।

ऐसी सूरत पैदा होने की जहाँ कुछ और वजहें हैं, वहीं ख़ुत्बा सुनने वालों का अरबी भाषा का न जानना भी है। इसी एहसास के तहत कहीं-कहीं लोग उर्दू में ख़ुत्बा देने की कोशिश करते हैं और इसी ज़रूरत को सामने रखते हुए हम ने ये ख़ुत्बे तैयार किए हैं।

शुरू में 'ख़ुत्बे की ज़ुबान' के नाम से एक मज़्मून बढ़ा दिया गया है। इस से इस मस्अले पर रोशनी पड़ती है कि ख़ुत्बा किस भाषा में होना चाहिए और उर्दू या हिन्दी में ख़ुत्बा देने की कहां तक गुंजाइश है। जैसा कि इस मज़्मून में कहा गया है कि दूसरा ख़ुत्बा (ख़ुत्बा-ए-सानिया) अरबी ही में होना चाहिए, इस लिए इस ज़रूरत को देखते हुए आसानी के लिए अरबी के ख़ुत्बे जो दूसरे ख़ुत्बे के तौर पर पढ़े जा सकते हैं, आख़िर में शामिल कर दिए गए हैं। ख़ुदा करे जुमा के ये ख़ुत्बे, जो अब उर्दू के बाद हिंदी में छापे जा रहे हैं, हिन्दी वालों के लिए उतने ही मुफ़ीद हों जितने उर्दू वालों के लिए मुफ़ीद साबित हुए हैं।

—मुहम्मद अब्दुल हई

# विषय-सूची

क्या ? कहां ?

| क्या ? | | कहां ? |
|---|---|---|

———

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

# ख़ुत्बे की ज़ुबान

जुमा की नमाज़ से पहले ख़ुत्बा ज़रूरी है। आम तौर पर यह ख़ुत्बा अरबी में पढ़ा जाता है। बहुत-से लोगों का ख़्याल है कि यह ख़ुत्बा हर हाल में अरबी में होना चाहिए। अरबी के अलावा किसी दूसरी ज़ुबान में ख़ुत्बा देना जायज़ नहीं है, लेकिन कुछ लोग इस तरह सोचते हैं कि जुमे का ख़ुत्बा, असल में इस्लामी हुक्मों की तब्लीग़, लोगों में ईमानी जज़्बे की ताज़गी और वाज़ व नसीहत और याददेहानी के लिए है और ये सभी मक़्सद उसी वक़्त हासिल हो सकते हैं, जब सुनने वाले ख़ुत्बे को समझें, इस लिए उन की राय में ख़ुत्बा उसी ज़ुबान में होना चाहिए, जिसे लोग समझते हों।

जो लोग अरबी ज़ुबान के अलावा किसी दूसरी ज़ुबान में ख़ुत्बा देने की मुख़ालफ़त करते है, उन की एक दलील यह है कि ख़ुत्बा जुमे की नमाज़ का एक हिस्सा है और इस तरह इस बात का डर है कि अगर आज ख़ुत्बा किसी दूसरी ज़ुबान में दिया जाएगा, तो कल नमाज़ के बारे में भी मांग होगी कि यह भी मादरी ज़ुबान में अदा की जाए, ताकि लोग समझ सकें कि वे नमाज़ में क्या पढ़ रहे हैं। यह दलील यक़ीनन वज़न रखती है। अगर यह बात तै हो जाए कि वाक़ई ख़ुत्बा जुमा की नमाज़ का एक हिस्सा है, तो फिर ख़ुत्बा अरबी के अलावा किसी दूसरी ज़ुबान में देने का मतलब यह होगा कि नमाज़ भी अरबी के अलावा दूसरी ज़ुबानों में पढ़ी जा सकती है, हालांकि इस बात पर सब एक राय हैं कि नमाज़ अरबी ज़ुबान में ही पढ़ना चाहिए।

असल बात यह है कि ख़ुत्बा नमाज़ का हिस्सा नहीं है, बल्कि जुमा की नमाज़ के लिए एक ज़रूरी शर्त है। बेशक ख़ुत्बा भी नमाज़ की तरह एक इबादत है, लेकिन दोनों के मक़्सद अलग-अलग हैं। नमाज़ का मक़्सद एक हद तक बिला इस बात के भी हासिल हो सकता है कि आदमी नमाज़ में जो कुछ पढ़ता है, उसे समझे भी, लेकिन ख़ुत्बे का मक़्सद उसी वक़्त पूरा होता है, जब लोग उसे समझें। इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

हम सब जानते हैं कि इस्लाम का असल मक़्सद सिर्फ़ इतना ही नहीं है कि इंसान बस अपनी हद तक एक नेक और भला इंसान बन जाए, अपने अख़्लाक़ और मामले ठीक-ठाक कर के पाकीज़ा और परहेज़गार बन जाए, बल्कि इस्लाम लोगों को अलग-अलग नेक और अच्छा इंसान बनाने के साथ-साथ उन्हें आपस में मिला कर एक ऐसी ऊंचे दर्जे की बेहतरीन जमाअत भी बनाना चाहता है, जो ज़मीन पर अल्लाह तआला की ख़िलाफ़त के फ़र्ज़ को सही तौर पर अंजाम दे सके। इसी ग़रज़ के लिए इस्लाम ने वे तमाम इबादतें फ़र्ज़ की हैं, जो एक तरफ़ लोगों में तक़्वा और पाकीज़गी की रूह पैदा करती हैं, तो दूसरी तरफ़ उन को एक भली जमाअत बनने में मदद देती हैं। इन इबादतों में सब से अहम इबादत नमाज़ है। नमाज़ नफ़्स को पाक करती है। इंसान में तक़्वा और पाकी की रूह फूंकती है और एक बेहतरीन इंसान तैयार करने के लिए नमाज़ से बेहतर कोई दूसरी शक्ल मुम्किन नहीं। नमाज़ ही के ज़रिए क़ुरआनी हिदायतें बार-बार लोगों के सामने आती हैं। इसी से क़ुरआन की हिफ़ाज़त का काम लिया गया है और यही मुसलमानों को एक जमाअत बनाती है। अब अगर कहीं नमाज़ अरबी के अलावा किसी दूसरी ज़ुबान में पढ़ी जाने लगे, तो सिर्फ़ इतना ही न होगा कि लोग उन लफ़्ज़ों से महरूम हो जाएंगे, जो सीधे-सीधे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तालीम फ़रमाए हैं और इस लिहाज़ से उनकी एक ख़ास अहमियत है, बल्कि क़ुरआन भी मुख़्तलिफ़ ज़ुबानों में पढ़ा जाएगा और इस तरह क़ुरआन की हिफ़ाज़त का मक़्सद बिल्कुल ख़त्म हो जाएगा, आम तौर पर लोग क़ुरआन के मुख़्तलिफ़ तर्जुमों को क़ुरआन समझने लगेंगे और उसी को तिलावत और इबादत के लिए अख़्तियार कर लेंगे। इस तरह असल क़ुरआन से उन का ताल्लुक़ ख़त्म होने लगेगा। न उसे याद करने का शौक़ रहेगा, न उसे पढ़ने-पढ़ाने की ज़रूरत बाक़ी रहेगी। इस सूरतेहाल का लाज़िमी नतीजा यही होगा कि लोग नाक़िस और एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ तर्जुमों को असल क़ुरआन का मक़ाम दे देंगे और अलग-अलग क़ानून और अलग-अलग ज़ुबान बोलने वालों के नज़दीक क़ुरआन का मतलब और मफ़्हूम बहुत कुछ अलग हो जाएगा। ख़ुदा न करे, मुसलमानों के दीन का भी वही अंजाम हो, जो ईसाइयों और यहूदियों के दीन का हुआ। फिर इतना ही नहीं, आगे बढ़कर इसका अंजाम ज़रूर ही ऐसा निकलेगा कि हर ज़ुबान बोलने वालों की ज़ुबान अलग-अलग होगी। ईरानी अरब के पीछे नमाज़ न पढ़ेगा, सिंधी बंगाली से भागेगा,

पंजाबी और हिन्दुस्तानी अलग-अलग नमाज़ पढ़ेंगे, चीनी और जर्मनी एक दूसरे को ग़ैर समझेंगे, ग़रज़ यह कि नमाज़ के टुकड़े होते ही पूरी उम्मत टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी। इस लिए जहां तक नमाज़ का ताल्लुक़ है, उस के लिए एक ऐसी ही ज़ुबान की ज़रूरत है, जो तमाम दुनिया के लिए एक हो, और इस मक़सद के लिए अरबी से बेहतर कोई दूसरी ज़ुबान मुम्किन नहीं, क्योंकि इसी में असल नमाज़ की तालीम दी गयी है और इस में क़ुरआन मौजूद है। रह गया यह सवाल कि लोगों को बे-समझे नमाज़ पढ़ने से पूरा फ़ायदा हासिल नहीं होता, तो यह कोई बड़ा मुश्किल सवाल नहीं है। अव्वल तो नमाज़ का ज़्यादा हिस्सा ऐसा है, जो बार-बार वही पढ़ा जाता है, इसका मफ़्हूम अगर कोई याद करना चाहे, तो बग़ैर अरबी ज़ुबान सीखे हुए भी एक-दो दिन में उसे आसानी से याद कर सकता है। आम तौर पर नमाज़ में जो सूरतें पढ़ी जाती हैं, वे भी कुछ ऐसी ज़्यादा नहीं, महीना-बीस रोज़ की मेहनत से मामूली आदमी उन का मतलब भी ज़ेहननशीन कर सकता है। रह गयीं क़ुरआन की लम्बी-लम्बी सूरतें, तो अगर ज़्यादा-तर लोग उन्हें न भी समझें तो यह कोई ऐसा बड़ा नुक़्सान नहीं है कि जिस की ख़ातिर इन तमाम नुक़्सानों को बर्दाश्त कर लिया जाए जो अरबी के अलावा किसी दूसरी ज़ुबान में नमाज़ पढ़ने से होंगे।

इन तमाम बातों को सामने रखने के बाद यह फ़ैसला करना तो इन्तिहाई ग़लत होगा कि नमाज़ भी अरबी के अलावा किसी दूसरी ज़ुबान में पढ़ी जा सकती है, अल-बत्ता ख़ुत्बे का मामला दूसरा है।

ख़ुत्बे और नमाज़ के मक़्सदों में बड़ा फ़र्क़ है। नमाज़ का मक़्सद इस के बग़ैर भी पूरा हो सकता है कि आदमी नमाज़ में जो कुछ पढ़ता है, उसे समझे, लेकिन ख़ुत्बे का मक़्सद उस वक़्त तक पूरा नहीं होता, जब तक वह समझ में न आए। नमाज़ के लिए जब इंसान उठता है, तो वह यह समझता है कि अल्लाह तआला ने मुझ पर नमाज़ फ़र्ज़ की है और मैं उस फ़र्ज़ की अदाएगी के लिए उठ रहा हूं। फिर जब वह नमाज़ को उस की तमाम शर्तों और तमाम अर्कान के साथ अदा करता है, तो गोया वह इस बात का एलान करता है कि मुझे इस बात का एहसास है कि मेरी तमाम बातें अल्लाह के इल्म में हैं और वह मुझे देख रहा है। फिर वह यह जानता है कि मेरा हाथ बांध कर खड़ा होना, झुकना और पेशानी ज़मीन पर रख देना, सब कुछ अल्लाह के लिए है। मैं उस की इबादत कर रहा हूं। उस के अलावा कोई मेरा माबूद नहीं है। इन तमाम बातों से वह मक़्सद हासिल हो

जाता है, जिस के लिए नमाज़ फ़र्ज़ की गयी है और उस के लिए नमाज़ में जो कुछ पढ़ा जाता है, उसका समझना ज़रूरी नहीं। रह गया अफ़ज़लियत का सवाल तो जैसा कहा जा चुका है, नमाज़ का मफ़्हूम समझ लेना भी कोई बड़ा काम नहीं, थोड़ी-सी तवज्जोह से यह मक़सद हासिल हो सकता है।

इस के खिलाफ़ खुत्बे का मामला बिल्कुल दूसरा है। खुत्बा सिर्फ़ एक इबादत और अल्लाह का ज़िक्र ही नहीं है। अगर खुत्बे का मक़सद सिर्फ़ अल्लाह का ज़िक्र होता, तो उस के लिए तो नमाज़ ही काफ़ी थी, बल्कि नमाज़ तो ज़िक्र की सब से बेहतर सूरत है।

सब जानते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने और आप के सहाबा रज़ि० ने जुमा की नमाज़ कभी बग़ैर खुत्बा दिए नहीं पढ़ी, इसी लिए सब मुसलमान खुत्बे को जुमा के लिए एक ज़रूरी शर्त जानते हैं और हम यह भी जानते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने और आपके सहाबा रज़ि०ने जो खुत्बे दिए और जिनमें से बहुत-से खुत्बे आज तक महफ़ूज़ हैं, उनमें सिर्फ़ अल्लाह की हम्द व सना ही न होती थी, बल्कि हम्द व सना के साथ लोगों में ईमान और खुदा का डर पैदा करने की कोशिश, शरीअत के हुक्म, अच्छे अख़्लाक़ और अच्छे अमल पर उभारना, बुरी बातों से बचने की ताकीद, क़ौमी और निजी मामलों पर ध्यान वग़ैरह, बहुत-सी बातें होती थीं। ये तमाम मक़सद ऐसे हैं जो अरबी ज़ुबान के खुत्बे से हासिल नहीं हो सकते।

अब से पहले जब मुसलमानों को हुकूमत मिली हुई थी और उनकी वजह से अरबी ज़ुबान की तालीम और उस के पढ़ने-पढ़ाने का आम चर्चा था, तो उस वक़्त अरब के अलावा दूसरे मुसलमान मुल्कों में भी बहुत से लोग अरबी समझते थे और उन के सामने अरबी में खुत्बा देने से खुत्बे के मक़सद बड़ी हद तक हासिल हो जाते थे, लेकिन अब हालात बिल्कुल दूसरे हैं। इन हालात में अरबी ज़ुबान में दिए हुए खुत्बे से हम्द व सना और अल्लाह के ज़िक्र के मक़सद के अलावा खुत्बे के दूसरे मक़सद हासिल नहीं होते। खुत्बा अगर सही तरीक़े पर दिया जाए और इस से वह फ़ायदा हासिल करने की कोशिश की जाए जिस के लिए शरीअत ने उसे ज़रूरी किया है तो यह मिल्लते इस्लामी की ताक़त का एक बेहतरीन ज़रिया साबित हो सकता है। इस के ज़रिए से लोगों में ईमान की ताक़त पैदा की जा सकती है, उन के अन्दर खुदा का डर और आख़िरत के ख़ौफ़ के जज़्बे

को पैदा किया जा सकता है, उन की तमाम ख़राबियों को सुधारा जा सकता है, चाहे उनका ताल्लुक़ किसी एक आदमी से हो या पूरे समाज से। उन के अख़्लाक़ और मामलों को सुधारा जा सकता है, उन के अन्दर फैली हुई ग़लत रस्मों को दूर किया जा सकता है, उन्हें अपनी और अपने घर-ख़ानदान की दीनी तर्बियत और इस्लाह की तरफ़ तवज्जोह दिलायी जा सकती है। ग़रज़ यह कि मिल्लते इस्लामी में हर हफ़्ते एक ताज़ा रूह फूंकी जा सकती है और ये सारे फ़ायदे इसी शक्ल में हासिल हो सकते हैं, जब ख़ुत्बा सुनने वाले ख़ुत्बे की ज़ुबान समझते हों। इस के बग़ैर ये फ़ायदे किसी तरह हासिल नहीं किए जा सकते।

एक तरफ़ तो हमारे सामने ख़ुत्बे के ये मक़्सद आते हैं, दूसरी तरफ़ कोई ऐसा खुला हुआ हुक्म नहीं मिलता, जिस के तहत उम्मत को पाबंद कर दिया गया हो कि ख़ुत्बा अरबी ज़ुबान ही में दिया जाए, इस लिए उन लोगों की राय को ग़लत नहीं कहा जा सकता, जो यह कहते हैं कि अगर ख़ुत्बा किसी ऐसी ज़ुबान में दिया जा सकता है, जिसे नमाज़ी समझते हों, तो ऐसा करना न मक्रूह है और न ना-जायज़, बल्कि ख़ुत्बे के मक़्सदों के एतबार से ऐसा करना बेहतर है।

जो लोग अरबी के अलावा किसी दूसरी ज़ुबान में ख़ुत्बा देने के मुख़ालिफ़ हैं, वे इसका एक ऐसा नुक़्सान भी बताते हैं, जो ध्यान दिए जाने के क़ाबिल है और वह यह कि जुमा, जो तमाम उम्मत को इकट्ठा करने वाला और जोड़ने वाला है, वह मुख़्तलिफ़ ज़ुबानों की बुनियाद पर अलग-अलग हो जाएगा और हर ज़ुबान बोलने वाले अपना-अपना जुमा अलग-अलग पढ़ने की कोशिश करेंगे। यह बात इस्लाम के इज्तिमाई मिज़ाज के ख़िलाफ़ यक़ीनी तौर पर है और इस के लिए यही मुनासिब है कि अरबी ज़ुबान में ही ख़ुत्बा दिया जाए, लेकिन यह नुक़्सान कोई ऐसा नुक़्सान नहीं है, जिस का इलाज मुम्किन न हो। इस कठिनाई का एक हल तो यह है कि ऐसी जगहों पर जहां अलग-अलग ज़ुबानें बोलने वाले बहुत से लोग जमा हों, जैसे कि हज का मौक़ा, वहां ख़ुत्बा अरबी ही में दिया जाए और तमाम मुसलमान एक ही जमाअत हो कर जुमा पढ़ें, लेकिन अगर कहीं किसी एक ग़ैर-अरबी ज़ुबान के समझने वाले ज़्यादा हों, हां, कुछ लोग ऐसे भी हों जो इन ज़्यादा लोगों की ज़ुबान न समझते हों, तो वहां पहले ख़ुत्बे को दो हिस्सों में तक़्सीम कर दिया जाए। एक हिस्सा तो ज़रूरी तौर पर अरबी ज़ुबान में हो, जिस में अल्लाह तआला की हम्द व सना, रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के आल-अस्हाब पर दरूद व सलाम और क़ुरआन की आयतें हों और दूसरा हिस्सा किसी ऐसी ज़ुबान में हो, जिसे ज़्यादा लोग समझते हों। इस में शरीअत के हुक्म, अख़्लाक़ी नसीहतें, मामलों को ठीक नरने के लिए हिदायतें, ईमान को पक्की करने वाली और अमल पर उभारने वाली बातें और दूसरे मस्अलों पर बात-चीत हो। रह गया दूसरा ख़ुत्बा, तो वह कुल का कुल अरबी ज़ुबान में हो। इस तरह ख़ुत्बे से जो फ़ायदे हासिल होना चाहिएं, वे भी हासिल हो सकते हैं और जो लोग ज़्यादा तायदाद वालों की ज़ुबान नहीं समझते या जो अरबी के ख़ुत्बे को ज़रूरी समझते हैं, उन के लिए भी ख़ुत्बे का अरबी हिस्सा काफ़ी हो सकता है।

जहां तक हमारे मुल्क का तालालुक़ है, यहां उर्दू ज़ुबान एक ऐसी ज़ुबान है, जिसे आम लोग समझते हैं और यह ज़ुबान मुल्क के लगभग हर हिस्से में समझी जाती है, इस लिए यहां यह तो मुनासिब नहोगा कि हर-हर जगह की मक़ामी ज़ुबान पर ही हठ किया जाए, बल्कि जहां भी उर्दू समझी जाती हो, वहां उसे अपनाना चाहिए। हां, उसूली एतबार से इसमें भी कोई हरज नहीं है। अगर ज़रूरत का तक़ाज़ा हो तो मक़ामी ज़ुबानों को ख़ुत्बे के लिए अख़्तियार किया जाए।

उर्दू ज़ुबान में ख़ुत्बे को आम करने की शक्ल में कुछ ज़रूरी एहति-यातों पर अमल करना ज़रूरी होगा। अगर उन पर अमल न किया जाए तो इस बात का डर है कि उर्दू के ख़ुत्बे से फ़ायदे के बदले नुक़सान पहुंचने लगे—

१. पहली एहतियात तो यह है कि अपनी तरफ़ से उर्दू में ख़ुत्बा देने का काम ऐसे इमामों के सुपुर्द न किया जाए, जो इस काम के अह्ल न हों। हमारी बद-क़िस्मती है कि आजकल आम तौर पर मस्जिद का इमाम उस शख़्स को बनाया जाता है, जो दुनिया में और किसी काम का नहीं होता और वह दस-बीस रुपयों के बदले इस काम को पेशे के तौर पर करता है।

होना तो यह चाहिए था कि इमाम उस शख़्स को बनाया जाता, जो अपने इल्म और तक़्वा के लिहाज़ से सब से बेहतर होता, जिस की समाज में कोई जगह होती, जिस की बात लोगों की नज़र में वज़न रखती, लेकिन बहुत-सी जगहों पर यह बात नहीं है। इन हालात में पेशेवर इमामों से यह उम्मीद करना फ़ुज़ूल है कि वे हमारी दीन और दुनिया की रहनुमाई का

काम अंजाम दे सकेंगे। ऐसी सूरत में या तो इमामों को कुछ ऐसे लिखे हुए ख़ुत्बे देने चाहिएं जो सावधानी के साथ तैयार किए गए हों, या फिर अरबी के ख़ुत्बे को काफ़ी समझना चाहिए।

२. दूसरा अंदेशा, जिसके बारे में एहतियात की ज़रूरत है और भी ज्यादा ध्यान देने का है। ज़ाहिर है कि सब की समझ में आने वाली ज़ुबानों में ख़ुत्बे के लिए लोगों की नज़रें आम तौर पर उलेमा ही की तरफ़ जाएंगी। उम्मत की बड़ी बद-क़िस्मती यह है कि इस तब्क़े में कुछ अल्लाह के बंदों को छोड़कर बाक़ी लोगों का हाल कुछ ऐसा है कि उसे बयान करते हुए भी शर्म आती है। इन हज़रात को अगर मस्जिदों में मनमानी ख़ुत्बा देने का मौक़ा दे दिया जाए तो आए दिन मस्जिदों में सर फुटव्वल होगी कि लोग शायद नमाज़ भी पढ़नी छोड़ दें। इन में से हर आलिम अपना एक ख़ास मस्लक रखता है और इस बारे में वह इतना सख़्त है कि उस के नज़दीक बस सारा दीन सिमट कर कुछ छोटी और ग़ैर-ज़रूरी बातों में आ गया, जिसे उसने अपना रखा है, अब चाहे शरीअत में उन बातों से इख़्तिलाफ़ करने की कितनी ही गुंजाइश क्यों न मौजूद हो. लेकिन यह अल्लाह का बंदा इस से इख़्तिलाफ़ रखने वालों को किसी क़ीमत पर बख़्शने के लिए तैयार नहीं होता, बल्कि उसके नज़दीक ऐसे लोगों के साथ कोई रियायत करना बड़ा सख़्त गुनाह है।

फिर आम तौर पर ऐसे लोगों की तर्बियत कुछ इस ढंग पर होती है कि उन की नज़रें इन मस्अलों से हट कर उम्मत के आम मस्अलों तक जाती ही नहीं। उनकी सारी दिलचस्पियां बस कुछ छोटी-छोटी इख़्तिलाफ़ी बातों में जमा हो जाती हैं। इस लिए ये लोग जब भी ज़ुबान खोलते हैं, इन ही मस्अलों के बारे में खोलते हैं और लोगों की आम दीनी, इस्लाही, अख़्लाक़ी तर्बियत, मामलों के सुधार वग़ैरह-वग़ैरह की उन की नज़रों में कोई अहमियत ही नहीं होती। ये तो बस यह चाहते हैं कि लोग सौ फ़ीसदी उन के ख़्यालों से इत्तिफ़ाक़ कर लें। इस के बाद उन्हें इस बात की फ़िक्र नहीं कि उनके मामले कैसे हैं, अख़्लाक़ का क्या हाल है ? आम दीनी कामों की तरफ़ उन की तवज्जोह कैसी है ? अब अगर इस गिरोह के ग़ैर-मुहतात लोगों पर यह ज़िम्मेदारी डाली जाए कि वह ख़ुत्बा सब की समझ में आने वाली ज़ुबान में दें तो अंदेशा यही है कि वे उन्हीं बातों को ले बैठेंगे, जिन के बारे में वे मस्जिद के बाहर मुसलमानों में जूती-पैज़ार कराते रहते हैं।

३. तीसरा अंदेशा, जिस के बारे में एहतियात ज़रूरी है, यह है कि लोग इस मौक़े से फ़ायदा उठा कर अपनी-अपनी सियासी जत्थ-बन्दियों या अपनी जमाअतों का प्रोपगंडा करने लगें और जो लोग अल्लाह के घर में आ कर मिल जाते हैं, उन्हें भी अलग-अलग करने पर उतारू हो जाएं।

इन तमाम खराबियों का इलाज यह है कि सिवाए उन लोगों के, जिन के बारे में पूरा इत्मीनान हो कि वे तमाम बातों के बारे में एहतियात से काम लेंगे, हर किसी को उर्दू या हिन्दी में ख़ुत्बा देने का मौक़ा न दिया जाए और अगर यह शक्ल मुम्किन न हो, तो फिर ऐसे ख़ुत्बे लिखे जाएं, जो झगड़े वाली तमाम बातों से पाक हों और जिन का मक़्सद मुसलमानों में सही दीनी रूह फूंकने के सिवा और कुछ न हो। इन ख़ुत्बों में आम अख़्लाक़ी ख़राबियों को दूर करने, मुसलमानों के मामलों को दुरुस्त करने और उन में खुदा का डर और आख़िरत का डर पैदा करने, ईमान को ताज़ा करने और अमल पर उभारने वग़ैरह पर ही ज़ोर दिया जाए। इस के अलावा न इन में किसी मज़हबी या सियासी मस्लक पर उभारा गया हो और न किसी गिरोह या जमाअत का प्रोपगंडा किया गया हो।

असल में तो यह काम इतना अहम है कि इसे इल्म वालों की जमाअत ही को हाथ में लेना चाहिए और मिल-जुल कर अपनी कोशिशों से मुख़्तलिफ़ उन्वानों पर ऐसे ख़ुत्बे का एक मजमूआ तैयार कर देना चाहिए, जिसे बिला किसी अंदेशे के पढ़ा जाता रहे, लेकिन नहीं कहा जा सकता कि ऐसा मौक़ा कब जुटाया जा सके? इस के लिए 'अल-हसनात' के ज़रिए कभी-कभी यह कोशिश की जाती रही है कि इस क़िस्म के कुछ मुख़्तसर ख़ुत्बे छपते रहें। ये ख़ुत्बे, जो अब तक छपते रहे हैं, यों भी याद-देहानी और दीनी हिदायतों के लिए बड़े फ़ायदेमंद साबित हुए हैं। यह ख़ुत्बे जुमों में भी पढ़े गये हैं और यों भी लोगों ने उन से फ़ायदा उठाया है, इस लिए अब तक जो कुछ लिखा जा सका है, उसे एक मजमूए की शक्ल में छाया जा रहा है।

———

# ख़ुलूसे नीयत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِی الْاٰخِرَةِ ۔ وَهُوَ الْحَکِیْمُ الْخَبِیْرُ یَعْلَمُ مَا یَلِجُ فِی الْاَرْضِ وَمَا یَخْرُجُ مِنْهَا وَ مَا یَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا یَعْرُجُ فِیْهَا وَهُوَ الرَّحِیْمُ الْغَفُوْرُ ۔ اَحْمَدُهٗ حَمْدًا کَثِیْرًا طَیِّبًا مُّبَارَکًا فِیْهِ ۔ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَیْهِ تَوَکَّلْتُ وَاِلَیْهِ اُنِیْبُ ۔ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ۔ اَلْمَبْعُوْثُ اِلَی الْاَسْوَدِ وَالْاَحْمَرِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَعَلٰٓی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا ۔ اَمَّا بَعْدُ : فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۔ مَنْ کَانَ یُرِیْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِیْ حَرْثِهٖ وَمَنْ کَانَ یُرِیْدُ حَرْثَ الدُّنْیَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِی الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِیْبٍ ۔

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि व लहुल हम्दु फ़िल आख़िरति व हुवल हकीमुल ख़बीर० यअ्लमु मा यलिजु फ़िल अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिनहा व मा यन्ज़िलु मिनस्समाइ व मा यअ्रुजु फ़ीहा व हुवर्रहीमुल ग़फ़ूर० अह्मदुहू हम्दन कसीरन तय्यिबम मुबारकन फ़ीहि० वश्हदु अल्लाइला-ह इल्लाहु-व अलैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीबु० व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल-मब् ऊसु इलल अस्वदि वल अह्मरि सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा० अम्मा बअ्दु फ़-अअ़ूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम मन का-न युरीदु हर्सल आख़िरति नज़िद लहू फ़ी हर्सिही व मन का-न युरीदु हर्सद्दुन्या नुअ्तिही मिनहा व मा लहू फ़िल आख़िरति मिन नसीब०

बुज़ुर्गो और दोस्तो ! अक्सर ऐसा होता है कि ज़ाहिरी शक्ल व सूरत के एतबार से दो आदमियों के काम बिल्कुल एक जैसे होते हैं, लेकिन आख़िरत में मिलने वाले नतीजे के एतबार से उनमें बड़ा फ़र्क़ हो जाता है। यह बिल्कुल मुम्किन है कि दो आदमी आप की आंखों के सामने एक ही-जैसा नेक काम कर रहे हों, जैसे दोनों ने एक-एक कुंवां बनवाया हो, लेकिन उन में से एक को आख़िरत में उस का अच्छा बदला मिले और दूसरे के

हाथ कुछ भी न आए। आख़िरत में इंसान को जो कुछ मिलना है, उस का मदार नीयत पर है। अगर नीयत ठीक है तो नेक आमाल का सवाब मिलेगा, वरना नहीं। जो काम ख़ुदा की ख़ुश्नूदी के लिए किया जाए और वह हो भी उसके बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़, तो उसी का बदला आख़िरत में मिलेगा, लेकिन अगर किसी नेक काम पर उभारने वाली चीज़ अल्लाह की ख़ुश्नूदी के सिवा कुछ और हो जाए, तो फिर आख़िरत में उस की कोई क़ीमत न होगी। बात बिल्कुल साफ़ है। एक ऐसा शख़्स, जिसने एक कुंवा बनवाया ही इस लिए है कि उस की नेकनामी हो, उस के बारे में लोगों की राय अच्छी हो जाए और वह यह चाहता हो कि इस नेकनामी और अच्छी राय के नतीजे में वह कोई फ़ायदा हासिल करे, तो कोई वजह नहीं कि उसे आख़िरत में उस के इस काम का कोई बदला मिले। इंसाफ़ का तक़ाज़ा यही है कि उसे वही मिलना चाहिए, जिस के लिए उसने काम किया है। अल-बत्ता वह शख़्स, जिसने कुंवा सिर्फ़ इस लिए बनवाया है कि वह अल्लाह के दिए हुए माल का शुक्र अदा करना चाहता है और इस बात की ख़्वाहिश रखता है कि उस का मालिक उसके इस काम से ख़ुश हो जाए और इस से लोग एक अर्से तक फ़ायदा उठाते रहें, तो यक़ीनन उसे इस काम के लिए आख़िरत में बदला मिलना चाहिए।

हदीस शरीफ़ में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि—

إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لِامْرِئٍ مَا نَوَى۔

इन्नमल अअ्मालु बिन्नीयाति व इन्नमा लिम्‌रिइम मा न वा०

(आमाल का दारोमदार सिर्फ़ नीयत पर है और यह कि आदमी को वही कुछ मिलेगा, जिस की उसने नीयत की होगी।)

और इस बात की तश्रीह करते हुए इसी हदीस में यह भी आया है कि— فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ فَهِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ وَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ لِدُنْيَا يُصِيبُهَا أَوِ امْرَأَةٍ يَنْكِحُهَا فَهِجْرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ إِلَيْهِ۔

फ़ मन कानत हिज्र-तुहू इलल्लाहि व रसूलिही फ़ हिज्र-तुहू इलल्लाहि व रसूलिही व मन कानत हिज्रतुहू लिदुन्या युसीबुहा अविम-र-

अ-तिन यन्कि-हुहा फ़हिरज्रतुह इला मा हा-ज-र इलैहि०

यानी जिसने अल्लाह और रसूल के लिए हिज्रत की होगी, तो उस की हिज्रत वाक़ई हिज्रत होगी और उसे हिज्रत का सवाब मिलेगा और जिस की हिज्रत दुनिया हासिल करने या किसी औरत से शादी करने के लिए होगी, तो उस की हिज्रत की गिनती दुनिया या औरत ही के लिए होगी।

भाइयो ! आप को मालूम है, इस्लाम की नज़र में हिज्रत एक बहुत बड़ी इबादत और सवाब का काम है, लेकिन इस का सवाब भी इसी सूरत में मिलेगा, जब यह काम सवाब के लिए और ख़ुदा की ख़ुश्नूदी के लिए किया जाए और अगर कहीं इस काम के करते वक़्त भी नीयत में कोई ख़राबी आ जाए, जैसे इंसान कुछ इस क़िस्म की बात सोच ले कि इस तरह वतन छोड़ने से नए देश में जा कर कारोबार अच्छा चलेगा या वहां पहुंचने पर फ़्लां औरत से शादी हो जाएगी या इसी तरह की कोई और बात, तो फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि ख़ुदा की निगाह में उस हिज्रत की कोई क़ीमत न होगी ।

क़ुरआन पाक में और अहादीस में इस मज़्मून को अच्छी तरह बयान किया गया है और इस बात पर बे-हद ज़ोर दिया गया है कि हर नेक काम से पहले इंसान अपनी नीयत को दुरुस्त कर ले। एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَنْظُرُ إِلَىٰ صُوَرِكُمْ وَأَمْوَالِكُمْ وَلٰكِنْ يَنْظُرُ إِلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ.

इन्नल्ला-ह ला यन्ज़ुरु इला सु-व-रिकुम व अम्वालिकुम व ला किय्यंज़ुरु इला क़ुलूबिकुम व अअ़्मालिकुम०

यानी अल्लाह तआला तुम्हारी शक्ल व सूरत और तुम्हारे माल को न देखेगा, बल्कि तुम्हारे दिलों और तुम्हारे आमाल को देखेगा।

भाइयो ! यह पहलू बड़ा ही नाज़ुक पहलू है और हमें इस की तरफ़ बड़ी तवज्जोह देना चाहिए। भला सोचिए तो सही कि आप सब कुछ करें, लेकिन ख़ुदा-न-ख़्वास्ता नीयत ठीक न होने की सूरत में सब किया-कराया अकारथ जाए, तो यह कैसी बड़ी महरूमी है। उस किसान की बद-क़िस्मती का अन्दाज़ा कीजिए, जिसने पूरी मेहनत के साथ ज़मीन तैयार की, बेह-तरीन बीज बोया और खेत की ख़िदमत और हिफ़ाज़त में भी कोई कसर न उठा रखी, लेकिन जब खेत पकने का वक़्त आया, तो मालूम हुआ कि उस

के खेत को कोई ऐसी बीमारी लग गयी कि जिस की वजह से दाना एक न पड़ा, सिर्फ़ भूसा ही भूसा रह गया। बस कुछ ऐसा ही हाल उन तमाम कामों का है, जो अगरचे देखने में भले काम मालूम होते हैं और इन के करने में मेहनत और माल भी पूरा-पूरा खर्च होता है, लेकिन नीयत ठीक न होने की वजह से उनका कोई फल आखिरत में नहीं मिलेगा, बस दुनिया ही में जो कुछ मिलना है, मिल जाएगा। उस शख्स की मिसाल ठीक उस काश्त-कार की-सी है, जिसे फ़स्ल काटते वक़्त भूसे के सिवा और कुछ न हाथ आया हो।

भाइयो! यह सूरतेहाल हमारे और आप के लिए ऐसी है कि इस पर ज़्यादा से ज़्यादा ग़ौर किया जाए? हम और आप सब अपनी हद तक इस बात की कोशिश करते हैं कि हम ज़्यादा से ज़्यादा नेकी के काम करें। इन कामों में हम वक़्त भी लगाते हैं और माल भी। हमारे लिए इंतिहाई ज़रूरी है कि हम अपनी नीयतों का जायज़ा लेते रहें। खुदा न करे कि हमारे ये काम नीयत की किसी खराबी की वजह से बर्बाद हो जाएं। हमें बरा-बर यह सोचते रहना चाहिए कि हम भलाई का जो काम भी कर रहे हैं, उस के पीछे खुश्नूदी और उस के अज्र व सवाब के अलावा कोई और ऐसी चीज़ मौजूद न हो, जो उसे उभारे। शैतान जो इंसान का सब से बड़ा दुश्मन है, पहली कोशिश तो यही करता है कि वह उसे नेकी के बदले बदी की राह पर ले जाए, लेकिन अगर इस में वह कामियाब नहीं होता तो, फिर वह इस घात में लगा रहता है कि किसी तरह बन्दे की नेकियों को बर्बाद करा दे। इस के लिए ऐसी नयी-नयी चीज़ें पैदा कर देता है जो उसे उभारती हैं। नमाज़ इस लिए पढ़वाता है कि लोग नमाज़ पढ़ने वाले को दीनदार और नेक आदमी समझने लगें, ग़रीबों की मदद और इंसानों की खिदमत कराते वक़्त ज़ेहन में यह ख़्याल बिठाने की कोशिश करता है कि इस तरह लोगों में मेरी फ़य्याज़ी का चर्चा हो। लोगों के दिलों में इज़्ज़त पैदा हो और फिर उस नेकनामी और इज़्ज़त की वजह से कोई मक़ाम हासिल हो जाए। इन्तिहा यह कि अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने के लिए जो कोशिश की जाती है, उन का रुख भी वह बड़ी कामियाबी के साथ कुछ इस तरह फेर देता है कि लोगों के दिलों में इक़्तिदार हासिल कर लेने के अलावा कोई ऐसी चीज़ बाक़ी नहीं रहती। जो उसे उभारे।

भाइयो! यह सूरतेहाल बड़ी ही खतरनाक है। मोमिन को यक़ीनन नेक कामों का लोभी होना चाहिए, लेकिन इस से कहीं ज़्यादा फ़िक्र उसे

नीयत की सुथराई के बारे में करना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि नीयत के दुरुस्त न होने की वजह से सब किया-कराया अकारथ हो जाए और आख़िरत में जहां इंसान अल्लाह के अज्र व सवाब का सब से ज़्यादा मुह-ताज होगा, उसे यह महसूस हो कि वहां उसके लिए कुछ भी नहीं है। नाम व नमूद की ख़्वाहिश और दिखावे का जज़्बा बहुत ख़ामोशी के साथ दिलों में घुस आता है। इंसान अपनी ज़ुबान से इन्तिहाई अच्छी-अच्छी बातें कहता रहता है, लेकिन नेकनामी की ख़्वाहिश और बड़ा बनने की आरज़ू चुपके-चुपके अपना काम करती रहती है और इंसान के सारे नेक काम बे-नतीजा होकर रह जाते हैं।

भाइयो! हम सब को ख़ुलूसे दिल से दुआ करना चाहिए कि अल्लाह तआला हमें इस तरह की महरूमी से बचाए रखे और अपनी हद तक पूरी कोशिश करना चाहिए कि हमारे तमाम नेक कामों के पीछे अल्लाह की ख़ुशी के सिवा और दूसरी कोई ऐसी चीज़ मौजूद न रहे, जो उसे उभारे। أَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَاسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ أَجْمَعِيْنَ وَاسْتَغْفِرُوْهُ إِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا۔ اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ قُلُوْبَنَا مِنَ النِّفَاقِ وَأَعْمَالَنَا مِنَ الرِّيَاءِ وَأَلْسِنَتَنَا مِنَ الْكِذْبِ۔

अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अज् मईन वस्त-ग़्फ़िरुहु इन्नहू का-न ग़फ़्फ़ारा० अल्लाहुम-म तह्हिर क़ुलूबना मिनन्नि-फ़ाक़ि व अअ्मा-ल-ना मिनर्रियाइ व अल सि-न-त-ना मिनलकिज़्बि०

---

# तौबा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هُوَ یُبْدِئُ وَیُعِیْدُ وَیَفْعَلُ مَا یُرِیْدُ یَتُوْبُ عَلٰی
مَنْ تَابَ۔ وَیَغْفِرُ لِمَنِ اسْتَغْفَرَ وَاَنَابَ یُجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَیَعْفُوْ
عَنْ سَیِّئَاتِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَاتَّقَاهُ۔ اَحْمَدُهٗ حَمْدَ عَبْدٍ یَّرْجُوْ رَحْمَتَهٗ
وَیَخَافُ عَذَابَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ۔ لَا مَلْجَأَ وَلَا مَنْجَا مِنْهُ اِلَّا
اِلَیْهِ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهُ الْاَمِیْنُ عَلٰی وَحْیِهٖ وَالشَّاهِدُ
عَلٰی خَلْقِهٖ۔ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا۔ اَمَّا بَعْدُ
فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ۔ وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِاٰیٰتِنَا
فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَیْکُمْ کَتَبَ رَبُّکُمْ عَلٰی نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْکُمْ
سُوْٓءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ۔

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हु-व युब्दिउ व युईदु व यफ़अलु मा युरीदु यतूबु अला मन ता-ब व यग़्फ़िरु लिमनिस्तग़्फ़-र व अना-ब युजीबुल मुज़्तर-र इज़ा दआहु व यअ़फ़ू अन सय्यिआति मन आ-म न बिही वत्त-क़ाहु अह्मदुहू हम-द अब्दिय्यर्जू रह्म-त-हू व यख़ाफ़ु अज़ाबहू व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला हु-व ला मल-ज-अ व ला मन-ज-अ मिन्हु इल्ला इलैहि व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहुल अमीनु अला वह्यिही वश्शाहिदु अला ख़ल्क़िही सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व अस्हा-बिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा० अम्मा बअ़दु फ़ अऊज़ुबिल्लाहि मिन-श्शैतानिर्रजीम व इज़ा जा-अ-कल्लज़ी-न युअ्मिनून बिआयातिना फ़क़ुल सलामुन अलैकुम क-त-ब रब्बुकुम अला नफ़्सिहिर्रह्म-त अन्नहू मन अ-मि-ल मिन्कुम सूअम बिजिहालतिन सुम-म ता-ब मिम-बअ़दिही व अस्ल-ह फ़ अन्नहू ग़फ़ूरुर्रहीम०

अज़ीज़ो और दोस्तो ! कौन ऐसा है, जिससे कोई ख़ता नहीं होती। सुबह से शाम तक बहुत से गुनाह हो जाते हैं। उलेमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि मुसलमान के लिए हर गुनाह पर तौबा करना वाजिब है। अल्लाह तआला का इर्शाद है—

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ○

तूबू इलल्लाहि जमीअन अय्युहल मुअ्‌मिनू-न लअल्लकुम तुफ़्लिहून० (सूर: नूर)

(ऐ ईमान वालो ! तुम सब अल्लाह की तरफ़ पलटो और तौबा करो, उम्मीद है कि इस तरह तुम फ़लाह पाओगे ।)

तौबा मोमिन बन्दे की ज़रूरी ख़ूबी है । अल्लाह तआला ने मोमिनों की सिफ़त बयान फ़रमाते हुए एक जगह उन्हें 'अत-ताइबून' फ़रमाया है यानी बराबर तौबा करने वाले । इस से भी यह मालूम होता है कि बन्दे से ख़ता हो जाना कोई अजीब बात नहीं । इंसान से भूल-चूक हो जाती है, इस पर ग़फ़लत छा जाती है, वह नफ़्स और शैतान के फंदों में फंस कर सही रास्ते से भटक भी जाता है, लेकिन मोमिन की पहचान यह है कि जैसे ही उसे एहसास होता है कि उस से ग़लती हो गयी है तो फिर वह अपनी ग़लती पर जमता नहीं और न अपनी ग़लतियों के लिए उज़्र और तावीलें तलाश करता है, बल्कि फ़ौरन तौबा करता है ।

तौबा का मतलब है लौटना । वापस आना या पलटना । इस लफ़्ज़ में ही तौबा की हक़ीक़त का इशारा मौजूद है । तौबा के लिए तीन शर्तें हैं—

१. पहली शर्त यह है कि इंसान दिल से अपनी ग़लती को मान ले और उस पर शर्मिन्दा हो ।

२. दूसरी शर्त यह है वह इस ग़लत काम से बाज़ आ जाए, और

३. तीसरी शर्त यह कि वह इस बात का पक्का इरादा करे कि अब फिर वह ग़लत काम हरगिज़ न करेगा । जो लोग अपने ग़लत कामों के लिए बहाने और उज़्र पेश करते हैं, उन्हें कभी तौबा की तौफ़ीक़ नहीं होती और न इस शक्ल में तौबा के कोई मानी हैं कि इंसान ग़लत काम करता रहे और साथ ही तौबा भी करता रहे । तौबा के लिए ज़रूरी है कि इंसान अपने ग़लत रवैए से बाज़ आ जाए और आगे के लिए भी सच्चे दिल से इक़रार करे कि अब फिर कभी वह ग़लती न करेगा ।

यह तो उन गुनाहों के बारे में है, जिन का ताल्लुक़ सिर्फ़ ख़ुदा से है, रहे वे गुनाह जिन का ताल्लुक़ बन्दों से भी है, जैसे किसी का हक़ मार लेना, किसी की ग़ीबत करना या किसी पर झूठा इल्ज़ाम लगाना, तो इन गुनाहों की सफ़ाई के लिए एक और शर्त यह भी है कि इंसान उस शख़्स से

भी अपना मामला साफ़ करे, जिस पर उसने ज्यादती की है। अगर उसने उस का हक़ मारा है, तो उस का हक़ उसे लौटाए और अगर उसकी ग़ीबत की है या उस पर तोहमत धरी है तो उस से माफ़ी चाहे।

अज़ीज़ो और दोस्तो! हम पर अल्लाह तआला का कितना बड़ा एहसान है कि वह हमारी ख़ताओं और ग़फ़लतों को माफ़ फ़रमाता है, हमें बार-बार मुतवज्जह फ़रमाता है कि हम अपनी ग़लतियों से रुक जाएं और उसकी रहमत के दामन में पनाह लें। क़ुरआन पाक में जगह-जगह अल्लाह तआला ने तौबा की ताकीद और नसीहत फ़रमायी है। अल्लाह तआला अपने बन्दों पर बेहद मेहरबान है, उसे अपनी मख़्लूक़ात से कोई दुश्मनी नहीं कि वह उन्हें सज़ा देने पर तुला बैठा हो और वह अपने बन्दों को मार-मार कर ही ख़ुश होता हो। वह रहमान और रहीम है। मेहरबानी करना उस की सिफ़त है। बन्दा चाहे कितने ही क़ुसूर कर चुका हो, लेकिन जब भी वह अपने क़ुसूरों को मान ले और शर्मिंदा होकर अपने रब की तरफ़ पलटे, तो उस की रहमत के दामन में बड़ा फैलाव है। वह अपनी पैदा की हुई मख़्लूक़ से बेहद मुहब्बत रखता है। उस का अज़ाब तो उन्हीं लोगों के लिए है जो अपनी सरकशियों में हद से गुज़र जाएं और किसी तरह फ़साद फैलाने से बाज़ ही न आएं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला की इस मेहरबानी का ज़िक्र करते हुए एक बार एक बड़ी उम्दा मिसाल से बात समझायी। फ़रमाया कि अगर तुम में से किसी शख़्स का ऊंट एक ऐसे रेगिस्तान में खो जाए, जहां न कहीं पानी हो और न कोई आबादी और उस के खाने-पीने का सामान भी उसी ऊंट पर हो और जब वह शख़्स उस ऊंट को ढूंढ-ढूंढ कर मायूस हो जाए और ज़िंदगी से ना-उम्मीद हो कर किसी चट्टान के नीचे लेट जाए तो ठीक इस हालत में यकायक वह देखे कि उसका ऊंट सामने खड़ा है, तो उस वक़्त जैसी कुछ ख़ुशी उस शख़्स को होगी, उससे बहुत ज़्यादा ख़ुशी अल्लाह तआला को अपने भटके हुए बन्दे के पलट आने से होती है। एक और मिसाल जो इस से भी ज़्यादा असर रखती है, यह है कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कुछ जंगी क़ैदी पकड़े हुए आए, इन में एक औरत भी थी, जिस का दूध-पीता बच्चा कहीं छूट गया था, इस सद्मे से इस ममता की मारी मां का बुरा हाल था। जिस बच्चे को भी पा लेती, छाती से चिमटा कर दूध पिलाने लगती। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसका यह हाल देख कर सहाबा रज़ि० से

पूछा, क्या तुम लोग यह उम्मीद कर सकते हो कि यह मां अपने बच्चे को ख़ुद अपने हाथों आग में फेंक देगी, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, हरगिज़ नहीं, ख़ुद फेंकना तो दूर की बात, बच्चा अगर ख़ुद आग में गिरता हो, तो यह अपनी हद तक उसे बचाने में कोई कसर न उठा रखेगी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया—

اَللّٰهُ اَرْحَمُ بِعِبَادِهٖ مِنْ هٰذِهٖ بِوَلَدِهَا-

अल्लाहु अर्हमु बिअ़िबादिही मिनहाज़िही बिवलदिहा०

अल्लाह का रहम अपने बन्दों पर उस से बहुत ज़्यादा है जो यह औरत अपने बच्चे के लिए रखती है।

भाइयो ! वैसे भी ज़रा सोचिए, तो यह बात अच्छी तरह समझ में आ सकती है कि यह अल्लाह तआला ही तो है, जिसने बच्चों की परवरिश के लिए मां-बाप के दिल में मुहब्बत पैदा की है। अगर अल्लाह तआला उन के दिलों में यह मुहब्बत पैदा न करता तो मां-बाप काहे को तक्लीफ़ें उठाते और अपने ऐश व आराम को तज कर बच्चों की ख़ातिर मुसीबतें झेलते। अब हर शख़्स ख़ुद समझ सकता है कि जिस ख़ुदा ने मां और बाप के दिल में मुहब्बत पैदा की है, ख़ुद उस के अन्दर अपनी मख़्लूक़ के लिए कैसी कुछ मुहब्बत मौजूद होगी। क़ुरआन पाक में आया है—

اِسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْا اِلَيْهِ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ-

इस्तग़्फ़िरू रब्बकुम सुम-म तूबू इलैहि इन-न रब्बी रहीमुं व-व दूद० (लोगो ! अपने रब से माफ़ी मांगो और उस की तरफ़ पलट आओ, बेशक मेरा रब रहीम है, अपनी मख़्लूक़ से मुहब्बत रखता है।)

भाइयो ! सोचने की बात है कि एक तरफ़ तो अल्लाह तआला को यह बात इतनी अज़ीज़ है कि बन्दा उस की तरफ़ पलटे और उस से अपनी ख़ताएं माफ़ कराए, दूसरी तरफ़ उस का यह इर्शाद है—

اِسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى-

इस्तग़्फ़िरु रब्बकुम सुम-म तू बू इलैहि युमत्तिअ़कुम मताअ़न ह-स-नन इला अ-ज-लिम मुसम्मा० (लोगो ! अपने रब से माफ़ी चाहो और उस की तरफ़ पलट आओ, तो वह एक मुद्दत तक तुमको ज़िंदगी का अच्छा सामान देगा।)

इस से मालूम होता है कि तौबा करने वालों को अल्लाह तआला

आखिरत ही में नहीं, बल्कि इस दुनिया में अपने फ़ज़्ल व करम से नवाज़ता है। अगर कोई क़ौम इस दुनिया में अपने ग़लत रवैयों से रुक जाए, अल्लाह तआला के हुक्मों और हिदायतों के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी का नक़्शा बनाए, तो चाहे वह अपने ग़लत कामों की वजह से कैसी ही मुसीबतों का शिकार क्यों न हो चुकी हो और उसने अपने हाथों अपनी बर्बादी का कैसा ही इन्तिज़ाम क्यों न करा लिया हो, लेकिन अगर वह अपनी ग़लती को महसूस करे, नाफ़रमानी छोड़ कर अल्लाह की बन्दगी की तरफ़ पलट आए तो वहां भी उस की क़िस्मत बदल जाती है, बर्बादी और अज़ाब के बजाए, उस के लिए इनाम, तरक़्क़ी और कामियाबी का फ़ैसला लिख दिया जाता है।

अल्लाह तआला की रहमतों को मुतवज्जह करने के लिए तौबा सब से ज़्यादा कामियाब शक्ल है। हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते सुना है कि खुदा की क़सम! मैं दिन में सत्तर मर्तबा से ज़्यादा अल्लाह तआला से बख्शिश चाहता हूं और तौबा करता हूं, एक और हदीस में आता है कि, 'लोगो! अल्लाह से तौबा करो और बख्शिश चाहो। बेशक मैं दिन में सौ मर्तबा तौबा करता हूं।'

अल्लाह तआला की मग़्फ़िरत की सिफ़त उस की तमाम सिफ़ात की तरह बे-हद व हिसाब है। इंसान से चाहे जितनी कोताहियां हुई हों और चाहे उस के गुनाहों का अन्दाज़ा लगाना भी हमारे लिए ना-मुम्किन हो, लेकिन अगर तौबा की शर्तें पूरी करते हुए ऐसा गुनाहगार बन्दा भी अल्लाह तआला की तरफ़ पलटता है, तो अल्लाह तआला उसे माफ़ फ़रमा देता है। इसी तरह चाहे जितने गुनाहगार इंसान इस तरफ़ पलटें, वह सब को माफ़ कर सकता है, उसकी मग़्फ़िरत को दामन में बड़ा फैलाव है। हदीस शरीफ़ में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि अल्लाह तआला अपना हाथ रात को फैलाता है, ताकि दिन का गुनाहगार तौबा कर ले और अपना हाथ दिन को फैलाता है ताकि रात का गुनाहगार तौबा कर ले, यहां तक कि सूरज अपने डूबने की जगह से निकले। तौबा का दरवाज़ा हर शख्स के लिए खुला है और हर वक़्त खुला है। हर शख्स के लिए मौक़ा है कि वह मौत की निशानियों के ज़ाहिर होने से पहले तौबा कर ले। अल्लाह तआला के इस रहम व करम का सिलसिला उस वक़्त तक जारी रहेगा, जब तक क़ियामत की निशानियों में यह निशानी सामने

न आ जाए कि सूरज पूरब के बजाए पच्छिम से उगे।

भाइयो और अज़ीज़ो ! यह बात तो बिल्कुल यक़ीनी है कि हम में से हर शख़्स को मरना है, अल-बत्ता यह किसी को नहीं मालूम कि इस का वक़्त कब आएगा। यही हक़ीक़त हमें इस बात के लिए मजबूर करती है कि हम तौबा से किसी वक़्त ग़ाफ़िल न रहें, पूरे एहसास और सही शऊर (चेतना) के साथ बार-बार तौबा करते रहें, सुबह से शाम तक अपने कामों का जायज़ा लें, सुकून के साथ किसी वक़्त बैठ कर सोच लिया करें कि हम से क्या-क्या कोताहियां हुई हैं। इन कोताहियों के एहसास पर हमारे अन्दर शर्मिन्दगी का जज़्बा उभरना चाहिए, हमें अपने रब से सच्चे दिल से तौबा करना चाहिए और हर दिन इस नए फ़ैसले के साथ ज़िंदगी में क़दम रखना चाहिए कि अब हम अपने कामों पर निगाह रखेंगे, जो ग़लतियां हो चुकी हैं, उस के नुक़्सान को पूरा करेंगे और आगे फिर ऐसी ग़लतियों का शिकार न होंगे।

भाइयो ! अपनी ग़लतियों को दूर करने के लिए सच्चे दिल से तौबा करना तो ज़रूरी है ही, लेकिन इस के साथ-साथ अमली तौबा भी होनी चाहिए। अमली तौबा की एक शक्ल तो यह है कि इंसान से जो ग़लतियां हो गयी हैं, अगर अमली तौर पर उन के नुक़्सान को दूर करने की कोई शक्ल मुम्किन हो तो आदमी उस में कोताही न करे और इस के साथ-साथ इस बात का भी एहतिमाम करे कि वह ख़ुदा की राह में कुछ माल ख़ैरात करे। इस तरह ख़ैर की तरफ़ पलटने में बड़ी मदद मिलती है और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इंसान को अपने हालात ठीक करने में बहुत आसानी हो जाती है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि जिस तरह पानी आग को बुझा कर ख़त्म कर देता है, इसी तरह सद्क़ा ख़ताओं को ख़त्म कर देता है।

أَقُولُ قَوْلِي هٰذَا وَأَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِي وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِينَ وَاسْتَغْفِرُوهُ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۔ رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۔

अक़ूलु क़ौली हाज़ा व अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम व लि सा-इरिल मुस्लिमी-न वस्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम० रब्बना ज़लम्ना अन्फ़ु-स-ना व इल्लम तग़्फ़िर लना व तर्हम्ना ल-न-कूनन्-न-न मिनल ख़ासिरीन०

# सब्र

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ۔ وَالَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَیٰوةَ لِیَبْلُوَکُمْ اَیُّکُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ثُمَّ هُوَ یَعِدُکُمْ مَغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا اَحْمَدُهٗ سُبْحَانَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِیْنَ۔ اَمَّا بَعْدُ۔ فَقَدْ قَالَ النَّبِیُّ الْکَرِیْمُ عَجَبًا لِاَمْرِ الْمُؤْمِنِ اِنَّ اَمْرَهٗ کُلَّهٗ لَهٗ خَیْرٌ وَلَیْسَ ذٰلِكَ لِاَحَدٍ اِلَّا لِلْمُؤْمِنِ اِنْ اَصَابَتْهُ سَرَّآءُ شَکَرَ فَکَانَ خَیْرًا لَّهٗ وَاِنْ اَصَابَتْهُ ضَرَّآءُ صَبَرَ فَکَانَ خَیْرًا لَّهٗ۔

अल हम्दु लिल्लहिल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल अर-ज़ व ज-अ-लज्ज़ुलुमाति वन्नूर० वल्लज़ी ख़-ल-क़ल मौ-त वल हया-त लि यब्लु-व-कुम अय्युकुम अह्सनु अ-म-ला सुम-म हु-व-यअ़िदुकुम मग़्फ़ि-र तम मिन्हु व फ़ज़्लन अह्मदुहू सुब्हा-न-हू व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही अज मईन० अम्मा बअ्दु फ़क़द क़ालन्नबीयुल करीमु अ-ज-बन लि अम्रिल मुअ्मिन इन-न अम-रहू कुल्लहू लहू ख़ैरुन व लै-स ज़ालि-क लि अ-ह-दिन इल्ला लिल मुअ्मिनि इन असाबतहु सर्राउ श-क-र फ़का-न-ख़ैरल्लहू व इन असाबत-हु ज़र्राउ स-ब-र फ़-का-न ख़ैरल्लहू०

अज़ीज़ो और दोस्तो ! आपने बार-बार सुना होगा कि मोमिन के लिए सब्र एक निहायत पसन्दीदा और मत्लूब सिफ़त है। अल्लाह तआला का इर्शाद है—

اِنَّمَا یُوَفَّی الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍ۔

इन्नमा युवफ़्फ़स्साबिरू-न अज्रहुम बिग़ैरि हिसाब०

(सब्र करने वालों को उन का बदला बिला हिसाब दिया जाएगा।)

साथ ही इर्शाद फ़रमाया—

إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ۔

इन्नल्ला-ह मअस्साबिरीन० (अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।) एक और जगह फ़रमाया—

وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ

व बश्शिरिस्साबिरीन० (सब्र करने वालों को खुशखबरी दे दो।) और फ़रमाया—

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ۔

वल्लाहु युहिब्बुस्साबिरीन० (अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है) साथ ही सब्र करने वालों के दर्जों की बुलंदी और उन के बदले का ज़िक्र भी क़ुरआन शरीफ़ में बार-बार आता है। फ़रमाया—

إِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُوْنَ

इन्नी जज़ैतुहुमुल यौ-म बिमा स-ब-रू अन्न हुमुल फ़ाइज़ून० (आज मैं ने उन के सब्र करने का यह बदला दिया कि वही कामियाब हैं) या फ़रमाया—

أُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا

उलाइ-क युज्ज़ौनल ग़ुर-फ़-त बिमा स-ब-रू० (उन लोगों को उनके सब्र के बदले में आलीशान महल दिए जाएंगे) और फ़रमाया—

وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً۔

व जज़ा हुम बिमा स-ब-रू जन्नतन० (और उसने उन्हें उनके सब्र के बदले में जन्नत दी।) जन्नत में फ़रिश्ते जब मोमिनों के पास आएंगे तो कहेंगे—

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ۔

सलामुन अलैकुम बिमा सबर्तुम० (तुम पर सलामती है, तुमने दुनिया में जिस तरह सब्र से काम लिया, उस की बदौलत आज तुम उस के हक़दार हुए हो।)

फिर क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला ने खुद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मोमिनों को बार-बार सब्र अख़्तियार करने की ताकीद फ़रमायी है। फ़रमाया—

فَاصْبِرْ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ

फ़स्बिर इन्नल आक़ि-ब-त लिल मुत्तक़ीन० (सब्र अख़्तियार करो। बेहतरीन अंजाम मुत्तक़ियों ही के लिए है।)

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ

फ़स्बिर कमा स-ब-र उलुल उज़्मि मिनर्रुसुलि० (आप सब्र अख़्तियार करें, जिस तरह बा-हिम्मत रसूलों ने सब्र अख़्तियार किया) फिर इर्शाद फ़रमाया—

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللهِ حَقٌّ

फ़स्बिर इन-न वअ़्दल्लाहि हक़्क़ुन० (सब्र अख़्तियार करो, बेशक अल्लाह का वायदा सच्चा है।) या फ़रमाया—

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا

फ़स्बिर सब्रन जमीला० (सब्र अख़्तियार करो बेहतरीन तरीक़े पर।)

ये और बहुत-सी आयतें सब्र के मुताल्लिक़ आयी हैं जिनसे यह बात मालूम होती है कि सब्र अख़्तियार करना मोमिन के लिए एक ज़रूरी सिफ़त है। अल्लाह तआला ने इस सिफ़त को पैदा करने की ताकीद फ़रमायी है और इस सिफ़त के अख़्तियार करने वालों को अल्लाह तआला बे-हद पसन्द फ़रमाता है और आख़िरत में उसने उनके लिए बड़े-बड़े अज्र रखे हैं, तो भाइयो! यह सोचने की बात है कि आख़िर इस सब्र की हक़ीक़त क्या है, जिस के लिए इतनी ताकीद की गयी है और जिसका इतना ऊंचा बदला मिल सकता है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद गरामी है कि किसी शख़्स को कोई ऐसी चीज़ अता नहीं की गई जो सब्र से ज़्यादा बेहतर और कारआमद हो। असल में बात यह है कि अगर हमारे सामने इस लफ़्ज़ का सही मफ़्हूम हो और हम यह अच्छी तरह समझ लें कि इससे क्या मुराद है, तो फिर बड़ी आसानी से यह बात समझ में आ सकती है कि सब्र कितनी बड़ी नेकी है और इसका इतना बड़ा बदला क्यों रखा गया है।

भाइयो! अरबी ज़ुबान में सब्र का मतलब बहुत लम्बा-चौड़ा है। अपने जज़्बों और ख़्वाहिशों को क़ाबू में रखना भी सब्र है। जल्दबाज़ी और

घबराहट से काम न लेना भी सब्र है। किसी खौफ़ या लालच के मौक़े पर अपनी जगह से न हटना भी सब्र है। ठंडे दिल से फ़ैसले की जंची-तुली ताक़त से काम लेना और जोश से बचना यह भी सब्र है। कैसे ही अंदेशे और कठिनाइयां हमारे सामने हों, इसके बावजूद अगर हमारे क़दम न लड़खड़ाएं, तो यह भी सब्र है। ग़ुस्से के वक़्त अपने को क़ाबू में रखना भी सब्र है। भड़काने और फ़ित्ना पैदा करने के मौक़ों पर ग़लत काम न कर बैठना भी सब्र है। मुसीबतों का पहाड़ टूटे, हालात बिगड़ते नज़र आएं, तो ऐसी हालत में बे-चैन न होना और हवास को परेशान न होने देना भी सब्र है। किसी मक़्सद के हासिल करने के शौक़ में जल्दबाज़ी से बचना भी सब्र है। दुनिया के फ़ायदे, नफ़्स की लज़्ज़तें और तरह-तरह की चीज़ें जब दिल को लुभाएं, तो उनके मुक़ाबले में सही रास्ते पर क़ायम रहना और कोई ग़लत क़दम न उठाना भी सब्र है। मतलब यह कि क़ुरआन पाक में जिस-जिस तरह पर इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल किया गया है। इसके देखने से अंदाज़ा होता है कि इस लफ़्ज़ में बहुत से मानी समेट दिए गए हैं।

अब ज़रा सोचिए कि जब एक मोमिन बन्दा उन तमाम मौक़ों पर जिनकी तरफ़ ऊपर इशारा किया गया है, अपने नफ़्स को क़ाबू में रखता है और कोई ग़लत क़दम नहीं उठाता तो यक़ीनी तौर पर वह एक बड़ा काम करता है और उसे उसका ऐसा ही बदला मिलना चाहिए। मिसाल के तौर पर सोचिए कि एक शख़्स आपको तक्लीफ़ पहुंचाता है, आपको भी यह ताक़त हासिल है कि आप उसे तक्लीफ़ पहुंचा सकते हैं, लेकिन अगर सिर्फ़ इस ख़्याल से आपने उसकी ज़्यादती को बर्दाश्त कर लिया कि आपका मालिक आपसे ख़ुश होगा और आप उसे कुछ नहीं कहते तो यह कैसे मुम्किन है कि आपका यह सब्र करना बेकार हो जाए और आपको उसका कोई बदला न मिले। आप सुनते हैं कि किसी शख़्स ने आपके ख़िलाफ़ इलज़ाम गढ़े, आप भी उसके बहुत-से ऐब जानते हैं। आप का मन कहता है कि उसकी बुराइयां बयान करके उसे भी लोगों की नज़रों में गिराया जाय। लेकिन आप ऐसा नहीं करते, सिर्फ़ इसलिए कि ऐसा करने से आपको रोका गया है। इस तरह नफ़्स की ख़्वाहिश को दबाने से आपको एक तक्लीफ़ भी होती है और आप उसे सह लेते हैं, फिर यह कैसे मुम्किन है कि आपको इस तक्लीफ़ को सहने का कोई बदला न मिले।

यह तो आपको मालूम ही है कि इंसान को हर बुराई की तरफ़ ले जाने वाली नफ़्स (मन) की ख़्वाहिश ही होती है। नफ़्स की ख़्वाहिश को

रोकना सब्र है, इस तरह गोया सब्र बुराइयों से रोकने के लिए सब से बड़ी ताक़त है। अगर इंसान इस ताक़त से काम न ले, तो हर लम्हे इस बात का डर है कि वह नेकियों से महरूम हो जाए और बुराइयों में फंस जाए।

एक आदमी माली तंगी में पड़ा हुआ है। हलाल रोज़ी कमाने की जितनी कोशिश करता है, ना-कामी होती है। ज़रा बे-एहतियाती से काम ले तो नाजायज़ तरीक़ों से आसानी के साथ रोज़ी हासिल हो सकती है। इस मौक़े पर अगर वह अल्लाह तआला की ना-खुशी के डर से ग़लत तरीक़ों से बचता है और उसके बदले की उम्मीद में सख्तियां सह लेता है, तो यह सब्र है और इसका बदला उसे यक़ीनी तौर पर मिलना चाहिए। दूसरी ओर एक आदमी को माली तौर पर खुशहाली हासिल है, जायज़ तरीक़ों से अल्लाह तआला ने उसे बहुत कुछ दे रखा है, दौलत अपने साथ ऐश के सामान की ख्वाहिश और नाम और दिखावे की आरज़ू लेकर आती है, क़दम-क़दम पर नफ़्स की ख्वाहिश दौलत के नए-नए खर्चे सामने लाती है। अब अगर इस मौक़े पर मोमिन बन्दा बीच के रास्ते पर क़ायम रहता है, किसी ऐसी जगह पैसा खर्च नहीं करता, जो अल्लाह की ना-खुशी की वजह हो और हर ग़लत ख्वाहिश के मुक़ाबले में अपने नफ़्स को रोकता है, तो यही सब्र है और इसके लिए वह यक़ीनी तौर पर बदला पाने का हक़दार है।

कारोबार की तरक़्क़ी का वक़्त है। ज़ाहिरी तौर पर ज़रा-सी बे-तवज्जोही से नुक़्सान का डर है, लेकिन ठीक उसी वक़्त दीन के तक़ाज़े भी सामने आते हैं। गाहकों को छोड़कर जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने के लिए दुकान से उठना पड़ता है। अब एक तरफ़ कारोबार का दबाव है, दूसरी ओर अल्लाह के हुक्म हैं। इस मौक़े पर ज़ाहिरी फ़ायदों को छोड़ देना सब्र ही है और इसके लिए यक़ीनी तौर पर बदला मिलना चाहिए।

इसी तरह ज़िंदगी में बहुत-से पहलू सुबह से शाम तक हमारे सामने आते हैं। जहां एक ओर नफ़्स की ख्वाहिश होती है और दूसरी ओर दीनी और अख्लाक़ी तक़ाज़े, घरेलू ज़िंदगी की बद-मज़गियां, औलाद की मुहब्बत औलाद की ना-फ़रमानियां, दोस्तों और रिश्तेदारों की बे-वफ़ाइयां, मुला-ज़िमों और दूसरे मामले वालों के ग़लत तरीक़े, ग़रज़ यह कि क़दम क़दम पर मोमिन के सब्र का इम्तिहान होता है। नफ़्स कहता है कि जिसने तुम्हारे साथ बुराई की है, तुम भी उसके साथ वैसा ही सुलूक करो, जो तुम्हारा हमदर्द नहीं, तुम भी उसके साथ हमदर्दी न करो, लेकिन ईमान का तक़ाज़ा होता है कि इस मौक़े पर ऊंचे अख्लाक़ का सबूत दिया जाए।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह तालीम नज़रों के सामने आ जाती है—'अन असि-ल मन क़-त-अनी' (जो मुझसे कटे मैं उससे जुड़ूं), 'व उअ् ति-य मन ह-र-मनी' (जो मुझे महरूम करे, मैं उसे दूं), 'व अअ्फ़ू अम्मन ज़-ल-मनी' (और जो मुझ पर ज़्यादती करे, मैं उसे माफ़ करूं)—इन बातों के सामने आते ही जज़्बों में सकून पैदा हो जाता है, आपके फ़ैसले बदल जाते हैं और आप जो कुछ करना चाहते थे, वह नहीं करते, यही सब्र है, यही बड़ी हिम्मत का काम है। अल्लाह तआला का इर्शाद है—

وَلَمَن صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ

व ल मन स-ब-र व ग़-फ़-र इन-न ज़ालि-क ल-मिन अज़्मिल उमूर० (जिस किसी ने सब्र किया और दर-गुज़र से काम लिया, तो यक़ीनी तौर पर यह बहुत ऊंचे दर्जे का काम है।)

हक़ और सब्र में बड़ा गहरा ताल्लुक़ है। आप हक़ को अपनाएं या हक़ पर क़ायम रहना चाहें, दोनों शक्लों में आपको सब्र की ज़रूरत है। हालात सही नहीं हैं, हक़ का कलिमा मुंह से निकलना अपने लिए मुसीबतों को दावत देना है, लेकिन आप हालात की परवाह किए बग़ैर हक़ पर क़ायम हैं, हक़ पर ही क़ायम रहना चाहते हैं, जो मुश्किलें भी पेश आएं, उन्हें सहने के लिए तैयार हैं, यही सब्र है।

बहुत-से मौक़े ऐसे आते हैं कि हक़ ज़ाहिर में दबा हुआ लगता है, हक़ की हिमायत में ज़ुबानें गूंगी हो जाती हैं, हक़ की मदद करने वाले के हाथ सुन्न हो जाते हैं, इस मौक़े पर अगर हाथ से काम लें तो इसके लिए भी सब्र की ज़रूरत है, ज़ुबान से हक़ की हिमायत करें, तो यह भी सब्र के बग़ैर मुम्किन नहीं और फिर इस राह में जो कुछ सहना पड़े, उस सब को ख़ुशी-ख़ुशी झेल लें तो इसके लिए सब्र ही चाहिए।

आप मुद्दतों से भलाई की दावत दे रहे हैं, कहीं कोई सुनकर नहीं देता, लोगों में भले और बुरे का फ़र्क़ ख़त्म हो गया है, ख़ुदा की ना-फ़रमानी का आम चलन है, बुराई भलाई बनती जा रही है और भलाई को कोई जानता नहीं। नफ़्स कहता है कि भला ऐसे हालात में हक़ के कलिमे के ग़ालिब आने का इम्कान ही क्या है, हिम्मतें पस्त होने लगती हैं, लेकिन इसके बावजूद आप अपनी जगह से नहीं हटते। दुनिया आपको दीवाना समझती है, लेकिन आप अपने दीवानेपन पर शर्मिंदा नहीं हैं, न हालात से परेशान हैं और न ना-उम्मीद, न किसी डर को आप ध्यान में लाते हैं और

न किसी लालच से आपका रुख़ मोड़ा जा सकता है, यही है सब्र।

ग़रज़ ज़िंदगी का शायद ही कोई लम्हा ऐसा हो जो हम से सब्र की मांग न करता हो, हर क़दम पर सब्र, हर हाल में सब्र। यही वजह है कि सब्र के लिए इतना बदला है और सब्र करने वालों का दर्जा इतना ऊंचा है।

भाइयो और अज़ीज़ो ! आज जिन हालात में हम घिरे हुए हैं वे हमसे सब्र की बहुत ज़्यादा मांग करते हैं। हमें दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हमें वह सूझ-बूझ और नज़र अता फ़रमाए कि हर मौक़े पर हम सब्र के तक़ाज़ों को समझ सकें और यह तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि हम इन तक़ाज़ों को पूरा कर सकें।

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ۔ وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

रब्बना अफ़रिग़ अलैना सब्रंव-व तवफ़्फ़ना मुस्लिमीन० व आख़िरु दअ़-वाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०

---

# सब्र

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِہِ الْکِتٰبَ - لِیُخْرِجَ بِہٖ مِنْ ظُلُمٰتِ الْجَھْلِ اِلٰی نُوْرِ الْعِلْمِ وَالْھُدٰی - اَحْمَدُہٗ سُبْحَانَہٗ وَاَشْکُرُہٗ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ - وَاَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ نَبِیَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ - اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓی اٰلِہٖ وَاَصْحٰبِہٖ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا -

اَمَّا بَعْدُ - فَقَدْ قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَلَنَبْلُوَنَّکُمْ بِشَیْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِیْنَ - اَلَّذِیْنَ اِذَآ اَصَابَتْھُمْ مُّصِیْبَۃٌ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ - اُولٰٓئِکَ عَلَیْھِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّھِمْ وَرَحْمَۃٌ - وَاُولٰٓئِکَ ھُمُ الْمُھْتَدُوْنَ ٥

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन-ज़-ल अला अब्दि हिल किता-ब लि-युख़्रि-ज बिही मिन ज़ुलुमातिल जह्लि इला नूरिल अिलिम वल हुदा० अह्मदुहू सुब्हा-न-हू व अश्कुरुहू व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर० व अश्हदुअल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहूव अश्हदु अन-न नबी यना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसू-लि-क मुहम्मदिंव व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़क़द क़ालल्लाहु तआला व ल-नब्लुवन्नकुम बिशैइम मिनल ख़ौफ़ि वल जूअि व नक़्सिम मिनल अम्वालि वल अन्फ़ुसि वस्स-म-राति व बश्शिरिस्साबिरीन-ल्लज़ी-न इज़ा असाबत हुममुसीबतुन क़ालू इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअून० उलाइ-क अलैहिम स-ल-वातुम मिर्रब्बिहिम व रह्मः व उलाइ-क हुमुल मुह्तदून०

भाइयो ! दुनिया में ऐसा कौन शख़्स है, जिसे किसी न किसी मुसी-बत, तक्लीफ़ और किसी न किसी रंज से दोचार होना न पड़ा हो। इन मुसीबतों और तक्लीफ़ों का ताल्लुक़ कभी इंसान की जान से होता है और कभी उस के माल से। वह बीमार पड़ता है, उसके क़रीबी अज़ीज़, दोस्त

और घर वाले बीमार होते हैं और जिस का वक़्त आ जाता है, वह जुदाई का दाग़ देकर हमेशा के लिए रुख़्सत भी हो जाता है, उसके कारोबार में नुक़्सान आता है, खेतियां उजड़ जाती हैं, आन की आन में लाखों की दौलत ख़ाक में मिल जाती है, देखते-देखते बड़े-बड़े खाते-पीते, दौलत और हुकूमत के मालिक, दाने-नाने को मुहताज हो जाते हैं। ज़िंदगी के ये उतार-चढ़ाव इतने आम हैं कि कोई शख़्स इनसे बचा हुआ नहीं, हरएक को उन से वास्ता पड़ता है, किसी को कम, किसी को ज़्यादा।

एक तरफ़ यह सूरतेहाल है। दूसरी तरफ़ हमारा ईमान है कि हमारा मालिक बे-इंतिहा रहमत वाला है। उसने ख़ुद फ़रमाया है कि 'रब्बु-कुम ज़ू रह्मतिव्वासिअः' (तुम्हारा रब बड़ी फैली रहमत वाला है), आगे फ़रमाया, 'क-त-ब रब्बुकुम अला नफ़्सिहिर्रह्मः' (तुम्हारे रब ने अपने ऊपर रहमत को लाज़िम कर लिया है) एक और जगह इर्शाद फ़रमाया 'रह्मती वसिअत कुल-ल शैइन' (मेरी रहमत हर चीज़ पर छायी हुई है) फिर ये मुसीबतें कैसी ? और ये मुसीबतें उस के बाग़ियों के हिस्से में आएं तो एक बात भी है, लेकिन उसका नाम लेने वाले और उसका कलिमा पढ़ने वाले क्यों इन मुसीबतों का शिकार हों ? यह एक सवाल है जो न जानने की वजह से ज़ेहनों में उभर सकता है। असल में यह सवाल उस वक़्त पैदा होता है, जब इन्सान की नज़रों से इस दुनिया की ज़िंदगी की असल हैसियत ओझल हो जाती है।

दोस्तो ! हम सब का ईमान है कि दुनिया की यह ज़िंदगी आख़िरी ज़िंदगी नहीं है, बल्कि एक हमेशा रहने वाली ज़िंदगी की एक मंज़िल है। यह हमेशा रहने वाली ज़िंदगी मौत के बाद शुरू होती है। मौत से पहले हर इन्सान को जो मोहलत मिली हुई है, वह तो हक़ीक़त में आगे आने वाली ज़िंदगी के लिए कमाई का ज़माना है। दुनिया की इस ज़िंदगी में अगर किसी को नेमतें ही नेमतें मिल रही हैं, तो ज़रूरी नहीं कि वे उस के किसी अच्छे काम का बदला या उस के हक़ में इनाम हों और अगर कोई मुसीबतों और दुखों में पड़ा हुआ है, तो यह नहीं कहा जा सकता कि यह उस के लिए कोई अज़ाब या उस के जुर्मों की सज़ा ही है, यहां तो जो हालत है, वह इम्तिहान और जांच के लिए है। किसी को नेमतें दे कर आज़माया जाता है, तो किसी का इम्तिहान सख़्तियों और मुसीबतों में लिया जाता है। अल्लाह तआला अगर अपने बंदों पर कभी कुछ मुसीबतें डालता है या उन्हें उस के हुक्म से कोई जिस्मानी तक्लीफ़ या माली

नुक़सान पहुंचता है, तो इस लिए नहीं कि वह इन्हें हलाक करना चाहता है या वह इन्हें अज़ाब देता है, बल्कि इस की ग़रज़ कभी तंबीह होती है और कभी इम्तिहान। कभी बंदों पर मुसीबतें इस लिए नाज़िल होती हैं कि शायद उन की वजह से उन के दिल नर्म हो जाएं, वे अल्लाह को याद करें उस की तरफ़ रुजू हों, अपनी ग़लतियों को महसूस करें और अपनी ग़लत रविश से बाज़ आ जाएं और कभी ये मुसीबतें इस लिए आती हैं कि अल्लाह तआला उन के सब्र और उन के तवक्कुल और उन के एत-माद की जांच फ़रमाता है। वह यह देखना चाहता है कि बंदे में बर्दाश्त की ताक़त कहां तक है। उस के ईमान और अल्लाह पर उस के भरोसे और एतमाद की हालत क्या है। इन मुसीबतों से बंदे के ईमान में तरक़्क़ी होती है, अल्लाह पर उस का भरोसा बढ़ता है और उस के अन्दर साबित क़दमी की ताक़त और ज़्यादा हो जाती है। खास तौर पर जब ये मुसीबतें दीन की राह पर चलने में पेश आती हैं और जब ईमान और इस्लाम के तक़ाज़े पूरा करने के नतीजे में मोमिन को तक्लीफ़ें सहनी पड़ती हैं, तो उसका ताल्लुक़ अल्लाह तआला से और ज़्यादा मज़बूत हो जाता है। अल्लाह से मुहब्बत और उस के साथ ताल्लुक़ बनाने में तरक़्क़ी होती है। जितना ही बन्दा अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी रहता है, उतना ही उसके अन्दर ईमानी कैफ़ियत बढ़ती है। जब वह समझ लेता है कि जो कुछ है वह मेरे मौला की तरफ़ से है और मैं जिस हाल में रखा गया हूं, वह मेरे आक़ा ही का फ़ैसला है, तो फिर मुसीबतें आसान ही नहीं हो जाती हैं, बल्कि उन में एक क़िस्म की लज़्ज़त पैदा होने लगती है। यह वह मंज़िल है, जो अल्लाह के मुक़र्रब बंदों को हासिल होती है।

भाइयो ! मुसीबतों में सब्र करना और अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी रहना बड़ी नेमत है, ऐसी बड़ी नेमत कि इस से ज़्यादा और किसी नेमत के बारे में सोचा नहीं जा सकता। इसकी बदौलत बंदे को खताएं माफ़ होती हैं। आखिरत में उस के दर्जे बुलंद होते हैं और एक सब्र करने वाले मोमिन के लिए मुसीबतें असल में रहमत की वजह बन जाती हैं। कुछ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि अगर दुनिया में मुसीबतें न होतीं तो शायद हम आख़िरत में बिल्कुल खाली हाथ होते। मोमिन के लिए तो राहत हो या मुसीबत, दोनों में भलाई ही भलाई है। राहत मिलने पर वह शुक्र अदा करता है और अपने आप को अल्लाह तआला की और ज़्यादा रहमतों का हक़दार बनाता है और मुसीबत पड़ने पर वह सब्र करता है और अपने

मालिक के दरबार से इस सब्र पर बड़ा इनाम पाता है।

भाइयो ! मुसीबतें किस पर नहीं आतीं ? क्या जो लोग अल्लाह के दीन से उदासीन और अल्लाह के बाग़ी हैं, उन्हें जिस्मानी और माली तक्लीफ़ें नहीं पहुंचतीं ? क्या वे बीमारियां नहीं झेलते ? माली नुक़्सान नहीं बर्दाश्त करते ? और हद यह कि क्या वे अपनी ग़लत रविश पर चलने की खातिर तरह-तरह की सख़्तियां और मुसीबतें नहीं उठाते ? फिर भला जिसके सामने इस ज़िंदगी से आगे कोई और ज़िंदगी ही न हो, जिसकी नज़रें मौत के उस पार तक जाती ही न हों, वह अगर घबरा जाए और वह अगर फ़ौरी मिलने वाले फ़ायदों की खातिर कुछ ग़लत काम कर बैठे तो यक़ीनन उससे कुछ ना-मुम्किन नहीं। लेकिन जो शख़्स इस दुनिया की ज़िंदगी को एक और हमेशा रहने वाली ज़िंदगी का एक दीबाचा समझता हो, जिसकी नज़र में ज़िंदगी की यह मोहलत सिर्फ़ कमाई का ज़माना हो और जो यहां खेती इसी लिए बो रहा हो कि उसे आख़िरत में यह खेती काटना है, उसकी नज़र में भला यहां के ऐश व आराम और यहां की मुसीबतों की जगह ही क्या हो सकती है ? वह तो हर वक़्त यही समझता है कि हम सब अल्लाह के हैं, जो कुछ हम को पेश आ रहा है, वह अल्लाह की मर्ज़ी और उसके हुक्म से पेश आ रहा है और आख़िरकार एक न एक दिन हमें अपने उसी मालिक के हुज़ूर में हाज़िर होना है। वह हमारी तमामबातों को जानता है। वह हर सख़्ती और हर मुसीबत के वक़्त यही कहते हैं कि 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन० (हम सब अल्लाह ही के हैं और हमें लौटकर उसी की तरफ़ जाना है।)ऐसे लोगों के लिए बड़ी ख़ुश-ख़बरी है और यक़ीनन वे आख़िरत में बड़े दर्जे पाएंगे। अल्लाह तआला की रहमत उनके शामिले हाल होगी और ऐसे ही लोग हक़ीक़त में सही रास्ते पर हैं।

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُاللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ ـ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ـ

اِنَّهٗ هُوَالْغَفُوْرُالرَّحِیْمُ ـ

अक़ूलु क़ौली हाज़ा व अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अजमईन० वस्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

# शुक्र

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ - اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ۔
وَلَهُ الْحَمْدُ فِى الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ - وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ - اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ۔
وَاَشْكُرُهٗ - وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ - وَاَشْهَدُ
اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ - اَرْسَلَهُ اللّٰهُ لِهِدَايَةِ الْخَلْقِ -
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ - وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ
تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا - اَمَّا بَعْدُ -

अलहम्दु लिल्लाह० अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि व लहुल हम्दु फ़िल ऊला वल आख़िरः वहुवल हकीमुल ख़बीर० अह्मदुहु सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अश्हदु अल्लाहाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अर्स-ल-हुल्लाहु लि हिदायतिल ख़ल्क़ि०

अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिन व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरन अम्मा बअदु०

अज़ीज़ो और दोस्तो ! शुक्र सारी इबादतों की रूह है। शुक्र का असल मतलब यह है कि आप दिल से किसी के एहसान को मानें, उसकी कृपा को याद करें, उस का एहसान मान कर मन में उस के प्रेम को जगह दें, ज़ुबान से उस की मेहरबानियों का ज़िक्र करें और अमल से यह सबूत दें कि आप कोई काम या बात अपने एहसान करने वाले की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कभी न करेंगे।

इंसान पर सबसे बड़ा करम अल्लाह का है, जो कुछ मिलता है, उसी से मिलता है। उसी ने इंसान को वजूद बख़्शा, वही इस ज़िंदगी का सामान जुटाता है, उसी के करम से वे तमाम अनगिनत इन्तिज़ाम हो रहे हैं, जिनमें से अगर एक भी न होता तो इंसान का वजूद ही मुम्किन न होता। इंसान ज़रा आंखें खोलकर देखे और ज़रा ग़ौर करे तो उसे यह महसूस

होगा कि उसका रौंगटा-रौंगटा अल्लाह तआला के एहसान में जकड़ा हुआ है। हर सांस जो अंदर जाती है, ज़िंदगी के लिए ताज़ापन लाती है और उस पर एक शुक्र वाजिब है और हर सांस जब बाहर आती है, ज़िंदगी को बाक़ी रखने की वजह बनती है और इस पर भी शुक्र अदा होना चाहिए। इसी तरह हर-हर सांस हमसे एहसान मानने की मांग करती है। और ज़ाहिर है कि सांस लेने वाली इस हवा के अलावा कितनी अनगिनत नेमतें हैं जिनसे हम हर-हर लम्हा फ़ायदा उठाते रहते हैं। ग़रज़ यह कि इंसान की ताक़त नहीं है कि वह अल्लाह तआला के एहसानों को सोच भी सके, फिर इन एहसानों का पूरा-पूरा शुक्र अदा करना किस तरह बस की बात हो सकती है।

भाइयो ! अल्लाह तआला से ताल्लुक़ को मज़बूत बनाना हम सब का मक़्सद है। इस मक़्सद के लिए हम तमाम जिस्मानी और माली इबादतों पर पूरा ध्यान देते हैं, लेकिन हमारी इन तमाम कोशिशों में जान उसी वक़्त पड़ सकती है, जब हम बार-बार शुक्र के जज़्बे को अपने अन्दर बढ़ाएं। शुक्र ही तमाम इबादतों की रूह है। इस जज़्बे के बग़ैर अल्लाह तआला से ताल्लुक़ में मज़बूती नहीं पैदा हो सकती।

अल्लाह तआला की नेमतों के मुक़ाबले में बन्दे की तरफ़ से जो रवैया होना चाहिए, उसे हर वक़्त सामने रखिए। जो दिल अल्लाह तआला की एहसानमंदी के जज़्बे से खाली है, वह कभी ईमान पर जम नहीं सकता और जिस बन्दे को अपने आक़ा के एहसानों का एहसास नहीं है, वह कभी उस की वफ़ादारी पर क़ायम नहीं रह सकता।

भाइयो ! सबसे पहली बात तो यह है कि हम दिल से अल्लाह तआला के एहसानों को मानें, यह यक़ीन रखें कि असल करम करने वाला सिर्फ़ वही है, किसी दूसरे को यह अख़्तियार ही कहां है कि वह किसी पर कुछ करम कर सके। ज़ाहिरी शक्ल में अगर हमें कोई चीज़ किसी दूसरे की तरफ़ से पहुंचती है, तो असल में यह भी अल्लाह तआला की मंशा और उसके हुक्म से ही पहुंचती है।

तीसरी और सबसे अहम बात यह है कि जब आपके दिल में किसी की एहसानमंदी का एहसास होगा और आपका दिल उसकी शुक्रगुज़ारी के जज़्बे से भरा होगा, तो फिर यह मुम्किन ही नहीं कि आप उसकी मंशा और मर्ज़ी के मुताबिक़ काम न करें। आप मजबूर हैं कि अपने आप को उसकी ताबेदारी में दे दें और जानते-बूझते एक क़दम भी उसकी ख़ुशी के

ख़िलाफ़ न उठाएं। यह कैसे हो सकता है कि आप दिल से किसी के एह-सानों को मानें, ज़ुबान से उसके इनामों का ज़िक्र भी करते रहें, लेकिन आप उसकी ताबेदारी व फ़रमांबरदारी करने के लिए तैयार न हों। इताअत और ताबेदारी तो एहसानमंदी की सबसे पहली पहचान है। जब आप सही तरीक़े पर अल्लाह तआला के एहसानों को महसूस फ़रमाएंगे और दिल से उसका शुक्र अदा करेंगे, तो यह हो ही नहीं सकता कि आप जानते-बूझते उसकी नाफ़रमानी करें। यह कहां की एहसानमंदी है कि आप ज़ुबान से तो किसी की तारीफ़ करते रहें, लेकिन जब वह किसी काम के करने का हुक्म दे तो आप टस से मस न हों और उसकी इताअत के लिए कोई सरगर्मी न दिखाएं और इसे तो आप सोच भी नहीं सकते कि आप पर एहसान तो किसी के हों और आप ताबेदारी और फ़रमांबरदारी उसके मुख़ालिफ़ों की करते रहें, यह तो एहसानमंदी नहीं, खुली हुई बग़ावत है।

अज़ीज़ो ! इस एतबार से हम सब को अपनी एक-एक हरकत और अपने एक-एक काम की जांच करते रहना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि आख़िरत के मैदान में हमारी गिनती अल्लाह के शुक्रगुज़ार बन्दों में होने के बदले उसके ना-शुक्रों में हो जाए और हमारे ख़िलाफ़ यह इलज़ाम साबित हो जाए कि हमने अल्लाह की दी हुई नेमतों को उस की मंशा के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया। अल्लाह के हुज़ूर उसका शुक्रगुज़ार बन्दा होकर पेश होना सबसे बड़ी कामियाबी है। जो कोई इस तरह पेश हो गया, वही मुराद को पहुंचा। ऐसा ही बन्दा उसके अज़ाब से बचा रहेगा और उसकी हमेशा रहने वाली नेमतों का हक़दार होगा। अल्लाह तआला बड़ा क़द्रदान है, वह अपने किसी शुक्रगुज़ार को अपनी रहमतों से महरूम न रखेगा। उस का इर्शाद है—مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ۝

मा यफ़अलुल्लाहु बिअज़ाबिकुम इन शकर्तुम व आमन्तुम वकानल्-लाहु शाकिरन अलीमा०

'आख़िर अल्लाह को क्या पड़ी है कि तुम्हें ख़ामख़ाह सज़ा दे। अगर तुम शुक्रगुज़ार बन्दे बने रहो और ईमान की रविश पर चलो। अल्लाह बड़ा क़द्रदान है और सबके हाल को जानता है।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ عِبَادَ اللّٰهِ وَاشْكُرُوا لَهٗ وَاَخْلِصُوا لَهُ الْعَمَلَ وَاَطِيْعُوا
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ٥

फ़त्तक़ुल्लाह अिबादल्लाह वश्कुरू लहू व अख़्लिसू लहुल अ-म-ल व अतीअुल्ला-ह व रसूलहू ल अल्लकुम तुर्हमून०

---

# सच्चाई

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰی۔ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِی الْاَرْضِ وَمَا بَیْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰی۔ اَعْطٰی كُلَّ شَیْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ
هَدٰی۔ وَبَعَثَ الرُّسُلَ بِالنُّوْرِ وَالْهُدٰی۔ لِیَجْزِیَ الَّذِیْنَ اَسَاءُوْا بِمَا
عَمِلُوْا وَیَجْزِیَ الَّذِیْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰی اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
لَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰی وَالْمَثَلُ الْاَعْلٰی وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهُ
الْكَرِیْمُ۔ الصَّادِقُ الْاَمِیْنُ۔ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَخَاتَمَ النَّبِیِّیْنَ صَلَّی اللّٰهُ
عَلَیْهِ وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا كَثِیْرًا۔ وَعَلٰی اَصْحَابِهِ الَّذِیْنَ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ
عَلَیْهِ فَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِیْلًا۔ اَمَّا بَعْدُ۔ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ۔
یٰاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِیْنَ ٥

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ख़-ल-क़ल अर-ज़ वस्समावातिल उला० लहू माफ़िस्समावाति व माफ़िल अर्ज़ि व मा बै-न-हुमा व मा तह्तस्सरा० अअ़ता कुल-ल शैइन ख़ल्क़हू सुम-म हदा व ब-अ-सर्रु सु-ल बिन्नूरि वल-हुदा लियज्ज़ियल्लज़ी-न असाऊ बिमा अमिलू व यज्ज़ियल्लज़ी-न अह्सनू बिल हुस्ना अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लाहु-व लहुल अस्माउल हुस्ना वल म-स-लुल अअ़ला व अश्हदुअन-न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहुल करीम० अस्सादिक़ुल अमीन० सय्यिदिल मुर्सलीन व ख़ा-त-मन्नबीयी न सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा व अला अस्हाबि हिल्लज़ी-न स-द-क़ू मा आ-ह-दुल्ला-ह अलैहि फ़मा बद्दलू तब्दीला० अम्मा बअ़्दु फ़ अअ़ूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम० या ऐयुहल्लज़ी-न आ-म-नुत्तक़ुल्ला-ह कूनू मअस्सादिक़ीन०

बुज़ुर्गो और दोस्तो ! आप में से कौन ऐसा होगा जो यह न जानता हो कि सच्चाई मोमिन की बुनियादी सिफ़त है। सच्चाई एक ऐसी ख़ूबी है कि जिसके पसंदीदा होने में किसी को इख़्तिलाफ़ नहीं। हद यह है कि जो लोग इस्लाम की तालीमात को नहीं जानते, वे भी उसे हर इंसान के लिए हद से ज़्यादा पसंदीदा और चाही जाने वाली ख़ूबी मानते हैं। नबी

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है—

إِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِي إِلَى الْبِرِّ وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِي إِلَى الْجَنَّةِ.

इन्नस्सिद्-क़ यह्दी इललबिर्रि व इन्नलबिर-र यह्दी इलल जन्नति०

(सच्चाई इंसान की रहनुमाई नेकी की तरफ़ करती है और नेकी इंसान को जन्नत तक ले जाती है।)

इसके खिलाफ़ झूठ इंसान को बुराइयों की तरफ़ ले जाता है, बुराइयां उसे दोज़ख़ तक पहुंचा देती हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही का इर्शाद है—

إِنَّ الْكِذْبَ يَهْدِي إِلَى الْفُجُورِ وَإِنَّ الْفُجُوْرَ يَهْدِي إِلَى النَّارِ.

इन्नल किज़-ब यह्दी इलल फ़ुजूरि व इन्नल फ़ुजू-र यह्दी इल-न्नारि०

भाइयो ! सच्चाई की इस अहमियत को जहां तक जानने का ताल्लुक़ है, हम में से हर शख्स अच्छी तरह जानता है, न किसी को इस बारे में शुब्हा है और न इंकार। लेकिन इसके बावजूद यही वह बुनियादी अख्लाक़ी खूबी है, जिस की तरफ़ से इन्तिहाई ग़फ़लत की जाती है। ऐसा महसूस होता है कि शायद लोगों के ज़ेहनों से यह एहसास ही उठ गया है कि उन्हें भी अपने अन्दर यह खूबी पैदा करनी है। अगर दूसरी सच्चाई से हट कर कोई राह अपनाएं, तो हममें कोई ऐसा नहीं जो इस पर ना-पसंदीदगी ज़ाहिर न करे, लेकिन खुद अपने हाल पर नज़र करने की तौफ़ीक़ कम ही लोगों को नसीब होती है। माली नफ़ा-नुक़्सान के मौक़े पर मामूली फ़ायदों के लिए झूठ बोल देना तो एक आम बात है ही। इसके अलावा कितने ही लोग सिर्फ़ तफ़रीह और महफ़िल की गर्मी के लिए ग़लत बातें बयान करते रहते हैं। ज़रा तवज्जोह के साथ अगर हालात का जायज़ा लें तो अंदाज़ा होगा कि अब तो झूठ शायद बुराई की फ़िहरिस्त से निकल कर एक फ़न की हैसियत अख्तियार कर चुका है। इस बारे में हमारे अख़बार, हमारे क़ौमी लीडरों के बयान, हद यह कि खुद हुकूमत की सतह पर ज़िम्मेदारों की बातें, सबसे ऐसा महसूस होता है कि शायद सच और झूठ का फ़र्क़ कहीं बाक़ी ही नहीं रहा है। लोग सिर्फ़ उन मस्लहतों को सामने रखते हैं, जिन्हें उन्होंने अपने ज़ेहन से गढ़ लिया है और सिर्फ़ बे-फ़ायदे उन्हें अज़ीज़ हैं, जिन्हें उन्होंने अपने लिए नफ़ाबख्श समझ लिया है।

भाइयो ! इन हालात में मोमिन की ज़िम्मेदारी बहुत बढ़ जाती

है। जो लोग एक तरफ़ इस बात का इक़रार करते हैं कि उन्होंने अल्लाह के आख़िरी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपना रहनुमा तस्लीम कर लिया है और जिन्हें इस बात का भी दावा है कि उन्हें एक दिन संसारों के रब के हुज़ूर हाज़िर होने का यक़ीन है, वे कैसे यह हिम्मत कर सकते हैं कि अपनी मौजूदा रविश पर ग़ौर न करें और अपने हालात को ठीक करने की तरफ़ ध्यान न दें ? यह सही है कि माहौल का बहाव इंसान को अपने साथ बहा ले जाता है और हालात के तहत उस पर ग़फ़लतें छा जाती हैं, लेकिन मोमिन की बुनियादी ख़ूबी तो यही है कि वह बार-बार अल्लाह की तरफ़ पलटता है, अपने हालात का जायज़ा लेता है और अपने सुधार के लिए पूरी-पूरी कोशिश करता है। अगर इंसान के ज़ेहन में यह बात बैठ जाए कि असल नफ़ा यह है, जो उसे आख़िरत में मिल जाए और सही मानी में कामियाब वह है कि जो क़ियामत के दिन कामियाबी हासिल कर ले तो वह महसूस करेगा कि उसके अन्दर हालात से निबटने के लिए एक नयी ताक़त पैदा हो गयी है और वही चीज़ें, जिनका छोड़ना बड़ा कठिन नज़र आता है, उनसे दामन बचा लेना कोई बड़ी बात नहीं रह जाती। आज हालत यह है कि हम छोटे-छोटे फ़ायदों के लिए और मामूली मस्लहतों को सामने रखकर झूठ बोल देते हैं, ताल्लुक़ात के दबाव में आकर झूठी गवाही देने से भी परहेज़ नहीं करते और यह बात तो एक आर्ट कीहैसियत अख़्तियार कर चुकी है कि कारोबारी लोग किस तरह झूठे इन्दिराजात करें और अपने लेन-देन की फ़र्ज़ी शक्लें ख़ुद गढ़ें। अगर यह कहा जाए कि इस वक़्त ख़रीद व फ़रोख़्त और दूसरे तमाम माली लेन-देन के कामों में ग़लत बयानी और फ़र्ज़ी कार्रवाई करना असल मामले का एक हिस्सा बन चुका है, तो शायद ग़लत न हो। इसी लानत का यह नतीजा है कि हम क़ल्ब के इत्मीनान और आपसी भरोसे, अच्छी राय और ताल्लुक़ात में इख़्लास की नेमतों से बिल्कुल महरूम हो गए हैं। हर शख़्स दूसरों को शक से देखता है और डरता रहता है कि मालूम नहीं, कहां धोखा खा जाए। ज़रा ग़ौर करने की बात है कि क्या यह हालत एक अज़ाब नहीं ? आपसी भरोसा, ख़ुलूस और एक दूसरे के बारे में अच्छे ख़्याल, यही तो वह दौलत है, जिसे किसी समाज की सही पूंजी कहा जा सके। आज हम सब इससे महरूम हैं। आप यह कहेंगे कि बेशक हालात कुछ ऐसे ही हैं, लेकिन अब तंहा हमारे किए क्या हो सकता है ? यह सही है कि कुछ आदमियों की कोशिशों से हालात एक दम बदल नहीं सकते, लेकिन हमारे सोचने का अन्दाज़ कुछ

भौर ही होना चाहिए।

पहली बात तो यह है कि हम हर इस्लाही कोशिश को इज्तिमाई मस्अले की हैसियत में लेने से पहले उसे इन्फ़िरादी मस्अले की ही हैसियत से देखें। अगर ऐसा करेंगे तो इतना ही सोचेंगे कि हम खुद किस तरह इस मुसीबत से अपनी जान बचाएं और किस तरह अपने अंजाम और आखिरत को सामने रख कर अपने मामले को ठीक करें। इस तरह से सोचने में हमें बहुत-से माद्दी फ़ायदों से हाथ धोना पड़ेगा, लेकिन ज़ाहिर है कि जिसकी नज़र आखिरत तक फैली हुई हो, उसके लिए माद्दी फ़ायदों की क़ुर्बानी कब कोई मंहगा सौदा है?

दोस्तो और अज़ीज़ो! सख्त हालात में जो शख्स अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से सही रविश अख्तियार करता है, उसका अज्र उतना ही ज़्यादा है। फिर एक और बात भी आप अपने सामने रखें कि असल में ज़िंदगी में सबसे बड़ी अहमियत इंसान के क़ल्बी इत्मीनान ही की है। एक ऐसा शख्स, जो अगरचे किसी बड़े कारोबार का मालिक न हो और न उसके पास बहुत ज़्यादा माल व दौलत हो, लेकिन उसे क़ल्ब का इत्मीनान मिला हुआ हो, तो क्या आपकी नज़र में वह उस शख्स से ज़्यादा बेहतर नहीं है, जिसके पास अगरचे दौलत के ढेर हैं, लेकिन वह दिल के इत्मीनान की नेमत से महरूम है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है, 'इन्नस्सिद्-क तमानियतुन' (सच्चाई से इत्मीनाने खातिर नसीब होता है।)

हम में से हर शख्स का निजी तजुर्बा है कि जब कभी कोई काम सच्चाई से हट कर अख्तियार किया जाता है, तो फ़ौरन तबियत में एक खटक और परेशानी महसूस होती है। इंसान इस खटक को दबा देता है और उसके खिलाफ़ मुख्तलिफ़ क़िस्म के फ़ायदों या मस्लहतों को सामने रखकर अपने काम के लिए ज़ेहनी तौर पर रास्ता निकाल लेता है। लेकिन अगर हम अपने दिल की गहराइयों में इस बात को टटोलें कि क्या वाक़ई जो इत्मीनान और सुकून सच के अपनाने में हासिल होता है, क्या सच से हट कर भी हम उसका कोई हिस्सा अपने मन में महसूस कर सकते हैं? आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ताकीद फ़रमायी है कि—

دَعْ مَا يُرِيْبُكَ إِلَىٰ مَا لَا يُرِيْبُكَ

दअ़ मा युरीबु-क इला मा ला युरीबु-क

'जो चीज़ मन में खटक पैदा करे, उसे छोड़ कर वह बात अख़्तियार करो, जिसमें कोई खटक महसूस न हो।' आप का इर्शाद है 'अल-किज़्बु रीबतुन' (झूठ परेशानी और तरद्दुद की वजह है।)

बुज़ुर्गो और दोस्तो ! सच्चाई की अहमियत का एक रुख़ तो यह है जो आपके सामने आया। इसके अलावा एक और पहलू से यह मस्अला इंतिहाई तवज्जोह का मुहताज है। आज सूरत यह है कि मुसलमानों ने अपने अमल और तरीक़े से अल्लाह के दीन का बहुत कुछ ग़लत परिचय कराया है। अब हमसे हर उस शख़्स की, जो दीन के साथ मुहब्बत रखता है, यह शख़्सी ज़िम्मेदारी है कि वह अपने मामलों और तरीक़ों से किसी ऐसी बात को ज़ाहिर न होने दे, जो इस्लामी तालीम के ख़िलाफ़ हो, बल्कि उसके ख़िलाफ़ हमारी कोशिश यह होना चाहिए कि हमारी बातें और हमारे मामले सब इस बात की गवाही दें कि वाक़ई हम अल्लाह पर ईमान रखते हैं और आख़िरत की जवाबदेही का हमको यक़ीन है।

आपने यह वाक़िआ सुना होगा कि जब हिरक़्ल के पास इस्लामी दावत का पैग़ाम पहुंचा और उसने एक अरबी क़ाफ़िले के सरदार अबू सुफ़ियान से बात-चीत करने के बाद अपना इत्मीनान करना चाहा, तो उस दावत के हक़ होने पर उसे इस लिए इत्मीनान हुआ कि आंहज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों को ख़ुदा की तौहीद और नमाज़ वग़ैरह की तालीमात के साथ सच्चाई, पाकदामनी और रिश्तेदारों का हक़ अदा करने की ताकीद फ़रमाते हैं। कुछ ऐसी ही सूरत इस वक़्त भी है। आज इस्लामी दावत का परिचय हमारे मौजूदा माहौल में इसी तरह हो सकता है कि इस्लाम पर ईमान रखने वाले अपने क़ौल और अमल से उन तमाम बुनियादी अख़्लाक़ी ख़ूबियों का सबूत दें, जो इस्लाम उनके अन्दर पैदा करना चाहता है—

رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا - وَآخِرُ دَعْوَانَا

أَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

रब्बना आतिना मिल्लदुन-क रह्मतंव-व हय्यिअ लना मिन अम्रिना र-श-दा व आख़िरु दअ्वाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०

# ईमान की कसौटी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ۔ اَلْاَحَدِ الْفَرْدِ الصَّمَدِ الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ۔ وَلَمْ یَکُنْ لَّهٗ کُفُوًا اَحَدٌ۔ اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ وَاَشْکُرُهٗ۔ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِیَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ اَلَّذِیْ دَعَا النَّاسَ اِلٰی تَوْحِیْدِ رَبِّهِمْ وَهَدٰهُمْ اِلَی الْاِسْلَامِ۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا۔

اَمَّا بَعْدُ۔ فَقَدْ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی، قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ وَقَالَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ۔ مَنْ اَحَبَّ لِلّٰهِ وَاَبْغَضَ لِلّٰهِ وَاَعْطٰی لِلّٰهِ وَمَنَعَ لِلّٰهِ فَقَدِ اسْتَکْمَلَ الْاِیْمَانَ۔

अल-हम्दु लिल्लाहिल वाहिद० अल-अ-ह-दिल फ़र्दिस्स-म-दिल्लजी लम यलिद व लम यूलद० व लम यकुल्लहू कुफ़ुवन अ हद० अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अश्हदुअल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबी-य-ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू० अल्लजी दअअन्ना-स इला तौहीदि रब्बिहिम व हदाहुम इलल इस्लाम० अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही अस्हाबिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़क़द क़ालल्लाहु तआला क़ुल इन-न सलाती व नुसुकी व मह्या-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन० ला शरी-क लहू व बिज़ालि-क उमितु व अना अव्वलुल मुस्लिमीन० व क़ालन्नबीयु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मन अहब-ब लिल्लाहि व अब्ग़-ज़ लिल्लाहि व अअ्ता लिल्लाहि व म-न-अ लिल्लाहि फ़ क़दिस्तक्मलल ईमानि०

बुज़ुर्गो और दोस्तो ! अभी जो एक आयत मैंने तिलावत की है, उस का तर्जुमा यह है कि 'ऐ मुहम्मद ! कहो, मेरी नमाज़ और मेरी बन्दगी का हक़ अदा करने की तमाम शक्लें और मेरा जीना और मेरा मरना सब कुछ अल्लाह के लिए है, जो सारी कायनात का मालिक है, उस

का कोई शरीक नहीं और इसी का मुझे हुक्म दिया गया है और सबसे पहले मैं उस की फ़रमांबरदारी में सरे तस्लीम झुकाता हूं।'

इसके बाद मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद आपके सामने रखा है। इस का मतलब है कि जिसने किसी से दोस्ती और मुहब्बत की तो अल्लाह के लिए और दुश्मनी की तो अल्लाह के लिए और किसी को दिया तो अल्लाह के लिए और किसी से रोका तो अल्लाह के लिए, उसने अपना ईमान कामिल कर लिया यानी वह पूरा मोमिन हो गया।

भाइयो! क़ुरआन की इस आयत से मालूम होता है कि इस्लाम का तक़ाज़ा यह है कि इंसान अपनी बंदगी को और अपने जीने और मरने को सिर्फ़ अल्लाह के लिए ख़ालिस कर ले और अल्लाह के सिवा किसी को उसमें शरीक न करे यानी न उस की बन्दगी अल्लाह के सिवा किसी और के लिए हो और न उस का जीना और मरना अल्लाह के सिवा किसी और ग़रज़ और मक़सद के लिए हो। फिर इसी की जो तश्रीह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लफ़्ज़ों में आपके सामने आयी, इससे मालूम होता है कि आदमी की मुहब्बत और दुश्मनी और अपने दुनिया के मामलों में इस का लेन-देन सब ख़ालिस ख़ुदा के लिए होना चाहिए, जिस किसी में यह बात नहीं, उस का ईमान ही मुकम्मल नहीं। ईमान की तक्मील के लिए यह ख़ूबी ज़रूरी है। इस ख़ूबी में जैसी कमी होगी, आदमी का ईमान भी उसी दर्जे में अधूरा होगा।

भाइयो! आम तौर पर यह समझा जाता है कि आदमी के ईमान और इस्लाम के लिए यह बात ज़रूरी नहीं, जिसका ज़िक्र मैंने अभी आप के सामने किया है, लेकिन यह ग़लतफ़हमी इस वजह से पैदा होती है कि लोग फ़िक़्ही और क़ानूनी इस्लाम को सामने रखते हैं। उस हक़ीक़ी ईमान को सामने नहीं रखते, जो अल्लाह के नज़दीक एतबार के क़ाबिल है। फ़िक़्ही और क़ानूनी इस्लाम में आदमी के दिल को नहीं देखा जाता और न देखा जा सकता है। वहां तो सिर्फ़ ज़ुबानी क़रार को देखा जाता है और इस बुनियाद पर उस के मोमिन और मुस्लिम होने का फ़ैसला कर दिया जाता है, लेकिन यह चीज़ सिर्फ़ दुनिया के लिए है, उस से इतना ही फ़ायदा उठाया जा सकता है कि हम किसी शख़्स के बारे में यह फ़ैसला करें कि क्या वह मुसलमान समाज का एक मेम्बर है या नहीं और इसी बुनियाद पर हम इसके साथ मुसलमानों का-सा मामला करने पर मजबूर हैं, लेकिन आख़िरत में इंसान की निजात और उस का मुस्लिम और मोमिन

क़रार दिया जाना और उस का अल्लाह के मक़्बूल बन्दों में गिनती होना इस क़ानूनी इक़रार पर मुनहसर नहीं है। वहां असल चीज़ आदमी के दिल की हालत है। वहां तो पहले देखा जाएगा कि क्या वाक़ई उसने दिल से इक़कार किया था और अपनी ख़ुशी से अपने आप को पूरी तरह अल्लाह के हवाले कर दिया था ? क्या उसका जीना और मरना, उसकी तमाम दौड़-धूप, उस की वफ़ादारियां और उस की इताअत और बन्दगी अल्लाह के लिए थी या किसी और के लिए ? अगर यह सब कुछ अल्लाह के लिए होगा, तो वह वाक़ई मुस्लिम और मोमिन क़रार पाएगा, लेकिन अगर किसी और के लिए होगा, तो वह न मुस्लिम क़रार पाएगा और न मोमिन। इस एतबार से जिस में जितनी कमी होगी, उस का ईमान भी उतना ही अधूरा और उस का इस्लाम भी उतना ही कच्चा गिना जाएगा। वहां यह न देखा जाएगा कि दुनिया में लोग उसे क्या समझते थे और ईमान और इल्लाम के एतबार से उसे क्या जगह देते थे।

भाइयो ! अल्लाह के यहां तो क़द्र सिर्फ़ उस चीज़ की है कि जो कुछ उसने आप को दिया है, वह सब कुछ आप ने उस की राह में लगा दिया या नहीं ? अगर आपने ऐसा कर दिया, तो आप को वही हक़ दिया जाएगा जो वफ़ादारों और बन्दगी का हक़ अदा करने वालों को दिया जाता है और अगर आप ने किसी चीज़ को ख़ुदा की बन्दगी से अलग करके रखा है, तो फिर आप का यह इक़रार झूठा समझा जाएगा कि आप ने अपने आप को बिल्कुल ख़ुदा के हवाले कर दिया था मानी यह कि आप मुस्लिम थे।

क़ानूनी या फ़िक़्ही इस्लाम और हक़ीक़ी इस्लाम का जो फ़र्क़ मैंने अभी आप के सामने रखा, उसके एतबार से आख़िरत में तो मुख़्तलिफ़ नतीजे सामने आएंगे ही, लेकिन अगर आप ग़ौर करें तो आप देखेंगे कि बड़ी हद तक दुनिया में भी उसके नतीजे मुख़्तलिफ़ ही होते हैं। दुनिया में जो मुसलमान पाए जाते हैं, उनको दो क़िस्मों में तक़्सीम किया जा सकता है।

एक क़िस्म के मुसलमान वे हैं जो ख़ुदा और उसके रसूल का इक़रार करते हैं। इस्लाम को एक मज़हब की हैसियत से क़ुबूल करते हैं, मगर वे अपने इस मज़हब को अपनी कुल ज़िंदगी का सिर्फ़ एक हिस्सा और एक शोबा ही बना कर रखते हैं। उन का हाल यह है कि एक तरफ़ तो इस्लाम के साथ अक़ीदत है, इबादतें हैं, तस्बीह है, अल्लाह का ज़िक्र है, रसूल के साथ मुहब्बत का दावा है, खाने-पीने और कुछ समाजी मामलों में परहेज़-

गारी है, भलाई के कुछ काम हैं, ग़रज़ यह कि वह सब कुछ है, जिसे आम तौर पर मज़हबी ज़िंदगी कहा जाता है मगर ज़िंदगी के इस शोबे के अलावा उन की ज़िंदगी के किसी पहलू में उन के मुस्लिम होने की हैसियत नज़र नहीं आती। वे मुहब्बत करते हैं, तो वह अपने नफ़्स के लिए या अपने फ़ायदों या अपनी क़ौम या अपने मुल्क के लिए मुहब्बत करते हैं और अगर दुश्मनी या लड़ाई करते हैं, तो वह भी ऐसे ही किसी दुन्यवी या नफ़्सानी ताल्लुक़ की बुनियाद पर करते हैं, उन के कारोबार, उन के लेन-देन, उनके मामले, उन के रात-दिन के मशग़ले, उनकी सियासी दौड़-धूप, और उनकी तमाम दिलचस्पियां बड़ी हद तक दीन से आज़ाद होती हैं और उन के सामने दुनिया के फ़ायदों के अलावा और कुछ नहीं होता। वे अपने बाल-बच्चों की परवरिश और तालीम व तर्बियत का इन्तिज़ाम करते हैं या अपने ख़ानदान या मुहल्ले वालों से ताल्लुक़ क़ायम करते हैं या अपने मुहल्ले वालों के साथ बर्ताव करते हैं या एक ज़मींदार, एक ताजिर, एक हाकिम, एक मुलाज़िम, एक सिपाही, एक पेशेवर ग़रज़ यह कि किसी हैसि-यत में भी वे सामने आते हैं तो यह महसूस नहीं होता कि उनका ताल्लुक़ किसी ऐसे दीन से है, जिसकी मांग ही यह है कि इंसान अपनी किसी हैसि-यत को भी दीन को अलग न रखे। ये लोग अपने इज्तिमाई इदारे भी क़ायम करते हैं, कुछ तहरीकों में भी हिस्सा लेते हैं, सियासत, रहन-सहन, तालीम और ज़िंदगी के दूसरे मैदानों में भी दिखायी देते हैं, लेकिन किसी जगह वे यह महसूस नहीं होने देते कि उन का ताल्लुक़ किसी दीन से है और वे जो कुछ कर रहे हैं, उन में वह दीन क्या रहनुमाई करता है।

दूसरी क़िस्म के मुसलमान वे हैं, जो अपनी पूरी शख़्सियत और अपने पूरे वजूद को इस्लाम के अन्दर पूरी तरह दे दें, उन की सारी हैसि-यतें इस हैसियत में गुम हो जाएं कि वे मुसलमान हैं। वे बाप हों तो मुस-लमान की हैसियत से, बेटे हों तो मुसलमान की हैसियत से, शोहर या बीवी हों, तो मुसलमान की हैसियत से। वे सोचें तो मुसलमान की हैसियत से, कुछ काम करें तो मुसलमान की हैसियत से, किसी से मिलें तो मुसलमान की हैसियत से, किसी से करें तो मुसलमान की हैसियत से, उनके ख़्यालात, उन की राएं, उन की पसन्द और ना-पसन्द, उन की दोस्ती और दुश्मनी सब कुछ इस्लाम के ताबेअ हो। वे सोचें तो इस्लामी ज़ेहन से सोचें, वे देखें तो मोमिन की नज़र से देखें, वे कमाएं तो हक़ीक़ी मुसलमान की हैसि-यत से कमाएं और वे ख़र्च करें तो इस्लाम की हिदायत के मुताबिक़ ख़र्च

करें, न उनकी मुहब्बत इस्लाम से आज़ाद हो और न दुश्मनी। वे मिलें तो इस्लाम के लिए मिलें, वे लड़ें तो इस्लाम के लिए लड़ें, किसी को दें तो इस लिए दें कि इस्लाम का हुक्म ही यह था, किसी से रोकें तो इस लिए रोकें कि उन का इस्लाम यही कहता है। फिर उन की यह हैसियत सिर्फ़ इन्फ़िरादी न हो, बल्कि उन की इज्तिमाई भी सरासर इस्लाम पर क़ायम हो। ग़रज़ यह कि वे अपने इस इक़रार की पूरी और मुकम्मल तस्वीर हों कि हमने इस्लाम को अपनी पूरी ज़िंदगी के लिए एक मुकम्मल दीन की हैसियेत से क़ुबूल कर लिया है।

भाइयो! आपने देखा कि ये दो क़िस्म के मुसलमान एक-दूसरे से कितने मुख़्तलिफ़ दिखायी देंगे। क़ानूनी हैसियत से दोनों मुसलमान ही हैं, एक ही उम्मत में शामिल हैं और दोनों को आप मुसलमान ही कहेंगे, लेकिन तारीख़ गवाह है कि पहली क़िस्म के मुसलमानों ने कभी कोई ऐसा काम नहीं किया जो इस्लाम की तारीख़ में ज़िक्र के क़ाबिल या फ़ख़्र करने के क़ाबिल हो। ऐसे मुसलमानों का वज़न कभी महसूस नहीं किया गया। उन के वजूद का नोटिस न कभी अपनों ने लिया, न ग़ैरों ने। इस्लाम को आज जो गिरावट का मुंह देखना पड़ा है, वह ऐसे ही मुसलमानों की वजह से नसीब हुआ है। ऐसे मुसलमानों ने अपने फ़ायदे के लिए इस्लाम को हमेशा नुक़्सान पहुंचाया है, ऐसे ही मुसलमानों की वजह से ज़िंदगी के निज़ाम की बाग-डोर मुसलमानों के हाथों से निकल कर ग़ैरों के क़ब्ज़े में गयी हैं। ऐसे मुसलमानों ने हमेशा कुफ़्र के हाथ मज़बूत किए हैं। ऐसे मुसलमान सिर्फ़ एक महदूद मज़हबी ज़िंदगी को बस समझ बैठे। उन्होंने यह समझ लिया कि अगर मस्जिद में सज्दे की इजाज़त है तो बस इस्लाम आज़ाद है, इस से ज़्यादा हमें क्या चाहिए, लेकिन भाइयो! अच्छी तरह सुन रखिए कि ख़ुदा को ऐसे मुसलमान हरगिज़ नहीं चाहिए हैं। उसने अपने अंबिया को ज़मीन पर भेजा, उसने अपनी किताबें नाज़िल फ़रमायीं, उसने खुले-खुले हुक्म दिए कि मुसलमानों को क्या करना चाहिए और क्या न करना चाहिए, तो इस लिए नहीं कि उसे इस क़िस्म के मुसलमान बनाना मत्लूब थे, बल्कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम के तशरीफ़ लाने और अल्लाह की तरफ़ से किताबें नाज़िल होने की एक ही ग़रज़ थी और वह यह कि यहां इस क़िस्म के मुसलमान बनाए जाएं, जिनका ज़िक्र दूसरी क़िस्म के मुसलमानों के तहत मैंने आप के सामने किया है।

भाइयो और अज़ीज़ो! आज मेरी ये बातें सुन कर आप ताज्जुब न

करें और यह न समझें कि मैं कोई ग़ैर-ज़रूरी बोझ आप के ज़ेहन पर डाल रहा हूं। जो बात मैंने आप के सामने रखी है, वह कुछ इस्लाम ही के साथ मख़्सूस नहीं है। ज़रा सोचिए तो सही, दुनिया में किसी नज़रिए का झंडा भी ऐसे पैरुओं के हाथों कभी बुलंद हुआ है, जिन्होंने अपने नज़रिए के इक़रार और उस के उसूलों की पाबन्दी को अपनी कुल ज़िंदगी के साथ सिर्फ़ एक दुमछल्ला बना रखा हो और जिन का जीना और मरना अपने नज़रिए के सिवा किसी और चीज़ के लिए हो? आज भी आप देख सकते हैं, एक नज़रिए के हक़ीक़ी और सच्चे पैरो सिर्फ़ वही लोग होते हैं, जो दिल व जान से उस के वफ़ादार है, जिन्होंने अपनी पूरी शख़्सियत को गुम कर दिया है और जो अपनी किसी चीज़, यहां तक कि अपनी जान और अपनी औलाद तक को उस के मुक़ाबले में ज़्यादा अज़ीज़ नहीं रखते। दुनिया का हर नज़रिया ऐसे ही पैरो मांगता है और उस के बग़ैर न किसी नज़रिए को आज तक ग़लबा नसीब हुआ है और न हो सकता है।

अल-बत्ता इल्लाम में और दूसरे नज़रियों में फ़र्क़ यह है कि दूसरे नज़रिए अगर इंसान से यह मांग करते हैं कि वह उनके लिए फ़ना हो जाए और पूरी वफ़ादारी से उस का साथ दे तो उन्हें इस का कोई हक़ नहीं है कि वे इंसान से यह मांग करें। उनकी यह मांग ग़लत और बेजा है, लेकिन इस के ख़िलाफ़ अगर इल्लाम इंसान से इस की मांग करता है तो यह उस का हक़ है। इस्लाम जिस ख़ुदा के लिए इंसान से वफ़ादारी और इताअत की मांग करता है, वह हक़ीक़त में इस का हक़ रखता है कि वह इंसान से यह मांग करे। आसमान और ज़मीन में जो कुछ है, वह अल्लाह ही का है, इंसान ख़ुद अल्लाह का है, इंसान के पास जो कुछ है और जो कुछ इंसान के अन्दर है, सब अल्लाह का है। इंसान जिन चीज़ों से काम लेता है, वे सब भी अल्लाह की हैं, इस लिए इंसाफ़ और अक़्ल का तक़ाज़ा है कि जो कुछ अल्लाह का है, वह अल्लाह ही के लिए हो, दूसरों के लिए या ख़ुद अपने फ़ायदे और अपने नफ़्स की पसन्द और ना-पसन्द के लिए उसे क़ुर्बान करना असल में ख़ियानत है और इस शक्ल के सिवा कि ख़ुद अल्लाह ही इस की इजाज़त दे, इंसान के लिए जायज़ नहीं कि वह इन चीज़ों में अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ कुछ घट-बढ़ करे। ख़ुदा के लिए इंसान जो कुछ क़ुर्बान करता है, वह तो असल में अपना हक़ अदा करता है, बल्कि कहना चाहिए कि 'हक़ तो यह है कि हक़ अदा न हुआ।'

भाइयो! ईमान और इस्लाम का यह मेयार, जो आज क़ुरआन

मजीद की एक आयत और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस की रोशनी में हमारे सामने आया, हमारे लिए जरूरी है कि हम सब अपने आप को इस पर परख कर देखें और अपना इम्तिहान लें कि हम इस पर कहां तक पूरे उतरते हैं। भाइयो! इस बारे में हम सब कोताह हैं, सब में ख़ामियां और कमज़ोरियां हैं, लेकिन इस से मायूस होने की ज़रूरत नहीं। हमारा काम यह है कि हम पहले सही बात को समझें और फिर उस के मुताबिक़ अपने अन्दर तब्दीली पैदा करने की कोशिश करें। सब से बड़ी ग़लती यह है कि इंसान अपनी किसी ग़लत जगह पर मुत्मइन हो जाए। इस जगह को सही साबित करने के लिए दलीलें निकाले और अपने आप को और दूसरों को यह यक़ीन दिलाने की कोशिश करे कि जो कुछ हम कर रहे हैं, वही ठीक है। इस तरह इस्लाम के एक किसी मामूली हिस्से पर मुत्मइन हो कर बैठ जाना, असल में अपनी दीनी हैसियत को ख़तरे में डालना है, हमें हर आन इस बात पर नज़र रखना चाहिए कि क्या वाक़ई हमने अपनी इताअत और बन्दगी को ख़ुदा ही के लिए ख़ास कर दिया है और नफ़्स की बन्दगी, ख़ानदान की, बिरादरी की, दोस्तों की, सोसाइटी की और हुकूमत की बन्दगी हमारी ज़िंदगी से बिल्कुल ख़ारिज हो चुकी है? क्या वाक़ई हमने अपनी पसन्द और ना-पसन्द को सरासर अल्लाह की रिज़ा के ताबेअ कर दिया है? क्या हम हर मामले में पहले यह सोच लेते हैं कि इस बारे में अल्लाह की मर्ज़ी क्या है? क्या हम जिस किसी की ताईद करते हैं, ख़ुदा के लिए करते हैं? और जिस को रद्द करते हैं, सिर्फ़ ख़ुदा के लिए करते हैं? हमारी नफ़रत और मुहब्बत में, हमारे फ़ायदों और हमारे नफ़्स का कोई हिस्सा शामिल तो नहीं होता? हमें कोशिश करना चाहिए कि हमारी हर जद्दोजेहद में सिर्फ़ एक ही बात हमारे सामने रहे और वह यह कि हम अल्लाह की रिज़ा हासिल करना चाहते हैं। अगर अल्लाह की ख़ुश्नूदी हासिल करने की यह तमन्ना हम अपने दिल में पाते हैं, तो इस पर हमें अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए और ज़्यादा की दुआ करना चाहिए, लेकिन अगर यह कैफ़ियत मौजूद नहीं है तो उसे पैदा करना चाहिए और अपने कामों के रुख़ और अपने सोचने के अन्दाज़ को बदलना चाहिए। ऐसी सूरत में हमारे लिए ज़रूरी है कि हम अपनी सारी चिन्ताएं छोड़ कर पहले इस कमी को दूर करने की चिन्ता करें। इस कमी को दूर किए बग़ैर हम आख़िरत की फ़लाह और निजात नहीं पा सकते। दुनिया में हम चाहे कुछ भी हासिल कर लें और वक़्त के

इक़्तिदार से हमें कैसे ही एज़ाज़ क्यों न मिल जाएं, लेकिन सब कुछ करके हासिल हो जाने से उस नुक़्सान को पूरा नहीं किया जा सकता, जो इस कमी की वजह से हमें आख़िरत में उठाना पड़ेगा। लेकिन अगर हमने यह कमी पूरी कर ली तो चाहे हमें दुनिया में कुछ भी न मिले, हम हरगिज़ टोटे में न रहेंगे।

भाइयो ! एक आख़िरी बात और भी है, जिस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। यह कसौटी जो आज मैंने आप के सामने रखी है, इस लिए नहीं है कि आप दूसरों को इस पर परखें और उनके बारे में ये फ़ैसले करने लग जाएं कि वे किस दर्जे के मुसलमान हैं, बल्कि यह कसौटी इस लिए है कि हम में से हर शख़्स इस पर अपने आप को परखे और आख़िरत की अदालत में हाज़िर होने से पहले ख़ुद अपने अन्दर का खोट मालूम कर ले और उसे दूर करने की कोशिश करे।

भाइयो ! आप को इस की ज़रा परवाह न करनी चाहिए कि दूसरे आप के बारे में क्या राय रखते हैं और वे आपको किस नज़र से देखते हैं। आप को तो फ़िक्र सिर्फ़ यह होना चाहिए कि कल वह ख़ुदा जिसका इक़्तिदार सब इक़्तिदारों से ऊपर है और जो दिलों की छिपी हुई बातें भी जानता है, आप की क्या हैसियत क़रार देगा ? जिस की नज़र मौत के उस पार तक जाती हो, वह तो जो कुछ भी सोचेगा, इसी के मुताबिक़ सोचेगा कि उसने आने वाली और हमेशा रहने वाली ज़िंदगी के एतबार से क्या नफ़ा कमाया है और क्या नुक़्सान। सोचने के अन्दाज़ की यही वह तब्दीली है, जिस से मोमिन की पूरी दुनिया बदल जाती है और यही वह तब्दीली है कि जब इज्तिमाई हैसियत से उम्मत क़ुबूल कर लेती है, तो फिर अल्लाह तआला मोमिनों के हाथों हक़ को ग़ालिब और बातिल को मग़लूब फ़रमाता है।

وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ـ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى
سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ ـ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِىْ وَ
لَكُمْ اَجْمَعِيْنَ ـ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّءُوْفُ الرَّحِيْمُ ط

व आख़िरु दअ़वाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन० वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिदिल मुर्सलीन मुहम्मदिंव-व आलिही व अस्हाबिही अज्मईन० अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अज्मईन० इन्नहू हुवल बर्रु र रऊफ़ुर्रहीम०

# ईमान की ताक़त

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ۔
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ۔ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ۔ اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ وَاَشْكُرُهٗ عَلٰى نِعَمِهِ الَّتِىْ
لَا تُحْصٰى۔ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَلَا نِدَّ وَلَا
مُعِيْنَ۔ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ اَلنَّبِىُّ الْكَرِيْمُ۔
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا
كَثِيْرًا۔

اَمَّا بَعْدُ۔ فَقَدْ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى۔ يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِئُوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ
وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ۔ هُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى
وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ۔

अल-हम्दु लिल्लाहि ग़ाफ़िरिज़्ज़म्बि व क़ाबिलित्तौबि शदीदिल अिक़ाबि ज़ित्तौलि ला इला-ह इल्ला हु-व इलैहिल मसीरु० अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू अला निअमिहिल्लती ला तुह्सा व अश्हदु अल्ला-इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व ला निद-द व ला मुअीन० व अश्हदु अन-न नबी-य-ना मुहम्मदन अब्दहू व रसूलहू अन-नबीयुल करीम० अल्ला-हुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़क़द क़ालल्लाहु तआला, युरी दू-न लि युत्फ़िऊ नू-रल्लाहि बिअफ़वाहि हिम वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही वलौ करिहल काफ़िरून हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल हुदा व दीनिल हक़्क़ि लि युज़्हि-र-हू अल-द्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल मुश्रिकून०

भाइयो ! अल्लाह का दीन एक रोशनी है, ऐसी रोशनी, जिस से तमाम जिहालतों का अंधेरा दूर होता है, यही रोशनी इंसान को ज़िंदगी की सही राह दिखाती है। इस रोशनी से महरूमी के बाद सिवाए ठोकरें खाने के और कुछ नहीं मिलता। जिस किसी ने इस रोशनी से आंखें बन्द

कीं, वह यक़ीनन मंज़िल से भटक गया। इंसान अपनी आख़िरी ज़िंदगी में सही मंज़िल पर पहुंच ही नहीं सकता, जब तक वह उस रास्ते पर न चले, जिस की तरफ़ अल्लाह का दीन रहनुमाई करता है।

भाइयो! यह एक हक़ीक़त है, लेकिन कम ही लोग हैं, जो इस हक़ीक़त को मानते हैं, बहुत से लोग हैं, जो अल्लाह के दीन से बेज़ार हैं, उन्हें उस की रोशनी फैलने से परेशानी होती है, बिल्कुल उसी तरह, जैसे सूरज की रोशनी से चमगादड़ को परेशानी होती है। वह अगर कहीं ज़रा सी भी रोशनी अल्लाह के दीन की देखते हैं, तो बे-चैन हो जाते हैं। इस रोशनी के ख़िलाफ़ उन के दिलों में ऐसा तास्सुब बैठ गया कि वे इसके बारे में कुछ ग़ौर करने और सोचने के लिए भी तैयार नहीं होते। वे चाहते हैं कि इस चिराग़ को अपनी फूंकों से बुझा दें, अपने गुस्से और नफ़रत का इज़्हार कर के लोगों को उस की तरफ़ बढ़ने से रोक दें। कितने ही लोग हैं, जिन्हें अल्लाह ने कुछ ज़ाहिरी इक़्तिदार और ताक़त देकर आज़माइश में डाल रखा है। उन्हें यह धोखा हो गया है कि उन के ऊपर कोई ख़ुदा ही नहीं है, वे अपनी ताक़त और अपने इक़्तिदार के नशे में मस्त हैं। जो मुंह में आता है, कह बैठते हैं, जो जी चाहता है कर गुज़रते, और चूंकि उन्हें अभी कुछ कहने और कुछ करने की मोहलत हासिल है, इस लिए वे इस धोखे में पड़ गये हैं कि वही सब कुछ हैं।

दोस्तो! ऐसे लोगों की बातें आप के कानों में भी पड़ती हैं। ये बातें आप के ईमान की आज़माइश हैं, कमज़ोर और बोदे ईमान वाले लोग ऐसे मौक़े पर डर जाते हैं, वे इक़्तिदार की पेशानी की शिकनों को बर्दाश्त नहीं कर पाते, फ़ौरन सोचने लगते हैं कि हमारी कौन-सी रविश इन शिकनों को दूर कर सकती है और फिर उसी रुख़ पर मुड़ जाते हैं। यह बड़ी महरूमी की निशानी है, ऐसा वही कर सकता है, जिस के दिल ने अभी ईमान की लज़्ज़त का लुत्फ़ उठाया ही नहीं, लेकिन अल्लाह के जिन बन्दों का ईमान मज़बूत है, वे ऐसी बातें सुन कर और जम जाते हैं, उन के ईमान में कुछ ज़्यादा ताक़त और क़ूवत पैदा हो जाती है। उन्हें अल्लाह पर और ज़्यादा भरोसा और एतमाद हो जाता है। उन के दिलों में आख़िरत की कामियाबी की आरज़ू करवटें लेने लगती हैं और अल्लाह की ख़ुश्नूदी हासिल करने की तड़प और ज़्यादा बढ़ जाती है, वह हर गर्म और सर्द का मुक़ाबला करने के लिए तैयार हो जाते हैं। मस्लहतें और अंदेशे उन के सामने भी आते हैं, उन्हें भी ज़माने की नीच और ऊंच समझायी

जाती है। बाल-बच्चों की ज़िम्मेदारियों और रोज़ी की उलझनों का सवाल उन के सामने भी आता है, लेकिन वह साफ़ कह देते हैं कि आखिर हमारा जुर्म बताओ क्या है, वह कौन-सा ग़लत काम है, जो हमने अख्तियार किया है और जिसे छोड़कर हम लोगों की ख़ुश्नूदी हासिल करने की फ़िक्र करें। क्या यह जुर्म है कि हम एक अल्लाह को अपना आक़ा मानें ? क्या यह जुर्म है कि हम सिर्फ़ अल्लाह की इताअत को क़ुबूल करें और उसके खिलाफ़ हर इताअत से मुंह मोड़ लें ? क्या यह जुर्म है कि हम इस ज़िंदगी से ज्यादा उस आने वाली ज़िंदगी की फ़िक्र करें जो हमेशा रहने वाली है ? और क्या यह भी जुर्म है कि हम दुनिया के हर लीडर और रहनुमा के पीछे चलने से इंकार कर दें और सिर्फ़ अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़िन्दगी के हर मामले में अपना रहनुमा मान लें ? अगर हमारा यही रवैया लोगों को ना-पसन्द है, तो फिर हम इक़रारी मज्रिम हैं। हमें अपना यह क़ुसूर तस्लीम है और हम किसी भी क़ीमत पर अपने इस जुर्म से तौबा करने के लिए तैयार नहीं। हमने अल्लाह के दीन को सोच-समझ कर अक़्लकी रोशनी में क़ुबूल किया है। हम इस सौदेबाज़ी के लिए तैयार नहीं कि कुछ काम तुम्हारी ख़ुशी के लिए कर लें और कुछ को अल्लाह की ख़ुशी के लिए करते हैं। अल्लाह का दीन तो पूरी ज़िंदगी का दीन है। हमें तो हुक्म ही यह मिला है कि इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ। अल्लाह का शुक्र है कि हम ने यही फ़ैसला किया है कि पूरे के पूरे इस्लाम में दाख़िल होकर रहेंगे। जहां तक बन पड़ेगा, कोई काम अल्लाह की मर्ज़ी के खिलाफ़ न करेंगे। हमारा जीना और हमारा मरना, सब कुछ अल्लाह के लिए होगा, क्योंकि इस के बग़ैर हम उस हमेशा रहने वाली ज़िंदगी में कामियाबी हासिल नहीं कर सकते।

भाइयो ! ईमान की यह कैफ़ियत अल्लाह की सबसे बड़ी नेमत है। जिस दिल ने इस क़िस्म के ईमान की लज़्ज़त पा ली, उसने सब कुछ पा लिया। ईमान की यही वह रोशनी है, जिसे कोई नहीं बुझा सकता। अल्लाह तआला का वायदा है कि वह इस रोशनी को और ज़्यादा चमकाएगा। उसकी चमक को पूरी तरह फैलाएगा, चाहे काफ़िर उसको देखकर कितना ही ना-पसन्द करें। उसके फैलने और बढ़ने का मदार उनकी पसन्द और ना-पसन्द पर नहीं है, बल्कि उसका मदार ईमान वालों के ईमानी ताक़त पर है।

दोस्तो ! अल्लाह का दीन दुनिया में मग़लूब बनकर रहने के लिए नहीं आया है। अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुनिया में भेजा। आपके ज़रिए दुनिया को आखिरी हिदायत मिली, जो ज़िंदगी के तमाम गोशों पर हावी है। आप के ज़रिए अल्लाह का दीन अल्लाह के बन्दों पर पहुंचाया, वह दीन जो इंसान के तमाम मस्अलों का हल है, वह दीन जो दुनिया और आखिरत की मुकम्मल कामियाबी की ज़मानत देता है, वह दीन जिसके होते इंसान को किसी दूसरी रहनुमाई की ज़रूरत नहीं। यह दीन, ईमान व अख्लाक़ और इबादतों और लेन-देन के मामलों से लेकर हुकूमत और सियासत तक ज़िंदगी के तमाम मामलों में मुकम्मल रहनुमाई करता है। अल्लाह का यह दीन आया ही इसलिए है कि दूसरे तमाम दीनों पर ग़ालिब होकर रहे। इस निज़ाम के होते कोई दूसरा निज़ाम न चले। अब अगर कोई चाहता है कि अल्लाह का दीन उसकी पसन्द और ना-पसन्द का ताबेअ होकर रहे और दीन के नामलेवा सिर्फ़ उन हदों में दीन का नाम ले सकें, जिनमें वह इजाज़त दे तो यह बात दीन के मिज़ाज के खिलाफ़ है और अगर कोई दीन को इन सांचों में ढालना चाहता है तो असल में वह अल्लाह का नहीं, बल्कि दूसरों का वफ़ादार है और उसके सामने आखिरत नहीं, बल्कि दुनिया का फ़ायदा है।

भाइयो ! इस बारे में अल्लाह तआला का साफ़ इर्शाद है कि अल्लाह ने अपना दीन सब दीनों पर ग़ालिब करने के लिए उतारा है और इस दीन को ग़ालिब ही बनकर रहना चाहिए, चाहे यह बात मुश्रिकों को कितनी ही ना-पसन्द हो।

भाइयो! यह हमारी कम-नसीबी है कि आज हम अल्लाह के दीन को तमाम दीनों पर ग़ालिब नहीं देख रहे हैं। यह हमारी अपनी खराबियां और खामियों का फल है। आज दीन का नाम लेने वालों ने खुद अपनी ज़िंदगियों को दीन की ज़िम्मेदारी से आज़ाद कर लिया है, फिर वे किस तरह दीन का ग़लबा देख सकते हैं। अब तो हममें से हर शख़्स को जिसे दीन अज़ीज़ है, खुद यह फ़ैसला करना चाहिए कि वह अपनी ज़िंदगी की हद तक दीन को ग़ालिब रखेगा। जानते-बूझते कोई ऐसा काम न करेगा जो अल्लाह के दीन की हिदायतों के खिलाफ़ हो और इस बात की हरगिज़ परवाह नहीं करेगा कि इस तरह दीन के साथ उस का ताल्लुक़ किस को पसन्द है और किस को ना-पसन्द। मोमिन के सामने सिर्फ़ अल्लाह की

पसन्द और ना-पसन्द रहना चाहिए, दूसरों की पसन्द और ना-पसन्द से उसे क्या लेना।

بَارَكَ اللّٰهُ لِيْ وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ۔ اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ
اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ مِّنْ كُلِّ ذَنْبٍ فَاسْتَغْفِرُوْهُ۔ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ۔

बारकल्लाहु ली व ल कुम फ़िल क़ुरआनिल अज़ीम० अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम मिन कुल्लि ज़म्बिन फ़स्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

---

# ख़ुदाई हिदायतें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ـ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتٰبَ ـ وَاَخْرَجَ
النَّاسَ بِهٖ مِنَ الْجَهْلِ وَالضَّلٰلِ ـ اِلٰی نُوْرِ الْعِلْمِ وَالْهُدٰی ـ اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ
وَاَشْكُرُهٗ ـ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ
اَنَّ نَبِیَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ـ اَرْسَلَهٗ دَاعِیًا اِلَی الْهُدٰی ـ اَللّٰهُمَّ
صَلِّ عَلٰی عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ ۚ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا
كَثِیْرًا ـ اَمَّا بَعْدُ ..

अलहम्दु लिल्लाह० अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन्ज़-ल अला अब्दि-हिल किता-ब व अख़्रजन्ना-स बिही मिनल जह्लि वज़्ज़लालि इला नूरिल अिलिम वल हुदा अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अर्स-ल-हू दाअियन इलल हुदा अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिन व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरा० अम्मा बअ़दु०

अज़ीज़ो और दोस्तो ! जब बरसात का मौसम आता है तो पहले ठंडी हवाएं चलती हैं और ख़ुशख़बरी देती हैं कि अब अल्लाह की रहमत नाज़िल होने का वक़्त आ गया है। इसके बाद पानी से लदे हुए बादल हवा के कंधे पर सवार किसी मुर्दा ज़मीन की तरफ़ बढ़ने लगते हैं। बादलों से मेंह बरसता है, मरी हुई ज़मीन ज़िंदा हो जाती है, ख़ुश्क चटयल मैदान पर हरियाली लहलहाने लगती है, तरह-तरह के फल और अनाज पैदा होने लगते हैं और इस माद्दी ज़िन्दगी का सामान जमा हो जाता है। हम देखते हैं कि जो ज़मीन अच्छी होती है, उसमें अल्लाह के हुक्म से ख़ूब फल और अनाज पैदा होता है, लेकिन जो ज़मीन ख़राब होती है, उसमें इस बारिश के बाद भी या तो कुछ पैदा नहीं होता और अगर पैदा होता भी है तो झाड़-झंकाड़। इसी तरह हवाओं का चलना, बादलों का उठना, पानी का बरसना और ज़मीन के पेट से सब्ज़ा उगना ऐसा अजीब व ग़रीब इन्ति-ज़ाम है कि उसकी तफ़्सील पर जिस क़दर ग़ौर किया जाए, उसी क़दर

यह यक़ीन बढ़ता है कि इस इन्तिज़ाम के पीछे ज़रूर ही एक सोचा-समझा मंसूबा है और इस मंसूबे का सिरा उस ज़ात के हाथ में है, जिसने सारी कायनात को पैदा किया है और जो सारी कायनात की परवरिश और देख-भाल का काम भी कर रही है।

यही हाल हमारी अख़्लाक़ी और रूहानी ज़िन्दगी का भी है, हमारी माद्दी ज़िन्दगी की तरह अल्लाह तआला ने हमारी अख़्लाक़ी और रूहानी ज़िन्दगी के लिए भी इन्तिज़ाम फ़रमाया है। इंसानों की रूहानी ज़िन्दगी मुर्दा पड़ी होती है। अख़्लाक़ की बरकतों से ज़िन्दगी महरूम हो जाती है कि अल्लाह तआला की रहमत इन्सानों की तरफ़ मुतवज्जह होती है, रसूलों के आने और वह्य के उतरने की शक्ल में रहमत के बादल उठते हैं। ख़ुदाई तालीम और हिदायतों की बारिश होने लगती है। मुर्दा पड़ी हुई इंसानियत यकायक जाग उठती है। रूहानी और अख़्लाक़ी दुनिया लहलहाने लगती है, भलाइयों और नेकियों के ख़ज़ाने उबल पड़ते हैं और दुनिया को ज़िन्दगी मिल जाती है।

लेकिन भाइयो! जिस तरह बारिश के होने से सारी बरकतें उसी ज़मीन को हासिल होती हैं, जो अच्छी और उपजाऊ होती हैं और जिसकी सलाहियतें सिर्फ़ पानी न मिलने की वजह से दबी पड़ी होती हैं। इसी तरह रिसालत और ख़ुदाई तालीम की इन बरकतों से भी वहां फ़ायदा उठाते हैं, जो हक़ीक़त में नेक होते हैं और जिनकी सलाहियतें सिर्फ़ रहनुमाई न होने की वजह से ज़ाहिर नहीं होने पातीं और दबी पड़ी रहती हैं। रहे वे लोग जो शरारतपसंद होते हैं और जिनकी तबियत में टेढ़ और नापाकी जम जाती है, तो जिस तरह ऊसर ज़मीन बारिश से कोई फ़ायदा नहीं उठाती, बल्कि पानी पड़ते ही अपने पेट के छिपे हुए ज़हर को कांटों और झाड़ियों की शक्ल में उगल देती है। इसी तरह रिसालत और ख़ुदाई रह-नुमाई के ज़ाहिर होने से उन्हें भी कोई नफ़ा नहीं पहुंचता, बल्कि इसके ख़िलाफ़ उनके अन्दर दबी हुई सारी ख़बासतें और शरारतें उभर पर पूरी तरह सामने आ जाती हैं।

भाइयो! इस मिसाल को सामने रख कर अगर दुनिया की तारीख़ पर नज़र डाली जाए, तो साफ़ समझ में आता है कि हर ज़माने में नबी के उठाए जाने के बाद इंसानियत दो हिस्सों में तक़सीम होती रही है—एक पाकीज़ा और भला हिस्सा, जिस ने रिसालत और अल्लाह की ताली-मात से फ़ायदा उठाया। अख़्लाक़ी और रूहानी एतबार से ख़ूब फला-फूला

ग्रौर कामियाबी से दो-चार हुग्रा । दूसरा दुष्ट ग्रौर नापाक हिस्सा, जिसने उस रहमत से कोई फ़ायदा नहीं उठाया, बल्कि उलटा उस के अन्दर छिपी हुई खबासत ग्रौर शरारत ग्रौर ज्यादा साफ़ हो गई ।

क़ुरग्रान पाक में ग्रल्लाह तग्राला ने इंसानी तारीख के ऐसे मोटे-मोटे वाक़िग्रों को बार-बार दोहराया है ग्रौर यह समझाया है कि रिसालत ग्रौर वह्य की शक्ल में ग्रल्लाह तग्राला की रहमत तो हमेशा ग्राती ही रही है, ग्रब यह इंसान की ग्रपनी खुशनसीबी या बद-नसीबी का सवाल है कि उसने उससे क्या ग्रसर क़ुबूल किया ग्रौर किस तरह फ़ायदा उठाया ।

हज़रत नूह ग्रलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए । ग्रपनी क़ौम को दावत दी कि भाइयो ! ग्रल्लाह की बन्दगी ग्रख्तियार करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई खुदा नहीं है । वही इबादत के लायक़ है ग्रौर उसी की इताग्रत होनी चाहिए । ग्रगर तुम ऐसा नहीं करोगे, तो मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े हौलनाक दिन के ग्रज़ाब का डर है । क़ौम के सरदारों ने यह बात सुनी तो बोले, 'तुम भटक गए । बाप-दादा के रास्ते को छोड़ बैठे । हम भला तुम्हारे कहने में क्यों ग्राने लगे ?' ग्रल्लाह के रसूल ने फिर समझाया कि नहीं बात इस तरह नहीं है । मैं यक़ीनी तौर पर संसार के रब की तरफ़ से पैग़ाम लेकर ग्राया हूं, तुम्हारा भला चाहने वाला हूं ग्रौर मुझे जिस हक़ीक़त का इल्महै, तुम इससे बे-खबर थे—लेकिन क्या हुग्रा ?

थोड़े-से नेक लोगों के सिवा क़ौम ने उन्हें झुठला दिया । नतीजा यह हुग्रा कि ग्रल्लाह ने हज़रत नूह ग्रलै० ग्रौर उनके साथियों को एक कश्ती में निजात दी ग्रौर उन लोगों को डुबो दिया, जिन्होंने खुदाई रहनुमाई से मुंह मोड़ा था ।

यही हाल क़ौमे ग्राद का हुग्रा । हज़रत हूद ग्रलैहिस्सलाम ने यही पैग़ाम उन्हें भी पहुंचाया, फ़रमाया, 'भाइयो ! ग्रल्लाह की बन्दगी ग्रख्तियार करो । उसके सिवा तुम्हारा कोई खुदा नहीं । वही इबादत के लायक़ है और उसी की इताग्रत होना चाहिए ।' क़ौम के सरदारों ने कहा, 'हम तो समझते हैं, तुम्हारी ग्रक़्ल मारी गयी ग्रौर तुम बिल्कुल झूठे हो ।' ग्रल्लाह के नबी ने फिर समझाया कि, 'भाइयो ! नहीं, मैं बे-ग्रक़्ली की बातें नहीं कर रहा हूं । मैं यक़ीनन दुनिया के रब की तरफ़ से पैग़ाम लेकर ग्राया हूं ग्रौर तुम्हारा सच्चा खैरख्वाह हूं । ग्राखिर तुम्हें इस पर ताज्जुब क्यों हो रहा है कि तुम्हारे रब ने तुम्हारी क़ौम में से ही एक शख्स को

अपना पैग़ाम देकर भेज दिया है।' यह सुन कर क़ौम के लोग बोले, 'यह खूब रही कि हम बस एक अल्लाह की इबादत करें और बाक़ी उन सब को छोड़ द, जिन की पूजा हमारे बाप-दादा से होती आयी है।' लेकिन इस इंकार का अंजाम क्या हुआ? अल्लाह का अज़ाब आया। हज़रत हूद अलैहिस्सलाम और उन के साथी बचा लिए गये और उस क़ौम की जड़ काट कर रख दी गयी, उस का कहीं नाम व निशान बाक़ी नहीं रहा।

इसी तरह क़ौमे समूद का हाल हुआ। हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने उन्हें भी यही पैग़ाम दिया कि, 'भाइयो! अल्लाह की बन्दगी अख्तियार करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई खुदा नहीं, वही इबादत के लायक़ है और उसी की इताअत होना चाहिए।' क़ौम के सरदारों ने जो बड़े बने हुए थे, कमज़ोर तबक़े के उन लोगों से जो हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आए थे, कहा, क्या, 'तुम वाक़ई यह मानते हो कि सालेह अपने रब का पैग़म्बर है?' उन्होंने जवाब दिया, 'बेशक हम उसे और उस के लाए हुए पैग़ाम को सच्चा मानते हैं'—क़ौम के सरदारों ने उन लोगों के इस जवाब को बर्दाश्त नहीं किया। नबी ने जिस ऊंटनी को मोजज़े के तौर पर उन के सामने पेश किया था, उसे मार डाला। आख़िरकार एक दहला देने वाली आफ़त की शक्ल में अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें आ लिया और हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम यह कहते हुए उस बस्ती से चले गये कि, 'लोगो! मैं ने तो अपने रब का पैग़ाम तुम्हें पहुंचा दिया और बहुत कुछ तुम्हारी खैरख्वाही की, लेकिन क्या किया जाए कि तुम्हें अपने ख़ैरख्वाह पसन्द ही नहीं हैं।'

यही हाल क़ौमे लूत का हुआ। यही हाल मदयन के रहने वालों का हुआ और इसी तरह का मामला हज़रत मूसा और फ़िरऔन के साथ हुआ। ग़रज़ यह कि इंसानी तारीख के अनगिनत वाक़िए गवाह हैं कि अल्लाह की सुन्नत हमेशा यही रही है। सब से आख़िर में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत का नतीजा भी इसी तरह बरामद हुआ। जिन में सलाहियत थी, उन्हों ने अल्लाह के रसूल की रहनुमाई से फ़ायदा उठाया। यही लोग इंसानी तारीख के चमकते हुए तारे साबित हुए और जिन्हों ने उस की रहमत से मुंह मोड़ा, उन का नाम व निशान मिटा दिया गया।

भाइयो! आज भी इंसानियत के सामने यही सवाल उठा हुआ है। एक ओर रिसालत और खुदाई तालीमों की नेमत है और अल्लाह का

शुक्र है कि यह नेमत अपनी असल हैसियत में मुर्दा इंसानियत को अख्लाक़ी और रूहानी ज़िंदगी बख़्शने के लिए मौजूद है। दूसरी ओर हिदायत व रहनुमाई की प्यासी इंसानियत है और ज़रूरत सिर्फ़ इस बात की है कि इस नेमत की क़द्र जानने वाली उम्मत का कोई गिरोह उठे और उस की रहमत की बारिश को सही तरीक़े पर इंसानियत की मुर्दा और सूखी ज़मीन तक पहुंचा दे, उस के बाद ही यह फ़ैसला हो सकता है कि अख्लाक़ और रूहानियत के एतबार से कहां-कहां उपजाऊपन मौजूद है और कौन-कौन से इलाक़े बंजर और ऊसर हैं। इंसानी तारीख़ गवाह है कि यह काम हमेशा अंबिया अलैहिमुस्सलाम से लिया गया है और उम्मते मुस्लिमा का यह शर्फ़ है कि अब क़ियामत तक यह काम इसी उम्मत से लिया जाएगा। बड़े ख़ुशनसीब हैं वे लोग, जो इस सआदत को हासिल करें और इस के लिए अपना सब कुछ लगा देने का फ़ैसला करें।

فَاتَّقُوا اللهَ عِبَادَ اللهِ۔ وَاهْتَدُوا بِهَدْيِ الرَّسُوْلِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
وَاَطِيْعُوا اللهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ۔
بَارَكَ اللهُ لِيْ وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْكَرِيْمِ۔

फ़त्त क़ुल्लाह अिबादल्लाह वह्तदू बिहद्यिर्रसूलि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व अती अुल्ला-ह वर्रसू-ल लअल्लकुम तुर्हमून० बारकल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरआनिल करीम०

# मौत की याद

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ لَہٗ مُلْکُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَھُوَ
حَیٌّ لَّا یَمُوْتُ بِیَدِہِ الْخَیْرُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ۔ اَحْمَدُہٗ سُبْحٰنَہٗ وَ
اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ۔ ھُوَ یُجِیْرُ وَلَا یُجَارُ عَلَیْہِ
اٰمَنَّا بِہٖ وَتَوَکَّلْنَا عَلَیْہِ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ صَلَّی اللّٰہُ
عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحٰبِہِ الَّذِیْنَ اَخَذُوْا بِسُنَّتِہٖ وَاقْتَدَوْا بِاَمْرِہٖ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ کُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَۃُ الْمَوْتِ
وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَکُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّۃَ
فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَیٰوۃُ الدُّنْیَا اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ۔ یٰاَیُّھَا النَّاسُ تُوْبُوْا اِلٰی رَبِّکُمْ
قَبْلَ اَنْ تَمُوْتُوْا وَبَادِرُوْا اِلَی الْاَعْمَالِ الصَّالِحَۃِ قَبْلَ اَنْ تُشْغَلُوْا۔

अलहम्दु लिल्लहिल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल-अर्ज़ि युह्यी व युमीतु व हु-व हय्युल्ला यमूतु बियदिहिल ख़ैरु व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर० अह्मदुहू 'सुब्हानहू व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शर-क लहू हु-व यजीरु व ला युजारु अलैहि आमन-ना बिही व तवक्कलना अलैहि व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिहिल्लज़ी-न अ-ख-ज़ू बिसुन्नतिही वक़्तदौ बि अम्रिही अम्मा बअ्दु फ़ अअूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़ तुल मौति व इन्नमा तवफ़्फ़ौ-न उजूर-कुम यौमल क़ियामति फ़मन ज़ुह्ज़ि-ह अनिन्नारि व उद् खिल ल जन्न-त फ़क़द फ़ा-ज़ व मल हयातु-द्दुन्या इल्ला मताअुल ग़ुरूर' या ऐयुहन्नासु फ़ तू बू इला रब्बिकुम क़ब-ल अन तमूतू व बादिरू इलल-अअ्मालिस्सालिहाति क़ब्-ल अन तुश्ग़लू०

बुज़ुर्गो और अज़ीज़ो ! मौत एक ऐसी हक़ीक़त है, जिस का इंकार न किसी ने किया है और न कर सकता है, लेकिन इस के बावजूद यह वह हक़ीक़त है, जिसे इंसान अक्सर भूला रहता है। कम ही हक़ीक़तें ऐसी होंगी, जिन की तरफ़ से इंसान ग़फ़लत बरतता हो, लेकिन मौत हम में से

कम ही लोगों को याद रहती है और कम ही खुशनसीब ऐसे हैं जो ज़िंदगी में हर क़दम इस एहसास के साथ उठाते हों कि एक दिन मरना भी है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मौत को याद रखने की ताकीद फ़रमायी है, इस लिए कि अगर इंसान को मौत याद रहे, तो वह सरकशी, जुल्म और गुनाहों से बचेगा। उस के अख्लाक़ में बुलंदी और किरदार में पुख्तगी पैदा होगी।

मौत की याद के लिए बेहतरीन वक़्त तो वह होता है जब हम अपनें में से किसी को हमेशा के लिए अपने से जुदा होते देखते हैं, और वह सारी कैफ़ियतें हमारे सामने होती हैं, जिन से बहरहाल हमें भी गुज़रना है। जनाज़ों की शिर्कत इस मक़्सद के लिए इंतिहाई मुफ़ीद हो सकती है, लेकिन इस ग़फ़लत को क्या कहिए कि अब जनाज़ों की शिर्कत भी इस मक़्सद के लिए कम ही मुफ़ीद होती है। दोस्ती के निभाने, अज़ीज़दारी के ताल्लुक़ात क़ायम रखने, मरने वाले के वारिसों पर एहसान जताने या इसी क़िस्म के किसी दूसरे समाजी दबाव की वजह से जो लोग जनाज़ों में शरीक होते हैं, उन्हें यह तौफ़ीक़ नहीं मिलती कि वे इस से मौत की याद का मक़्सद हासिल कर सकें और कोई हक़ीक़ी फ़ायदा उठा सकें। यही वजह है कि बहुत-से लोगों को आप ने देखा होगा कि जनाज़ों में शरीक भी होते हैं, मय्यत के साथ क़ब्रस्ताम तक भी जाते हैं, मिट्टी देते हैं, लेकिन इस के बावजूद इस मौक़े पर भी इधर-उधर की बातों में लगे रहते हैं और अक्सर बे-महल और फ़िज़ूल बातें करते रहते हैं। यह इस बात की निशानी है कि ज़िंदगी के मश्ग़लों ने ज़ेहन को इतना घेर लिया है कि ज़ेहन में मौत जैसी हक़ीक़त का ख्याल भी नहीं आता। आप खुद कहेंगे कि यक़ीनन यह बात इन्तिहाई तवज्जोह के क़ाबिल है और इस से हमारे एक बड़े क़ल्बी मर्ज़ का पता लगता है। अब यह आप का काम है कि आप इस मर्ज़ को दूर करने के लिए क्या कोशिश करते हैं।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ेहन की इस खराबी को दूर करने के लिए बहुत-सी हिदायतें दी हैं। खुद क़ुरआन पाक पढ़ना इस मक़्सद के लिए सब से ज़्यादा कारगर इलाज है। इस के साथ ही क़ब्रों की ज़ियारत करना भी एक असर भरा तरीक़ा है।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है—

अला फ़ज़ूरूहा फ़इन्नहा तुरिक्क़ुल क़ल-ब व तुदमिश्रुल अै-न व तुज़क्किरुल आख़िर-त व ला तक़ूलू हुज्रा०[1]

'देखो, अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत कर लिया करो, क्योंकि इस से दिल में नर्मी पैदा होती हैं, आंखें भीग जाती हैं और आख़िरत की याद ताज़ा हो जाती है और (इस मौक़े पर) फ़िज़ूल बातों से परहेज़ करना।'

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस इर्शादे गरामी की रोशनी से हमें यह हिदायत मिलती है कि क़ब्रस्तानों में जा कर हम अपने अन्दर इस कैफ़ियत को पैदा करने की कोशिश करें। यह हमारे लिए मुफ़ीद होगा। दिल की नर्मी इंसान को बहुत से भटकावों से बचाती है और आंखें जब अल्लाह के खौफ़ और मौत की याद से तर हो जाती हैं, तो फिर इंसान के लिए अल्लाह की ना-फ़रमानी की राह पर चलना मुश्किल हो जाता है। आख़िरत की याद हमारे सुधार का बेहतरीन ज़रिया है। यही वे फ़ायदे हैं जो क़ब्रस्तान जा कर हासिल होना चाहिएं, लेकिन अगर कोई शख्स क़ब्रों पर जा कर ये फ़ायदे हासिल न कर सके और फ़िज़ूल बातों में लग जाए, तो ज़ाहिर है, उस का क़ब्रों पर जाना मुफ़ीद होने के बजाए नुक़्सानदेह ही होगा। फ़िज़ूल बातों में यह भी शामिल है कि इंसान क़ब्रस्तान तो जाए, लेकिन वहां इधर-उधर की फ़िज़ूल बातों में लगा रहे या क़ब्रों पर जा कर वह हरकतें करने लगे जो अल्लाह की ना-ख़ुशी और नाराज़ी की वजह बनें। ऐसी सूरत में क़ब्रों पर जाना कभी मुफ़ीद नहीं हो सकता।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक और इर्शादे गरामी है—

فَزُوْرُوْهَا فَاِنَّ فِيْهَا عِبْرَةً

फ़ ज़ूरूहा फ़ इन-न फ़ीहा अिबरतुन[2] (क़ब्रों की ज़ियारत करो, क्यों कि इस से इब्रत हासिल होती है।)

आप जानते हैं कि इब्रत इसी का नाम है कि आदमी किसी हालत को देखे और उस से सबक़ हासिल करे, अपनी इस्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो, मिसाल के तौर पर आप किसी मशहूर और ताक़तवर हाकिम के मक़-बरे को देखें और उस वक़्त आपको यह याद आए कि एक वक़्त था कि उन की शान व शौकत के डंके बजते थे, लोग उन के नाम से कांपते थे, लेकिन

---

१. हाकिम, मुस्तदरक, २. मुस्तदरक (मुस्लिम)।

अब बे-बसी का यह हाल है कि हज़ारों मन मिट्टी के नीचे क़ब्र की ख़ाक में मिल चुके और उस वक़्त आप को यह याद आ जाए कि हर बुलंदी के लिए इसी तरह पस्ती मुक़द्दर है और हर जीव को बहरहाल इसी सच्चाई से दो चार होना है। ये और इसी तरह के बहुत से ख़्याल हैं, जो क़ब्रस्तान में जा कर आप के ज़ेहनों में उभर सकते हैं और उन से आप सबक़ ले सकते हैं।

एक और हदीस में इर्शाद फ़रमाया गया है—

كُنْتُ نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ فَزُوْرُوْهَا فَإِنَّهَا تُزَهِّدُ فِي الدُّنْيَا وَتُذَكِّرُ الْآخِرَةَ

कुन्तु नहैतुकुम अन ज़ियारतिल क़ुबूरि फ़ज़ूरूहा फ़ इन्नहा तुज़-ह्हिदु फ़िद्दुन्या व तुज़क्किरुल आख़िरः[1] (मैं ने तुम को क़ब्रों पर जाने से तुम को मना किया था। अब क़ब्रों की ज़ियारत किया करो, इस लिए कि इस से दुनिया का चाव ख़त्म हो जाता है और आख़िरत याद आ जाती है।)

एक और मौक़े पर इर्शाद फ़रमाया—

فَزُوْرُوا الْقُبُوْرَ فَإِنَّهَا تُذَكِّرُ الْمَوْتَ

'फ़ ज़ूरुल क़ु बू-र फ़इ न्नहा तुज़क्कि रुल मौत'[2] (क़ब्रों की ज़ियारत किया करो, इस से मौत याद आती है।

अज़ीज़ो और दोस्तो! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ये इर्शाद इतने वाज़ेह हैं कि इन की मौजूदगी में हर शख़्स समझ सकता है कि क़ब्रों की ज़ियारत करने के सिलसिले में सही रविश क्या हो सकती है। दुनिया का चाव और मुहब्बत और मौत को याद रखना अनगिनत ख़राबियों की जड़ है। हमारे सुधार के लिए हर वक़्त इस बात की ज़रूरत है कि हम दुनिया में इतने लथ-पथ न हो जाएं कि हमें न ख़ुदा याद आए और न अपनी मौत। इस मक़्सद को हासिल करने के लिए क़ब्रों की ज़ियारत मुफ़ीद है। हमारी इस बद-नसीबी को क्या कहिए कि हमने इस मुफ़ीद चीज़ को भी अपने लिए नुक़्सानदेह बना लिया है। कितने ही मुसलमान हैं जिन्होंने हुज़ूर सल्ल० की इस इजाज़त का सहारा लेकर क़ब्रों की ज़ियारत के ऐसे ढंग ईजाद कर लिए, जिस से ये फ़ायदे तो क्या हासिल होते, जिन के लिए हुज़ूर सल्ल० ने इतनी इजाज़त दी थी, उल्टा दीन व ईमान को

१. इब्ने माजा, २. मिश्कात,

ख़तरे में डालने वाली सैकड़ों बातें चल पड़ीं। हम में से हर शख़्स को कोशिश करना चाहिए कि वह ख़ुद अपनी ज़ात को इन ख़राबियों से बचाए रखे। दूसरों पर चाहे हमारा कोई बस न चले, लेकिन ख़ुद अपने पर तो अख़्तियार हासिल है और पहली मंज़िल यही है कि इंसान दूसरों से पहले ख़ुद अपनी ज़ात की तरफ़ मुतवज्जह हो।

भाइयो और अज़ीज़ो! क़ब्रों की ज़ियारत करने का एक पहलू तो वह है, जिस की तरफ़ इन हदीसों में इशारा मिलता है, जो अभी मैं ने आप के सामने रखीं। इन के अलावा एक पहलू और भी है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया—

"مَنْ زَارَ قَبْرَ اَبَوَيْهِ اَوْ اَحَدِهِمَا فِىْ كُلِّ جُمُعَةٍ غُفِرَ لَهٗ وَكُتِبَ بَرًّا"

मन-ज़ा-र क़ब-र अ-ब-वैहि औ अ-ह-दि हिमा फ़ी कुल्लि जुम् अतिन ग़ुफ़ि-र लहू व कुति-ब बर्रन०' (जो शख़्स हर जुमा को अपने मां-बाप या उन में से किसी एक की क़ब्र पर जाता है, उस के गुनाह बख़्श दिए जाते हैं और उस के नेक होने का फ़ैसला कर दिया जाता है।)

साथ ही फ़रमाया—

مَا الْمَيِّتُ فِى الْقَبْرِ اِلَّا كَالْغَرِيْقِ الْمُتَغَوِّثِ يَنْتَظِرُ دَعْوَةً تَلْحَقُهٗ مِنْ اَبٍ اَوْ اُمٍّ اَوْ اَخٍ اَوْ صَدِيْقٍ فَاِذَا اَلْحِقَتْهُ كَانَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا وَاِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى لَيُدْخِلُ عَلٰى اَهْلِ الْقُبُوْرِ مِنْ دُعَاءِ اَهْلِ الْاَرْضِ اَمْثَالَ الْجِبَالِ وَاِنَّ هَدِيَّةَ الْاَحْيَاءِ اِلَى الْاَمْوَاتِ الْاِسْتِغْفَارُ لَهُمْ"

मल मय्यितु फ़िल क़ब्रि इल्ला कल ग़ारीक़िल मु-त-ग़व्विसि यन्त-ज़िरु दअ्वतन तलहक़ुहू मिन अबिन औ उम्मिन औ अख़िन औ सदीक़िन फ़ इज़ा लहिक़त्हु का-न अहब-ब इलैहि मिनद्दुन्या व मा फ़ीहा व इन्नल्ला-ह तआला ल युद खिलु अला अह्लिल क़ुबूरि मिन दुआइ अह्लिल अर्ज़ि अम्सालल जिबालि व इन-न हदी-य-तल अह्याइ इलल अम्वातिल इस्त-ग़फ़ारु लहुम०

(मुर्दा क़ब्र में उस डूबने वाले की तरह है, जो फ़रियाद कर रहा हो। वह मां या बाप या भाई या दोस्त की तरफ़ से दुआ का इन्तिज़ार करता रहता है और जब उसे यह दुआ पहुंचती है तो वह उस दुआ को

१. मिश्कात,

दुनिया और उसमें की तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब रखता है और यक़ीनन अल्लाह तआला दुनिया वालों की दुआओं को पहाड़ों के पहाड़ कर के क़ब्र वालों तक पहुंचाता है। याद रहे कि दुआ-ए-इस्तग़फ़ार ज़िन्दों की तरफ़ से मुर्दों के लिए एक तोहफ़ा है।)

इन इर्शादात की रोशनी में हमें दूसरी हिदायत यह मिलती है कि हम अपने मुर्दों के लिए अल्लाह तआला से दुआ-ए-मग़फ़िरत करें और उन में मां-बाप का दर्जा सब से ज़्यादा है। जिस तरह ज़िंदगी में उन के हुक़ूक़ हम पर सब से ज़्यादा थे, इसी तरह मरने के बाद भी अगर हम उन के हक़ों का ध्यान करते हुए उनके वास्ते दुआ-ए-मग़फ़िरत का एहतिमाम करें तो यह ख़ुद हमारे लिए ख़ैर की वजह है। अल्लाह तआला हमारे गुनाहों को भी माफ़ फ़रमाएगा और हमें अपना नेक बन्दा बनने की सआदत अता फ़रमाएगा। हमें इस का एहतिमाम करना चाहिए कि हम जिन लोगों को अज़ीज़ रखते हैं या जिन बुज़ुर्गों से हमें अक़ीदत है, हम उन के लिए दुआ-ए-मग़फ़िरत करें। यही हमारी तरफ़ से उन के लिए बेहतरीन तोहफ़ा है। यह बात याद रहे कि हर शख़्स अल्लाह की रहमत और मग़फ़िरत का मुहताज है, कोई उस से बे-नियाज़ नहीं हो सकता, ख़ुद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बड़े एहतिमाम के साथ अपने लिए मग़फ़िरत की तलब फ़रमाते थे। क़ब्रों पर जाने का यह दूसरा पहलू है—

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِیْنَ ـ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِیْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِیْمَانِ ـ وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

अक़ूलु क़ौली हाज़ा व अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व ल कुम व लि साइरिल मुस्लिमीन॰ रब्बनग़्फ़िर लना व लि-इख़्वानिनल्लज़ी-न स-ब-क़ूना बिल ईमान व आख़िरु दअ्वना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन॰

———

# अल्लाह की किताब

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ - اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ
لَّهٗ عِوَجًا - كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ اَنْ
لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ - وَاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ
مَّتَاعًا حَسَنًا - اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَا رَبَّ لَنَا سِوَاهُ ط وَلَا نَعْبُدُ اِلَّآ اِيَّاهُ ط وَاَشْهَدُ اَنَّ
نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ - اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰٓى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا - اَمَّا بَعْدُ -

अल हम्दु लिल्लाह अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन-ज़-ल अला अब्दिहिल किता-ब व लम यज्अल लहू अि-व-जा किताबुन उह्किमत आयातुहू सुम-म फ़ुस्सिलत मिल्लदुन हकीमिन खबीर अल्ला तअबुदू इल्ल-ल्लाह व अनिस्तग़्फ़िरू रब्बकुम सुम-म तूबू इलैहि युमत्तिअ्कुम मताअन ह-स-ना० अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू ला रब-ब लना सिवाहु वला नअ्बुदु इल्ला ईयाहु व अश्हदु अन-न नबी-य-ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिव- व अला आलिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरा० अम-म बअ्दु।

भाइयो ! हम पर अल्लाह की नेमतें अनगिनत हैं, लेकिन हमारी नज़र में इन सब नेमतों में सबसे बड़ी नेमत उसकी भेजी हुई किताब है। यही वह रोशनी है, जो हमें ज़िंदगी की सीधी राह दिखाती है, वह राह, जिस पर चल कर हम कामियाब हो सकते हैं। इसमें जो बातें बयान की गयी हैं, वे पक्की और अटल हैं, वे एक जानकार और बा-खबर हस्ती की ओर से उतरी हैं। उस की हर बात जंची-तुली है, यह न तक़रीर का जादू है और न कल्पना भरी कविता। इसके पीछे सच्चाई ही सच्चाई है। इसमें जो कुछ बयान हुआ है, उसकी बुनियाद इल्म पर है, ऐसा इल्म, जिसके

सामने गुज़रा हुआ ज़माना, हाल और आने वाला ज़माना, सब रोशन है। कोई छोटी से छोटी चीज़ भी उसके इल्म से बाहर नहीं। इंसान की सच्ची हिदायत और उसकी सच्ची कामियाबी के लिए जो कुछ मत्लूब था, वह सब इस किताब में खोल कर बयान कर दिया गया है, इस का कोई बयान उलझा हुआ नहीं, कोई बात पेचीदा और ग़ैर-वाज़ेह नहीं।

अज़ीज़ो! इस किताब की बुनियादी दावत यह है कि इंसान अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को अपना माबूद न बनाए, सिवाए उसके किसी दूसरे की बन्दगी न करे। इबादत और इताअत सिर्फ़ उसी के लिए ख़ास है। यह किताब इंसानों को, उस सच्चे मालिक की ओर बुलाती है, जो उन का और सारी दुनिया का पैदा करने वाला है। इस किताब की दावत यह है कि लोग अपने रब से माफ़ी चाहें, अपनी ग़लतियों को महसूस करें और उसी की ओर पलट जाएं। अगर वे ऐसा करेंगे, तो इस ज़िंदगी में भी सुख पाएंगे और इसके बाद उस सदा रहने वाली ज़िंदगी में भी हमेशा का चैन और आराम उन्हीं के लिए होगा। क़ुरआन ज़िंदगी का जो नक़्शा पेश करता है, उसे अपनाया जाए और समाज की रचना उसके बताए हुए उसूलों पर की जाए, तो जब तक इंसान इस दुनिया में रहेगा, उस पर अल्लाह की नेमतें बरसेंगी, वह ख़ुशहाल और सुखी रहेगा। ज़िंदगी में अम्न और चैन नसीब होगा, ज़िल्लत और रुसवाई के बदले इज़्ज़त और बड़ाई मिलेगी।

भाइयो! दुनिया के हर पुजारी के कान में शैतान ने यह फूंक दिया है कि ख़ुदापरस्ती और सच्चाई का तरीक़ा अपनाने से आदमी की आख़िरत बनती हो तो बनती हो, पर दुनिया ज़रूर बिगड़ जाती है। उस ने यह बात दिलों में बिठा दी है कि आजकल ईमानदारी का ज़माना नहीं। अगर कोई सच्चाई, अमानत और दयानत के उसूल बरतेगा, तो ज़रूर बर्बाद हो जाएगा और यह कि ऐसे लोगों के लिए दुनिया में उपवास और तंगी के सिवा कोई ज़िंदगी नहीं है।

अल्लाह तआला इस बात को रद्द करता है। उस का इर्शाद है कि—

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً

मन अमि-ल सालिहम मिन ज़-क-रिन औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन फ़-ल-नुह्यि यन्नहू हयातन तय्यिबतन०

'जो शख़्स भी ईमान के साथ नेक अमल करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, हम उस को पाकीज़ा ज़िंदगी बसर कराएंगे।'

अल्लाह तआला का इर्शाद है कि सीधा रास्ता अपनाने से सिर्फ़ तुम्हारी आख़िरत ही नहीं, बल्कि दुनिया भी बनेगी। अगरचे मोमिन का असल मक़्सद तो आख़िरत ही है और वह इस सौदे को भी बोझ नहीं समझता कि आख़िरत के फ़ायदे के लिए वह दुनिया का सब कुछ दे डाले लेकिन अल्लाह तआला का वायदा है कि आख़िरत की तरह इस दुनिया की हक़ीक़ी इज़्ज़त व कामियाबी भी ऐसे ही लोगों के लिए है, जो सच्ची ख़ुदा-परस्ती के साथ नेक और भली ज़िंदगी गुज़ारें, जिनके अख़्लाक़ पाकीज़ा हों, जिन के मामले दुरुस्त हों, जिन पर हर मामले में भरोसा किया जा सके, जिनसे हर शख़्स भलाई की उम्मीद रखे और जिन से किसी इंसान या किसी क़ौम को किसी बुराई का अंदेशा न हो। भाइयो! अल्लाह तआला के इस वायदे को सामने रखिए, लेकिन साथ ही एक और सच्चाई भी है, जो कभी आप की नज़रों से ओझल न होने पाए।

क़ुरआन मजीद के मुताबिक़ दुनिया का साज़ व सामान दो क़िस्म का है—एक तो वह सर व सामान है, जो ख़ुदा से फिरे हुए लोगों को फ़ित्ने में डालने के लिए दिया जाता है। यह साज़ व सामान उन्हें बिल्कुल मस्त और अन्धा कर देता है, उन पर हिदायत के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं और उन्हें सीधी राह दिखायी नहीं देती। देखने में तो ऐसा लगता है, उन के हक़ में यह नेमत है, पर असल में यह उन पर आने वाले अज़ाब की सूचना है।

दूसरा वह सर व सामान है, जिसे पाकर एक मोमिन अपने ख़ुदा का और ज़्यादा शुक्रगुज़ार बनता है, वह उससे ख़ुदा और बन्दों के हुक़ूक़ अदा करता है। ख़ुदा के दिए हुए सामान पाकर वह भलाई को फैलाता है और बुराई को मिटाता है। यह ऐसी पूंजी है, जिस का फ़ायदा दुनिया से लेकर आख़िरत तक फैला हुआ है। इससे मोमिन यहां भी आराम पाता है और इसके नतीजे में उसे आख़िरत का आराम भी मिलता है।

भाइयो! ईमान और नेक अमल बहुत बड़ी नेमत है। इसी की तरफ़ मैं आप को मुतवज्जह करता हूं और इसी के अपनाने के लिए आप को दावत देता हूं—अल्लाह मुझे और आप को ईमान और नेक अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। यही इसका सबसे बड़ा करम है और यही हम इससे तलब करते हैं।

بَارَكَ اللّٰهُ لِيْ وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ۔ وَغَفَرَلِيْ وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ۔
اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ۔

बारकल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरआनिल अज़ीम० व ग़-फ़-र ली व लकुम अजमईन० इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

# शैतान का बिगाड़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ خَالِقِ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ۔ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ۔ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ
وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ۔ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا
وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَا يَاْتِيْ بِالْحَسَنٰتِ اِلَّا
هُوَ، وَلَا يَدْفَعُ السَّيِّاٰتِ اِلَّا هُوَ، عَزَّ جَارُهٗ وَجَلَّ ثَنَاءُهٗ۔ وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ هَدْيُهٗ خَيْرُ الْهَدْيِ وَاُمَّتُهٗ خَيْرُ الْاُمَمِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ ـــ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ
بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ۔ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا۔ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ
لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ۔

अल्हम्दु लिल्लाहि ख़ालिक़ि कुल्लि शैइं व-व हुवल वाहिदुल क़ह्हार० रब्बुस्समावाति वल अर्ज़ि व मा बै-न-हुमल अज़ीज़ुल ग़फ़्फ़ार० नह्मदुहू व नस्तअीनुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नुअ्मिनु बिही व न-त-वक्कलु अलैहि व नअूज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना व मिन सय्यिआति अअ्मालिना व नश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू ला याती बिल ह-स-नाति इल्लल्लाहु-व ला यद्फ़अ़ुस्सय्यिआति इल्ला हु-व अज़-ज़ जारुहू व जल-ल सनाउहू व नश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू हद्युहू ख़ैरुल हद्यि व उम्मतुहू ख़ैरुल उममि सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लम——अम्मा बअ्दु फ़-अअूज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम० या ऐयुहन्नासु इन-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुन फ़ला तग़ुर्रन्नकुमुल हयातुद्दुन्या व ला यग़ुर्रन्नकुम बिल्लाहिल ग़ुरूर इन्न-श्शैता-न लकुम अदूवुन फ़त्तख़िज़ूहु अदूवा इन्नमा यद्अू हिज़्बहू लियकूनू मिन अस्हाबिस्सअीर०

अज़ीज़ो और दोस्तो ! अपने जिस दुश्मन को आप पहचानते हैं और उसकी तद्बीरों से बा-ख़बर हो जाते हैं, उस की बुराई से अपने-आप को बचाने के लिए आप कुछ-न-कुछ शक्लें भी पैदा कर लेते हैं, लेकिन अगर दुश्मन छिपा हुआ हो और उसकी तद्बीरों का आप को पता न चले, तो आपके लिए ज़्यादा नुक़्सान उठाने का डर होता है। यह बात तो आप सब जानते हैं कि हमारा और आप का सब से बड़ा दुश्मन शैतान है, क्योंकि यह हमारी उस ज़िंदगी को बर्बाद करने के पीछे पड़ा हुआ है, जो हमेशा रहने वाली है। फिर यह दुश्मन हमारी नज़रों से छिपा हुआ है और उस की तद्बीरों का इल्म हमें कम ही हो पाता है—इंसान के लिए सबसे बड़ा मस्अला इसी दुश्मन के निशाने से अपने आप को बचाना है। यह मस्-अला कई वजह से इंतिहाई अहम बन गया है।

पहली वजह तो यह है कि इंसान अपनी नादानी और ग़फ़लत की वजह से और अपने नफ़्स की ख़्वाहिशों से मजबूर होकर अपने इस सबसे बड़े दुश्मन को मानता ही नहीं, क्योंकि यह दुश्मन उस की बर्बादी के लिए जो शक्लें तज्वीज़ करता है, उनमें इंसान के लिए बड़ी लज़्ज़त है। इन्सान का नफ़्स चाहता है कि उसे हर तरह छूट मिले, वह ज़िम्मेदारियों से भागता है। मुस्तक़्बिल और अन्जाम का सवाल उसे पसन्द नहीं। चुनांचे हमारा सबसे बड़ा दुश्मन हमारी बर्बादी के लिए जो शक्लें अपनाता है, उनमें नफ़्स की उन तमाम ख़्वाहिशों की तक्मील होती है और इस तरह यह दुश्मन बड़े इत्मीनान से अपना काम करता रहता है। आप की उंगली में वह फांस जो आपको तक्लीफ़ देती है, आप को मुतवज्जह कर लेती है कि आप उसे दूर करें, लेकिन अगर इसी फांस के लगने में आपको कुछ मज़ा आने लगे, तो फिर यह आसान काम नहीं कि आदमी उंगली के आगे पक जाने और सड़ जाने का ख़्याल करके इस मज़ा देने वाली फांस को भी दूर करने के लिए बेचैन हो जाए।

भाइयो ! हमारे दुश्मन शैतान का हाल भी कुछ ऐसा ही है। वह हमारा ऐसा छिपा हुआ दुश्मन है, जिसकी चालें बड़ी मज़ेदार हैं और जिस के मश्विरों में हमारे नफ़्स के लिए लज़्ज़तें ही लज़्ज़तें हैं। ऐसे सख़्त दुश्मन से बचने के लिए इंसान को समझ दी गई है। अल्लाह के रसूलों ने हमें शैतान की तमाम चालों से ख़बरदार कर दिया है और हमारे नफ़ा और नुक़्सान के तमाम पहलुओं को हमारे सामने रख दिया है। अब यह हमारा काम है कि हम अक़्ल से काम लें और अपने इस दुश्मन को कामियाब न

होने दें।

यों तो शैतान की चालें अनगिनत हैं और हज़ारों तरीक़ों से वह इंसान की बर्बादी का इन्तिज़ाम करता है, लेकिन अगर हम उस की चालों को बड़ी-बड़ी क़िस्मों में तक़्सीम करना चाहें, तो उसकी छः क़िस्में हो सकती हैं। उन को अच्छी तरह पहचान लेने का एक फ़ायदा यह हो सकता है कि हम उसके बिगाड़ से बचे रहने की कोशिश में कामियाब हो जाएं।

शैतान के बिगाड़ की पहली शक्ल तो कुफ़्र और शिर्क और अल्लाह और उसके रसूल की दुश्मनी है, जब शैतान किसी बन्दे को उस बिगाड़ में डाल देने में कामियाब हो जाता है, तो उस की खुशी की इन्तिहा नहीं होती, यही वह चीज़ है, जिस का वह सबसे ज़्यादा ख्वाहिशमंद है और इसके लिए वह लगातार कोशिश जारी रखता है। अगर वह इस कोशिश में कामियाब हो जाता है, तो फिर उस शख्स को वह अपनी फ़ौज में शामिल कर लेता है। अब यह शख्स खुद शैतान का काम करता है और उस का बेहतरीन मददगार साबित होता है।

लेकिन अगर वह अपनी इस कोशिश में ना-काम रहता है, तो अब अपने दूसरे बिगाड़ में फंसाने की कोशिश शुरू कर देता है। यह बिदअत है यानी दीन में किसी ऐसी नई बात का बढ़ाना है, जो अल्लाह और उस के रसूल ने न बताई हो। शैतान की नज़र में यह काम हर क़िस्म के गुनाह और बद-कारी से ज़्यादा बेहतर है, क्योंकि बिदअत का नुक़्सान सीधे-सीधे दीन को पहुंचता है और यह एक ऐसा नुक़्सान है, जिस की छूत एक से दूसरे को लगती रहती है और यह एक ऐसा गुनाह है, जिस से तौबा करने की तौफ़ीक़ कम ही नसीब होती है, क्योंकि इन्सान इस गुनाह को सवाब समझकर करता रहता है। बिदअत, असल में कुफ़्र और शिर्क का दरवाज़ा है। जब कोई शख्स यहां तक पहुंच जाता है, तो वह भी शैतान के मददगारों में शामिल हो जाता है।

अब अगर शैतान इस कोशिश में ना-काम रहता है, तो फिर वह बंदे को एक तीसरे दर्जे के बिगाड़ में फंसाने की कोशिश करता है। ये कबीरा गुनाह हैं, जिस की अनगिनत क़िस्में हैं। शैतान की बड़ी ख्वाहिश होती है कि बंदा इन में से किसी में फंस जाए। खास तौर पर अगर वह बंदा आलिम है और लोग उस के कहने पर चलते हैं, तो वह इंतिहाई कोशिश करता है कि ऐसे शख्स को क़बीरा गुनाह (बड़े गुनाह) में फंसाए,

ताकि जिन लोगों को उस की बदौलत हिदायत मिल रही है, वे उस से नफ़रत करने लगें और दूर भागें। अब अगर किसी से ऐसा गुनाह हो जाता है, तो फिर शैतान उसे लोगों में अच्छी तरह मशहूर करने की शक्लें पैदा करता है। इस काम के लिए उसे बहुत-से लोग मिल जाते हैं, जो बुरी बातों को इधर-उधर फैलाने में लुत्फ़ लेते हैं। इन लोगों को यह याद भी नहीं आता कि अल्लाह तआला ने गन्दी बातों को इधर-उधर फैलाने से सख़्ती से रोका है।

अब अगर शैतान किसी बंदे को इस बिगाड़ में फंसाने में कामियाब नहीं होता, तो फिर वह चौथे दर्जे के बिगाड़ में फंसाने की कोशिश करता है और ये सग़ीरा गुनाह (छोटे गुनाह) हैं क्यों कि ये भी जब ज़्यादा हो जाते हैं तो बंदे की हलाकत की वजह बन जाते हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है—'इय्याकुम व मुहक़्क़रातिज़्ज़ुनूबि'

'तुम लोग उन गुनाहों से भी बचो, जिन्हें मामूली समझा जाता है।'

अब अगर कोई बंदा इस से बच जाता है, तो फिर उसे पांचवें दर्जे को बुराई में फंसाने की कोशिश करता है यानी वह उसे ऐसे जायज़ कामों में फंसा देता है, जिनके करने में न सवाब है और न अज़ाब और इस तरह वह बंदे को सवाब के कामों से महरूम कर देता है।

और आख़िरी दर्जा यह है कि जब वह देखता है कि कोई बंदा हद से ज़्यादा एहतियात कर रहा है और वह किसी ग़लत राह पर क़दम उठाता ही नहीं, तो फिर वह उसे नेकी के उन कामों में लगाए रखने की कोशिश करता है, जो कम दर्जे की हैं और इस तरह नेकी के बड़े कामों से उसे रोक देता है, जैसे किसी बंदे से नफ़्लों का इतना ज़्यादा एहतिमाम करता है कि फ़र्ज़ छूट जाते हैं और बंदा यह समझ भी नहीं पाता कि इस वक़्त नफ़्लों के एहतिमाम के लिए जो दिल में एक ख़्याल पैदा हो रहा है, यह एक शैतानी वस्वसा है, क्योंकि उसे यह ख़्याल होता है कि शैतान भला नेकी के काम पर क्यों उभारने लगा?

अब अगर शैतान किसी मोमिन बंदे के बारे में अपनी इन छः तद्बीरों में नाकाम हो जाता है, तो फिर वह एक आख़िरी हथियार इस्तेमाल करता है और वह यह कि वह अपनी फ़ौज के बहुत-से सिपाहियों को, जो इंसान भी हो सकते हैं और जिन्न भी, इस काम पर लगा देता है कि वे सब उस मोमिन बंदे को तरह-तरह सताएं। इस पर कुफ़्र, गुमराही, और बिदअत के इल्ज़ाम लगाएं, इस तरह लोगों को उस से दूर रखें और

उस की बातें न सुनने दें। इस तूफ़ान से उस मोमिन बंदे का दिल परेशान होने लगता है और वह इन फ़ित्नों को दूर करने में लग कर अपने असल काम से ग़ाफ़िल हो जाता है और कभी-कभी शैतान को इस बारे में कामियाबी हासिल हो जाती है कि वह मोमिन बंदा इस तूफ़ान में बह जाए और अपनी जगह छोड़ कर उन लोगों की सतह पर उतर आएं, जो उसे बदनाम करने के लिए उसके पीछे पड़े होते हैं। ऐसे मौक़े पर एक सच्चा मोमिन इस तूफ़ान बचने के लिए सब्र और तहम्मुल का रवैया अपनाता है और मरते दम तक इस रवैए पर क़ायम रहता है। बस यही एक शक्ल शैतान की नाकामी की है।

भाइयो और अज़ीज़ो ! ये पूरी बातें अगर हमारे सामने रहें, तो हम यह महसूस करेंगे कि गोया हम हर वक़्त जंग की हालत में हैं, एक बहुत ज़बर्दस्त दुश्मन हमारे सामने है, जो हमारे दाएं से, बाएं से, आगे से, पीछे से, ग़रज़ हर तरफ़ से हम पर वार कर रहा है और सच तो यह है कि आख़िरत की हमेशा रहने वाली नेमतों का दरवाज़ा उसी शख़्स पर खुलता है, जो इस लड़ाई में कामियाब रहे। अल्लाह और उसके रसूल ने शैतान की इस लड़ाई में कामियाब होने के लिए कुछ तद्बीरें बतायी हैं और हमारे हाथों में ऐसे हथियार दिए हैं कि अगर हम उन से काम लेते रहें तो इन्शाअल्लाह उस लड़ाई में हमारी जीत होगी। इनमें से कुछ उपाय मैं आपके सामने रखता हूं।

सबसे अहम उपाय तो यह है कि इन्सान हर वक़्त शैतान की बुराई से बचने के लिए अल्लाह की पनाह मांगता रहे। अल्लाह का इर्शाद है—

وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۔ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۔

व इम्मा यन्ज़-ग़न्न-क मिनश्शैतानि नज़्गुन फ़स्तअिज़ बिल्लाह इन्नहू हुवस्समीअुल अलीम०

'जब कभी तुम्हें शैतान बुरे काम के लिए उकसाए तो तुम अल्लाह की पनाह मांगो। यक़ीनन वह सुनने वाला और जानने वाला है।'

इस क़िस्म की हिदायतें क़ुरआन में कई जगह आयी हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी इसी की ताकीद फ़रमायी है।

दूसरा उपाय है कि इंसान ऐसे मौक़ों पर क़ुरआन के कुछ ख़ास हिस्सों को सोच-समझ कर पढ़े। इस बारे में 'क़ुल अअूज़ु बिरब्बिल फ़लक़' 'क़ुल अअूज़ु बिरब्बिन्नास' पढ़ने की ताकीद फ़रमाई है। हुज़ूर सल्ल-

ल्लाहु अलैहि व सल्लम नें इर्शाद फ़रमाया है कि शैतान से बचनें के लिए इन दो सूरतों से बढ़ कर कोई चीज नहीं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुबह और शाम सूरः इख़्लास तीन-तीन बार पढ़ने की भी हिदायत फ़रमायी है। इस मक़्सद के लिए 'आयतुल कुर्सी' पढ़ना या सूरः बक़रः का आखिरी रुकूअ पढ़ना या सूरः मुअ्मिन की शुरू की आयतें 'इलैहिल मसीर' तक पढ़ना भी फ़ायदेमंद बताया गया है और यह तस्बीह भी बहुत मुफ़ीदबतायी गयी है।

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَـهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर०

इसे अगर आदमी हर दिन सौ बार पढ़े तो शैतान की बुराई से बचा रहेगा।

शैतान की बुराई से बचने के लिए सबसे अहम बात यह है कि बंदा ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह तआला का ज़िक्र करता रहे। जो दिल अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल होता है, उसी में शैतानी वस्वसे आ सकते हैं। शैतान की बुराई से बचने के लिए यह सबसे बड़ी ढाल है, फिर नमाज़ पढ़ना, जो अल्लाह के ज़िक्र की सबसे बड़ी मुकम्मल शक्ल है, इस मक़्सद के लिए बहुत ही मुफ़ीद है। शर्त यही है कि बंदा पूरी तवज्जोह के साथ दिल लगा कर अल्लाह का ज़िक्र करे और नमाज़ पढ़े।

आखिरी उपाय यह है कि बंदा हर वक़्त अपनी कथनी-करनी पर सख़्ती के साथ नज़र रखे और किसी ऐसी चीज में अपने को मश्ग़ूल न करे जिससे मना किया गया हो या जिससे कोई फ़ायदा न हो। ख़ास तौर पर अपनी आंखों और अपनी ज़ुबान की सख़्त निगरानी करे। शैतान की कामियाबी के लिए ये दो रास्ते बहुत आम है।

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَکُمْ اَجْمَعِیْنَ ـ وَاسْتَغْفِرُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ـ اَعُوْذُ بِهٖ مِنْ شَرِّ کُلِّ ذِیْ شَرٍّ هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِیَتِهٖ اِنَّ رَبِّیْ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ـ

अक़ूलु क़ौली हाज़ा व अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अज-मईन वस्तग़्फ़िरूहू इन्नहु हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम० अऊज़ू बिही मिन शर्रि कुल्लि ज़ी शर्रिव हु-व आख़िज़ुम बिनासि-य-तिही इन-न रब्बी अला सिरातिम मुस्त-क़ीम०

---

# नमाज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ۔ اَلَّذِیْ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ۔ اَحْمَدُهٗ وَاَسْتَغْفِرُهٗ ۔ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ ۔ سَخَّرَ لَنَا مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْنَا نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ۔ فَلَا نَعْبُدُ اِلَّآ اِيَّاهُ ۔ لَهٗ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ ۔ وَاِلَيْهِ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ ۔ وَنَرْجُوْ رَحْمَتَهٗ وَنَخْشٰى عَذَابَهٗ ۔ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ۔ سَيِّدُ الْمُرْسَلِيْنَ وَاِمَامُ الْمُتَّقِيْنَ وَخَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَاقْتَدٰى بِاَمْرِهٖ فَقَدْ رَشَدَ وَاهْتَدٰى وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَقَدْ ضَلَّ وَغَوٰى صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا ۔

अल हम्दु लिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम० अल्लज़ी तुसब्बिहु लहुस्स-मावातुस्सब्अु वल अर्ज़ु व मन फ़ीहिन-न अह्मदुहू व अस्तग़्फ़िरुहू व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू सख्ख़-र लना मा फ़िस्समावाति व माफ़िल अर्ज़ि व अस-ब-ग़ अलैना नि-अ-महू ज़ाहिरतंव-व बातिनः फ़ला नअ्बुदु इल्ला ईयाहु लहू नुसल्ली व नस्जुदु व इलैहि नस्आ व नह्फ़िदु व नर्जू रह्म-त-हू व नख़्शा अज़ाबहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलहु सय्यिदुल मुर्सली-न व इमामुल मुत्तक़ी-न व ख़ातमुन्नबीयीन मन आ-म-न बिही वक़्तदा बिअम्रिही फ़क़द रश-द वह्तदा व मन अअ्र-ज़ अन्हु फ़क़द अज़ल-ल व ग़वा सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्ली मन कसीरा०

भाइयो ! अल्लाह तआला का इर्शाद है—

حَافِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ۔

हाफ़िज़ू अलस्स-ल-वाति वस्सलातिल वुस्ता व क़ूमू लिल्लाहि क़ानि-तीन० 'अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो, ख़ास तौर से ऐसी नमाज़ की, जिसमें नमाज़ की तमाम ख़ूबियां मौजूद हों और अल्लाह के आगे इस तरह

खड़े हो, जैसे फ़रमांबरदार ग़ुलाम खड़े होते हैं।'

साथ ही इर्शाद फ़रमाया—

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ

वल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल आख़िरति युअ्मिनू-न बिही व हुम अला सलातिहिम युहाफ़िज़ून० 'जो लोग आख़िरत को मानते हैं, वे इस किताब पर ईमान लेते हैं और उन का हाल यह है कि अपनी नमाज़ों की पाबंदी करते हैं।'

एक दूसरी जगह फ़रमाया—

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ فِيْ صَلَاتِهِمْ خَاشِعُوْنَ۔

क़द अफ़्ल-हलमुअ्मिनू-नल्लज़ी-न फ़ी सलातिहिम ख़ाशिऊ-न० 'यक़ीनन फ़लाह पायी ईमान वालों ने, जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ (गिड़गिड़ाहट) अपनाते हैं।'

इस सिलसिले में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है—

مَنْ حَافَظَ عَلَى الصَّلَوٰتِ الْخَمْسِ رُكُوْعِهِنَّ وَسُجُوْدِهِنَّ وَمَوَاقِيْتِهِنَّ وَعَلِمَ أَنَّهُنَّ حَقٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ دَخَلَ الْجَنَّةَ

मन हा-फ़-ज़ अलस्सलातिल ख़म्सि रुकूअिहिन-न व सुजूदिहिन-न व मवाक़ीतिहिन-न व अलि-म अन्नहुन-न हक़्क़ुम मिन अिन्दिल्लाह दख़लल जन्न: (पांचों वक़्त की नमाज़ों की देख-भाल करे, सही तरीक़े पर रुकूअ करे, ठीक-ठीक सज्दा करे, नमाज़ के वक़्तों की पाबंदी करे और उसे यह यक़ीन हो कि यह अल्लाह की तरफ़ से डाला एक फ़र्ज़ है, तो वह जन्नत में दाख़िल होगा।)

अज़ीज़ो और दोस्तो! हम सब जानते हैं कि अल्लाह तआला ने हम पर पांच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं और हमें हुक्म दिया गया है कि हम इन नमाज़ों को उनके मुक़र्रर वक़्तों में अदा करें और इस तरह अदा करें, जिस तरह उन्हें अदा करना चाहिए और इस बात की ताकीद फ़रमायी है कि हम किसी वक़्त की नमाज़ ख़राब न करें और न वक़्त टाल कर पढ़ें। यह हुक्म अल्लाह की किताब में जगह-जगह मौजूद है और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक ज़ुबान से भी यह हुक्म बार-बार दिया गया है। आप यह भी मानते हैं कि नमाज़ों के सिलसिले में हम पर

यह ज़िम्मेदारी भी डाली गई है कि हम नमाज़ बड़ी आजिज़ी, दिल के झुकाव और इत्मीनान के साथ अदा करें। इसी बात की तालीम रसलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने क़ौल और अमल से दी है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है—

صَلُّوْا كَمَا رَاَيْتُمُوْنِىْ اُصَلِّىْ ۔

सल्लू कमा रएैतुमूनी उसल्ली (इस तरह नमाज़ पढ़ो, जिस तरह मुझे नमाज़ पढ़ते देखते हो।)

आज हमारे सामने अनगिनत सही हदीसें मौजूद हैं, जिनसे मालूम होता है कि हुज़ूर सल्ल० नमाज़ किस तरह अदा फ़रमाते थे। हुज़ूर सल्ल० की नमाज़ें पूरी यकसूई और इत्मीनान के साथ होती थीं और हुज़ूर इसी के लिए कहा करते थे।

एक बार का ज़िक्र है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक शख़्स को नमाज़ पढ़ते देखा। यह शख़्स न रुकूअ ठीक से करता था और न सज्दा। हुज़ूर सल्ल० ने उसे देखकर फ़रमाया—

'इर्जिअ् फ़सल्लि फ़ इन्न-क लम तुसल्लि०' (वापस जाओ और नमाज़ पढ़ो, तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी।' वह शख़्स वापस गया और फिर नमाज़ पढ़ी, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने फिर वही इर्शाद फ़रमाया यह वाक़िआ तीन बार हुआ। इसके बाद उस शख़्स ने अर्ज़ किया, क़सम है उस ज़ात की, जिसने आप को हक़ के साथ भेजा है, मैं इससे अच्छी नमाज़ नहीं पढ़ सकता। आप मुझे सिखा दीजिए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—

اِذَا قُمْتَ اِلَى الصَّلٰوةِ فَكَبِّرْ ثُمَّ اقْرَءْ مَا تَيَسَّرَ مَعَكَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ثُمَّ ارْكَعْ حَتّٰى تَطْمَئِنَّ رَاكِعًا ثُمَّ ارْفَعْ حَتّٰى تَعْتَدِلَ قَائِمًا ثُمَّ اسْجُدْ حَتّٰى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا ثُمَّ ارْفَعْ حَتّٰى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا ثُمَّ اسْجُدْ حَتّٰى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا ثُمَّ افْعَلْ ذٰلِكَ فِىْ صَلٰوتِكَ كُلِّهَا ۔

इज़ा क़ुम-त इलस्सलाति फ़कब्बिर सुम-मक़रअ् मा तयस्स-र म-अ-क मिनल क़ुरआनि सुम्मरकंअ् हत्ता तत् मइन-न राकिअन सुम्मफ़ंअ् हत्ता तअ् तदि-ल क़ाइमन सुम्मस्जुद हत्ता ततमइन-न साजिदन सुम्मफ़ंअ हत्ता तत्मइन-न जालिसन सुम्मस्जुद हत्ता ततमइन-न साजिदन सुम्मफ़अल

जालि-क फ़ी सलाति-क कुल्लिहा।

जब तुम नमाज़ पढ़ने खड़े हो तो अल्लाहु अक्बर कहो, फिर जितना क़ुरआन पढ़ सकते हो, पढ़ो, फिर रुकूअ में जाओ और इतनी देर ठहरो कि इतमीनान के साथ रुकूअ हो जाए, फिर रुकूअ से सिर उठाओ, यहां तक कि बिल्कुल सीधे खड़े हो जाओ, इसके बाद सज्दे में जाओ और इतना ठहरो कि इत्मीनान के साथ सज्दा हो जाए। फिर सज्दे से सिर उठाओ, यहां तक कि इत्मीनान के साथ बैठ जाओ, फिर सज्दा करो और इतना ठहरो कि सज्दा इत्मीनान के साथ हो जाए, फिर अपनी पूरी नमाज़ में ऐसा ही करो।'

इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह तालीम दी कि नमाज़ किस तरह सुकून और इत्मीनान के साथ पढ़ना चाहिए। ऐसी ही नमाज़ सही है और इसी के मक़्बूल होने की उम्मीद की जा सकती है। रहीं वे नमाज़ जो इत्मीनान के साथ न पढ़ी जाएं, वे नमाज़ें सही नहीं हैं। ऐसी ही नमाज़ के बारे में हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया था कि जाओ फिर से नमाज़ पढ़ो, तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी है।

इसी तरह वह नमाज़ी, जो न रुकूअ ठीक से करता है और इत्मीनान के साथ नमाज़ पढ़ता है, उसके बारे में यही समझना चाहिए कि उसने नमाज़ की हिफ़ाज़त नहीं की। ऐसे शख़्स को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 'चोर' कहा है, बल्कि बहुत बुरा चोर बताया है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार ऐसे शख़्स को देखा, जो न रुकूअ ठीक से करता था, और न सज्दा, उसे देख कर फ़रमाया—

لَوْ مَاتَ هٰذَا عَلٰى حَالَتِهٖ مَاتَ عَلٰى غَيْرِ مِلَّةِ مُحَمَّدٍ۔

लौ मा-त हाज़ा अला हालतिही मा-त अला ग़ैरि मिल्लति मुहम्म-दिन०

(अगर यह किसी हाल में मर जाता, तो उसका ख़ात्मा मिल्लते मुहम्मदी पर न होता।)

इसी तरह जो शख़्स बिला किसी सही उज़्र के नमाज़ का वक़्त टालता रहता है, उसके बारे में यही कहा जाएगा, उसने नमाज़ की हिफ़ा-ज़त नहीं की।

भाइयो और अज़ीज़ो! नमाज़ अल्लाह तआला के हुक्मों में से सबसे ज़्यादा अहम हुक्म है। मोमिन किसी हालत से उसे छोड़ नहीं

सकता। नमाज़ मुसलमान की पहचान है और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के लफ़्ज़ों में नमाज़ नफ़्स की दवा है, नमाज़ दिल की हिफ़ाज़त है, नमाज़ ईमान का हथियार है, नमाज़ ख़्वाहिशात की लगाम है, नमाज़ बदन का वह नमक है, जो उस को गुनाह की वजह से बिगड़ने नहीं देता। नमाज़ हमारी ज़िंदगी के वे दो हाथ हैं, जिनके ज़रिए नमाज़ी क़ियामत के दिन अपने आप को बचाएगा। इंसान ख़ता करता है और हमारा अल्लाह हमारे गुनाहों को नमाज़ के ज़रिए मिटा देता है। हज़रत मसीह ने एक बार अपने हवारियों की नमाज़ को अहमियत बताते हुए एक मिसाल से समझाया कि जिस तरह किसी पैदाइशी अंधे के आगे एक गूंगा शख़्स अपने आप को मौजूद साबित करने पर क़ुदरत नहीं रखता, इसी तरह इंसान बग़ैर नमाज़ के यह क़ुदरत नहीं रखता कि वह नेक कामों वाला आदमी बन सके।

भाइयो! हालात में सुधार के लिए नमाज़ क़ायम करना ज़रूरी है। यहूदी अल्लाह की नेमतों को भुला बैठे थे। अल्लाह के साथ किए हुए वायदे को तोड़ बैठे थे और बहुत से ज़ेहनी और अख़्लाक़ी बीमारियों में फंस गए थे। उन की तमाम बीमारियों का इलाज तज्वीज़ फ़रमाते हुए अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया—

"وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ"

व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त वर्कअू मअर्राकिअीन०

'नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो और जो लोग मेरे आगे झुक रहे हैं, उनके साथ तुम भी झुक जाओ।'

यों तो हालात में सुधार की ज़रूरत सभी को है। हममें से कौन यह कह सकता है कि वह अपना सुधार नहीं चाहता, लेकिन इसके बावजूद हम और आप सभी यह जानते हैं कि लोगों के लिए नमाज़ पढ़ना बड़ा सख़्त काम है। आज तो ऐसे मुसलमानों की भी कमी नहीं, जो सिरे से नमाज़ पढ़ते ही नहीं और जो पढ़ते भी हैं, उनमें से थोड़े ही लोग नमाज़ का हक़ अदा कर पाते हैं। सच तो यह है कि नमाज़ इंसान के ईमान का माप है। जिस दर्जे में हमारा ईमान मज़बूत होगा, उतना ही हमें नमाज़ से ताल्लुक़ होगा। अल्लाह तआला का इर्शाद है—

وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلَاقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ -

व इन्नहा ल-करीबतुन इल्ला अलल ख़ाशिईनल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम मुलाक़ू रब्बिहिम व अन्नहुम इलैहि राजिऊन०

'बेशक नमाज़ एक सख़्त और मुश्किल काम है, पर इन फ़रमां-बरदार बंदों के लिए कठिन नहीं है, जिन्हें यह यक़ीन है कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की ओर पलट कर जाना है।'

नमाज़ पर क़ायम रहने के लिए एक तरफ़ तो अल्लाह, आख़िरत के दिन और रिसालत पर पक्के यक़ीन और ईमान की ज़रूरत है, दूसरी तरफ़ यह भी ज़रूरी है कि इंसान की ज़िंदगी बुराइयों से पाक हो, ज़िंदगी का असर नमाज़ पर पड़ता है। अगर ज़िंदगी बुराइयों से पाक होगी तो नमाज़ पढ़ना और उस का हक़ अदा करना मुश्किल काम न रहेगा और अगर नमाज़ अच्छी होगी तो ज़िंदगी भी बुराइयों से पाक होती चली जाएगी। शैतान जब यह चाहता है कि इंसान को अल्लाह की याद और नमाज़ से रोक दे, तो वह इंसान को बुराइयों में फंसाता है, ख़ास तौर पर बड़े गुनाह नमाज़ के लिए बड़ी रुकावट बनते हैं।

भाइयो! अल्लाह का तक़्वा अख़्तियार करो, अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो, हर नमाज़ ठीक वक़्त पर अदा हो, जमाअत के साथ पढ़ी जाए और जहां तक हो सके, उन तमाम शर्तों को पूरा करने की कोशिश की जाए, जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ के लिए मुक़र्रर फ़रमायी हैं। इस बात की कोशिश होना चाहिए कि नमाज़ से ध्यान इधर-उधर न जाए। नमाज़ के लफ़्ज़ों पर ग़ौर करते रहना चाहिए और इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि मैं अल्लाह के सामने खड़ा हूं, उस से अर्ज़मारूज़ कर रहा हूं, वह मुझे देख रहा है, मेरी बातें सुन रहा है, उसे मेरे दिल के हालात का इल्म है।

भाइयो! शैतान हर वक़्त इस कोशिश में लगा रहता है कि बन्दे को नमाज़ से ग़ाफ़िल कर दे। उस की पहली कोशिश तो यही होती है कि बंदा अपने रब को भूला रहे और नमाज़ न पढ़े और अगर पढ़े भी तो उस की नमाज़ न होने पाए और हमें असल में अपने उसी दुश्मन से मुक़ा-बला करना है, उसी की कोशिशों को नाकाम बनाना है और यह उसी वक़्त हो सकता है। जब आप हर वक़्त ज़ेहन को हाज़िर रखें और जब यह महसूस हो कि ख़्यालात इधर-उधर भटक रहे हैं, तो फ़ौरन अल्लाह की

तरफ़ ध्यान लगाने की कोशिश करें। बार-बार कोशिश करने से कुछ न कुछ कामियाबी ज़रूर हासिल होगी। बंदा जब अल्लाह के हुज़ूर खड़ा होकर अर्ज़ मारूज़ करता है और इस हाल में उस का ध्यान इधर-उधर भटकता रहता है, तो फिर अल्लाह तआला भी अपने करम और मेहरबानी के साथ बंदे की तरफ़ मुतवज्जह नहीं होता।

भाइयो! अल्लाह से डरो, नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो, अपने बे-नमाज़ी भाइयों को मुहब्बत और प्यार केसाथ नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह करो और जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का एहतिमाम करो। पूरी कोशिश इस बात की होनी चाहिए कि नमाज़ नमाज़ की तरह पढ़ी जाए।

एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक अन्धे सहाबी रज़ि० ने अपना यह उज़्र पेश किया कि मैं अंधे होने की वजह से जमाअत के लिए हाज़िर नहीं हो सकता, तो क्या मेरे लिए इस की गुंजाइश है कि मैं जमाअत में शिर्कत न करूं। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा कि क्या तुम अज़ान की पुकार सुनते हो? उन्होंने कहा, हां, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़र-माया, तो फिर? तो उसके जवाब में तुम्हारे लिए मस्जिद की हाज़िरी ज़रूरी है, मैं तुम्हें इजाज़त देने की कोई गुंजाइश नहीं पाता। इससे अन्दाज़ा किया जा सकता है कि मुसलमानों के लिए जमाअत की हाज़िरी कितनी ज़रूरी है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में कोई मुसलमान इसे सोच भी नहीं सकता था कि वे मुसलमान रहते हुए भी जमाअत से ग़ैर-हाज़िर रह सकता है।

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُاللّٰهَ لِیْ وَلَکُمْ اَجْمَعِیْنَ۔ رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوۃِ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ۔ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ۔ رَبَّنَا اغْفِرْلِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابِ۔

अक़ूलु क़ौली हाज़ा व अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुमं अजमईन० रब्बिज-अलनी मुक़ीमस्सलाति व मिन ज़ुर्रीयती० रब्बना व तक़ब्बल दुआइ रब्बनग़्फ़िरली व लिवालिदय-य व लिल् मुअ्मिनी-न यौ-म यक़ूमुल हिसाब०

# ज़क़ात का अदा करना

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۔ وَلَهُ الْكِبْرِيَاۤءُ
فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۔ اَشْهَدُ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ
لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۔ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ
اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِىِّ الْعَظِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا وَّسُبْحٰنَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۔
وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهُ الَّذِىْ اُرْسِلَ اِلَى النَّاسِ كَاۤفَّةً بَشِيْرًا وَّ
نَذِيْرًا لِّيَكُوْنَ حُجَّةً عَلَى الْعٰلَمِيْنَ وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۔ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ
اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا ـــــ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ
مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۔ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَ
مِمَّاۤ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ ۔ اَلشَّيْطٰنُ
يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاۤءِ ۚ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ۔ وَمَا
تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ۚ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَاۤءَ وَجْهِ اللّٰهِ ۚ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ
خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۔

अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिस्समावाति व रब्बिल अर्ज़ि रब्बिल आल-मीन व लहुल किब्रियउ फ़िस्समावाति वल अर्ज़ि व हुवल अज़ीज़ुल हकीम० अश्हदु अल्ला-इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर० ला हौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम० अल-हम्दु लिल्लाहि हम्दन कसीरंव-व सुब्हानल्लाहि बुक्रतंव-व असीला० व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहुल्लज़ी उर्सि-ल लिन्नासि काफ़्फ़तन बशीरंव-व नज़ीरल्लि यकू-न हुज्जतुन अलल आलमी-न व रह्मतुल्लिल मुअ्मिनीन सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरन कसीरा—अम्मा बअ्दु फ़अअूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम० या ऐयुह-ल्लज़ी-न आमनू अन्फ़िक़ू मिन तय्यिबाति मा कसब्तुम व मिम्मा अख़्रज्ना

लकुम मिनल अर्ज़ि व ला तयम्ममुल ख़बी-स मिन्हु तुन्फ़िक़ून० अश्शैतानु यअिदुकुमुल फ़क़्-र व यअ्मुरुकुम बिल फ़ह्शाइ वल्लाहु यअिदुकुम मग़्फ़िर-तम मिन्हु व फ़ज़्ला व मा तुन्फ़िक़ू मिनख़ैरिन फ़लिअन्फ़ुसिकुम व मा तुन्फ़िक़ू-न इल्लब्तिग़ा-अ वज्हिल्लाह् व मा तुन्फ़िक़ू मिन ख़ैरिय-युवफ़-ज इलैकुम व अन्तुम ला तुज़्लमून०

बुज़ुर्गो और दोस्तो !

अल्लाह् का दीन उस की सबसे बड़ी नेमत है और शरीअत के हुक्म हमारे लिए ऐसी रहमत हैं, जिसमें हमारी भलाई और फ़लाह् के लिए अनगिनत पहलू हैं। यह बात शरीअत के हर हुक्म के बारे में सच्ची है और ज़रा ग़ौर किया जाए तो आसानी से समझ में आती है। शरीअत का एक हुक्म ज़कात भी है। नमाज़ के बाद इसी की अहमियत है। यह अल्लाह् तआला की तरफ़ से मुक़र्रर किया हुआ एक फ़र्ज़ है। ज़कात अदा न करने वाला सख़्त गुनाहगार है और आख़िरत में अल्लाह् के सख़्त अज़ाब से दो चार होगा और इस का इन्कार करने वाला काफ़िर है। ज़कात का इन्कार कर देने के बाद एक शख़्स की जगह इस्लाम के अन्दर नहीं, उसके बाहर है।

अल्लाह् तआला ने ज़कात और सद्क़ों की अदाएगी का हुक्म देते हुए एक जगह इस की वजह भी बयान फ़रमा दी है। मैं चाहता हूं कि आज आप इस वजह पर ग़ौर करें और समझें कि शरीअत के इस हुक्म में हमारे लिए क्या-क्या भलाई और बरकत मौजूद है। यों तो बुनियादी तौर पर बात यही ठीक है कि मोमिन अल्लाह् तआला के हुक्मों की पैरवी सिर्फ़ इसलिए करता है कि उसे इस बात का हुक्म दिया गया है और सिर्फ़ इसी लिए करता है कि उस का मालिक उससे राज़ी हो जाए और उसके नतीजे में उसे आख़िरत में अल्लाह् तआला की रिज़ा का घर मिले, वह घर मिले, जिस का नाम जन्नत है। मोमिन की सारी दौड़-धूप अपनी इसी आख़िरी कामियाबी के लिए है, वह अल्लाह् को ख़ुश करना चाहता है और उसकी सबसे बड़ी तमन्ना यही है कि वह जब कल क़ियामत के दिन अपने मालिक के हुज़ूर पेश हो, तो एक वफ़ादार और इताअत करने वाले बन्दे की हैसियत से पेश हो। उस का मालिक उस से राज़ी हो जाए और उसे अपनी कभी न ख़त्म होने वाली नेमतों से लाद दे।

लेकिन बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं है, बल्कि शरीअत के हुक्मों का कुछ फ़ायदा इस दुनिया में भी मिलता है, चुनांचे ज़कात के बारे में भी

अल्लाह तआला ने इस की वजह फ़रमाते हुए उस के अनगिनत फ़ायदों में से एक फ़ायदा यह भी बताया है कि—

كَيْ لَا يَكُونَ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ

'कै ला यकू-न दूलतम बैनल अग़नियाइ मिनकुम'

(ताकि ऐसा न हो कि माल व दौलत सिर्फ़ दौलतमंदों के गिरोह में ही घिर कर रह जाए।)

भाइयो ! इससे यह मालूम हुआ कि ज़कात के उन तमाम रूहानी और अख़्लाक़ी फ़ायदों के अलावा, जिन्हें हम सब जानते हैं, एक फ़ायदा यह भी है कि इससे दौलत फैलती है, किसी एक गिरोह के हाथ में घिर कर नहीं रह जाती, फिर अल्लाह तआला ने यह इर्शाद भी फ़रमाया है कि—

وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ

वल्लज़ी-न यक्निज़ूनज्ज़-ह-ब वल फ़िज़्ज़-त व ला युन्फ़िक़ूनहा फ़ी सबीलिल्लाहि फ़बश्शिरहुम बिअज़ाबिन अलीम०

(जो लोग सोना-चांदी ख़ज़ाना बना कर रखते हैं और अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, उन्हें निहायत दर्दनाक अज़ाब की बशारत दे दो।)

इससे यह मालूम होता है कि इस्लाम यह नहीं चाहता कि दौलत समेट-समेट कर रखी जाए और इंसान दौलत का सांप बनकर उस की हिफ़ाज़त करता रहे, बल्कि इस्लाम इसे पसन्द करता है कि दौलत चलती-फिरती रहे, किसी ख़ास गिरोह के क़ब्ज़े में आ कर क़ैद होकर न रह जाए, वह ज़्यादा से ज़्यादा लोगों में तक़्सीम हो और हमेशा गर्दिश में रहे। इस्लाम का यह मक़्सद उसके क़ानूने विरासत से भी हासिल होता है और ज़कात के तरीक़े से भी। इस्लाम ने दूसरों के बरख़िलाफ़ यह क़ानून नहीं बनाया कि एक शख़्स के मरने के बाद दौलत ख़ानदान के किसी एक ही शख़्स के पास चली जाए, बल्कि इसमें उसने तमाम लड़कों को हक़दार बनाया, लड़कों के साथ लड़कियों का भी हिस्सा मुक़र्रर किया, बीवी को भी हिस्सा दिलवाया और इसी तरह बहुत-से दूसरे रिश्तेदारों तक मीरास के हिस्से पहुंचाए।

फिर इस्लाम का दूसरा सख़्त हुक्म देखिए, उसने सूद को बिल्कुल

हराम कर दिया। साफ़-साफ़ बताया कि अल्लाह तआला अपने बन्दों में वह जज़्बा नहीं पैदा करना चाहता, जो सूद से पैदा होता है, बल्कि उसके बदले उनमें वह जज़्बा पैदा करना चाहता है, जो सद्क़ो और ज़कात से पैदा होता है। फ़रमाया—

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ۔

यम्हक़ुल्लाहुर्रिबा व युर्बिस्सद्क़ात॰

भाइयो और बुज़ुर्गो ! इस इर्शाद से यह बात हमारे सामने आती है कि सूद और ज़कात से दो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जज़्बे पैदा होते हैं और उनसे दो अलग-अलग क़िस्म के ज़ेहन तैयार होते हैं, जिस क़ौम में सूद का जज़्बा उभरेगा, उसके लोग, मुहब्बत, हमदर्दी, और त्याग के जज़्बों से महरूम हो जाएंगे। उनके अन्दर सख़्तदिली, दौलत की मुहब्बत और लालच पैदा होगी। इसके मुक़ाबले में ज़कात से जो फ़िज़ा तैयार होती है और ज़कात से जो ज़ेहन परवरिश पाता है, उसमें हमदर्दी, मुहब्बत, त्याग और नर्म दिली पैदा होती है और इंसान उन बीमारियों से बचा रहता है, जो दौलत की मुहब्बत की वजह से पैदा होती हैं।

इन्सान कोताह नज़र है, वह सिर्फ़ क़रीब की चीज़ देखता है। वह जब अपने एक भाई को सौ रुपए क़र्ज़ देकर उससे एक सौ दस वसूल कर लेता है, तो समझता है कि उसने नफ़ा कमाया, उस की दौलत बढ़ गयी और इसके मुक़ाबले में जब वह सौ रुपए पर ज़कात को निकालता है, तो सोचता है कि उस की रक़म घट गयी, हालांकि अपनी कमाई का एक हिस्सा जमाअत के दूसरे लोगों को दे देना असल में खोना नहीं, बल्कि पाना है और जमाअत के लोगों को उन की कमाई से महरूम करके अपनी जेब में इज़ाफ़ा कर लेना अपनी असल के एतबार से खोना है, पाना नहीं। इस नुक्ते को समझने के लिए कुछ हिक्मत की ज़रूरत है और मोमिन से बढ़ कर हिक्मत वाला कौन हो सकता है ? देखिए, इस बात को दो पहलुओं से समझा जा सकता है—

एक पहलू तो यह है कि ख़ुदा की राह में ख़र्च करना अपनी असल के एतबार से जमा करना है, क्योंकि अल्लाह तआला ने उसे अपने ज़िम्मे 'क़र्ज़ हसना' (भला क़र्ज़) फ़रमाया है, गोया जब आप अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, तो अल्लाह तआला आपका क़र्ज़दार हो जाता है और वह फ़रमाता है कि—'मैं तुम को उतना ही वापस न करूंगा, जितना तुम ने

दिया है, बल्कि इस से बहुत ज़्यादा दूंगा' अब सोचिए कि ज़मीन और आसमान के मालिक को इस बात की क्या ज़रूरत है कि वह आपसे क़र्ज़ ले ? सब कुछ तो उसी का है। हम सब उसी की बख्शिश पर तो पल रहे हैं, हमारी क्या ताक़त है कि हम उसे क़र्ज़ दें ? असल में यह उसकी शाने करीमी है कि वह हमसे खुद हमारी भलाई के लिए खर्च करने को कहता है और अपने करम से उसे अपने ज़िम्मे क़र्ज़ क़रार देता है। वह कहता है, तुम अपने ग़रीब भाइयों की मदद करो, ताकि वे भी सोसाइटी में आराम से ज़िदगी बसर करें, वे भी चैन की नींद सोएं, वे खुद परेशान हो कर सोसाइटी की परेशानी की वजह न बनें, लेकिन उनके पास क्या है कि वे तुम्हारे एहसान का बदला चुकाएं, इसलिए तुम उनसे किसी एहसान या बदले की उम्मीद न लगाओ। उनके बदले इस एहसान का बदला मैं दूंगा। तुम अपने यतीमों, बेवाओं और ग़रीब रिश्तेदारों और मुसीबत के मारे हुए भाइयों को जो कुछ देते हो, वह तुम उन्हें उनका हक़ समझते हुए दो और इस सब को मेरे नाम लिख लो, उसे मैं अदा करूंगा। यह सब मेरे ज़िम्मे है और मैं उसे बढ़ा-चढ़ा कर तुम्हें लौटा दूंगा, तुम उन्हें क़र्ज़ देकर उनसे सूद न मांगो। अपना क़र्ज़ वसूल करने के लिए उन्हें परेशान न करो. तुम उन्हें जो कुछ देते हो, उसका जमाअती फ़ायदा अगरचे तुम्हें ही मिलता है, लेकिन तुम्हारी नज़रें दूर तक नहीं देखतीं, इस लिए तुम यक़ीन रखो कि तुम्हारे खर्च किए हुए माल की पाई-पाई मुनाफ़ा समेत मैं तुम्हें लौटा दूंगा।

अब भाइयो ! ज़रा सूद की हक़ीक़त पर ग़ौर करो। आदमी समझता है कि वह सूद पर रुपया क़र्ज़ लेकर अपना रुपया बढ़ाता है, यक़ीनन रुपया कुछ बढ़ाता है, लेकिन इससे सोसाइटी के अन्दर जिस तरह हमदर्दियों की जड़ कट जाती है और खुदग़रज़ी जिस तरह पनपती है, आपसी मुहब्बत के बदले नफ़रत और दुश्मनी के जज़्बे पैदा होते हैं और खुलूस और मुहब्बत के बदले बे-एतबारी और बे-ताल्लुक़ी बढ़ती है। वह इज्तिमाई ज़िदगी के लिए ज़हर से ज़्यादा खतरनाक है। अल्लाह तआला ने सूद की लानत से चिमटे रहने वालों के लिए फ़रमाया है कि, ये लोग गोया अल्लाह और उसके रसूल के खिलाफ़ लड़ाई का एलान करते हैं और उस ना-पसंदीदा चीज़ को नहीं छोड़ते. जिस से बाज़ रहने के लिए उन्हें हुक्म दिया जा रहा है।'

अज़ीज़ो और दोस्तो! अब आप ग़ौर करें कि अगर कोई शख्स अपने

रवैए से अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को ना-खुश कर रहा है और इस नेमत से महरूम हो रहा है कि कल क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उस पर अपनी रहमतों की बारिश करे, तो वह खो रहा है या पा रहा है? यक़ीनन आप यही कहेंगे कि यह तो खुला नुक़सान है, खोना ही है, इस में पाने की कोई बात ही नहीं।

अब दूसरे पहलू से देखिए, जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं, इंसान की नज़रें दूरतक नहीं जातीं, वह दिल का छोटा है, खुद ग़रज़ है और जल्दबाज़ है, चाहता है कि हर चीज़ का नतीजा फ़ौरन ही सामने आ जाए। वह हर चीज में अपने ज़ाती फ़ायदे को देखता है। वह कहता है कि जो कुछ मेरे पास है, वह मेरा है, उसमें किसी का हिस्सा नहीं। उसे मेरी ज़रूरतें, मेरी ख्वाहिशें और मेरे आराम और मेरी लज़्ज़तों पर खर्च करना चाहिए या फिर मैं उसे इस तरह खर्च करूं कि मेरा माल कुछ ज्यादा हो कर मेरे पास जल्द ही लौट आए और अगर यह भी न हो तो कम से कम मेरा नाम हो, मेरी इज़्ज़त बढ़े, मेरी शोहरत हो, मुझे कोई ओहदा मिल जाए, लोगों पर हुकूमत करने का मौक़ा हाथ आए, हर जगह मेरा ही चर्चा हो—लेकिन अगर मुझे इन में से कोई बात हासिल नहीं होती, तो मैं अपना रुपया किसी बेवा, किसी यतीम और किसी मुहताज पर क्यों न खर्च करूं ?वह अगर भूखा मर रहा है तो मैं क्या करूं ?अगर उसकी तालीम का इंतिज़ाम नहीं है, अगर इलाज के लिए उस के पास कुछ नहीं है, अगर उसका मकान गिरा पड़ा है, अगर वह मुसीबत के दिन काट रहा है, तो मुझे क्या ? यह बात तो उसके शौहर या उसके बाप के देखने की थी। वह अगर इसके लिये कुछ छोड़ जाता, कोई जायदाद उन के नाम कर जाता, तो आज ये दिन क्यों देखना पड़ते ?

भाइयो ! इंसान में जब इस क़िस्म की ज़ेहनियत पैदा हो जाती है, तो वह बड़ा खुदग़रज़ हो जाता है। अब वह अपनी दौलत पर सांप बन कर बैठता है या तो कुछ खर्च ही नहीं करता और अगर करता है तो अपना माल यों ही वाही-तबाही में उड़ाता है, फ़िज़ूल खर्चियां करता है, वह चाहता है कि अपने नफ़्स की लज़्ज़त के लिए गाना सुने और उस पर रुपया खर्च करे। उसके नतीजे में सोसाइटी में नाचने गाने वाले पैदा होते हैं और लोगों के अख्लाक़ बिगड़ते हैं। वह ऐयाशी पर रुपए उड़ाता है और उसके नतीजे में सोसाइटी में वे लोग पैदा होते हैं जिनका वजूद ही सोसा-इटी के लिए शर्मिंदगी की वजह बनता है। वह सिनेमा से दिल बहलाना

चाहता है और उसके नतीजे में देश में इस धंधे को तरक़्क़ी मिलती है, जिस से बढ़ कर अख़्लाक़ी गंदगी फैलाने वाली शायद ही कोई चीज़ आज तक वजूद में आयी हो, ग़रज़ यह कि जो रुपया ग़लत तरीक़े पर ख़र्च होता है, उस का नुक़्सान इतना ही नहीं होता कि ख़र्च करने वाले पर ग़लत असर पड़ता है, बल्कि इसका असर बहुत दूर-दूर तक फैलता है और सारे समाज का मिज़ाज ही ग़लत होने लगता है, फिर जब दौलत के ख़र्च का यह ग़लत चक्कर चल पड़ता है, तो उस के नतीजे में सोसाइटी का एक हिस्सा अपनी ज़रूरत से कहीं ज़्यादा दौलत पाने लगता है और एक हिस्सा ग़रीब होता चला जाता है, उनकी ज़िंदगी और तंग होती चली जाती है और वे तमाम ख़राबियां उभरने लगती हैं, जो ग़रीबी और मुहताजी की वजह से पैदा होती हैं। उनमें अख़्लाक़ी ख़राबियां भी शामिल हैं और जिस्मानी ख़राबियां भी। इस तरह एक तरफ़ बद-अख़्लाक़ियां आम हो जाती हैं, बद-अम्नी और बद-किरदारी फैलती है और दूसरी तरफ़ लोगों की जिस्मानी सेहत ख़राब होती है और बीमारियां फैलती हैं। लोगों में काम करने की ताक़त कम हो जाती है, क़ौमी पैदावार का मेयार तेज़ी से गिरने लगता है, क्योंकि न तो वह ग़रीब, जो अख़्लाक़ी ख़राबियों और बीमारियों का शिकार है, क़ौमी पैदावार में मुनासिब हिस्सा ले पाता है और न वह दौलतमंद उस मक़्सद के लिए हाथ बढ़ाने के काम का रह जाता है, जो हर वक़्त इस अय्याशी, तफ़रीह और फ़िज़ूलख़र्चियों के लिए प्रोग्राम बनाया करता है। आख़िर ये जागीरदार, नवाब, राजे, दौलतमंद कब क़ौमी दौलत की बढ़ती की वजह बने हैं।

फिर उसीके साथ दौलत की इस ग़लत तक़्सीम के नतीजे में जिहालत बढ़ती है, अख़्लाक़ गिरते हैं, लोग जरायम पेशा होने लगते हैं और नौबत यहां तक पहुंचती है कि आम अम्न बर्बाद हो जाता है, फ़साद होते हैं, डकैतियां पड़ती हैं, क़त्ल व ग़ारत का बाज़ार गर्म होता है, और आम लूट-मार शुरू हो जाती है।

भाइयो और अज़ीज़ो! ग़ौर करने की जगह है कि अगर आप अपनी दौलत अपने ग़रीब भाइयों तक नहीं पहुंचाते, तो यह नतीजे के एतबार से खोना है या पाना? अगर आप अपने ग़रीब भाइयों की मदद करेंगे और उन्हें भी शरीफ़ाना तौर पर ज़िंदा रहने का हक़ देंगे, तो उस का नतीजा यही तो होगा कि आप उन्हें जो कुछ देंगे, वह दौलत फिर चक्कर लगाती हुई आप ही के पास पहुंचेगी। उन की ख़रीद की ताक़त बढ़ेगी,

इसी की वजह से जायज़ ज़रूरतों वाली चीज़ें ज़्यादा तैयार होंगी और क़ौमी पैदावार पर एक निहायत अच्छा असर पड़ेगा। आप ख़ुद फ़ैसला करें कि अगर आप की क़ौम में नाकारा, उचक्के और बद-अख़्लाक़ लोग बढ़ेंगे, तो यह आप के लिए मुफ़ीद है या उस के बदले अगर हुनरमंद और बा-अख़्लाक़ लोगों की बढ़ती होगी, तो यह बेहतर है? समाज अच्छा होगा तो आप की निजी ज़िन्दगी भी ख़ैर व फ़लाह का हिस्सा पाएगी और अगर समाज बुरा होगा तो आप अपनी निजी ज़िन्दगी में भी चैन और सुख न पा सकेंगे।

भाइयो! इस नुक्ते को याद रखिए कि जो शख़्स बे-ग़रज़ी के साथ, बल्कि यों कहिए कि ख़ालिस अल्लाह की रिज़ा के लिए जमाअत की भलाई के कामों पर रुपया ख़र्च करता है, तो यों देखने में तो उस का रुपया उस की जेब से निकल जाता है, लेकिन वह बाहर जा कर बढ़ता और फलता-फूलता है। इस की वजह से समाज का माली ढांचा ताक़त हासिल करता है और आखिरकार इस की वजह से जो फ़ायदे हासिल होते हैं, उन से वह शख़्स ख़ुद भी हिस्सा पाता है।

दोस्तो और अज़ीज़ो! इन्सान अपनी जिहालत और तंग नज़री की वजह से यह बात समझ नहीं पाता कि असल एतबार से खोना किस चीज़ का नाम है और पाने का मतलब क्या है? इसी जिहालत का नतीजा है कि दुनिया के एक हिस्से में पूंजीपतियों ने अपने सारे माली ढांचे को सूद की बुनियादों पर उठाया और एक तब्क़े में दौलत की ज़्यादती ने वे हज़ारों ख़राबियां पैदा कर दीं, जिन का मज़ा आज हम सब चख रहे हैं, वहां दौलत बढ़ रही है, लेकिन उस के साथ मुसीबतें और परेशानियां भी बढ़ रही हैं। दूसरी ओर इसी जिहालत के नतीजे में एक ऐसा गिरोह पैदा हो रहा है, जिस के दिल में जलन की आग जल रही है। वह पूंजीपतियों को देख-देख कर अंगारों पर लोट रहा है और जब मौक़ा पाता है, उन के ख़ज़ानों पर डाके डालने से नहीं चूकता, फिर चूंकि यह गिरोह भी इस हिक्मत को नहीं समझ पाता, जो सिर्फ़ ख़ुदाई हिदायतों की पैरवी से पैदा होती है, इस लिए उस के हाथों पूंजीपतियों ही की नहीं, बल्कि इन्सानियत, शराफ़त, तह्ज़ीब, तमद्दुन, नेकी, तक़्वा और ख़ुदापरस्ती की जो मिट्टी पलीद हो रही है, वह ख़ुद एक अज़ाब है, जो इन्सानों के ग़लत रवैए की वजह से उन पर मुसल्लत हो गया है।

बुज़ुर्गो और दोस्तो ! इस गुत्थी को सुलझाने की एक ही शक्ल है और वह यह कि इन्सान इस दुनिया के और अपने पैदा करने वालों को पहचाने, उस की हिदायत से रहनुमाई हासिल करे, उस के हुज़ूर हाज़िर होने के यक़ीन की बुनियाद पर अपनी ज़िन्दगी के लिए कोई राह तै करे। वह अल्लाह की दी हुई दौलत को उसी की हिदायत के मुताबिक़ ख़र्च करे। उसी ख़र्च का एक हिस्सा ज़कात है, जो हर मालदार मुसलमान पर फ़र्ज़ है। ज़कात माल की पाकीज़गी का ज़रिया है और माल ही नहीं, बल्कि इन्सान के दिल की पाकीज़गी के लिए भी यह एक काम का नुस्ख़ा है। आख़िरत की ज़िंदगी की लिए क़ीमती पूंजी है और दुनिया की ज़िन्दगी के सुधार के लिए एक निहायत काम का और आज़माया हुआ तरीक़ा है।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें दीन के इस फ़र्ज़ की अहमियत को अच्छी तरह समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हम में से जो लोग निसाब वाले हैं, उन्हे इस फ़र्ज़ के अदा करने की सआदत नसीब फ़रमाए।

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ. وَاسْتَغْفِرُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ. وَقَالَ اللهُ تَعَالٰی رَبُّكُمْ قُلْ لِّعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یُقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَیُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِیَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ یَّاْتِیَ یَوْمٌ لَّا بَیْعٌ فِیْهِ وَلَا خِلٰلٌ ۰

अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अजमईन वस्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम व क़ालल्लाहु तआला रब्बुकुम क़ुल याअिबादियल्लज़ी-न आ-म-नू युक़ीमुस्सला-त व युन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़्नाहुम सिर्रं व-व अलानि-य-तम मिन क़ब्लि अंय्याति-य यौमुल्ला बैअुन फ़ीहि व ला ख़िलाल०

———

# अल्लाह से अह्द

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ - اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِی اشْتَرٰی مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اَنْفُسَهُمْ
وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ یُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ فَیَقْتُلُوْنَ وَیُقْتَلُوْنَ۔
اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ۔ لَا رَبَّ
سِوَاهُ، وَلَا نَعْبُدُ اِلَّآ اِیَّاهُ۔ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِیَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَمَنْ تَبِعَهُمْ
بِاِحْسَانٍ اِلٰی یَوْمِ الدِّیْنِ۔ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا كَثِیْرًا۔

अलहम्दु लिल्लाह अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़िश्तरा मिनल मुअ्मिनीन अन्फ़ुसहुम व अम्वालहुम बिअन-न लहुमुल जन्न: युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाह फ़यक़्तुलून व युक़्तलून अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला-शरी-क लहू ला रब-ब सिवाहु व ला नअ्बुदु इल्ला इय्याहु व अश्हदु अन-न नबी-यना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू० अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही व मन तबिअहुम बिएह्सानिन इला यौमिद्दीन व सल्लिम तस्लीमन कसीरा०

मुसलमान भाइयो ! ईमान की हक़ीक़त बस इतनी ही नहीं है कि कुछ चीज़ों का इक़रार ज़ुबान से कर लिया जाए और दिल से उन्हें सच्चा मान लिया जाए, अपनी हक़ीक़त के एतबार से ईमान एक अह्द है, जो बन्दा अपने ख़ुदा से करता है। इस अह्द के मुताबिक़ बन्दा अपनी जान, अपना माल, ग़रज़ कि अपना सब कुछ अल्लाह के हाथ बेच देता है और उस के बदले में वह अल्लाह के इस वायदे को क़ुबूल कर लेता है कि आख़िरत में अल्लाह तआला उसे जन्नत अता फ़रमाएगा।

भाइयो ! जहां तक असल हक़ीक़त का ताल्लुक़ है, इस लिहाज़ से तो इन्सान का अपना है ही क्या, जो वह उसे ख़ुदा को दे और उस के बदले में जन्नत हासिल करे। इंसान के पास तो जो कुछ है अल्लाह का है, उसकी जान, उस का माल, ग़रज़ कि उस की हर चीज़ अल्लाह ही ने पैदा फ़र-

मायी है और वही उस का मालिक है। दुनिया की कोई चीज़ अल्लाह की मिल्कियत से खारिज नहीं। जो कुछ है उसी का है, लेकिन एक चीज़ ऐसी भी है, जो अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़ से इन्सान को दे दी है और वह है अख़्तियार और इरादे की आज़ादी। अल्लाह तआला ने इन्सान को आज़ादी दे दी है कि वह अगर चाहे तो अपनी ज़ात, अपने ज़ेहन, अपने जिस्म और अपने माल व दौलत पर अल्लाह तआला के हक़ों को तस्लीम करे या फिर आप ही इन तमाम चीज़ों का मालिक बन बैठे और ख़ुदा के हुक़ूक़ का इन्कार कर के यह समझ ले कि मुझे हक़ हासिल है, जिस तरह चाहूं, इन चीज़ों को काम में लाऊं। मुझे किसी की मर्ज़ी और किसी की ख़ुश्नूदी की ज़रूरत नहीं। मैं तो वह करूंगा, जो मेरा दिल चाहे। अगर इन्सान अपनी ग़लती से सोचने और अमल करने का यह तरीक़ा अपना ले तो वह कर सकता है। अल्लाह तआला उसे इस बात से ज़बरदस्ती रोकेगा नहीं। साथ ही इन्सान को यह अख़्तियार भी हासिल है कि अगर वह चाहे तो असल हक़ीक़त का इक़रार करे। अपनी जान, अपने माल और तमाम सलाहियतों को अल्लाह तआला की मिल्कियत माने और अपनी मर्ज़ी को छोड़ कर हर मामले में अल्लाह की मर्ज़ी का ताबेअ हो जाए। बस यहीं से यह सवाल पैदा होता है कि इन्सान अपनी जान और माल को अल्लाह के हाथ बेच दे यानी अख़्तियार हासिल होने के बावजूद यह तै कर ले कि मैं अब अपनी मर्ज़ी के बदले अल्लाह की मर्ज़ी को सामने रखूंगा और हर मामले में वह करूंगा, जिस का मुझे हुक्म मिलेगा।

भाइयो ! यह है वह मांग, जो इस्लाम करता है, हमारे पास जो कुछ है, वह अल्लाह की अमानत है, अल्लाह ने हमें यह अख़्तियार दे दिया है कि अगर हम चाहें, तो इस अमानत में ख़ियानत भी कर सकते हैं। असल मालिक को भूल कर ख़ुद अपने को हर चीज़ का मालिक समझ सकते हैं लेकिन हमारे ईमान लाने का मतलब और तक़ाज़ा यह है कि हम असल को ही मालिक जानें और अपनी इस हैसियत को न भूलें कि हम सिर्फ़ अमीन हैं, मालिक नहीं हैं। बस यही हक़ीक़त है ईमान और कुफ़्र की, जो कोई अपने अख़्तियार को छोड़ कर सब कुछ अल्लाह के हवाले कर दे, वह मोमिन है और जो कोई अपने अख़्तियार पर अड़ा रहे और अल्लाह की मर्ज़ी बदले अपनी मर्ज़ी पर चलना चाहे, वह काफ़िर है।

अल्लाह तआला ने इन्सान को अख़्तियार और इरादे की यह

आज़ादी देकर बड़ी आज़माइश में डाल दिया है, उस की पहली आज़-माइश तो यही है कि क्या वह मालिक को ही मालिक समझता है या कमीना बन कर नमकहरामी पर उतर आता है और खुद मालिक बन बैठता है। दूसरी आज़माइश यह है कि क्या वह खुदा के इस वायदे पर यक़ीन करता है या नहीं कि अगर वह आज अपनी खुदमुख्तारी से रुक जाएगा, तो कल क़ियामत के दिन उसे इस का बदला मिलेगा।

भाइयो ! यही वह चीज़ है, जो एक मोमिन और एक काफ़िर की ज़िंदगी में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ पैदा कर देता है। मोमिन की नज़र हर मामले में आख़िरत के अंजाम पर होती है और काफ़िर जो कुछ सोचता है, इसी ज़िंदगी को सामने रख कर सोचता है। इन्सान जब इस ज़िंदगी को ही अपना मक़्सूद बना लेता है, तो चाहे वह ज़ुबान से खुदा-परस्ती का दावा करता रहे, लेकिन वह असल में दुनियापरस्त हो जाता है। दुनियापरस्त जो कुछ करता है, अपनी खुशी के लिए करता है, वह फ़ायदों के हासिल कर लेने को अपनी मंज़िल बना लेता है, जैसे दौलत हासिल करना, खेती और कारोबार की तरक़्क़ी, इक्तिदार पर क़ब्ज़ा, शोहरत और नाम और दिखावा वग़ैर-वग़ैरह। जब उस से फ़ायदे हासिल हो जाते हैं, तो वह फूल जाता है और अगर हासिल न हों, तो उस का दिल टूट जाता है। उस का सहारा माद्दी सहारों पर होता है, उसे ये सहारे मिल जाएं, तो फूला नहीं समाता और अगर छिन जाएं तो हाथ पर हाथ रख कर बैठा रहता है। इस के खिलाफ़ खुदापरस्त मोमिन जो कुछ करता है, अल्लाह की खुशी के लिए करता है, उस का भरोसा अल्लाह की ज़ात पर होता है, वह चाहे जिस हाल में हो, यही समझता है कि यह सब अल्लाह की तरफ़ से है। इसी लिए न मुसीबतों से उस का दिल टूटता है और न आसानियों में वह आपे से बाहर हो जाता है।

भाइयो ! जिस किसी ने अपनी इस हैसियत को समझ लिया, उस ने ईमान की लज़्ज़त पा ली। हममें से हर शख्स को इसी रोशनी में अपने ईमान का जायज़ा लेना चाहिए और जो कुछ कमी हो, उसे पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए। ईमान की दौलत सब से बड़ी दौलत है और यही वह पूंजी है जो आख़िरत में काम आएगी।

أَقُولُ قَوْلِي هٰذَا وَاسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِي وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِينَ ۝

अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम व लिसाइरिल मुस्लिमीन०

# अल्लाह से बेचने-ख़रीदने का समझौता

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدَانَا لِلْاِسْلَامِ وَمَنَّ عَلَیْنَا بِالْاِیْمَانِ وَاخْتَارَنَا لِاُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَفْوَةِ خَلْقِهٖ وَاَكْرَمِ عِبَادِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَعَلٰۤی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِیْنَ۔ اَشْهَدُ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰی مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ یُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ فَیَقْتُلُوْنَ وَیُقْتَلُوْنَ وَعْدًا عَلَیْهِ حَقًّا فِی التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِیْلِ وَالْقُرْاٰنِ وَمَنْ اَوْفٰی بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَیْعِكُمُ الَّذِیْ بَایَعْتُمْ بِهٖ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ۔

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिल इस्लामि व मन-न अलैना बिल ईमानि वख़्ता-र-ना लिउम्मति मुहम्मदिन सफ़्वति ख़ल्क़िही व अक्रमि अिबादिही सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही अज-मईन अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू० अम्मा बअ्दु फ़-अअूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम० इन्नल्लाहश्तरा मिनल मुअ्मिनी-न अन्फ़ुसहुम व अम-वालहुम बिअन-न लहुमुल जन्न-त युक़ातिलू-न फ़ी सबिलिल्लाहि फ़ यक़्तुलू-न व युक़्तलू-न वअ्दन अलैहि हक़्क़न फ़ित्तौराति वल इंजीलि वल क़ुर-आनि व मन औफ़ा बिअह्दिही मिनल्लाहि फ़स्तब्शिरू बिबैअिकुमुल्लज़ी बायअ्तुम बिही व ज़ालि-क हुवल फ़ौज़ुल अज़ीम०

अज़ीज़ो और भाइयो ! ईमान असल में एक मामला है, जो ख़ुदा और बन्दे के दर्मियान तै होता है। अभी जो आयत आप के सामने पढ़ी गयी, उस में अल्लाह तआला ने इसी बात की तरफ़ इशारा किया है। ईमान सिर्फ़ इस बात का नाम नहीं है कि आदमी कुछ अनदेखी हक़ीक़तों को मान ले, बल्कि असल में वह एक समझौता है, जिस के मुताबिक़ बन्दा अपना नफ़्स और अपना माल ख़ुदा के हाथ बेच देता है और इस के बदले में ख़ुदा की तरफ़ से इस वायदे को क़ुबूल कर लेता है कि मरने के बाद दूसरी ज़िंदगी में अल्लाह तआला उसे जन्नत अता करेगा।

भाइयो ! जहां तक असल हक़ीक़त का ताल्लुक़ है, उस को अगर सामने रखा जाए, तो इन्सान के पास जो कुछ है, उस का मालिक अल्लाह तआला ही है, हमारी यह जान और हमारा यह माल और सामान अपनी असल के एतबार से सब कुछ अल्लाह ही का है, क्योंकि वही उन सब

चीज़ों का पैदा करने वाला है और हमारे पास जो कुछ है, वह सब उसी का दिया हुआ है। इस लिए इस हैसियत से खरीद व फ़रोख्त का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। इंसान के पास उस का अपना है ही क्या जो उसे बेचे और वह कौन-सी चीज़ है, जो खुदा की मिल्कियत से बाहर है कि वह उसे खरीदे, लेकिन इंसान के अंदर अल्लाह तआला ने एक ऐसी चीज़ रख दी है जो पूरी की पूरी उसी के हवाले कर दी गयी है और वह है उस का अख्तियार। अल्लाह तआला ने इंसान को एक हद तक इरादे और अमल की आज़ादी दी है, अगरचे इरादे और अमल की इस आज़ादी के बावजूद सच्चाई यह तो नहीं हो जाती कि इन्सान वाक़ई किसी चीज़ का मालिक हो गया और कोई चीज़ खुदा की मिल्कियत से निकल गयी और इन्सान को यह हक़ मिल गया कि वह अल्लाह की दी हुई चीज़ों को जिस तरह चाहे, इस्तेमाल करे, बल्कि इस का मतलब सिर्फ़ यह है कि इंसान को अल्लाह तआला ने यह आज़ादी दे दी है कि अगर वह खुदा की बख्शी हुई किसी चीज़ पर खुदा के मालिकाना हक़ न माने और आप ही उन चीज़ों का मालिक बन बैठे, तो कोई ताक़त ज़बरदस्ती उसे ऐसा करने से रोकेगी नहीं, वह इस बारे में आज़ाद है कि अल्लाह तआला के दिए हुए अख्तियारों की हदों में रहते हुए अल्लाह तआला की दी हुई चीज़ों को जिस तरह चाहे, काम में लाए। बस यही वह जगह है, जहां खरीदने-बेचने का सवाल पैदा होता है, लेकिन भाइयो! यह खरीदना-बेचना ऐसा नहीं कि अल्लाह तआला किसी ऐसी चीज़ को लेना चाहता है, जो उस की नहीं है, बल्कि इस का मतलब सिर्फ़ इतना है कि जो चीज़ खुदा की है और जिसे अपनी अमानत के तौर पर इंसान के हवाले कर दिया है और साथ ही इंसान को यह आज़ादी दे दी है कि वह चाहे तो उस चीज़ को खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ काम में लाए और चाहे तो अपनी मनमानी कर सके। उस के बारे में अल्लाह तआला यह चाहता है कि बन्दा अल्लाह की दी हुई आज़ादी से इस तरह काम ले कि किसी चीज़ में अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई काम न करे और वह रवैया अख्तियार करे जो एक नमक हलाल और वफ़ादार गुलाम का रवैया होता है और उस रवैए से बचे जो एक नमकहराम और बाग़ी का रवैया होता है। इस तरह गोया बंदा अपनी खुद-मुख्तारी को अल्लाह के हवाले कर देने का इक़रार करता है और इसी को ख़रीदने-बेचने की हैसियत दी गयी है, अल्लाह तआला यह वायदा फ़रमाता है कि अगर बंदा अपनी इस खुद मुख्तारी को, जो असल

में मेरी ही दी हुई है, मेरे हवाले कर देगा, तो मैं उसे उस की क़ीमत दूंगा और वह क़ीमत मेरी वह जन्नत है, जो उस हमेशा रहने वाली ज़िंदगी में बंदे को दी जाएगी। अब जो शख्स अल्लाह की मर्ज़ी के मुक़ाबले में अपनी खुद-मुख्तारी से अलग होना मान लेता है, वह मोमिन है और इसी बेचने-खरीदने का दूसरा नाम ईमान है और जो शख्स इस से इन्कार कर देता है या इक़रार करने के बावजूद वह रवैया नहीं अख्तियार करता जो खरीदने-बेचने की शक्ल में अपनाना चाहे, तो वह काफ़िर है और अल्लाह तआला के साथ यह मामला न करने का नाम ही कुफ़्र है।

'भाइयो और अज़ीज़ो ! अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है कि हम सब मोमिन हैं। हम सब ने अल्लाह तआला से यह इक़रार किया है कि हम उस की बख्शी हुई आज़ादी को ठीक उसी तरह काम में लाएंगे, जिस तरह उस की मर्ज़ी होगी। हमें इस बात का इक़रार है कि हमारे पास जो कुछ है, वह अल्लाह ही का है और हमें कोई हक़ नहीं पहुंचता है कि हम किसी चीज़ को उस के असल मालिक की मंशा के खिलाफ़ काम में लाएं, चाहे वह हमारी जान हो या हमारा माल।

भाइयो ! जिस हक़ीक़त की तरफ़ ऊपर की आयत में अल्लाह तआला ने इशारा फ़रमाया है और जिस की कुछ तश्रीह अभी मैंने आप के सामने रखी, उस में तमाम इंसानों के लिए बहुत बड़ी आज़माइशें हैं। पहली आज़माइश तो इंसान की शराफ़त की आज़माइश है, अल-बत्ता अल्लाह तआला यह देखना चाहता है कि मेरी तरफ़ से थोड़ी-सी आज़ादी मिल जाने के बाद इंसान यह शराफ़त दिखाता है या नहीं कि मालिक को मालिक समझे और नमकहरामी और बग़ावत पर न उतर आए और दूसरी आज़माइश यह है कि क्या बंदा अपने खुदा पर इतना भरोसा करता है या नहीं कि कल क़ियामत के दिन मिलने वाले बदले के वायदे पर आज अपनी खुद-मुख्तारी से हाथ खींच ले और जो वक़्ती फ़ायदे और मज़े उसे फ़ौरन मिल सकते थे, उन्हें छोड़ दे ?

भाइयो ! यहां आप को यह धोखा नहीं होना चाहिए कि जो शख्स अल्लाह तआला से किए गए खरीदने और बेचने के इस मामले में कोताही बरतता है या उन की तरफ़ से ग़ाफ़िल है, मैं उसे मोमिनों की हदों से अलग कर रहा हूं। असल में बात यह है कि दुनिया में हर वह शख्स जो ईमान के उन तमाम अक़ीदों को माने, जिनके मुताबिक़ कोई शख्स मुसलमान होता है, वह शरीअत और क़ानून की नज़र में मोमिन है और इस्लामी

समाज में उसके साथ वही मामला किया जाएगा, जो मोमिनों के साथ किया जाता है, लेकिन मैं जिस बात की तरफ़ आप को मुतवज्जह कर रहा हूं, वह यह है कि ख़ुदा के यहां वही ईमान भरोसे का है कि बंदा अपने ख़्याल और अमल दोनों में अपनी आज़ादी और ख़ुद-मुख़्तारी को ख़ुदा के हाथ बेच दे और ख़ुदा के हक़ में अपनी मिल्कियत के तमाम दावों से हाथ खींच ले, इस लिए अगर कोई शख़्स कलिमे का इक़रार करता है, नमाज़-रोज़ा और दूसरे इस्लामी हुक्मों का पाबंद है, लेकिन वह अपने जिस्म व जान, अपने दिल व दिमाग़, अपने बदन की ताक़तों और अपने माल और साधनों और इसी तरह उन तमाम चीज़ों का, जो उस के क़ब्ज़े और अख़्तियार में दी गयी हैं, अपने आप ही को मालिक समझता है और कहता है कि इन जीज़ों को मैं जिस तरह चाहूं इस्तेमाल करूं, तो ऐसा शख़्स हो सकता है कि दुनिया में मोमिन ही समझा जाता रहे, लेकिन ख़ुदा के यहां ऐसे शख़्स की गिनती मोमिनों में नहीं हो सकती, क्योंकि उसने ख़ुदा के साथ ख़रीदने-बीचने का वह मामला ही नहीं किया, जिसे क़ुरआन में ईमान की असल हक़ीक़त बताया गया है। भला जो शख़्स इन मौक़ों पर अपनी जान और अपना माल खपाने से जान चुराए, जहां ख़ुदा की मर्ज़ी हो और अपनी जान और अपना माल उन कामों में खपाता रहे, जो ख़ुदा की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हैं, तो उस के बारे में यही तो समझा जाएगा कि यह शख़्स अपने ईमान के दावे में सच्चा नहीं है। उस ने ख़ुदा के साथ ख़रीदने-बेचने का वह मामला दिल से नहीं किया, जिसे ईमान की शर्त बताया गया है, बल्कि उस ने सिर्फ़ ज़ुबान से एक ऐसा दावा कर लिया है, जिसकी तस्दीक़ उस के अमल से नहीं होती।

दोस्तो और अज़ीज़ो ! ईमान की यह हक़ीक़त इन्सानी ज़िंदगी को अलग-अलग दो क़िस्मों में बांट देती है। एक वह ज़िंदगी, जो सही मानी में ईमानी ज़िंदगी है। उस ज़िंदगी का हर काम ख़ुदा की मर्ज़ी के तहत होता है। उस के किसी रवैए में ख़ुद-मुख़्तारी का रंग नहीं आने पाता, हां, अगर भूल-चूक में कोई बात उस समझौते के ख़िलाफ़ हो जाती है, तो वह फ़ौरन ही इस रवैए से पलटता है और फिर सही रुख़ अख़्तियार कर लेता है और दूसरी काफ़िराना ज़िंदगी, जिस में ख़ुदा की मर्ज़ी और उसकी फ़रमांबरदारी का कोई सवाल ही नहीं उठता, इन्सान जो कुछ करता है अपनी मर्ज़ी या अपने जैसे दूसरे इंसानों की मर्ज़ी के मातहत करता है।

ज़िंदगी की ये दोनों क़िस्में हर एक की ज़िंदगी में भी अलग-अलग

नज़र आती हैं और सब की मिली-जुली समाजी ज़िंदगी में भी। अल्लाह से क़ौल व क़रार करने वाले बन्दों का जब कोई गिरोह किसी संघ या किसी सरकार की शक्ल अख़्तियार करता है, तो वहां भी हर चीज़ ख़ुदा की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ और उस की हिदायतों के मुताबिक़ अमल में आती है, लेकिन अगर ऐसा नहीं होता, तो फिर मिली-जुली समाजी ज़िंदगी में ख़ुदा की मर्ज़ी के बदले किसी और की मर्ज़ी चलती है, यह कोई और चाहे कोई बादशाह हो या तानाशाह या जम्हूर (जनता) का बनाया हुआ कोई इदारा। इस तरह हर एक की अलग-अलग ज़िंदगी मोमिनों जैसी हो सकती है और काफ़िरों जैसी भी और यह बिल्कुल मुम्किन है कि किसी समाजी ज़िंदगी का अंदाज़ तो काफ़िरों जैसा हो, लेकिन उस पर चलने वाले लोग मुसलमान ही कहलाते हों, इस के लिए ग़ैर-मुस्लिम होना ज़रूरी शर्त नहीं।

भाइयो ! यहां यह सवाल भी बड़ा अहम है कि बन्दा जब ख़ुदा की मर्ज़ी पर चलने का फ़ैसला करे, तो ख़ुदा की मर्ज़ी उसे कौन बताए। इस का मतलब यह हरगिज़ नहीं है कि बन्दा ख़ुद यह तज्वीज़ कर ले कि ख़ुदा की मर्ज़ी क्या है। अगर वह ऐसा करता है तो यह असल में ख़ुदा की मर्ज़ी पर चलना नहीं, बल्कि अपनी ही मर्ज़ी पर चलने का एक दूसरा ढंग है। ख़ुदा की मर्ज़ी पर चलने का मतलब यह है कि यह मर्ज़ी ख़ुदा ही ख़ुद बताए और यहीं से यह बात बिल्कुल साफ़ हो जाती है कि ख़ुदा की किताब और उसके पैग़म्बर की हिदायत के बग़ैर इंसान ख़ुद यह तै नहीं कर सकता कि ख़ुदा की मर्ज़ी क्या है और क्या नहीं।

दोस्तो और अज़ीज़ो ! हम सब को फिर एक बात पर अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए कि हमने ईमान का इक़रार कर के अल्लाह से यह मामला कर लिया है, लेकिन यह याद रहे कि यह मामला सिर्फ़ ज़ुबानी जमा ख़र्च का नाम नहीं है, बल्कि इस की असल क़ीमत यह है कि आदमी ज़िंदगी भर अपने किए हुए इक़रार पर क़ायम रहे। इसी लिए अल्लाह तआला ने इस का मुआवज़ा दुनिया की ज़िंदगी ख़त्म हो जाने के बाद अदा करने का वायदा फ़रमाया है, क्योंकि हक़ीक़त में यह मामला पूरा ही उस वक़्त होता है, जब आदमी अपनी पूरी ज़िंदगी से यह बात साबित करदे कि उसने अल्लाह के साथ जो अह्द किया था, वह उसने पूरा दिखा-दिखाया, और अब वह हक़ और इंसाफ़ के मुताबिक़ उस बदले के पाने का हक़दार है, जिसका वायदा उससे दुनिया की ज़िंदगी में किया गया था।

हम में से हर शख़्स यह सोच सकता है कि असल में ईमान का इक़रार कैसा सख़्त इम्तिहान है। हमें क़दम-क़दम पर इस बात का सबूत देना है कि वाक़ई हमें अल्लाह की मर्ज़ी पसन्द है। उस की मर्ज़ी के मुक़ाबले में हम किसी की मर्ज़ी की परवाह नहीं करते। अगर दीन का तक़ाज़ा हो, तो हम अपना वक़्त, अपना माल, अपना फ़ायदा और अपनी जान, सब कुछ क़ुर्बान करने को तैयार हैं। हमने सोच-समझ कर यह इक़रार किया है कि ख़ुदा ही हमारी जान और हमारे माल का मालिक है और अब कोई वजह नहीं कि हम अपनी जान और माल को ख़ुदा के हुक्म पर क़ुर्बान करने से जी चुराएं, लेकिन अगर ख़ुदा-न-ख़्वास्ता हम अपनी ताक़तों, अपने माल और अपने साधनों को ख़ुदा की मंशा के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करते हैं या ख़ुदा और उसके दीन की ख़िदमत के बदले हम उसे ख़ुदा के बाग़ियों और उसके ना-फ़रमानों की ख़िदमत में लगाते हैं, तो क्या यह इस बात की दलील नहीं होगी कि हम अपने इक़रार में झूठे हैं। हमारे इक़रार का खुला हुआ तक़ाज़ा यह है कि हमारी ताक़तों का कोई एक हिस्सा भी ख़ुदा की मंशा के ख़िलाफ़ इस्तेमाल न हो।

दोस्तो और अज़ीज़ो ! यह बड़ा नाज़ुक सवाल है और हमें हर वक़्त इसी हिसाब से अपना जायज़ा लेते रहना चाहिए और साथ ही ख़ुदा से मदद मांगते रहना चाहिए कि वह हमें इस इक़रार को सही तरीक़े पर निभाने की ताक़त अता फ़रमाए। उस की ताक़त और मदद के बग़ैर बन्दा कर ही क्या सकता है।

بَارَكَ اللّٰهُ لِيْ وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنِيْ وَاِيَّاكُمْ بِالْاٰيَاتِ وَالذِّكْرِ
الْحَكِيْمِ اِنَّهٗ تَعَالٰى جَوَادٌ كَرِيْمٌ مَلِكٌ بَرٌّ رَّءُوْفٌ رَّحِيْمٌ۔

बारकल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरआनिल अज़ीमि व न-फ़-अ-नी व इय्या कुम बिल आयाति वज़्ज़िक्रिल हकीम इन्नहू तआला जवादुन करीमुन बर्रुर्रऊफ़ुर्रहीम०

# नेकी की तरफ़ बुलाना

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَ
لَهُ الْحَمْدُ فِی الْاٰخِرَةِ۔ وَهُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ۔ اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ وَاَشْكُرُهٗ۔ وَاَشْهَدُ
اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ۔ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِیَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ
وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا كَثِیْرًا۔
اَمَّا بَعْدُ ـــ فَقَدْ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی: وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ یَّدْعُوْنَ
اِلَی الْخَیْرِ وَیَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَیَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ۝

अल हम्दु लिल्लाह अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि व लहुल हम्दु फ़िल आखिरः व हु-वल हकीमुल खबीर० अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अश्हदुअल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबी-य-ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्ला-हुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्दु—फ़क़द क़ालल्लाहु तआला, 'वल-तकुम मिन्कुम उम्म-तुंय-यद्अू-न इलल खैरि व यअ्मुरू-न बिल मअ्रूफ़ि व यन्हौ-न अनिल मुन्करि व उलाइ-क हुमुल मुफ़्लिहून०'

मुसलमान भाइयो ! अल्लाह तआला का इर्शाद है कि, 'तुम में कुछ लोग तो ऐसे ज़रूर ही रहने चाहिए, जो नेकी की तरफ़ बुलाएं, भलाई का हुक्म दें और बुराइयों से रोकते रहें, जो लोग ये काम करेंगे, वही कामि-याबी पाएंगे।' इसी बुनियाद पर हर मुसलमान मर्द और औरत पर वाजिब है कि वह अपने हाल और अपनी ताक़त भर भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके। भली बातों का हुक्म देना और बुराइयों से

रोकना दीन की अहम ज़रूरतों में से है। इस के बिना न दीन का काम पूरा हो सकता है और न हम दीन पर क़ायम रह सकते हैं। यही एक काम ऐसा है, जिसकी वजह से उम्मत को भलाई और कामियाबी मिल सकती है। अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ताकीद फ़रमायी है कि हममें से हर एक दूसरे को नेकी के कामों पर उकसाए, बुराइयों से रोके, भलाई और भले कामों में एक दूसरे का साथ दे, ज़ालिमों को ज़ुल्म से रोके रखे और ऐसे ना-समझों को, जो अपनी हरकतों से दीन को नुक़सान पहुंचाते हैं, ग़लत काम करने से रोक दे, इस में उन के लिए और हम सब के लिए भलाई है। अल्लाह के हुक्मों की पाबन्दी और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिदायतों के मुताबिक़ अमल, यही एक शक्ल है भलाई और कामियाबी की और हम सब के लिए ज़रूरी है कि अपने लिए भलाई और कामियाबी की शक्लें पैदा करें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, तुम में से जो कोई किसी बुराई को देखे तो उस को चाहिए कि वह अपने हाथ से उसे बदल दे, लेकिन अगर वह ऐसा करने की ताक़त न रखता हो, तो उसे चाहिए कि अपनी ज़ुबान से काम लेकर उसे ठीक करने की कोशिश करे और अगर किसी मजबूरी की वजह से वह यह भी न कर सके, सो उस का दिल तो उस बुराई को मिटाने के लिए बेचैन हो जाए और यह ईमान का सबसे कमज़ोर दर्जा है।'

भाइयो! इस हदीस की रोशनी में हर मुसलमान मर्द और औरत के लिए उस की अपनी ताक़त की हद तक ज़रूरी कर दिया गया है कि वह अगर कहीं किसी बुराई को देखे, तो उसे मिटादे और उस की जगह नेकी और भलाई को क़ायम करने की पूरी कोशिश करे। अब अगर कोई किसी बुराई को मिटाने की ताक़त रखता है और उसे अपनी ताक़त से दबा सकता है तो उसे ऐसा ही करना चाहिए लेकिन अपनी किसी मजबूरी या हालात के दबाब के तहत वह ऐसा करने की ताक़त न रखता हो, तो फिर उसे ज़ुबान से काम लेना चाहिए और लोगों को समझा-बुझा कर बुराई से रोकने और भलाई अपनाने की कोशिश करनी चाहिए और अगर हालात ऐसे बिगड़ गये हों कि बुराई के खिलाफ़ ज़ुबान खोलने की गुंजाइश बाक़ी न रही हो तो फिर ज़ाहिर हैं कि ऐसी शक्ल में मोमिन का दिल इंतिहाई बेचैनी महसूस करेगा। वह दिल, जिसे बुराइयों के फलने-फूलने और अच्छाइयों के मिटने पर

बेचैनी महसूस न हो तो समझना चाहिए कि उस दिल में ईमान की गर्मी बाक़ी नहीं रही है । कमज़ोर से कमज़ोर ईमान भी अल्लाह की नाफ़रमानियां और उसके खिलाफ़ बग़ावत को नहीं सह सकता । हर वह बात बुराई है, जिसमें अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नाफ़रमानी हो रही हो और सब से बड़ी बुराई कुफ़्र, शिर्क, और अल्लाह के मुक़ाबले में इंसान की अपनी फ़रमांरवाई और हाकमियत का एलान है। जो मुसलमान यह ताक़त रखता हो कि वह किसी बुराई को मिटाकर उस के बदले अल्लाह की हुक्मबरदारी के काम करा सके, लेकिन इसके बावजूद वह बुराई को सहले और ताक़त का इस्तेमाल न करे, वह अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के नज़दीक गुनाहगार है, अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करने वाला है, तमाम मुसलमानों के लिए दाग़-धब्बा है और इंसानियत का सबसे बड़ा दुश्मन है । इस्लाम की नज़र में अल्लाह की ना-फ़रमानी इंसानी तबाही की सबसे बड़ी वजह है, जो कोई इस वजह को दूर करने की ताक़त रखते हुए उसे दूर न करे, वह अल्लाह की नज़र में बड़ा मुजरिम है। यह एक ऐसा जुर्म है, जिस की सज़ा आख़िरत में तो जो मिलना है वह मिलकर ही रहेगी, लेकिन इस दुनिया में भी उस का बदला भुगतना पड़ता है। बुराइयां जब फैलती हैं, तो सिर्फ़ वही लोग उस की सज़ा नहीं भुगतते, जो बुराइयां करते हैं, बल्कि बुराइयां पूरे समाज को गन्दा कर देती हैं और फिर वे लोग भी नहीं बचते, जो ख़ुद नेक होते हैं और बुराइयों से बचते रहते हैं। अल्लाह तआला का इर्शाद है—

"وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنكُمْ خَاصَّةً"

वत्तक़ू फ़ित्नतल्ला तुसीबन्नल्लज़ी-न ज़-ल-मू मिन्कुम ख़ास्सः (लोगो ! उस फ़ित्ने से बचो, जिसकी शामत ख़ास तौर पर सिर्फ़ उन ही लोगों तक न रहेगी, जिन्होंने तुम में से गुनाह किया होगा)

इस बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है—'क़सम है उस ज़ात की, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुम ज़रूर-ज़रूर नेकियों का हुक्म देते रहोगे और बुराइयों से रोकते रहोगे, वरना यह बहुत मुम्किन है कि अल्लाह तुम पर अपना अज़ाब भेज दे, फिर तुम उस से दुआओं पर दुआएं मांगोगे, लेकिन तुम्हारी दुआएं मक़बूल न होंगी।

भाइयो ! अल्लाह का शुक्र है कि आप मुसलमान हैं। अल्लाह के दीन पर चलने और अल्लाह को राज़ी करने का इरादा रखते हैं, आ-खिरत में उसके अज़ाब से बचना चाहते हैं और उस की रहमतों में होने की आरज़ू रखते हैं। आप के लिए ज़रूरी है कि ज़िंदगी के हर काम में अल्लाह के हुक्मों की पैरवी और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल० की हिदायतों पर अमल करें, जहां जिस हद तक मुम्किन हो, भला-इयों का हुक्म दें, लोगों को अल्लाह के हुक्मों के मानने पर तैयार करें, बुराइयों से रोकें और अल्लाह के खिलाफ़ इंसान की बग़ावत और सरकशी को दुनिया से मिटाने के लिए जो कोशिश मुम्किन हो, वह करते रहें। अगर हो सके तो ज़ालिमों को ज़ुल्म से रोकने के लिए उनका हाथ पकड़ लीजिए, जिहालत और नादानी की वजह से अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मारने वालों की आंखें खोलने की कोशिश कीजिए, एक दूसरे का भला चाहने के लिए कमर बांध लीजिए, एक दूसरे को हक़ की नसीहत कीजिए, नेकी फैलाने और अल्लाह के कलिमे को बुलंद करने वालों का हाथ बटाइये और यक़ीन रखिये, अगर आप खुलूस के साथ इस मक़सद के के लिए उठ खड़े हों, और इस काम को नर्मी, मुहब्बत और ईमादारी के साथ करने का इरादा कर लें, तो फिर कोई वजह नहीं कि आप पर अल्लाह की रहमतें और बरकतें नाज़िल न हों और दीन और दुनिया की भलाई और कामयाबी आपको नसीब न हो। यही एक ऐसा काम है, जिसके नतीजे में सभी को भलाई, अम्न और सकून मिल सकता है और यही वह काम है, जिसे छोड़ देने की वजह से अल्लाह की रहमतें दूर हो जाती हैं। अल्लाह तआला का इर्शाद है—

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى
ابْنِ مَرْيَمَ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ - كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ
عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ - لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ - (مائده)

लुअिनल्लज़ी-न क-फ़-रू मिम बनी इस्राइ-ल अला लिसानि दाऊ द व ईसब-न मरय-म ज़ालि-क बिमा असौ-व कानू यअ्तदून कानू ला य-त-नाहौ-न अम-मुन्करिन फ़.अ-लूहु ल-बिअ्-स मा कानू यफ़अलून०

—माइद:

'बनी इसराईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र की राह अख्तियार की, उन पर दाऊद और मरयम के बेटे ईसा की ज़ुबान से लानत की गयी,

क्योंकि वे सरकश हो गये थे -और ज़्यादतियां करने लगे थे। उन्होंने एक दूसरे को बुरे कामों के करने से रोकना छोड़ दिया था। बुरा तरीक़ा था, जो उन्होंने अख़्तियार किया।

भाइयो! यह है आपका और मेरा मक़ाम और यह है वह ज़िम्मेदारी, जो आप पर और मुझ पर डाली गयी है। अल्लाह आपको और मुझे तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि हम इस ज़िम्मेदारी को पूरा करें और ऐसा न हो कि कल क़ियामत के दिन उसके हुज़ूर में शर्मिन्दा होना पड़े। अल्लाह आप को और मुझको नेकी का हुक्म करने, बुराइयों से रोकने और भलाई के कामों में एक दूसरे का हाथ बटाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अल्लाह के बन्दो! अल्लाह से डरो, जहां तक हो सके, भलाई का हुक्म दो, बुराई से रोको, ख़ुद अल्लाह की पूरी फ़रमांबरदारी करो और दूसरों को उसकी नाफ़रमानी की लानत से निकालो, नेकी और भलाई के कामों में हाथ बटाओ और कोई ऐसा काम न करो, जिससे बदी को ताक़त हासिल हो।

بَارَكَ اللّٰهُ لِيْ وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ ـ اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا ـ
وَاسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَاسْتَغْفِرُوْهُ اِنَّهٗ
هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ؁

बारकल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरआनिल अज़ीम अक़ुलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम मिन कुल्लि ज़म्बिंव-वस्तग़्फ़िरूहु इन्नहु हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

———

# दीन की ख़िदमत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْغَنِيِّ الْحَمِيْدِ۔ اَلْمُبْدِئُ الْمُعِيْدُ۔ ذِی الْعَرْشِ الْمَجِيْدِ۔
اَلْفَعَّالِ لِمَا يُرِيْدُ۔ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا۔ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ۔ اَحْمَدُهٗ
وَاَشْكُرُهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهُ الْعَزِيْزُ
الْحَمِيْدُ۔ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَفْضَلُ مَنْ دَعَا
اِلَى الْاِيْمَانِ وَالتَّوْحِيْدِ۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ۔ اَمَّا بَعْدُ۔

अल-हम्दु लिल्लाहिल ग़नीयिल हमीद० अल-मुब्दिउल मुईद० ज़िल अर्शिल मजीद० अल-फ़अ्-आलिल लिमा युरीदु० अ हा-त बिकुल्लि शैइन इल्मा व हु-व अला कुल्लि शैइन शहीद अह्मदुहू व अश्कुरुहू व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहुल अज़ीज़ुल हमीद० व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अफ़्ज़लु मनदआ इलल ईमानि वत्तौहीद० अल्ला हुम-म सल्लि व सल्लिम अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिव-व अला आलिही व अस्हाबिही अजमईन० अम्मा बअ्दु—

अज़ीज़ो और दोस्तो ! आप और हम सब यह अक़ीदा रखते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के आख़िरी रसूल हैं। अब क़ियामत तक अल्लाह किसी को अपना रसूल बनाकर नहीं भेजेगा, इसलिए उसने इस बात का ज़िम्मा लिया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिए उसने जो आख़िरी हिदायत भेजी है, वह क़ियामत तक उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा और अल्लाह का दीन अपनी सही शक्ल में मौजूद रहेगा लेकिन हिदायत के मौजूद होने के साथ साथ इसकी भी ज़रूरत है कि उस की तरफ़ लोगों को बुलाया जाए और उसकी हिदायत को तमाम इन्सानों तक पहुंचाया जाए। यह ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला ने उसी उम्मत पर डाली है, जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह का रसूल और आपके लाए हुए दीन को

अल्लाह का दीन मानती है, यह उम्मते मुस्लिमा है। अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र है कि उसने हमें इस उम्मत में पैदा फ़रमाया और अपने दीन की इस ख़िदमत की सआदत से नवाज़ा।

भाइयो ! दीन की यह ख़िदमत हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है, जिसको अल्लाह तआला ने जितनी क़ाबिलियत दी है, उसी के हिसाब से वह इस ख़िदमत को अंजाम देने का ज़िम्मेदार है। किसी के काम करने का दायरा अगर पूरा मुल्क है, तो कोई अपनी बस्ती तक इस ख़िदमत को अंजाम दे सकता है। कोई अगर अपनी बिरादरी और मुहल्ले में यह काम कर सकता है, तो कोई अपने घर वालों के सुधारने और सिखाने-पढ़ाने की क़ाबिलियत रखता है, फिर किसी को अल्लाह तआला ने लिखने और बोलने की क़ाबिलियत दी है तो वह इससे काम लेता है और अगर बात-चीत से ही अपनी बात समझा सकता है तो वह यही काम करता है और एक पहलू तो ऐसा है, जिसमें सब ही शरीक हैं और वह है अपने अमल से दीन की गवाही देना यानी अपनी पूरी ज़िंदगी को इस्लामी ढांचे में ढालने की कोशिश करना और अपने अख़्लाक़ और मामलों और ताल्लुक़ात को ऐसा बना लेना कि जो कोई भी देखे उसके सामने अल्लाह के दीन की सही तस्वीर आ जाए और साथ ही ऐसी बात से परहेज़ करना, जिससे कोई ऐसा नमूना सामने आए, जो दीन के ख़िलाफ़ हो।

दीन की ख़िदमत का यह काम अगरचे बिल्कुल शुरू का काम है, लेकिन फिर भी आसान काम नहीं। दीन की ख़िदमत के लिए वह वक़्त भी आता है, जब इंसान को अपनी जान और माल सब कुछ उसके लिए लगा देना पड़ता है, लेकिन इस मंज़िल तक पहुंचने से पहले दावत का काम पूरी तरह और सही तरीक़े पर अंजाम देना ज़रूरी है। दावत का काम करने के लिए पहली ख़ूबी और बहुत ही ज़्यादा ज़रूरी ख़ूबी यह है कि दावत देने वाले का ताल्लुक़ अल्लाह से ठीक हो। हक़ की दावत में ताक़त इसी से आती है। हज़रात अंबिया अलैहिमुस्सलाम के पास यही एक ताक़त ऐसी होती थी, जिस से वे तंहा पूरी दुनिया के मुक़ाबले में खड़े हो जाते थे। जो लोग अंबिया अलैहिमुस्सलाम के तरीक़े दावत का काम करने उठें, उनके लिए ज़रूरी है कि वे इस एतबार से अपनी हालत पर बराबर ग़ौर करते रहें। दीन की दावत के लिए माद्दी वसीलों से पहले इस बात की ज़्यादा ज़रूरत है कि दीन का काम करने वालों को अल्लाह तआला की क़ुदरत और ताक़त पर पूरा ईमान हो, वे उसी की मदद पर

भरोसा रखते हों, उसी की खुश्नूदी उनके सामने हो, सिर्फ़ उसको राज़ी कर लेने की आरज़ू इस ताक़त के साथ उनके दिलों में बैठ गई हो कि इसके अलावा कोई दूसरी चीज़ उनका मक्सूद न बन सके। दुनिया की दौलत, ताक़त, हुकूमत और राहत व आराम कोई चीज़ भी उनका मक्सूद न हो। वे जो कुछ करें अल्लाह की जन्नत हासिल करने के लिए करें। वे अगर दुनिया का इंतिज़ाम संभालने की कोशिश करें, तो सिर्फ़ इसलिए कि दुनिया से खुदा की नाफ़रमानी का बिगाड़ दूर हो, वे अगर माद्दी वसीलों की तलब करें तो सिर्फ़ इसलिये कि भलाई फले-फूले और बुराई दुनिया से मिटे। ग़रज़ यह कि दीन की दावत का काम अपने मिज़ाज और अपनी खूबियों के लिहाज़ से दुनिया के हर काम से बिल्कुल अलग हो। उसको दुनिया के आंदोलनों की तरह कोई इंक़िलाबी आंदोलन समझना सही नहीं है। यह आन्दोलन जिस तरह का इन्क़िलाब लाना चाहता है, वह आप ही अपनी मिसाल है।

इस्लामी इन्क़िलाब का काम असल में दिलों से शुरू होता है। इस दावत की असल जगह दिल है। सबसे पहले आपके दिल की गिरहें खोलना ज़रूरी हैं और भाइयो ! आप यह जानते हैं कि दिल की गिरहें खोलने के लिए बड़ी नर्मी, मुहब्बत और हमदर्दी की ज़रूरत है, ताक़त से सर झुकाए जा सकते हैं, लेकिन दिलों को मुट्ठी में लेने के लिए कुछ और ही तरह से काम करना पड़ता है।

अज़ीज़ो ! हम सब का ईमान है कि अल्लाह का दीन तमाम इंसानों के लिए रहमत बनकर आया है और इस एतबार से ज़रूरी है कि उसे हर इन्सान तक पहुंचाया जाए, लेकिन दोस्तो ! इस हक़ीक़त को भी सामने रखना चाहिए कि आज की उम्मते मुस्लिमा भी बेहद सुधार चाहती है, यह भी हमारा फ़र्ज़ है कि हम इस उम्मत के ज़्यादा से ज़्यादा हिस्से को जल्द से जल्द ठीक करें। इसी से हमारी आगे की राह खुलती है और इस को छोड़कर हम किसी तरह क़दम आगे नहीं बढ़ा सकते। हम जानते हैं कि उम्मत का एक बहुत बड़ा हिस्सा इस्लाम से दूर हो गया है, अख़्लाक़ और आदात में इंतिहाई गिर गया है, लेकिन हमें मायूस होने की ज़रूरत नहीं। अल्लाह ही बेहतर जानता है कि शराबखानों और जिहालत व गुमराही के दूसरे अड्डों में न जाने कितने नव-जवान ऐसे मिल जाएं जिन की सलाहियतों से इस्लाम को फ़ायदा पहुंच सके और जिनकी तब्दीली से दावत को बहुत बड़ा फ़ायदा पहुंच जाए।

दोस्तो ! दावत के काम में रोड़ा अटकाने के लिए शैतान का एक कामियाब हथियार हमारे आपस के मतभेद हैं। जो लोग अल्लाह के दीन का काम करने उठें, उन्हें इस मैदान में शैतान को नीचा दिखाने की पूरी कोशिश करना पड़ेगी। इसके लिए ज़रूरी है कि आप तमाम मतभेद की चीज़ों से बचिए, दीन की बुनियादी बातों पर लोगों को जमाइए, फ़िक़्ह और कलाम के मतभेदों का ज़माना बीत गया। अगर आप इन मतभेदों को हल करने के पीछे पड़ेंगे, तो सिवाए इसके और कुछ हासिल न होगा कि आप एक और मतभेद का रास्ता पैदा करने की वजह बन जाएं और उम्मत के अनगिनत गिरोहों में एक और नए गिरोह को बढ़ा दें। आप हमेशा मतभेद वाले मसअलों से बचकर निकलिए। दीन की बुनियादी बातों की तरफ़ लोगों को बुलाइए, उनके अन्दर ईमान की रोशनी पैदा कीजिए, अल्लाह की मुहब्बत और आख़िरत का ख़ौफ़ दिलों मे बिठाए अख़्लाक़ और मामलों को इस्लामी उसूलों के मुताबिक़ चलने की दावत दीजिए फ़र्ज़ों की पाबन्दी पर उभारिए और अल्लाह की नाफ़रमानियों से बचने का जज़्बा पैदा कीजिए। ये वह बुनियादी बातें हैं, जिनमें आज तक कोई मतभेद नहीं हुआ है, उन पर ख़ुद अमल कीजिए और दूसरों को साथ लेकर चलने के लिए हमदर्दी और मुहब्बत से उनका हाथ पकड़िए, मलामत करने और इलज़ाम देने से काम नहीं बनेगा, ज़रूरत ख़ुलूस और हमदर्दी की है, दूसरों की कमज़ोरियों पर ताना देने में नफ़्स की लज़्ज़त ज़रूर है, लेकिन इससे काम नहीं बनता। आप दूसरों की कमज़ोरियों के लिए ख़ुद ही उज़्र खोजिए और अपनी तमाम ताक़तें उसूली और बुनियादी बातों पर लगा दीजिए।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ اَيُّهَا الْمُسْلِمُوْنَ۔ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى وَيَسِّرُوْا وَلَا تُعَسِّرُوْا

وَبَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا وَكُوْنُوْا عِبَادَ اللّٰهِ اِخْوَانًا۔ اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَ

لَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ۔ فَاسْتَغْفِرُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ۔

फ़त्तक़ुल्लाह अय्युहल मुस्लिमून व तआवनू अलल बिर्रि वत्तक़्वा व यस्सिरू व ला तुअस्सिरू व बश्शिरू वला तुनफ़्फ़िरू व कूनू अिबाद-ल्लाहि इख़्वाना अक़ूलु क़ौली हाज़ा व-अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम व लि साइरिल मुस्लिमीन फ़स्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूर्रहीम०

# नेकियों का हुक्म देना

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ۔ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ تَبْصِرَةً لِّذِى الْقُلُوْبِ وَالْاَبْصَارِ وَتَذْكِرَةً لِّاُولِى الْاَلْبَابِ وَالْاِعْتِبَارِ۔ اَحْمَدُهٗ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهُ الْهَادِىْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ، وَالدَّاعِىْ اِلٰى دِيْنٍ قَوِيْمٍ، صَلَوَاتُ اللّٰهِ وَسَلَامُهٗ عَلَيْهِ وَعَلٰى سَائِرِ النَّبِيِّيْنَ، وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ "وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاءُ بَعْضٍ۔ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ، اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ۔

अल-हम्दु लिल्लाहिल वाहिदिल क़ह्हार रब्बिस्समावाति वल अर्ज़ि व मा बै-न-हुमल अज़ीज़िल ग़फ़्फ़ार ख़-ल-क़स्समावाति वल अर-ज़ बिल हक़्क़ि युकव्विरुल्लै-ल अलन्नहारि व युकव्विरुन्नहा-र अलल्लैलि तब्स-र-तल्लज़ि विल क़ुलूबि वल अब्सारि व तज़्कि-र-तल्लि उलिल अलबाबि वल एतिबार० अह्मदुहू हम्दन कसीरन तय्यिबम मुबारकन फ़ीहि व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहुल हादी इला सिरातिम मुस्तक़ीम वद्दाई इलादीनिन क़वीम स-ल-वातुल्लाहि व सलामुहू अलैहि व अला साइरिन्नबीयी-न वल्लज़ीनत्तब अहुम बिएहमानिन इला यौमिद्दीन अम्मा बअदु फ़अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शै-तानिर्रजीम, 'वलमुअ मिनू-न वल मुअमिनातु बअजुहुम औलियाउ बअ-जिन यअ मुरू-न बिल मअरूफ़ि व यन्हौ-न अनिल मुन्करि व युक़ीमूनस्स-ला-त व युतूनज़्ज़का-त व युतीअूनल्ला-ह व रसूल हू उलाइ-क स यर्हमु

हुमुल्लाहु इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन हकीम०

अज़ीज़ो और दोस्तो !

शायद हममें से कम ही लोग अपनी इस अहमियत को जानते हों कि वे चाहें या न चाहें, वे दूसरे इन्सानों पर अपना असर डालते रहते हैं। कुछ लोग यह समझते हैं कि दूसरे इन्सानों पर वही लोग असर डालते हैं जो तक़रीरें करते हैं, मज़मून लिखते हैं या तहरीकों में हिस्सा लेकर कुछ काम करते हैं। बाक़ी जो लोग इन कामों से दूर रहते हैं, वे भला दूसरों पर क्या असर डालेंगे। मैं आज आपकी इस ग़लतफ़हमी को दूर करना चाहता हूं और आपको यह बताना चाहता हूं कि हममें से हर शख़्स दूसरों पर असर डालता रहता है, हम अपनी बातों से अपने ख़ामोश कामों से, अपने उठने-बैठने, खाने-कमाने, लोगों से मिलने-जुलने से, इन्तिहा यह है कि अपने चेहरे के उतार-चढ़ाव और आंखों की हरकतों तक से दूसरों पर असर डाला करते हैं। हमारे आस-पास जो लोग मौजूद हैं और जिन से सुबह से शाम तक हमारा वास्ता पड़ता है, सब हमसे असर क़ुबूल करते हैं। यह असर अच्छा भी होता है और बुरा भी इस तरह अगर मैं आपसे यह कहूं कि हममें से हर शख़्स एक हैसियत से दावत देने वाला है, तो मेरा बहाना ग़लत न होगा। हममें से हर शख़्स दूसरों को किसी न किसी तरफ़ दावत देता रहता है। हममें से हर शख़्स अपनी बातों, अपने कामों और अपनी दौड़-धूप से दूसरों को कुछ न कुछ क़ुबूल करने पर तैयार करता रहता है या उनके अन्दर किसी चीज़ से नफ़रत और बे-ताल्लुक़ी पैदा करता रहता है। आप अगर ज़रा ग़ौर करेंगे तो मेरी इस बात से ज़रूर इत्तिफ़ाक़ करेंगे। आप दूसरों पर असर डालते हैं और दूसरों का असर आप ख़ुद क़ुबूल करते हैं। यह असर अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी बस यही पहलू हम सब के लिए सब से ज़्यादा तवज्जोह देने का है। कोई शख़्स यह नहीं चाहता कि दूसरों पर कोई बुरा असर डाले या दूसरों का कोई बुरा असर ख़ुद क़ुबूल करे, लेकिन चाहने से सिर्फ़ क्या होता है, इसके लिए तो कोशिश करना पड़ेगी। अगर आप यह चाहते हैं कि दूसरे आपसे कोई ग़लत असर क़ुबूल न करें तो इसके लिए आपको अपनी हर बात और अपनी हर हरकत और अपने हर काम पर बड़ी गहरी नज़र रखनी पड़ेगी क्या मालूम किस वक़्त आप बे-ख़बरी में एक बात कहें या कोई हरकत कर बैठें और दूसरों पर उसका ग़लत असर पड़ जाए।

आगे बढ़ने से पहले यह बात अच्छी तरह समझ लीजिए कि अगर

आप अपनी इस अहमियत को महसूस करने के बाद इस ख़्याल से अपनी हर बात और अपने हर अमल पर नज़र रखने की कोशिश करेंगे कि दूसरे आपसे कोई ग़लत असर क़ुबूल न करें तो यह एक तरह से बनावटी कोशिश होगी। इसमें आप ज़्यादा कामियाब न हो सकेंगे। इसके लिए सही तरीक़ा यही है कि आप सिर्फ़ इस बात पर नज़र रखें कि आप की अपनी कोई बात हक़ के मेयार से हटी हुई न हो और आपका कोई काम ग़लत न हो। अगर आप इस कोशिश में कामियाब हो जाएंगे तो फिर यह बात आपसे आप हासिल हो जाएगी कि दूसरे आपसे अच्छा ही असर क़ुबूल करें।

भाइयो और अज़ीज़ो! इस हक़ीक़त के सामने आने के बाद आप ख़ुद महसूस करेंगे कि हमारी चाल-ढाल और बातों की अहमियत कितनी ज़्यादा है। एक ओर तो यह ख़ुद हमारे लिए किसी मुस्तक़िल नफ़ा या नुक़्सान की वजह बनते हैं। इन्हीं के नतीजे में हमें अच्छे या बुरे फल मिलते हैं और इन्हीं की वजह से दूसरे हम से अच्छा या बुरा असर क़ुबूल करते हैं। बहुत से लोग इस तरह सोच सकते हैं कि हमारे लिए तो असल मस्अला अपनी ज़ात का है, दूसरे क्या असर क़ुबूल करते हैं, इससे हमें क्या ताल्लुक़? लेकिन नहीं, बात असल में यह है कि दूसरों पर आपका जो असर पड़ता है, उसकी ज़िम्मेदारी से भी आप अलग नहीं हैं, वे अगर अच्छा असर क़ुबूल करेंगे तो नतीजे के एतबार से यह बात ख़ुद आपके लिए अच्छी होगी और अगर आप की ज़ात से बुरे असर पड़ेंगे तो इसका नतीजा भी आप ही को भुगतना पड़ेगा। इस बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बुनियादी बात की तालीम दी है। हुज़ूर का इर्शाद है—

مَنْ دَعَا اِلٰی هُدًی کَانَ لَهٗ مِنَ الْاَجْرِ مِثْلُ اُجُوْرِ مَنْ تَبِعَهٗ لَا یَنْقُصُ ذٰلِكَ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَیْئًا وَمَنْ دَعَا اِلٰی ضَلَالَةٍ کَانَ عَلَیْهِ مِنَ الْاِثْمِ مِثْلُ اٰثَامِ مَنْ تَبِعَهٗ۔ لَا یَنْقُصُ ذٰلِكَ مِنْ اٰثَامِهِمْ شَیْئًا۔

मन दआ इला हुदन का-न लहू मिनल अजिर मिस्लु उजूरि मन त-ब-अहू ला यन्क़ुसु ज़ालि-क मिन उजूरिहिम शैअंव-व मन दआ इला ज़लालतिन का-न अलैहि मिनल इस्मि मिस्लु आसामि मन तबिअहू ला यन्क़ुसु ज़ालि-क मिन आसामिहिम शैआ०

जिस शख़्स ने किसी को किसी सही बात की तरफ़ दावत दी, उस

के लिए उतना ही अज्र होगा जितना उस की पैरवी करने वालों के लिए होगा, बग़ैर इसके कि पैरवी करने वालों के सवाब में कोई कमी हो और जिस शख्स ने किसी गुमराही की तरफ़ दावत दी, उस पर उतना ही गुनाह होगा जितना उसकी पैरवी करने वालों पर होगा, बग़ैर इसके कि उनके गुनाहों में कमी हो।'

हुज़ूर सल्ल० के इस इर्शाद की रोशनी में हमें इस बात की अह-मियत का अन्दाज़ा करना चाहिए कि अगर हमारी वजह से कोई शख्स कोई असर क़ुबूल करता है, तो वह खुद हमारे अपने हिसाब से कितना अहम है, जो लोग इरादा करके अपनी तक़रीरों और तहरीरों और आंदोलनों के ज़रिए लोगों को किसी खास बात की तरफ़ दावत देते रहते हैं, उनका मामला तो ज़ाहिर ही है। उनकी कोशिशों से जितने लोग सही राह अपनाएंगे, अल्लाह तआला उन सब को तो अपने अज्र से नवाज़ेगा ही, लेकिन इस दावत देने वाले के हिस्से में भी उन तमाम नेकियों का हिसाब लिखा जाएगा, जो उसके दावत देने के नतीजे में की जाएंगी। इस हिसाब से देखा जाए तो नेक बातों की तरफ़ दावत देना आखिरत पर ईमान रखने वालों के लिए एक भारी पूंजी है और इसके खिलाफ़ जब यह हक़ीक़त हमारे सामने आती है कि जो लोग दूसरों को गुमराह करते हैं, उन की कोशिशों के नतीजे में जितने लोग ग़लत राह अपनाएंगे, वे खुद अल्लाह के अज़ाब के हक़दार होंगे, लेकिन साथ ही उनको बुरी राह पर लगाने वाले के हिस्से में भी उतना ही अज़ाब आएगा तो कौन सा ऐसा शख्स होगा, जिसे आखिरत पर यक़ीन भी हो और वह इस खबर को सुन कर कांप न उठे।

यह जो कुछ कहा गया है, इसमें सिर्फ़ वही लोग शामिल नहीं हैं जो अपने इरादे से लोगों को किसी अच्छी या बुरी बात की तरफ़ बुलाते हैं, बल्कि हक़ीक़त में यह बात उन सब लोगों के हक़ में ठीक है, जो अपने किसी क़ौल या अमल से दूसरों पर असर डालते हैं। आप चाहे बाक़ायदा दावत दें या न दें, लेकिन अगर आप अपनी बातों और अपने कामों से दूसरों पर अच्छा असर डाल रहे हैं, तो यह नेकी आपके हिस्से में आएगी और आप इस अज्र से महरूम न रहेंगे जिसका ज़िक्र हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया है और अगर आपके क़ौल या अमल से दूसरे लोग ग़लत राहों पर जाएंगे तो उसकी ज़िम्मेदारी से भी आप बच न सकेंगे और वह हिस्सा आपको ज़रूर मिलेगा, जिसका ज़िक्र हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया है।

भाइयो और अज़ीज़ो ! यह है वह हमारी अहमियत जिसकी तरफ़ मैं तवज्जोह दिलाना चाहता हूं। हममें से हर शख़्स हर वक़्त अपने लिए कोई न कोई पूंजी जमा कर रहा है—अच्छा या बुरा—और इस पूंजी के जमा करने का ताल्लुक़ सिर्फ़ उसकी अपनी ही ज़ात तक नहीं है, बल्कि इसमें वे सब लोग बढ़ोतरी कर रहे हैं, जिन पर उसके असर पड़ रहे हैं। आपने अगर मेरी बात समझ ली है, तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस इर्शाद के मुताबिक़, जो मैंने अभी आपके सामने रखा, आप यह फ़ैसला करने पर मजबूर होंगे कि हम में से हर शख़्स को हर लम्हा अपनी हर बात और अपने हर काम पर बड़ी गहरी नज़र रखनी चाहिए। हो सकता है कि इस ओर से ग़फ़लत करने के नतीजे में हम किसी चूक के शिकार हो जाएं और अपने आमालनामे में एक बुराई और जोड़ दें।

यह तो आप जानते ही हैं कि अल्लाह तआला बड़ा ग़फ़ूर व रहीम है, वह अपने बंदों की तौबा क़ुबूल करता है और चाहे कोई कैसा ग़लती करने वाला क्यों न हो, जब शर्मिंदा होकर उसकी ओर पलटता है, तो उसे अपनी रहमत के दामन में ले लेता है, लेकिन ज़रा सोचिए कि अगर आपकी किसी चूक की वजह से दूसरों ने कोई बुरा असर क़ुबूल कर लिया है और वे बराबर इसी ग़लती पर क़ायम हैं, तो उसकी इस गुमराही की वजह से आपके हिस्से में जो मुसीबत आती रहेगी, उसका क्या ठिकाना है तो एक हिसाब से यह बात कि दूसरे भी हमसे असर क़ुबूल करते हैं, हमारे लिए इंतिहाई अहम हो जाती है। जो शख़्स इस अहमियत को महसूस करेगा, मुम्किन नहीं कि उसकी बातों और उसके कामों पर इस ख़्याल का असर न पड़े, बस शर्त यही है कि आख़िरत में मिलने वाले नतीजों की अहमियत उसकी नज़र में वैसी हो जैसी कि होनी चाहिए।

एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआला तुम्हें यह मौक़ा दे कि किसी एक शख़्स को तुम्हारी वजह से हिदायत नसीब हो जाए तो यह बात इससे कहीं ज़्यादा बेहतर है कि तुम्हें कहीं से बहुत से सुर्ख़ ऊंट हाथ आ जाएं। मोमिन की सबसे बड़ी पूंजी यही है कि वह ख़ुद नेकी पर अमल करता रहे और उसकी ज़ात से नेकियां फैलें। मोमिन न ख़ुद बुराई के काम करता है और न इसे गवारा कर सकता है कि उसकी वजह से बुराइयों को फलने-फूलने का मौक़ा मिले। इस सच्चाई को सामने रख-कर हम सब को अपना जायज़ा लेना चाहिए और हर वक़्त यह सोचते

रहना चाहिए कि हम खुद क्या कर रहे हैं और क्या कह रहे हैं और इस-की वजह से दूसरों पर क्या असर पड़ रहा है। अल्लाह के चुने हुए बंदों का ज़िक्र फ़रमाते हुए एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि, 'ये लोग कुछ ऐसे होते हैं कि अगर तुम इन्हें देखो तो अल्लाह याद आ जाए।' इसका मतलब यही है कि उन की बातचीत, उनकी सूरत-शक्ल, उनके काम-धाम, ये सब चीज़ें ऐसी होती हैं कि इंसान पर उसका बेहतरीन असर पड़ता है और उसकी तवज्जोह अल्लाह की तरफ़ हो जाती है। यही वह सआदत है, जिस के हासिल करने केलिए हम में से हर शख्स को अपनी ताक़त भर हर लम्हा कोशिश करते रहना चाहिए। अल्लाह हम सबको इस बात की तौफ़ीक दे कि हम खुद नेक राहों पर चलें और हमारी वजह से नेकियों के फलने-फूलने का मौक़ा मिले और हम सब इस बात से अल्लाह की पनाह मांगते हैं कि हम खुद शैतान के फंदों में फंसें और किसी तरह भी हमारी ज़ात दूसरों के लिए बुराइयां अपनाने की वजह बने।

اَقُوْلُ قَوْلِیْ ھٰذَا وَاَسْتَغْفِرُاللّٰہَ لِیْ وَلَکُمْ اَجْمَعِیْنَ وَاسْتَغْفِرُوْہُ
اِنَّہٗ ھُوَالْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِیْ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ
اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَی الْقَوْمِ الْکَافِرِیْنَ۔

अक़ूलु क़ौली हाज़ा व अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अजमईन वस्त-ग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम रब्बनग़्फ़िर लना ज़ुनूबना व इस राफ़ना फ़ी अम्रिना व सब्बित अक़्दामना वन्सुर्ना अलल क़ौमिल काफ़िरीन०

# मिल-जुलकर ज़िंदगी गुज़ारना

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ، عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ. نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ. اَمَّا بَعْدُ فَقَدْ قَالَ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ النَّاصِحُ الْاَمِيْنُ "آمُرُكُمْ بِخَمْسٍ، اَلْجَمَاعَةِ وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ وَالْهِجْرَةِ وَالْجِهَادِ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ".

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व आलिमुल ग़ैबि वश्शहादति हुवर्रह्मानुर्रहीम रब्बुस्समावाति व रब्बुल अर्ज़ि व हुवल अज़ीज़ुल हकीम नह्मदुहू व नस्तअीनुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नश्हदु अल्ला-इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व नश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही अजमअीन० अम्मा बअदु फ़क़द क़ालन्नबीयुल करीमुन्नासिहुल अमीन आमुरुकुम बिख़म्सिन अल-जमाअति वस्समअि वत्ताअति वल हिजरति वल जिहादि फ़ी सबीलिल्लाह०

भाइयो ! अभी जो हदीस मैंने आपको सुनायी है, उसका मतलब यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह इर्शाद फ़रमाया कि मैं तुम्हें पांच बातों का हुक्म देता हूं—जमाअत, सुनना, कहना मानना, हिजरत और अल्लाह की राह में जिहाद ।

इसका यह मतलब है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को साफ़-साफ़ यह हुक्म दिया है कि वे मिल-जुलकर ज़िंदगी गुज़ारें। ऐसी ज़िंदगी गुज़ारने के लिए बुनियादी चीज़ यह है कि उनके अन्दर एक हस्ती ऐसी ज़रूर होनी चाहिए जो उनकी ज़िंदगी के बारे में हुक्म जारी करे और लोग उसकी पाबन्दी करें। ऐसी ज़िंदगी, जिसमें हुक्म देने और मानने का कोई इंतिज़ाम न हो, हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद की

रोशनी में इस्लामी ज़िंदगी नहीं है। सच तो यह है कि यह हदीस साफ़ तौर पर यह बताती है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत को यह हुक्म दिया है कि वे हरगिज़ बिखराव की ज़िंदगी न गुज़ारें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बात पसन्द नहीं है कि मुसलमानों का अपना कोई ऐसा इन्तिज़ाम न हो जिसमें सब शरीक हो जाएं।

पहली चीज़ जिसकी हिदायत दी गई है, जमाअत है, जमाअत एक-एक आदमी के मज्मूए का नाम है, लेकिन ऐसा मज्मूआ नहीं, जिसे हम भीड़ कहते हैं। अगर यों ही किसी जगह इकट्ठे हो जाएं, तो उन्हें हम जमाअत नहीं कहते। जमाअत लोगों के ऐसे मज्मूए को कहते हैं, जिस के अन्दर किसी एक मक़सद पर इत्तिहाद हो गया हो। अगर उनकी ज़िंदगी के कामों में बिखराव है और उनमें किसी एक मक़सद पर इत्तिहाद नहीं है, तो उन्हें जमाअत नहीं कह सकते।

दूसरी ज़रूरी चीज़ जो जमाअतें बनाने के लिए इत्तिहाद के मक़सद से भी ज्यादा ज़रूरी है, यह है कि लोगों में एक दूसरे के साथ ताल्लुक़ हो, मुहब्बत और भाईचारा हो और साफ़ तौर पर यह महसूस हो कि ये लोग आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, उनकी राहें एक हैं और ये मिल-जुल-कर एक ही मंज़िल की तरफ़ बढ़ना चाहते हैं। 'जमाअत' के एक लफ़्ज़ में वह पूरी तस्वीर हमारे सामने आ जाती है, जिस शक्ल में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी पूरी उम्मत को देखना चाहते थे।

जमाअत का विचार सामने आते ही यह ज़रूरत आपसे आप सामने आ जाती है कि कोई उस जमाअत का नेता हो जो अल्लाह तआला के हुक्म और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शाद की रोशनी में उम्मत की रहनुमाई करे और उम्मत के लोग उसकी बात सुनें और उस पर चलें। इसी बात को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लफ़्ज़ों में समअ और ताअत कहा गया है यानी सुनना और कहना मानना। यह समअ और ताअत इस्लामी ज़िंदगी की जान है। समअ और ताअत के बग़ैर जमाअत की कोई कल्पना नहीं की जा सकती और यही वे लफ़्ज़ हैं, जिनसे साफ़ तौर पर यह बात सामने आती है कि उम्मते मुस्लिमा अपने मिज़ाज और शक्ल के एतबार से इस बात की मुह-ताज है कि उसमें सुनने और मानने का एक निज़ाम हो, ऐसा निज़ाम जो

किसी दूसरे निज़ाम के तहत न हो, किसी के असर में न हो और अपनी हदों और अख्तियारों में बिल्कुल आज़ाद हो। समअ व ताअत के लफ़्ज़ हदीसों में ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल हुए हैं और अगर इन सबको सामने रखा जाए तो बात यही बनती है कि एक ऐसे निज़ाम का क़ायम करना उम्मते मुस्लिमा की एक ज़रूरी और फ़ितरी ज़िम्मेदारी है। हम सब जानते हैं कि समअ व ताअत का कोई निज़ाम न कभी अपने आप क़ायम हुआ है और न क़ायम हो सकता है। उस के क़ायम करने के लिए भी कोशिश शर्त है और इसके क़ायम रखने के लिए भी कुछ करना पड़ता है यह हमेशा इन्सानी गिरोह की कोशिशों से ही क़ायम हुआ करता है, इस-लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शाद के मुताबिक़ यह निज़ाम भी उस वक़्त तक क़ायम नहीं हो सकता, जब तक उम्मते मुस्लिमा खुद इस जिम्मेदारी को महसूस न करे और इसके लिए जरूरी कोशिशें अंजाम न दे।

यहां यह नज़रों के सामने रहे, जैसा कि आप सब भाई जानते ही हैं कि इस निज़ाम की इताअत सिर्फ़ मारूफ़ में है, मासियत में नहीं यानी सिर्फ़ उन बातों में इताअत फ़र्ज़ है, जो अल्लाह के हुक्मों और इस्लामी शरीअत के खिलाफ़ न हों और अगर ऐसा नहीं है, तो फिर इताअत सही नहीं।

भाइयो! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शाद की रोशनी में जमाअत, समअ और इताअत के लफ़्ज़ों से जो नक़्शा हमारे सामने आता है, उसकी बुनियादी बातें मैंने ऊपर के लफ़्ज़ों में आप के सामने रख दीं, लेकिन ये चीज़ें ऐसी नहीं हैं कि सिर्फ़ ख्वाहिशों से हासिल हो जाएं या बार-बार इस का ज़िक्र करने से काम बन जाए। दुनिया की तारीख गवाह है कि आज तक कोई निज़ाम चाहे वह हक़ हो या बातिल, उस वक़्त तक क़ायम ही नहीं हुआ, जब तक उस के लिए कोशिशें नहीं की गयीं। इस्लाम जिस क़िस्म की समअ व ताअत का निज़ाम क़ायम करना चाहता है, उस के लिए भी कोशिश शर्त है और इस कोशिश के भी दो उन्वान हैं, एक हिजरत और दूसरा अल्लाह की राह में जिहाद। अफ़सोस यह है कि इन दोनों लफ़्ज़ों का सही मतलब हमारे सामने नहीं आया, फिर ग़ैरों ने इन लफ़्ज़ों में जो रंग भर दिया है, उससे तस्वीर और भी ग़लत हो गई है, हालांकि अगर देखा जाए तो आज दुनिया की कोई तरक़्क़ी इन दो लफ़्ज़ों की हक़ीक़त से खाली नहीं

है। हर निज़ाम जो आज क़ायम है या जिसे क़ायम करने की कोशिशें हो रही हैं, ज़रूरी तौर पर अपने मानने वालों से वही मांग करता है जो इस्लाम हिजरत और जिहाद की शक्ल में अपने मानने वालों के सामने रखता है।

हिजरत का मक़्सद यह है कि इंसान ऊंचे से ऊंचे मक़्सद की खातिर छोटे-छोटे फ़ायदों को क़ुर्बान कर दे और मक़्सद हासिल करने की राह में जो चीज़ें भी रुकावट बनें, उन्हें छोड़ दे। आराम व राहत, माल व दौलत, मुल्क व वतन, घर-बार सब इस में शामिल हैं। फ़र्क़ सिर्फ़ यह है कि दुनिया के तमाम निज़ाम जब अपने मानने वालों से 'हिजरत' की मांग करते हैं, तो उन के सामने जो भी बड़े से बड़ा मक़्सद रहता है, जिस की खातिर वे क़ुर्बानियों की मांग करते हैं, उस का ताल्लुक़ सिर्फ़ इसी ज़िंदगी से होता है। वे अगर चाहते हैं कि लोग आज अपने राहत व आराम को छोड़ दें या अपना माल व दौलत क़ुर्बान करें, तो सिर्फ़ इस लिए कि कल उन्हें और अगर उन्हें नहीं, तो उन के बाद आने वाली नस्लों को बहुत ज़्यादा आराम व राहत और माल व दौलत मिलने की उम्मीद है। लेकिन इस्लाम जिस हिजरत की मांग करता है, उस के बदले के तौर पर वह उस ज़िंदगी की नेमतों को रखता है, जो इस ज़िंदगी के बाद यक़ीनी तौर पर आने वाली है और जो हमेशा रहेगी।

यहां इस तफ़्सील का मौक़ा नहीं कि मैं आप के सामने इस अन्तर को और खोल कर बताऊं, जो सोचने के फ़र्क़ की वजह से इस्लाम के लिए जद्दोजेहद करने वाले इस गिरोह और दूसरे निज़ामों के लिए जान खपाने वाले लोगों में फ़ितरी तौर पर पायाजाने लगता है, लेकिन आप यक़ीन रखिए कि इस्लाम का अपने मक्सद के लिए हिजरत की मांग न कोई अनोखी मांग है और न किसी पिछली ग़ैर तरक़्क़ी याफ़्ता दौर की यादगार। यह एक फ़ितरी मांग है और एक लाज़िमी शर्त, बस शर्त यह है कि उम्मते मुस्लिमा उस ज़िंदगी को अपनाने का फ़ैसला करे जो अल्लाह के रसूल ने पसन्द फ़रमायी है और जिस का नक़्शा क़ुरआन के एक-एक पन्ने पर हमारे सामने है।

अब दूसरी चीज़ जिहाद को लीजिए। इस का नक़्शा तो परायों ही नहीं, बहुत से अपनों की नज़रों में और भी भयानक है। जिहाद का मतलब इस के सिवा और कुछ नहीं है कि इंसान जिस मक़्सद से प्यार करता है, उस को हासिल करने और उसे उसके दुश्मनों से बचाने के लिए

अपनी जान और माल से इंतिहाई दर्जे की कोशिश करे और उस के लिए अपना सब कुछ लगा दे।

ज़रा ग़ौर कीजिए क्या दुनिया में कोई क़ौम, कोई मुल्क, कोई जमाअत, कोई क़बीला, कोई घर, हद यह है कि कोई वजूद क्या इस कोशिश के बग़ैर ज़िंदा रह सकता है। अगर आप अपने दुश्मनों को भगाना अपना जुर्म समझ लें, अगर आप अपने वजूद को बाक़ी रखने की कोशिशों को ग़लत समझने लगें, तो क्या इस ज़मीन के ऊपर कोई ऐसी ताक़त है जो आप के वजूद को बनाए रख सके। यह काम तो हर क़ौम कर रही है और करती रहती है। हर मुल्क इसे अपने लिए ज़रूरी समझता है और हर जमाअत अपनी बक़ा के लिए ही सहारा लेती है, बस फ़र्क़ सिर्फ़ एक है, वह यह कि अगर कोई क़ौम अपने वजूद को बाक़ी रखना चाहती है या अपने दुश्मनों के हाथों मिटने के लिए तैयार नहीं होती, तो उस के सामनें सिवाए अपनी क़ौमी बरतरी के और कोई जज़्बा पैदा नहीं होता।

इसी तरह मुल्कों का हाल है और यही रूह जमाअतों, क़बीलों और एक-एक आदमी, सब में काम कर रही है। हां, इस्लाम जिस जिहाद के लिए हमें तैयार करता है, उस की ज़रूरी शर्त 'फ़ी सबीलिल्लाह' (अल्लाह के रास्ते में) क़रार देता है। इस शर्त के सामने आते ही कैफ़ियत बदल जाती है। अब न किसी क़ौम को दूसरी क़ौम पर ग़ालिब करने का सवाल बाक़ी रहता है और न किसी मुल्क की हदों को बढ़ाने या लोहा मनवाने की ख़्वाहिश सामने आती है और न किसी जमाअत या किसी क़बीले पर दूसरी जमाअतों और दूसरे क़बीलों की बरतरी क़ायम करने का कोई ख़्याल दिल में बाक़ी रहता है, बल्कि इस के ख़िलाफ़ जो लोग अल्लाह की राह में अपनी जान और माल खपा कर कमाल दर्जे की कोशिश और मेहनत करने के लिए उठते हैं, उन के सामने सिर्फ़ एक ही मक़्सद होता है। वे अपने लिए कुछ नहीं चाहते, वे इन्सानियत के दुखों को दूर करना चाहते हैं, भटके हुए इंसानों को सही रास्ता दिखाना चाहते हैं और जिन लोगों की नज़रें सिर्फ़ इसी दुनिया में उलझ कर रह गयी हैं, उन्हें उस हमेशा रहने वाली ज़िंदगी में कामियाब करने की ख़्वाहिश रखते हैं।

आप यह सोच सकते हैं कि जब वे अपने लिए कुछ नहीं चाहते, तो फिर क्या वजह है कि वे अपनी जान और माल को खपा कर कमाल दर्जे की कोशिश और मेहनत करना क़ुबूल कर लें, लेकिन जब मैं यह कहता हूं कि वे अपने लिए कुछ नहीं चाहते तो इस का मतलब सिर्फ़ इतना है कि

वे इस दुनिया में मिलने वाले किसी नफ़ा या किसी बदले की खातिर पापड़ नहीं बेलते। उन के दिलों में यह हक़ीक़त बहुत अच्छी तरह बैठ जाती है कि असल मामला उस ज़िंदगी का है जो मौत के बाद शुरू होती है और जो कभी खत्म न होगी। वे जो कुछ चाहते हैं उसी ज़िंदगी में चाहते हैं और जो कुछ करते हैं उसी ज़िंदगी को सामने रख कर करते हैं।

सोच-विचार के तरीक़े में यह तब्दीली दोनों क़िस्म के जिहादों में यानी जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह में और जिहाद फ़ी सबीलि ग़ैरिल्लाह में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ पैदा कर देती है। एक में ख़ुलूस, मुहब्बत, हमदर्दी और इस्लाह के जज़्बे काम करते हैं और दूसरे की बुनियाद स्वार्थ, घृणा, क़ौमी और मुल्की बरतरी के सिवा कुछ नहीं।

भाइयो और अज़ीज़ो ! यह हुज़ूर सल्ल० की सिर्फ़ एक हदीस है। आप जानते हैं कि हदीसों में भी यह मज़्मून बार-बार आया है और क़ुर-आन की दावत का ख़ुलासा भी यही है कि हम वही ज़िंदगी गुज़ारें जो इस्लाम ने हमारे लिए पसन्द की है और जिस के नतीजे में हमारी हमेशा रहने वाली ज़िंदगी सुधर सकती है, इस बात की ज़रूरत नहीं कि इन हुक्मों के मुक़ाबले में मैं उम्मते मुस्लिमा की मौजूदा हालत आप के सामने करूं। हम और आप सब जानते हैं कि हम उस मंज़िल से दूर ही नहीं हैं, बल्कि अब तो शायद हमने उस मंज़िल को भुला ही दिया है, यही सबसे बड़ी बद-नसीबी है। यक़ीन जानिए कि उम्मते मुस्लिमा पर तो फ़र्ज़ नहीं किया गया है कि वे अगर कभी ग़ैर इस्लामी ज़िंदगी का शिकार हो जाएं, तो वे इसे आन की आन में बदल कर ही रख दें, लेकिन यह यक़ीनन उनकी ज़िम्मेदारी है कि वह अपने सही मक़ाम को हमेशा नज़रों के सामने रखें और इस के लिए लगातारकोशिश करते रहें। इन कोशिशों की शुरु-आत जमाअत और समअ व ताअत है और आखिरी मंज़िल हिजरत और जिहाद।

بَارَكَ اللّٰهُ لِيْ وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعَنِيْ وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ.

बा-र-कल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरआनिल अज़ीम व न-फ़-अनी व इय्या कुम बिल आयाति वज़्ज़िक्रिल हकीम०

# बाल-बच्चों की तर्बियत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ
وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ. وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ. اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ
لَا شَرِيْكَ لَهٗ. لَا رَبَّ لَنَا سِوَاهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّا اِيَّاهُ. وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَرْسَلَهُ اللّٰهُ رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى
عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا.
اَمَّا بَعْدُ: فَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَزَّ وَجَلَّ. يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ
وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا.

अल हम्दु लिल्लहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व माफ़िल अर्ज़ि व लहुल हम्दु फ़िल आख़िरति व हुवल हकीमुल ख़बीर व हुवर्रहीमुल ग़फ़ूर अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्द हु ला शरी-क लहू ला रब-ब लना सिवाहु व ला नअ्बुदु इल्ला इय्याहु व अश्हदु अन-न नबीयना मुह-म्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अर-स-लहुल्लाहु रह्मतल्लिल आलमीन अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़क़ालल्लाहु तआला अज़-ज़ व जल-ल या ऐयुहल्ल-ज़ी-न आमनू क़ू अन्फ़ुसकुम व अह्लीकुम नारा०

भाइयो ! मुसलमान की दोहरी ज़िम्मेदारी है। एक तरफ़ तो उसे अपने बचाव की चिन्ता करनी चाहिए, ज़िंदगी की इस मोहलत में वे काम करने हैं जो उसे आख़िरत में अल्लाह तआला की पकड़ से बचा सकें।

दूसरी तरफ़ उसे दूसरों को भी दोज़ख़ की आग से बचाना है। अल्लाह के हुक्मों और उसकी हिदायतों को लोगों तक पहुंचाना है। इस बारे में ख़ास तौर पर उस के घर-बार की ज़िम्मेदारी उस पर बहुत सख़्त है। हर शख़्स अपने ख़ानदान का निगरां और ज़िम्मेदार बनाया गया है, उस की बीवी, उस के बच्चे, उस के मातहत, उस के छोटे और वे तमाम लोग जिन पर उसे कुछ बड़ाई हासिल है, सब उस की निगरानी में दिए गए हैं और वह इस बात का ज़िम्मेदार बनाया गया है कि उन्हें दोज़ख़ की आग

से बचाए।

बहुत से लोग तो ऐसे हैं जो अपनी इस ज़िम्मेदारी को महसूस ही नहीं करते, वे ख़ुद अपनी इस्लाह की तरफ़ से भी ग़ाफ़िल होते हैं, ख़ुद अल्लाह तआला के हुक्मों के ख़िलाफ़ काम करते रहते हैं, ऐसे लोगों की तो यह हिम्मत ही नहीं होती कि वे अपने घर वालों को नेकी की कोई बात बता सकें। ऐसे भाइयों को सब से पहले अपनी हालत की तरफ़ तवज्जोह करनी चाहिए। कौन जानता है कि ज़िंदगी की यह मोहलत कब ख़त्म हो जाए और इंसान अपने मालिक के हुज़ूर ख़ाली हाथ शर्मिंदा और गुनाहगार बन कर पेश हो। तौबा के लिए हर वक़्त मौक़ा है, अल्लाह तआला की रहमत बे-पायां है, लेकिन सिर्फ़ उन के लिए जो वक़्त से पहले आंखें खोल लें, अपनी पिछली ज़िंदगी पर उन्हें अफ़सोस हो। आइंदा के लिए अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी में वक़्त गुज़ारने का फ़ैसला कर लें और अपनी ज़िंदगी के रुख़ को ख़ूब सोच-समझ कर फ़ौरन सही रुख़ की ओर मोड़ दें।

कुछ लोग ऐसे हैं, जिन की अपनी ज़िंदगियां कुछ बेहतर हैं, उन के ज़्यादातर काम अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ होते हैं, वे फ़र्ज़ों की पाबंदी करते हैं, बड़े-बड़े गुनाहों से बचते हैं और उन की ज़िंदगियों में ख़ैर का पहलू ज़्यादा होता है, लेकिन या तो वे अपने बाल-बच्चों के सुधार की ओर से ग़ाफ़िल होते हैं या वे इस काम को ऐसे भद्दे तरीक़े से करते हैं कि वे बहुत जल्द मायूस हो जाते हैं और फिर अपने से मुताल्लिक़ लोगों को उन के हाल पर छोड़ देते हैं। उन में ऐसे लोग भी हैं जो घर के बाहर दावत व तब्लीग़ के कामों में सरगर्म रहते हैं, लेकिन घर की तरफ़ उनको तवज्जोह नहीं होती। घर की तरफ़ से वे मायूस हो जाते हैं। यह सूरत बड़ी तवज्जोह चाहती है और यह एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी से भागना है और अंजाम के लिहाज़ से बहुत सख़्त है।

भाइयो! घर के लोगों के सुधार के लिए बड़े ठंडे दिल की ज़रूरत है। यह काम बहुत सब्र चाहता है और बड़ी हिक्मत से उसे करना चाहिए। आम तौर पर घरों में जो लोग सुधार का काम करते हैं, वे नमाज़ की ताकीद से काम की शुरूआत करते हैं, पहले किसी क़दर नर्मी से और फिर एकदम सख़्ती से काम लेते हैं। हर शख़्स चाहता है कि घर में उसके हुक्मों को बे-तकल्लुफ़ पूरा किया जाए। चुनांचे दीनी सुधार के बारे में भी वह यही चाहता है कि उस के हुक्मों को अच्छी तरह पूरा किया जाए। अगर

उस में कुछ कमी होती है, तो वह झुंझलाहट और मायूसी का शिकार हो जाता है।

भाइयो! यह तरीक़ा हिक्मत के ख़िलाफ़ है। घर वालों के दिलों में भी पहले ईमान को पक्का करें, अक़ीदों में सुधार करें। हर मुनासिब मौक़े पर इस्लामी अक़ीदे उन के दिलों में बिठाएं, उनकी तालीम व तर्बियत का इन्तिज़ाम करें। आजकल बाहर की तालीम से आप को कुछ न मिलेगा। एक वक़्त था कि बच्चों के दीनी अक़ीदों और ईमानी बातों की तालीम का इन्तिज़ाम उन स्कूलों और मदरसों में हो जाता था, उस वक़्त इतनी बात काफ़ी थी कि घर पर मां-बाप नमाज़ और दूसरी अख़्लाक़ी बातों की निगरानी करें, लेकिन आज ये सब काम आप को करने हैं। आज घर के बाहर की तालीम न सिर्फ़ यह कि इस्लामी तालीम से कोरी है, बल्कि इस में तो उसके ख़िलाफ़ बहुत-सी बातें ज़ेहनों में उतारी जाती हैं। ऐसी शक्ल में यह काम और भी बहुत सख़्त हो गया है। आपको सिर्फ़ इस्लामी अक़ीदे ही अपने बच्चों के ज़ेहनों में बिठाना नहीं हैं, बल्कि आप को उस ज़हर का उतार भी करना है जो ग़ैर इस्लामी अक़ीदों और ग़ैर-इस्लामी तालीम के नतीजे में ज़ेहनों में घोला जाता है।

भाइयो! आप के बाल-बच्चे सीधे से आप की ज़िम्मेदारी में दिए गए हैं। आप उन के लिए खाना और कपड़ा जुटाने के ज़िम्मेदार हैं। आप इस ज़िम्मेदारी को जैसे-तैसे पूरा भी करते हैं, लेकिन आप पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी उन्हें मुसलमान बनाने की है। आप से इस बारे में पूछ-गछ होगी। ये आप से आप मुसलमान नहीं बन जाएंगे, इस के लिए आप को दीनी तालीम का बन्दोबस्त करना होगा। इस्लामी अक़ीदे, इस्लामी तालीम, इस्लामी अख़्लाक़ और इस्लामी आमाल सिखाने होंगे। आप इस ज़िम्मेदारी को महसूस कीजिए, मिल-जुल कर सोचिए। दो-दो, चार-चार आदमी मिल कर अपने बच्चों के लिए कोई इन्तिज़ाम करें या तंहा अपने तौर पर इस ज़िम्मेदारी को पूरा करने की कोई शक्ल पैदा करें, बहरहाल यह काम करने का है और करने ही से इस के लिए राहें पैदा होंगी।

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُاللّٰهَ لِیْ وَلَکُمْ وَلِسَائِرِالْمُسْلِمِیْنَ فَاسْتَغْفِرُوْهُ

اِنَّهٗ هُوَالْغَفُوْرُالرَّحِیْمُ۔

अक़ूलु क़ौली हाज़ा व अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम व लि साइरिल मुस्लिमीन फ़स्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

# राहे हक़ की कठिनाइयां

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْغَنِيِّ الْحَمِيْدِ۔ اَلْمُبْدِئُ الْمُعِيْدُ۔ ذِی الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ۔ اَلْفَعَّالُ
لِمَا يُرِيْدُ۔ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ۔ اَحْمَدُهٗ سُبْحَانَهٗ
وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَلَا نِدَّ وَلَا مُعِيْنَ۔ وَاَشْهَدُ
اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ـــــ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا۔

अल-हम्दु लिल्लाहिल ग़नीयिल हमीद० अल-मुब्दिइल मुईद ज़िल अर्शिल मजीद० अल-फ़अ्आलुल्लिमा युरीद० अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व ला निद-द व ला मुईन व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू—अल्ला-हुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरा०

भाइयो ! इस्लाम के शुरू के दौर की बात है, मक्का मुअज़्ज़मा में जो शख़्स भी इस्लाम क़ुबूल करता, उस पर आफ़तों और मुसीबतों का एक तूफ़ान टूट पड़ता। कोई ग़ुलाम या ग़रीब होता तो उस को बुरी तरह मारा-पीटा जाता था, कोई दुकानदार या कारीगर होता तो उस की रोज़ी के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते, यहां तक कि वह भूखों मरने लगता। कोई ऊंचे ख़ानदान का होता, तो उस के अपने ख़ानदान वाले इस बुरी तरह तंग करते कि उस की ज़िंदगी अजीरन कर देते। इन हालात ने एक सख़्त ख़ौफ़ और दहशत का माहौल पैदा कर दिया था और इस का असर यह था कि बहुत से लोग अगरचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई के क़ायल हो जाते थे, लेकिन इस के बावजूद ईमान लाने का इक़-रार करके ईमान वालों की जमाअत में शामिल होने से डरते थे। इधर जो लोग ईमान ले आए थे, उन में भी कुछ लोगों में इंसानी फ़ितरत के एत-बार से कभी-कभी बे-चैनी और परेशानी की हालत पैदा होने लगती थी और यह सवाल उभर कर ज़ुबानों तक आ जाता था कि अब अल्लाह की मदद कब आएगी ?

अज़ीज़ो ! इन सख़्त हालात से, जिन ईमान वालों को गुज़रना पड़ा

है, वे अपने ईमान और इस्लाम के एतबार से हम जैसे आजकल के मुसलमानों से कहीं ज्यादा ऊंची जगह रखते थे, बल्कि अगर सच पूछा जाए तो आजकल जो हमारा हाल है, उस के एतबार से तो अल्लाह के इन महबूब बंदों के मुक़ाबले में अपने को मुसलमान कहना भी मुश्किल है, लेकिन इस के बावजूद इन सख्त हालात में मुसलमानों से जो कुछ कहा गया था, वह यक़ीनन हमारे लिए बड़े ग़ौर के क़ाबिल है। क़ुरआन पाक की सूरः अंकबूत उसी ज़माने में नाज़िल हुई। यह वह दौर था जब बड़े सख्त हालात की वजह से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ मुसलमानों को हब्शा की तरफ़ हिजरत करने की इजाज़त दे दी थी। उसी ज़माने में फ़रमाया गया—

الٓمّٓ۔ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ۝
وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ
الْكٰذِبِيْنَ۝

अलिफ़-लाम-मीम० अ हसि बन्नासु अंय्युत रकू अंय्य क़ूलु आमन्ना व हुम ला युफ़्त नून० व लक़द फ़तन्नल्लज़ी-न मिन क़ब्लिहिम फ़-ल-यअ-लमन्नल्लाहुल्लज़ी-न स-द-क़ू व ल यअ्‌ल-मन्नल काज़िबीन०

'अलिफ़-लाम-मीम०' क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे बस इतना कहने पर छोड़ दिए जाएंगे कि हम ईमान लाए और उन लोगों को आज़माया न जाएगा ? हालांकि हम उन सब लोगों की आज़माइश कर चुके हैं, जो इन से पहले गुज़रे हैं। अल्लाह को तो ज़रूर यह देखना है कि सच्चे कौन हैं और झूठे कौन ?'

अल्लाह तआला का इर्शाद है कि हमने जो मोमिनों से दुनिया और आख़िरत की कामियाबियों के वायदे किए हैं, वे ऐसे नहीं हैं कि कोई शख़्स सिर्फ़ ईमान का ज़ुबानी दावा कर के उन का हक़दार बन जाए। इस के लिए इम्तिहान और आज़माइश की कठिन मंज़िलों से गुज़रना पड़ेगा और अपने दावे की सच्चाई का सबूत देना होगा। हमारी ख़ुशी का हासिल करना और जन्नत का मिलना इतना आसान नहीं है कि बस ज़ुबान से एक दावा किया और जन्नत के हक़दार हो गये, इस के लिए तो मुसीबतें उठानी होंगी, जान और माल का नुक़्सान बर्दाश्त करना होगा, मुसीबतों और मुश्किलों से दोचार होना पड़ेगा, तुम डर से भी आज़माए जाओगे और लालच से भी। हर चीज़ जो तुम्हें अज़ीज़ है, उसे हमारी रिज़ा के

लिए क़ुर्बान करना पड़ेगा और हर तक्लीफ़ जो तुम्हें नागवार है, उसे हमारे लिए बर्दाश्त करना पड़ेगा, तब कहीं जाकर यह बात खुलेगी कि तुमने जो ईमान का दावा किया है, वह सच्चा है या झूठा ?

मक्के के ये हालात और ज़्यादा सख़्त होते गये, यहां तक कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने तमाम साथियों समेत अपना वतन छोड़ना पड़ा। मुसलमानों ने मक्के को छोड़ कर मदीने को अपनी जगह बनाया, लेकिन यहां भी हालात कुछ कम सब्र की आज़माइश में डालने वाले न थे। हिजरत के बाद मदीने की शुरू की ज़िंदगी बहुत ज़्यादा माली कठिनाइयों की ज़िंदगी थी, अरब क़बीलों की तरफ़ से ख़तरों, यहूदियों की मुख़ालफ़तों और मुनाफ़िक़ों की अन्दरूनी शरारतों ने ईमान वालों को सख़्त परेशानियों में डाल रखा था, इसी परेशानी के दौर में फ़रमाया गया—

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا یَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِیْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ
مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰی یَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَه
مَتٰی نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِیْبٌ ○ (البقرہ۔ رکوع ۲۶)

अम हसिब्तुम अन तद् ख़ुलुल जन्न-त व लम्मा यअ्तिकुम म-सलुल्लज़ी-न ख़लौ मिन क़ब्लिकुम मस्सतहुमुल बासाउ वज़्ज़र्राउ व ज़ुलज़िलू हत्ता यक़ूलर्रसूलु वल्लज़ी-न आमनू म-अ-हू मता नस्रुल्लाहि अला इन-न नस्रल्लाहि क़रीब० —बक़र:, रुकूअ २६

'क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालांकि अभी तुम पर वे हालात नहीं गुज़रे जो तुम से पहले गुज़रे हुए (ईमान वालों) पर गुज़र चुके हैं, उन पर सख़्तियां और तक्लीफ़ें आयीं और वे हिला मारे गये, यहां तक कि रसूल और उस के साथ ईमान लाने वाले लोग पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी, (उस वक़्त उन्हें यह ख़ुशख़बरी सुनायी गयी कि) ख़बरदार हो, अल्लाह की मदद क़रीब है।'

इस के बाद मदीने ही की ज़िंदगी में उहद की लड़ाई के बाद फिर मुसीबतों और कठिनाइयों का एक सख़्त दौर आया। इस मौक़े पर इर्शाद हुआ— اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا یَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِیْنَ جَاهَدُوْا مِنْكُمْ
وَیَعْلَمَ الصّٰبِرِیْنَ ○ (آل عمران ۔ رکوع ۱۴)

अम हसिब्तुम अन तद्ख़ुलुल जन्न-त व लम्मा यअ्लमिल्लाहु-ल्लज़ी-न जाहदू मिनकुम व यअ्लमस्साबिरीन०

—आले इम्रान, रुकूअ १४

'क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालांकि अभी अल्लाह ने यह तो देखा ही नहीं कि तुममें से जिहाद में जान लड़ाने वाले और सब्र दिखाने वाले कौन लोग हैं ?'

भाइयो ! अल्लाह तआला के इन इर्शादों से साफ़ मालूम होता है कि अल्लाह तआला की सुन्नत हमेशा यही रही है कि वह ईमान का दावा करने वालों की आज़माइश फ़रमाता है, उन को सख़्त हालात से दोचार करता है, तरह-तरह की मुसीबतें और कठिनाइयां उन पर पड़ती हैं और हालात साफ़ तौर पर यह बता देते हैं कि यह सब कुछ सिर्फ़ इस लिए हो रहा है कि उन्होंने ईमान का दावा किया है। अल्लाह तआला ने बार-बार क़ुरआन पाक में इस हक़ीक़त को बयान फ़रमा दिया है कि इस तरह की जो आज़माइशें आती हैं, उन की असल वजह क्या है। अल्लाह तआला यह बात अच्छी तरह ईमान वालों के ज़ेहनों में बिठाना चाहता है कि असल में आज़माइश ही वह कसौटी है, जिस से खरा और खोटा परखा जाता है। जब आज़माइशें आती हैं तो खोटा ख़ुद ही अल्लाह की राह से हट जाता है और सिर्फ़ खरा ही बाक़ी रह जाता है। इस तरह यह फ़ैसला हो जाता है कि कौन अल्लाह तआला के इनामों और जन्नत का हक़दार है और कौन इस का हक़दार नहीं है। हमेशा से अल्लाह की सुन्नत यही रही है। क़ुरआन पाक में पिछली क़ौमों के ऐसे वाक़िए बार-बार बयान हुए हैं और ईमान वालों की आज़माइशों का ज़िक्र कितनी ही जगह आया है।

अज़ीज़ो और दोस्तो ! एक ओर इन हालात को रखिए और दूसरी ओर अपनी सूरतेहाल पर नज़र डालिए। हमारा तजुर्बा है कि हमें इन जैसी मुश्किलों का एक सौवां हिस्सा भी पेश नहीं आता, बल्कि आम तौर पर ईमान और इस्लाम के ताल्लुक़ से हमें किसी कठिनाई का सामना करना ही नहीं पड़ता। यों ज़िंदगी में जो उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, वे तो मुस्लिमों और ग़ैर-मुस्लिमों सभी के लिए हैं, लेकिन हमें ऐसी कठिनाइयों का तजुर्बा कम ही करना पड़ता है, जिनकी वजह हमारा ईमान या इस्लाम हो। कभी आपने सोचा कि इस की वजह क्या है ? क्या हमारे ईमान का दावा ऐसा पक्का दावा है कि हमारी आज़माइश की कोई ज़रूरत ही नहीं ?

क्या हम सहाबा किराम रज़ि० के मुक़ाबले में अल्लाह तआला को ज़्यादा महबूब हैं या इस की वजह कुछ और है ?

अगर आप विचार करेंगे तो आप भी इस बात को मानेंगे कि असल में इस की वजह यह है कि हम अगरचे ईमान और इस्लाम का दावा करते हैं, लेकिन ईमान के तक़ाज़े या तो पूरे ही नहीं करते और अगर करते हैं तो सिर्फ़ उसी हद तक, जहां तक किसी से किसी तरह कोई टकराव होने ही न पाए। जैसे इस्लाम की मांग है कि हम नमाज़ पढ़ें और जमाअत का एहतिमाम करें, लेकिन या तो हम इस तक़ाज़े को पूरा ही नहीं करते और अगर करते भी हैं तो सिर्फ़ इसी शक्ल में कि न तो हमें किसी अफ़सर की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ दफ़्तर का काम छोड़ कर नमाज़ के लिए जाने की ज़रूरत पेश आती है और न कारोबार छोड़ कर नमाज़ के लिए जाना पड़ता है कि हमारी आमदनी पर कोई असर पड़े। हम हर क़दम पर लोगों की ख़ुशी और ना-ख़ुशी को ध्यान में रखते हैं चाहे इस तरह हमें इस्लाम की कोई मांग क्यों न छोड़नी पड़े, जैसे जब हमारे यहां कोई तक़रीब होती है, तो हम रस्म व रिवाज की पाबंदी में बिरादरी और ख़ानदान की मांगों का पूरा-पूरा ख़्याल रखते हैं और अगर इस तरह इस्लाम की किसी मांग को छोड़ने की ज़रूरत आ पड़ती है तो हम बे-तकल्लुफ़ उसे छोड़ देते हैं। इसी तरह हम बिरादरी या ख़ानदान को ज़रा भी ना-ख़ुश होने का मौक़ा नहीं देते।

रहे ईमान और इस्लाम के तक़ाज़े, तो वे हम उसी हद तक पूरे करते हैं, जिस हद तक बिरादरी और ख़ानदान को पसन्द होते हैं। यही हाल हमारे वक़्त की हुकूमत और निज़ाम के ताल्लुक़ से रहता है। हम पूरी सावधानी रखते हैं कि इस्लाम और ईमान के इन तक़ाज़ों को मुंह से न निकालें और न उन पर अमल करने की जुरात करें जो वक़्त की हुकूमत और मुल्क के चलते हुए निज़ाम को ना-पसन्द हों। हम अपने इस्लाम और ईमान के तक़ाज़ों को उन हदों के अन्दर रखते हैं, जो हुकूमत ने तै कर दी हैं या जो उस की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ हैं। ऐसी सूरत में इस का मौक़ा ही क्या बाक़ी रहता है कि किसी से कोई टकराव हो। हम औलादों को बे-दरेग़ उन तालीमी इदारों के हवाले कर देते हैं, जहां हुकूमत के अपने प्लान के तहत, आने वाली नस्लों के ज़ेहनों को एक ख़ास रंग में ढाला जा रहा है। हम दीन और दुनिया की तक़सीम के नज़रिए को कम से कम अमली तौर पर क़ुबूल ही कर लेते हैं। हम ज़िंदगी के हर उस हिस्से को दीन की

पकड़ से आज़ाद कर देते हैं, जिसे हुकूमत अपने अख्तियार में लेने का फ़ैसला करती है। हम उस नज़रिए की ताईद कर देते हैं जिसे हुकूमत हक़ कहती है, चाहे इस बारे में इस्लाम का फ़ैसला कुछ ही क्यों न हो। हम हर उस माली स्कीम को क़ुबूल कर लेते हैं, जिसे हुकूमत चाहती है और हम हर उस समाजी क़ानून को गवारा कर लेते हैं जिसे हुकूमत लागू करना चाहती है, इस का ध्यान दिए बग़ैर कि उन का टकराव इस्लामी उसूलों से होता है या नहीं। ऐसी हालत में आप ही बताएं कि आखिर टकराव का सवाल ही क्या पैदा होता है और इस्लाम और ईमान के ताल्लुक़ से किसी क़िस्म की मुसीबतों और आज़माइशों के आने का मौक़ा ही कब बाक़ी रहता है।

हद तो यह है कि हम में से जो लोग दावत व तब्लीग़ का काम करने का हौसला करते हैं, वे भी बात उसी हद तक कहते हैं जिस हद तक सामने का आदमी साथ दे सके। बात कहने का अन्दाज़ भी इल्मी होता है, हम कभी मुलायम से मुलायम और मुनासिब से मुनासिब अन्दाज़ में भी अपने किसी साथी की कोताहियों पर उसे नहीं टोकते। उस का जो जी चाहता है, वह करता रहता है और हम जो चाहते हैं, खुद करते रहते हैं। यही हाल हमारा घरों में है। बीवियां अगर किसी और ढंग पर ज़िंदगी गुज़ार रही हैं, तो हम खामखाह कुछ कह कर घर की फ़िज़ा को बिगड़ने नहीं देते। नातेदार-रिश्तेदार अगर किसी रंग पर हैं, तो हम उन से कोई छेड़ नहीं करते कि कहीं अज़ीज़दारी और रिश्तेदारी में कोई फ़र्क़ न आ जाए। इंतिहा यह कि अगर औलादें ज़माने के रंग में रंगी हुई हैं, तो हम उन की तरफ़ भी तवज्जोह नहीं करते और बस एक-दो बार बात कह कर समझ लेते हैं कि हमारा फ़र्ज़ अदा हो गया।

भाइयो! भला इस तरह 'सावधानी' के साथ जब हम दीन के तक़ाज़े पूरे करने का ढंग जानते हों, तो फिर मुसीबतों और आज़माइशों का सवाल ही कब पैदा होता है। अल्लाह की तरफ़ से आज़माइशें तो उस की होती है, जो इस मैदान में क़दम रखता है। इम्तिहान का पर्चा तो उसे दिया जाता है जो इम्तिहान हाल में दाखिल होकर परचा करना भी चाहे, लेकिन जो कोई अमल के मैदान से बाहर ही रहे और इम्तिहान-गाह में दाखिल ही न हो, उसे काहे की फ़िक्र—बस कुछ ऐसा ही हाल आजकल हमारा मालूम होता है। आज़माइशों से यह दूरी और इम्तिहान-गाह से यह बे-ताल्लुक़ी मुम्किन है कि किसी की सहूलतपसन्द तबीयत के

लिए कोई इत्मीनान की सूरत हो, लेकिन जो लोग अल्लाह की जन्नत की तलब रखते हैं और उस की ख़ुश्नूदी हासिल करना चाहते हैं, उन के लिए तो यह सूरतेहाल बड़ी चिन्ता की है। इस तरह तो उन्हें इस बात का भी डर है कि कहीं वे उस छात्र (तालिबे इल्म) की तरह जो इम्तिहान हाल से बाहर ही रहा, कामियाबियों से महरूम न रह जाएं।

अज़ीज़ो ! आज़माइशें न तो तलब करने की चीज़ हैं और न उनके लिए आरज़ू करना दुरुस्त है, लेकिन ईमान और इस्लाम के तक़ाज़ों से जान चुरा कर आज़माइशों से दूर रहना यक़ीनी तौर पर अल्लाह की रहमतों से दूर रहना है। अल्लाह तआला हम सब को इस महरूमी से बचाए और अपनी पूरी ज़िंदगी में दीन के तक़ाज़ों को पूरा करने की तौफ़ीक़ और हौसला अता फ़रमाए। بَارَكَ اللّٰهُ لِيْ وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ۔ اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا

وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ۔ فَاسْتَغْفِرُوْهُ۔ اِنَّهٗ هُوَالْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ۔

बारकल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरआनिल अज़ीम अक़ूलु क़ौली हाज़ा व अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अजमईन० फ़स्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

# इम्तिहान की घड़ी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَنَامُ وَلَا يَنْبَغِيْ لَهٗ اَنْ يَّنَامَ يَرْفَعُ الْقِسْطَ
وَيَخْفِضُهٗ يُرْفَعُ اِلَيْهِ عَمَلُ اللَّيْلِ قَبْلَ النَّهَارِ وَعَمَلُ النَّهَارِ قَبْلَ اللَّيْلِ ـ وَ
هُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰكُمْ بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ
لِيُقْضٰى اَجَلٌ مُّسَمًّى ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ـ
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ
وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ
وَسَلَّمَ ـ اَمَّا بَعْدُ فَقَدْ قَالَ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ "لَا تَزُوْلُ قَدَمَا عَبْدٍ حَتّٰى يُسْاَلَ
عَنْ عُمُرِهٖ فِيْمَا اَفْنَاهُ وَعَنْ عِلْمِهٖ فِيْمَا فَعَلَ وَعَنْ مَالِهٖ مِنْ اَيْنَ
اكْتَسَبَهٗ وَفِيْمَا اَنْفَقَهٗ وَعَنْ جِسْمِهٖ فِيْمَا اَبْلَاهُ" اَوْ كَمَا قَالَ
عَلَيْهِ السَّلَامُ ـ

अल हम्दु लिल्लाहिल मलिकिहय्यिल्लज़ी ला यनामु व ला यम्बग़ी लहू अंय्यना-म यर्फ़अुल क़िस-त व यख़्फ़िज़ुहू युर्फ़अु इलैहि अ-म-लुल्लैलि क़ब्लन्नहारि व अ-म लुन्नहारि क़ब्लल्लैलि व हुवल्लज़ी य-त-वफ़्फ़ाकुम बिल्लैलि व यअ्लमु मा जरह्तुम बिन्नहारि सुम-म यब् असुकुम फ़ीहि लियुक़्ज़ा अ-ज-लुम्मु सम्मन सुम-म इलैहि मर्जिअुकुम सुम-म युनब्बिउकुम बिमा कुन्तुम तअ्मलून० अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू अलैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीबु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लम अम्मा बअ्दु फ़क़द क़ालन्नबीयुल करीम ला तज़ूलु क़-द-मा अब्दिन हत्ता युस-अ-ल अन उम्रिही फ़ी मा अफ़्नाहु व अन अिल्मिही फ़ीमा फ़-अ-ल व अन मालिही मिन ऐनक्त सबहू व फ़ीमा अन्फ़क़हू व अन जिस्मिही फ़ीमा अब्लाहु अव कमा क़ा-ल अलैहिस्सलाम०

अज़ीज़ो और दोस्तो ! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें यह ख़बर दी है कि क़ियामत के मैदान में कोई इंसान उस वक़्त

तक बारी तआला के सामने से हट नहीं सकेगा, जब तक वह पांच मुक़र्रर सवालों के जवाब न दे ले। यही वे सवाल हैं, जिन के जवाब पर इन्सानका आख़िरी फ़ैसला टिका होगा। इससे पहले कि मैं आपके सामने उन बातों को रखूं, जिन के बारे में सवाल किये जाने की इत्तिला अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी है, मैं चाहता हूं कि आप थोड़ी देर के लिए यह सोचें कि जिन सवालों के जवाब पर हमारी आख़िरी कामियाबी या नाकामी का फ़ैसला है, उन का मालूम हो जाना कितनी बड़ी बात है। एक ऐसा तालिबे इल्म, जो इम्तिहान की तैयारी कर रहा हो और जिसे यह मालूम हो कि उस की आगे की ज़िंदगी की कामियाबी या नाकामी इस इम्तिहान में कामियाब होने ही पर रुकी हुई है उसे अगर कोई शख़्स यह बता दे कि देखो तुम्हारे इम्तिहान का पर्चा यह है और तुम से इम्तिहान में ये और ये सवाल पूछे जाएंगे, तो वह उस शख़्स का कैसा एहसानमंद होगा और अगर उस तालिबे इल्म को यह यक़ीन हो कि जो शख़्स पर्चे के सवाल बता रहा है, वह पूरी बात जानता है और बिल्कुल सच्चा है, उसकी बतायी हुई बात में किसी क़िस्म की ग़लती या भूल-चूक का इम्कान ही नहीं, तब तो उस की नज़र में उस की बतायी हुई बात का वज़न इतना ज़्यादा होगा कि वह इन बातों को हर वक़्त सामने रखेगा। उसी के बताए हुए सवालों के जवाब देने की तैयारी शुरू कर देगा और कोशिश करेगा कि वह इम्तिहान में इन सवालों के जवाब बेहतर से बेहतर लिख कर आए।

भाइयो! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में हमारा ईमान है कि आख़िरत की बातों का जानने वाला इन से ज़्यादा कोई दूसरा इंसान नहीं हो सकता और यह भी हमारा ईमान है कि हुज़ूर सल्ल० की हर बात बिल्कुल सच्ची है। अब तनिक सोचिए कि हुज़ूर सल्ल० ने जो हमें यह इत्तिला दी है कि देखो क़ियामत के मैदान में हर इंसान से ये और ये बातें पूछी जाएंगी और जब तक वह इन का जवाब न दे ले, वह अल्लाह के दरबार से क़दम न हटा सकेगा—तो यह इत्तिला हमारे लिए कैसी क़ीमती और कैसी तवज्जोह चाहने वाली है।

भाइयो! हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि पहली बात जो हर इंसान से पूछी जाएगी, वह यह सवाल होगा कि तूने अपनी उम्र काहे में खपायी, यानी तुझे दुनिया की ज़िंदगी में जो अमल की मोहलत दी गयी थी, उसमें तूने क्या किया? हम सब जानते हैं कि दुनिया की यह ज़िंदगी

असल में हर इंसान के लिए एक इम्तिहान की मुद्दत है, यहां हर शख़्स जिस हाल में भी रखा गया है, उस में उस का इम्तिहान हो रहा है और वह वक़्त आना है, जब यह देखा जाएगा कि उसने इस इम्तिहान में क्या किया और क्या नहीं किया ?

दूसरा सवाल इंसान से उस की जवानी के बारे में होगा कि अल्लाह ने उसे जो ताक़तें औरसलाहियतें जवानी की हालत में दी थीं, उनसे उसने क्या काम लिया। अल्लाह की मर्ज़ी और उस के हुक्मों का ध्यान रखते हुए उस ने वक़्त गुज़ारा या नफ़्स की ख़्वाहिशों और जज़्बात की रौ में बह कर उसने अपनी सलाहियतों और ताक़तों को ग़लत राहों में बर्बाद कर दिया।

तीसरा सवाल माल के बारे में होगा कि उसे इन्सान ने किन-किन तरीक़ों से हासिल किया। अल्लाह तआला ने इन्सान के आराम और राहत और ज़िंदगी बसर करने के लिए अनगिनत सामान पैदा किए हैं, जिन्हें इन्सान अपने इरादे और अपनी मेहनत से हासिल करता है, लेकिन उन के हासिल करने के कुछ तरीक़े तो ऐसे हैं, जो सही और जायज़ है। अल्लाह के हुक्म और उस की मर्ज़ी के मुताबिक़ हैं और ये सब हलाल तरीक़े हैं, लेकिन कुछ तरीक़े अल्लाह को ना-पसन्द हैं, उनको इस्तेमाल करने से अल्लाह ने रोका है और ये सब हराम तरीक़े हैं। इन्सान को अख़्तियार हासिल है कि वह चाहे तो ज़िंदगी के इस सामान को हलाल तरीक़ों से हासिल करे और चाहे तो उस के लिए हराम तरीक़े अपना ले। आख़िरत में अल्लाह के सामने हर इन्सान को जवाब देना पड़ेगा कि उस ने जो माल हासिल किया, वह किस-किस तरीक़े से हासिल किया।

चौथा सवाल भी माल ही के बारे में होगा। इन्सान से यह पूछा जायेगा कि ज़िंदगी के जो सामान अल्लाह तआला ने इन्सान को दिए थे, उसने उन्हें किस तरीक़े से ख़र्च किया। ख़र्च करने के सिलसिले में भी कुछ तरीक़े जायज़ हैं और कुछ ना जायज़। यहां भी इन्सान नफ़्स की ख़्वाहिशों का शिकार हो कर अल्लाह के दिए हुए माल को ग़लत तरीक़ों पर ख़र्च करने लगता है। अल्लाह के दरबार में इस बारे में भी पूछा जायेगा कि तुम ने जो माल कमाया, उसे ख़र्च किस तरह किया।

पांचवां सवाल इन्सान के इल्म के बारे में होगा कि उसे जो बातें मालूम हो गयी थीं, उन के मुताबिक़ उस ने क्या अमल किया। जहां तक भली बातों, अल्लाह के हुक्मों और उसकी ख़ुशी और ना-ख़ुशी के कामों के

जानने का ताल्लुक़ है, हर इन्सान इस बारे में बहुत कुछ जानता है। एक हद तक हर शख्स को मालूम है सही क्या है और ग़लत क्या है, अच्छाई के काम कौन-से हैं और बुराई के कौन से, किन बातों से अल्लाह खुश होता है और किन बातों से नाराज़। ये तो वह बातें हैं, जो वे लोग भी जानते हैं, जिन को लिखना-पढ़ना नहीं आता या बहुत थोड़ा आता है। रह गये वे लोग, जिन्हें हम आलिम कहते हैं, जो पढ़े-लिखे हैं, जिन्हें अल्लाह के हुक्मों का इल्म औरतों के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा है, उनकी ज़िम्मेदारियां तो और ज़्यादा हैं, लेकिन जहां तक अल्लाह तआला के हुज़ूर खड़े हो कर जवाब देने का ताल्लुक़ है, वहां हर शख्स से पूछा जायेगा कि उसे जो कुछ मालूम था, उसके मुताबिक़ उस ने कहां तक अमल किया, जो भली बातें उसे मालूम थीं, उसे कहां तक अख्तियार किया और जिन बुराइयों को वह जानता था, उन से वह कहां तक बचा।

भाइयो और अज़ीज़ो! क़ियामत की इम्तिहानगाह में जो परचा हम में से हर शख्स को हासिल करना है, वह हमारे सामने आ चुका है, अगर वाक़ई हमें आखिरत की जवाबदेही और अल्लाह के हुज़ूर खड़े होने का यक़ीन है, तो इस परचे के सवालों के सामने आ जाने के बाद हमारी रविश वही होनी चाहिए जो उस तालिबे इल्म की होती है, जिसे कोई इम्तिहान देना हो और उसे यह मालूम हो जाये कि इम्तिहान में क्या-क्या सवाल आने वाले हैं। आप जानते हैं कि जब इस तरह के सवाल की भनक किसी तालिबे इल्म के कान में पड़ जाती है तो चाहे उसे यह यक़ीन हो या न हो कि यह सवाल इम्तिहान में आएगा, लेकिन वह इस की तैयारी ज़रूर कर लेता है, सोचता है क्या मालूम यह सवाल आ ही जाये और फिर उस वक़्त ख्वाह मख्वाह अफ़सोस करना पड़े।

भाइयो! हम सब को जो इम्तिहान देना है, उस के सवाल यक़ीनी तौर पर हमें मालूम हो गये हैं, कोई वजह नहीं कि हम इन सवालों को सामने रख कर अपनी तैयारी न करें। आप जानते हैं कि जब किसी तालिबे इल्म को इस तरह सवालों का इल्म हो जाता है तो वह उन्हें हल करने की मश्क़ करता है, उनके जवाब बेहतर से बेहतर तरीक़े पर तैयार करता है और उस वक़्त का इन्तिज़ार करने लगता है, जब सचमुच उसे इम्तिहान के कमरे में इन सवालों के जवाब देने पड़ेंगे। कुछ ऐसी ही हालत हमारी भी होनी चाहिए। उस की एक शक्ल यह हो सकती है कि हम आखिरत की उस घड़ी के आने से पहले जब हमें इन सवालों का

जवाब देना पड़ेगा, खुद अपने तौर पर इन सवालों के जवाब देने की कोशिश करें। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि इससे पहले कि तुम्हें हिसाब देना पड़े, तुम खुद अपनी जांच करते रहो। इसके लिए हम में से हर शख्स वक़्त और मुद्दत खुद अपने तौर पर तै कर सकता है, जैसे वह यह तै करे कि मैं हर हफ़्ते फ़लां दिन या हर चौबीस घंटे के बाद, फ़लां वक़्त ऊपर ज़िक्र किए गये पांचों सवालों को सामने रख कर अपने आप से यह सवाल किया करूंगा कि मेरे पास इन पांच बातों का क्या जवाब है और अगर जवाब में कुछ कमज़ोरी, कोताही या ग़फ़्लत सामने आएगी तो उसे जल्द से जल्द दूर करने की कोशिश करूंगा, ताकि जब दोबारा मैं अपने आप से ये सवाल करूं, तो मुझे महसूस हो कि मेरे क़दम कामियाबी की तरफ़ बढ़ रहे हैं।

भाइयो और अज़ीज़ो ! यह एक निहायत ज़रूरी और अमली मश्विरा है, जिस पर अमल करने से हम में से हर शख्स को यक़ीनी तौर पर फ़ायदा होगा। आज हमारे समाज का हाल यह है कि हर शख्स खराबियों और बुराइयों का रोना रोता है, जहां दो चार आदमी जमा हों, वहां थोड़ी ही देर के बाद बात-चीत का मौज़ूअ समाज की बुराइयां, अवाम की अख्लाक़ी गिरावट और चारों तरफ़ फैले हुए फ़ित्ना व फ़साद के खिलाफ़ नफ़रत और बेज़ारी ही हो जाता है। आप को तजुर्बा होगा कि इस मामले में कोई छूट नहीं है, पढ़े-लिखे हों या अनपढ़, ऊंचे दर्जे के लोग हों या आम लोग, कारोबारी हों या मुलाज़मत पेशा, कारीगर हों या किसान और ज़मींदार, ग़रज़ यह कि हर शख्स की ज़ुबान पर यही रोना है कि हालात बहुत खराब हो चुके हैं, अख्लाक़ की गिरावट इन्तिहा को पहुंच चुकी है। रिश्वत, बेईमानी और बे-इन्साफ़ी आम है। अब यहां पर सोचने की बात है कि जब एक बात इस में से हर शख्स महसूस कर रहा है और हर शख्स को इस की शिकायत है, तो फिर क्या वजह है कि वह बात दूर नहीं होती। यह अजीब कैफ़ियत है कि शिकायत हर शख्स को है, लेकिन इसके बावजूद हर आदमी उस में पड़ा हुआ है।

भाइयो ! इस की वजह सिर्फ़ एक है, हम बुराइयों को जानते हैं, उन्हें महसूस भी करते हैं, लेकिन हम दूसरों से यह उम्मीद रखते हैं कि वे उनसे अपने दामन पाक करें ताकि समाज को अम्न और इत्मीनान नसीब हो। हम में से कम ही लोग ऐसे होंगे जो अपनी ज़ात को सामने रखकर कोई फ़ैसला करने को तैयार हों। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम के ऊपर बयान किए हुए इर्शाद के मुताबिक़ अगर हम में से हर शख़्स ख़ुद अपनी जांच करेगा, तो वह दूसरों का रोना रोने के बजाए अपने अन्दर तब्दीली पैदा करने की कोशिश करेगा और सच्चे सुधार की यही एक शक्ल मुम्किन है। आज हम समाज में जिन-जिन ख़राबियों का रोना रोते हैं, उनकी असल वजह सिर्फ़ एक ही है यानी ख़ुदा से बे-ख़ौफ़ी और उसके सामने जवाबदेही के यक़ीन की कमी।

भाइयो और अज़ीज़ो! हम में से हर शख़्स का ईमान है कि उसे अल्लाह के हुज़ूर खड़ा होना है। उस ईमान का पहला तक़ाज़ा यह है कि हमारी अमली ज़िदगी में उस यक़ीन का असर साफ़ मिल के। हमारे अख़्लाक़, मामले और पूरी ज़िदगी से यह बात ज़ाहिर हो कि हमारे दिलों में अल्लाह का ख़ौफ़ है और हम उस के हुज़ूर जवाबदेही का यक़ीन रखते हैं। यही एक ऐसी शक्ल है जिस से हमारी ज़िदगियां बदल सकती हैं और हमारी इन बदली हुई ज़िदगियों से बहुत से अल्लाह के बन्दों को सही राह की तरफ़ रहनुमाई हो सकती है। मुसलमान होने की हैसियत से यही हमारी जगह है और यही हमारा काम।

हम सब को अल्लाह से दुआ करनी चाहिए कि वही हमें उस दिन सुर्ख़रू फ़रमाए, जब उस के हुज़ूर खड़े होकर हमें इन बातों का जवाब देना पड़ेगा, जिन की ख़बर प्यारे नबी सल्ल० ने हमें दी है। अल्लाह तआला हमारी ज़िदगियों को दूसरों के लिए हिदायत और रहनुमाई का ज़रिया बनाए और इस बात से बचाए रखे कि हमारे काम दूसरों को ग़लत राहों पर ले जाने की वजह बनें।

أَقُولُ قَوْلِي هٰذَا وَأَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِي وَلَكُمْ أَجْمَعِينَ وَاسْتَغْفِرُوهُ
إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ۔ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا
مَعَ الْأَبْرَارِ۔ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ
الْمِيعَادَ۔

अक़ूलु क़ौली हाज़ा व अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अजमईन वस्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम रब्बनग़्फ़िर लना ज़ुनूबना व कफ़्फ़िर अन्ना सय्यिआतिना व तवफ़्फ़ना मअल अब्रार रब्बना व आतिना मा व-अत्तना अला रुसुलि-क व ला तुख़्ज़िना योमल क़ियामति इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल मीआद०

# इस्लामी इन्क़िलाब

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ
وَیُزَکِّیْهِمْ وَیُعَلِّمُهُمُ الْکِتٰبَ وَالْحِکْمَةَ ۗ وَاِنْ کَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ
ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ۔

اَحْمَدُكَ اللّٰهُمَّ وَاَشْكُرُكَ وَاَسْتَغْفِرُكَ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَلَا نَاصِرَ وَلَا ظَهِیْرَ ۔ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِیَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهُ الْمَبْعُوْثُ رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ ۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ
مُحَمَّدٍ ۔ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا ۔

اَمَّا بَعْدُ ۔ فَقَدْ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی ۔ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ
وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۔ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِیْعًا ۔ وَّلَا تَفَرَّقُوْا
وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَیْنَ قُلُوْبِكُمْ
فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖۤ اِخْوَانًا ۔ وَكُنْتُمْ عَلٰی شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ
مِّنْهَا ۔ كَذٰلِكَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰیٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۔ وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ
اُمَّةٌ یَّدْعُوْنَ اِلَی الْخَیْرِ وَیَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَیَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ब-अ-स फ़िल उम्मी यी-न रसूलम मिन्हुम यत्लू अलैहिम आयातिही व युज़क्कीहिम व युअल्लिमुहुमुल किना-ब वल हिक्म-त व इन कानू मिन क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम मुबीन०

अह्मदु-कल्लाहुम-म व अश्क़ुरु-क व अस्तग़्फ़िरु-क व अश्हदु अल्ला-इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व ला नासि-र व ला ज़हीर० व अश्हदु अन-न नबी-य-ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलु हुल मब ऊसु रह्मतलिल-ल आलमीन अल्ला हुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिन व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़क़द क़ालल्लाहु तआला या ऐयुहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह हक़्-क़ तुक़ातिही व ला तमूतुन-न इल्ला व अन्तुम मुस्लिमून व अ्तसिमू बिहब्लिल्लाहि जमीअन व ला तफ़र्रक़ू वज़्कुरू निअ्मतल्लाहि अलैकुम इज़ कुन्तुम अअ्दाअन फ़-अल्ल-फ़ बै-न क़ुलूबिकुम फ़अस्बह्तुम बिनिअ्मतिही इख़्वाना व कुन्तुम अला शफ़ा हुफ़्रतिम मिनन्नारि फ़ अन्क़-ज़-कुम मिन्हा क ज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम आयातिही लअ़ल्लकुम तह्तदून वल तकुम मिन्कुम उम्मतुंय्यद्अू-न इलल ख़ैरि व यअ् मुरू-न बिल मअ्रूफ़ि व यन्हौ-न अनिल मुन्करि व उलाइ-क हुमुल मुफ़्लिहून॰

मुसलमान भाइयो ! अल्लाह् तआला का इर्शाद है कि ऐ ईमान वालो ! अल्लाह् से डरो, जैसा कि उस से डरने का हक़ है और तुम को मौत न आए, लेकिन इस हाल में कि तुम मुस्लिम हो, तुम सब मिल कर अल्लाह् की रस्सी को मज़बूत पकड़ लो और फूट में न पड़ो। अल्लाह् के उस एहसान को याद रखो जो उसने तुम पर किया है, तुम एक दूसरे के दुश्मन थे, उसने तुम्हारे दिल जोड़ दिए और उस के फ़ज़्ल व करम से तुम भाई-भाई बन गये। तुम आग से भरे हुए एक गढ़े के किनारे खड़े थे, अल्लाह् तआला ने तुम को उस से बचा लिया। इस तरह् अल्लाह् अपनी निशानियां तुम्हारे सामने रोशन करता है, शायद कि इन निशानियों से तुम्हें अपनी कामियाबी का सीधा रास्ता नज़र आए।

तुम में कुछ लोग ऐसे ज़रूर ही रहने चाहिएं, जो नेकी की तरफ़ बुलाएं, भलाई का हुक्म दें और बुराइयों से रोकते रहें। जो लोग यह काम करेंगे, वही फ़लाह् पाएंगे।

भाइयो ! हमारे प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस दुनिया में तशरीफ़ लाने से पहले लोग जिहालत में पड़े थे और क़िस्म-क़िस्म की गुमराहियों में भटक रहे थे, वे बुतों की पूजा करते थे, दरख़्तों और पत्थरों को अपना माबूद ठहराते थे, फ़रिश्तों, नबियों और नेक लोगों को देवता और ख़ुदा मान कर उस की इबादत किया करते थे, उन की ज़िंदगियां ज़ुल्म, जिहालत, फ़साद और बग़ावत से भरी हुई थीं, जो ताक़तवर थे, वे कमज़ोरों का ख़ून चूसते थे और लोगों के ख़ुदा बने हुए थे। उन्होंने अपने मामले अल्लाह् के बाग़ियों के हाथों में दे रखे थे और वे काहिन, नजूमियों और ज्योतिषियों के फंदों में बुरी तरह फंसे हुए थे। हर तरफ़ बेचैनी-बेचैनी थी, अम्न और सुकून किसी को मयस्सर न था। बुज़ुर्गी और शराफ़त का मदार हसब और नसब पर रह गया था। ख़ुदा-

परस्ती और अख़्लाक़ का कोई वज़न न था—यह हाल था कि अल्लाह तआला की रहमत ज़ाहिर हुई और उसने अपने महबूब जनाब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा। हुज़ूर सल्ल० ने अल्लाह के दीन और उस की भेजी हुई हिदायत की नेमत की अल्लाह के बंदों को जानकारी दी, उन्हें अल्लाह के बारे में सही इल्म की रोशनी से मालामाल किया, नेकी और बदी का फ़र्क़ करना सिखाया, भलों को हमेशा की कामियाबी की ख़ुशख़बरी दी और बुरों को उन के अंजाम से डराया—

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अख़्लाक़ के एतबार से तमाम इंसानों में सब से बेहतर थे, लोगों के लिए बेहतरीन दुख-दर्द में काम आने वाले और सब का भला चाहने वाले, हर लम्हा उनकी हिदायत और निजात के लिए बे-चैन रहने वाले, दुनिया को हिदायत की रोशनी आप के दम से मिली, कुफ़्र और शिर्क की लानत दूर हुई और अंध विश्वास और जिहालत के पर्दे चाक हुए। दरूद व सलाम हो प्यारे नबी सल्ल० पर और अल्लाह की अनगिनत रहमतें और बरकतें हों हुज़ूर सल्ल० की ज़ाते गरामी पर।

प्यारे भाइयो! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को तौहीद की तरफ़ बुलाया, दर-दर की ठोकरें खाने वाले इंसान को हर एक की ग़ुलामी से निकाल कर सिर्फ़ अल्लाह का बंदा बनाया, तमाम शाहियों, सरदारियों और ख़ुदाइयों को मिटा कर सिर्फ़ एक अल्लाह का क़ानून चलाया, अल्लाह के सिवा हर माबूद की इबादत से हटा कर इंसान को सिर्फ़ अल्लाह की इबादत पर जमाया, यह काम कुछ आसान न था। तौहीद की दावत को थोड़े ही लोगों ने क़ुबूल लिया। तेरह साल तक मक्के में यही काम होता रहा, लेकिन आप के साथियों की तायदाद ज़्यादा न हो सकी, लोगों ने आप को झुठलाया, जादूगर और काहिन कहा, मज़ाक़ उड़ाया और फिर तरह-तरह सताने लगे, मक्के में रहना दूभर कर दिया। आप और आप के साथी बे-इंतिहा सताए गए, कुफ़्र और शिर्क के हामियों ने मिल कर आप का मुक़ाबला किया। अल्लाह की हिदायत की रोशनी को बुझा देने पर तुल गये, लेकिन अल्लाह का तो फ़ैसला हो चुका था कि वह इस की रोशनी को फैला कर रहेगा, चाहे मुश्रिक कितना ही ना-पसन्द करें। अल्लाह ने मुश्रिकों की चालों को बेकार कर दिया। उन्होंने अल्लाह के रसूल को क़त्ल कर देने का मंसूबा बनाया। वे इस में कामियाब न हो

सके और उन की चालें बेकार हो गयीं। रसूलुल्लाह् सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथियों ने सब्र के साथ इन हालात का मुक़ाबला किया, अल्लाह् पर भरोसा रखा, नर्मी और माफ़ी का रवैया अपनाया, हर बुराई का मुक़ाबला भलाई से किया, गालियों के बदले दुआएं दीं, अपने हाथों को रोके रखा और नमाज़ और सब्र के ज़रिए अल्लाह् के साथ अपने ताल्लुक़ को ज़्यादा से ज़्यादा मज़बूत बनाया और यही फ़रमाया कि—

اَللّٰهُمَّ اهْدِ قَوْمِي فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ-

अल्लाहुम्मह्दि क़ौमी फ़इन्नहुम ला यअ्लमून०

'ऐ अल्लाह ! मेरी क़ौम को सीधा रास्ता दिखा दे। ये जानते नहीं (कि मैं अल्लाह् का नबी और उन का भला चाहने वाला हूं।)

दरूद और सलाम हो प्यारे नबी पर और अल्लाह् की अनगिनत रहमतें और बरकतें हों हुज़ूर सल्ल० की मुबारक ज़ात पर।

अज़ीज़ो ! आपको मालूम है कि जब ये हालात इंतिहा को पहुंच गये और यह मालूम हो गया कि अब मक्के वालों में से कोई भी हुज़ूर सल्ल० की बात मान कर न देगा, तो अल्लाह् तआला ने अपने नबी सल्ल० को हिजरत का हुक्म दिया। चुनांचे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के सहाबा रज़ि० ने अपना वतन छोड़ दिया। वे अपने घरों, अज़ीज़ों, कारोबार, खेतों और बाग़ों को छोड़ कर चल खड़े हुए। उन्हें अपने रब का हुक्म मानना उन सब चीज़ों से ज़्यादा प्यारा था, उन की नज़र में असल क़ीमत दीन की थी और वे उसे हर क़ीमत पर बचाने के लिए तैयार थे। उन्हें अपने रब पर पूरा भरोसा था और यही उन का सब से बड़ा सहारा था। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के सहाबा रज़ि० मक्का छोड़ कर मदीना चले गये। इस हिजरत का मक़सद सिर्फ़ एक था और वह यह कि अल्लाह् के कलिमे को बुलंद करने के लिए सर-धड़ की बाज़ी लगायी जाए और कुफ़्र और शिर्क का झंडा उठाने वालों का मुक़ाबला किया जाए। मक्का के ये मुसलमान हिजरत कर के मदीने में ऐसे लोगों के पास पहुंचे जो उन्हें दोस्त रखते थे, जिन के दिल मोमिनों के लिए नर्म थे, काफ़िरों के लिए उन के दिल में कोई जगह न थी। ये लोग शिर्क वालों के मुक़ाबले में बड़े सख़्त और अपने उसूलों पर जमने वाले थे, आपस में एक दूसरे के साथी और हमदर्द, अपने मुसलमान भाई का भला चाहने

वाले, खुद तक्लीफ़ उठा कर अपने भाई को आराम पहुंचाने वाले। इन लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अपने मुसलमान भाइयों का दिल खोल कर स्वागत किया, आपस के ताल्लुक़ात मज़बूत किए, सब मिल कर एक जान और एक दिल हो गये, सब ने मिल कर अल्लाह के दीन की रस्सी को मज़बूती से थाम लिया, अल्लाह का कलिमा बुलंद करने के लिए तैयार हो गये।

मुसलमान भाइयो! आप सब जानते हैं कि इसके बाद क्या हुआ? अल्लाह के इन चुने हुए बंदों के हाथों शिर्क और बुतपरस्ती की बुनियादें हिल गयीं, बेकार की बातों और अंध विश्वास का अन्त हुआ, ईमान और इस्लाम की रोशनी से इंसानियत को ताक़त मिली, सोई हुई इंसानी आदतें जाग उठीं, जो सलाहियतें शैतानी कामों में लग रही थीं, उन से ऐसे काम हुए, जिन को देख कर फ़रिश्ते रश्क करें, दुनिया सच्चे अम्न व अमान से भर गयी, जुल्म व फ़साद सही तौर पर मिट गये, पूरे अरब में इस्लाम और तौहीद के सिवा शिर्क और बुतपरस्ती का कहीं नाम बाक़ी न रहा, फिर इस के बाद भी इस्लामी जीतों का सिलसिला जारी रहा। पूरब से लेकर पच्छिम तक इस्लामी असर फैल गया। इस्लाम के दुश्मनों ने अगरचे बहुतेरा नाक-भौं सुकोड़ा, लेकिन चारों ओर इंसाफ़ और भलाई का बोलबाला हुआ, लूट-मार, क़त्ल व ग़ारत और जुल्म का बाज़ार ठंडा पड़ने लगा, इंसानों पर इंसानों की खुदाई मिटने लगी। अल्लाह के बंदे अल्लाह के बन्दे बनने लगे और अल्लाह के भेजे हुए हुक्मों की रोशनी में ज़िंदगियां अम्न और राहत का सही लुत्फ़ हासिल करने लगीं, इंसान सच्ची कामियाबी का मतलब समझा। जो निगाहें माद्दापरस्ती की वजह से दुनिया की ज़िंदगी से आगे कुछ देख ही नहीं सकती थीं—उनमें हमेशा की ज़िंदगी की सच्ची खुशियां पूरी तरह समा गयीं। इंसान इंसान रहते हुए फ़रिश्तों की बराबरी करने लगा।

भाइयो! यह है एक छोटी-सी झलक उस इस्लामी इंक़िलाब की, जो अल्लाह के प्यारे नबी और आप के मोहतरम साथी रज़ि० के हाथों दुनिया में आया, आपको मालूम है कि आप सब उसी इंक़िलाब की दावत देने वाले हैं। दुनिया में तंहा आप ही वह गिरोह हैं, जिसके हाथों दुनिया में सही अम्न क़ायम हो सकता है और अल्लाह के बंदों को निजात का सही रास्ता मिल सकता है, लेकिन तनिक देखिए आप का क्या हाल है? क्या आप के हाथों यह काम हो रहा है? अगर नहीं, तो क्या आप तायदाद में

थोड़े हैं ? नहीं, ऐसा नहीं है, बल्कि आज आप बहुत ज़्यादा तायदाद में हैं, लेकिन इस के बावजूद दुनिया में फ़साद और ख़ुदा से बग़ावत का जो तूफ़ान उमड़ा हुआ है, उसके मुक़ाबले में आप एक तिनके की तरह हो गये हैं, आप का कोई वज़न महसूस नहीं होता।

दोस्तो ! इस की सिर्फ़ एक ही वजह है और वह आप जानते हैं। आज हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिदायतों और आप के तरीक़ों से बहुत दूर होते चले जा रहे हैं। दावत और जिहाद की रूह हम में लगभग ख़त्म हो गयी है। दीन की राह में कठिनाइयां सहने और अल्लाह के लिए अपने आप पर सख़्तियां सहने का कोई सवाल ही हमारे सामने नहीं है। हमारी ज़िंदगियां या तो निहायत इत्मीनान से बसर हो रही हैं और अगर कठिनाइयों का सामना करना भी पड़ता है, तो वह पेट के लिए या दूसरे माद्दी फ़ायदों के लिए। हक़ को बुलंद करने, दीन की हिमायत में उठ खड़े होने, लोगों को हिदायत और रहनुमाई का बोझ उठाने और अल्लाह के बन्दों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने की ज़िम्मेदारी को हमने अपनाया ही नहीं है। हम समझते हैं, जैसे ये काम किसी और के करने के हैं। हम से उन का कोई ताल्लुक़ नहीं, पस यही वजह है कि हम आज वह नहीं हैं जो हमें होना चाहिए।

अल्लाह के बन्दो ! अभी मोहलत बाक़ी है। सही अर्थों में अल्लाह के बन्दे बनो। आपस में भाई-भाई हो जाओ, मतभेदों को समेट कर रख दो, दीन की तरफ़ पलटो, अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो, दीन का इल्म और दीन की समझ आम करो, अल्लाह के बंदों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाओ, उन्हें कुफ़्र, शिर्क, अंध विश्वास वग़ैरह के अंधेरों से निकाल कर सही ख़ुदापरस्ती की रोशनी में लाओ। इंसानी हमदर्दी और इंसानी ख़िदमत को अपना चलन बनाओ, दुनिया की हिदायत और रहनुमाई की शमा हाथ में लेकर उठो, ख़ुद नेक बनो, और दूसरों को नेकी की तरफ़ दावत दो। ख़ुदापरस्ती का सही नमूना बनो, और दूसरों को ख़ुदापरस्ती की ओर बुलाओ। अल्लाह के दीन के लिए सब कुछ छोड़ देने की हिम्मत पैदा करो और दीन के लिए दुनिया को बिगाड़ लेने को सब से बड़े नफ़ा का सौदा समझो। तुम आख़िरत पर ईमान रखते हो, दुनिया के मुक़ाबले में आख़िरत की कामियाबी हर लम्हा तुम्हारे सामने रहना चाहिए।

मैं अल्लाह से दुआ करता हूं कि वह दीन के कामों में हमारी मदद

फ़रमाए और हमारे हाथों दीन के ग़लबे की सआदत हमें नसीब फ़रमाए।

بَارَكَ اللّٰهُ لِي وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ - اِنَّهٗ سَمِيْعٌ مُّجِيْبٌ -

बारकल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरआनिल अज़ीम० इन्नहू समी-अुम मुजीब०

# अख़्लाक़ी ख़राबियां

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مُعِزِّ مَنْ اَطَاعَهٗ وَاتَّقَاهُ - وَمُذِلِّ مَنْ اَضَاعَ اَمْرَهٗ وَعَصَاهُ -
اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ وَاَشْكُرُهٗ وَاَسْئَلُهُ الْمَزِيْدَ مِنْ فَضْلِهٖ - وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ - وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ -
بَعَثَهُ اللّٰهُ بِالْحَقِّ وَالْهُدٰى اِلَى النَّاسِ اَجْمَعِيْنَ - اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ
وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ - وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا -
اَمَّا بَعْدُ - فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا
لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ
وَاَنَّهٗۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ○ وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً -

अल हम्दु लिल्लाहि मुअिज़-ज़ मन अता अहू व त्तक़ाहु वमुज़िल-ल मन अज़ा-अ अम्रहू व असाहु अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरु हू व अस् अलुहुल मज़ी-द मिन फ़ज़्लिही व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबी यना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू ब-अ-सल्लाहु बिल हक़्क़ि वल हुदा इलन्नासि अजमईन अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिन व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअदु फ़ अअूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम या ऐयुहल्ल-ज़ी-न आमनुस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्रसूलि इज़ा दआकुम लिमा युह्यीकुम वअलमू अन्नल्ला-ह यहूलु बैनल मरइ व क़ल्बिही व अन्नहू इलैहि तुह्शरून० वत्तक़ू फ़ित्न तल्ला तुसीबिन्नल्लज़ी-न ज़-ल-मू मिन्कुम ख़ास्स:०

भाई मुसलमानो ! अल्लाह तआला का इर्शाद है कि जब तुम्हें अल्लाह और उस का रसूल उस चीज़ की तरफ़ बुलाएं, जो तुम्हें ज़िंदगी बख़्शने वाली है, तो तुम उस पुकार पर लपको, उस दावत को क़ुबूल करो और अल्लाह और उस के रसूल की हिदायतों के मुक़ाबले में किसी दूसरी पुकार पर कान न धरो, तुम्हारा मामला अल्लाह के साथ है, वह तुम्हारे दिलों का हाल जानता है, तुम्हारे ख़्याल, तुम्हारी ख़्वाहिशें और तुम्हारे

इरादे सब उस के इल्म में हैं, उस से तुम कुछ छिपा नहीं सकते। फिर यह भी तो सोचो कि तुम्हें आखिरकार जाना उसी के पास है, उस से बच कर तुम कहीं नहीं जा सकते। वह दिन यक़ीनी तौर पर आएगा, जब उस के हुज़ूर पेश कर दिए जाओगे।

दुनिया वालों को तुम धोखा दे सकते हो, अपने ज़ाहिरी कामों से उन पर तुम अपनी नेकी और तक़्वे का सिक्का जमा सकते हो, लेकिन अल्लाह तआला तो तुम्हारे दिलों को देखता है, उस के यहां तो सिर्फ़ वही काम क़ुबूल किये जाते हैं, जो तुम अच्छी नीयत के साथ करते हो। बड़ा मुबारक है वह बंदा, जो अपने दिल को बार-बार टटोलता रहता है और जो कुछ भी करता है, सिर्फ़ अल्लाह की खुशी के लिए करता है और सिर्फ़ उस की हिदायतों को सामने रख कर करता है।

भाइयो ! अल्लाह तआला को भलाई पसन्द है, अल्लाह अपने बंदों की बुराइयों से बचाना चाहता है। इसी ग़रज़ के लिए उसने अपने रसूल भेजे, अपनी हिदायतों से इन्सानों को नवाज़ा। इन हिदायतों पर अमल करने में लोगों का अपना फ़ायदा है, जो कोई अल्लाह की उतारी हुई रोशनी से मदद लेकर ज़िंदगी का रास्ता तै करेगा, वही ठोकरों से बच सकता है। इंसान की बड़ी बद-नसीबी है कि वह उस हिदायत की तरफ़ से आंखें बन्द कर ले और अपनी शामत अपनी हाथों लाए।

भाइयो ! अल्लाह की उतारी हुई हिदायत से मुंह मोड़ने का एक नुक़्सान तो वह है, जिस से इंसान को आख़िरत में दो चार होना पड़ेगा, लेकिन दूसरा नुक़्सान यह भी है कि उस की यह ज़िंदगी भी फ़ित्नों का शिकार हो जाती है। बद-अम्नी, बे-चैनी, आपसी ख़ून-ख़राबा, बे-एतमादी, ख़ुदग़रज़ी, हक़ मारना, ज़ुल्म, जाबिराना लूट-खसोट और क़िस्म-क़िस्म के फ़ित्ने ऐसे हैं जो अल्लाह तआला की हिदायतों से मुंह मोड़ने के नतीजे में ही पैदा होते हैं, फिर जब ये फ़ित्ने फैलते हैं तो आम वबा की तरह मुसीबत बन कर छा जाते हैं और यह मुसीबत इतनी आम होती है कि इस में सिर्फ़ वही लोग गिरफ़्तार नहीं होते, जो मुज्रिम होते हैं और जिन के करतूतों के नतीजे में यह फ़साद फैलता है, बल्कि वे लोग भी इस तूफ़ान का शिकार होते हैं जो ऐसी ना-फ़रमानी के साथ रहना गवारा करते रहे हों।

अख़्लाक़ी ख़राबियों की मिसाल उस गन्दगी की-सी है, जिस से हलाक करने वाली बीमारियां फैलती हैं। जब तक यह गन्दगी दो चार लोगों तक रहती है, बीमारी छूत की नहीं बनने पाती। इस बीमारी का

नुक़्सान उन्हीं लोगों को पहुंचता है जो उस में फंसे होते हैं, लेकिन जब गन्दगी फैल कर ग्राम हो जाती है और लोग उस की सफ़ाई की तरफ़ से ग़फ़लत बरतते हैं, तो फिर कोई न कोई वबा फूट पड़ती है, उस वक़्त उस वबा से वे भी नहीं बचते जो चाहे ख़ुद तो साफ़-सुथरे रहे हों, लेकिन उन्हों ने अपनी बस्ती की सफ़ाई की तरफ़ कोई ध्यान न दिया हो।

बिल्कुल यही हाल अख़्लाक़ी ख़राबियों का है, जब तक ये ख़राबियां कुछ गिने-चुने लोगों में होती हैं, तो दूसरे भले लोगों के दबाव से दबी रहती हैं और सोसाइटी की आम फ़िज़ा नेकी और तक़्वा की फ़िज़ा रहती है, लेकिन जब समाज में बुराइयों को दबा कर रखने की ताक़त बाक़ी नहीं रहती, जब लोग अख़्लाक़ी ख़राबियों को सहन करने लगते हैं, जब नेकी पसन्द करने वाले लोग बुरों को बुराइयों से नहीं रोकते, जब बे-हया और बद-अख़्लाक़ लोग अपनी शरारतों और अख़्लाक़ी गन्दगियों को उछालने के लिए आज़ाद छोड़ दिए जाते हैं और जब अच्छे लोग सिर्फ़ अपनी ही इस्लाह और नेकी को काफ़ी समझ लेते हैं, तो फिर मिल-मिला कर पूरे समाज की शामत आ जाती है, फ़ित्ने आम हो जाते हैं और फिर गेहूं के साथ घुन भी पिस जाते हैं।

अल्लाह तआला का इर्शाद है कि मोमिन इस सूरत को अपने सामने रखें, अपनी जगह पहचानें। यही वह गिरोह है जिसे अल्लाह तआला ने दुनिया से अख़्लाक़ी गन्दगियों को दूर करने के लिए लगा दिया है। इसी ख़िदमत के लिए उन्हें पुकारा जा रहा है। उनका फ़र्ज़ है कि वे इस पुकार पर लपकें, मिल-जुल कर दुनिया से उन तमाम गन्दगियों को दूर करें जो इन्सानियत को हलाक करने वाली हैं। यही वह ख़िदमत है जो इन के सुपुर्द की गयी है और यही वह काम है जिस में हाथ बटाए बिना न वे शख़्सी हैसियत मे कामियाब हो सकते हैं और न इज्तिमाई हैसियत से फल-फूल सकते हैं। अगर वे इस काम में मुख़्लिसाना हिस्सा लेंगे, तो ख़ुद भी कामियाब होंगे और दूसरों को भी फ़ायदा पहुंचा सकेंगे, लेकिन अगर वे हाथ पर हाथ रख कर बैठे होंगे और उन के चारों तरफ़ जो गन्दगियां फैल रही हैं, उन्हें सहते रहेंगे तो फिर वह आम फ़ित्ना पैदा होगा, जिसकी लपेट में सब के साथ वे ख़ुद भी आ जाएंगे चाहे वे ज़ाती तौर पर कैसी ही भली ज़िंदगी क्यों न गुज़ार रहे हों और चाहे वे अपने निजी तक़्वा और निजी नेकी पर कितना ही मुत्मइन क्यों न हों।

भाइयो ! आज हम जिन हालात में घिरे हुए हैं, वे नतीजा हैं इसी

ग़फ़लत का, जिस की तरफ़ अल्लाह तआला ने इशारा फ़रमाया है। हर शख़्स को अल्लाह तआला ने मुख़्तलिफ़ सलाहियतें दी हैं, किसी को थोड़ी, किसी को बहुत और हर शख़्स उन के मुताबिक़ काम करने के लिए कोई न कोई माहौल पा सकता है, अपने घर, अपने बाल-बच्चों, अपने नातेदार रिश्तेदार, अपने मुहल्ले और अपने शहर में वह अपनी सलाहियतों से काम ले सकता है और अपनी हद तक अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा कर सकता है और जब इस तरह का हौसला और हिम्मत रखने वाले लोग आपस में मिलजुल कर कोशिश करें तो उन्हें अन्दाज़ा होगा कि वह अपनी ताक़त से कई गुना ज़्यादा काम कर सकेंगे। जमाअत के साथ अल्लाह की मदद शामिल हो जाती है और अल्लाह की मदद से बढ़ कर और क्या ताक़त हो है। अल्लाह तआला हम सब को अपनी मर्ज़ी के कामों के करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُاللّٰهَ لِیْ وَلَکُمْ
فَاسْتَغْفِرُوْهُ۔ اِنَّهٗ هُوَالْغَفُوْرُالرَّحِیْمُ۔

अक़ूलु क़ौली हाज़ा व अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम फ़स्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

# ईमानदारी और अमानत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ـ وَلَهُ الْحَمْدُ فِى
الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ
مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ـ اَحْمَدُهٗ
سُبْحٰنَهٗ وَاَشْكُرُهٗ عَلٰى نِعَمِهٖ ـ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ
لَهٗ ـ وَلَا مَعْبُوْدَ بِحَقٍّ سِوَاهُ ـ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ـ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ
تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا ـ اَمَّا بَعْدُ ـ

अल-हम्दु लिल्ला हिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि व लहुल हम्दु फ़िल ऊला वल आख़िरः व हुवल हकीमुल ख़बीर यअलमु मा यलिजु फ़िल अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समाइ व मा यअ्रुजु फ़ीहा व हुवर्रहीमुलग़फ़ूर० अहमदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू अला निअमिही व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शर-क लहू व ला मअ़बू-द बिहक़्क़िन सिवाहु व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुह-म्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरा० अम्मा बअ़दु०

बुज़ुर्गो और भाइयो ! जब तक किसी मिल्लत या समाज के आम लोगों में 'ईमानदारी और अमानतदारी' की ख़ूबी आम न हो, उसे कभी तरक़्क़ी नसीब नहीं हो सकती। मुसलमान जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं, उन्हें यक़ीन है कि एक दिन उन्हें अपने मालिक के हुज़ूर हाज़िर होना है और अपनी पूरी ज़िंदगी का हिसाब देना है, उसी ईमान का नतीजा था कि ईमानदारी और अमानत मुसलमानों की मिल्ली ख़ुसूसियत थी, लेकिन अब क्या हाल है ? उन में यह ख़ूबी ढूंढे ही से कहीं मिल जाए तो मिल जाए, आम तौर पर न दोस्त को दोस्त पर भरोसा है, न शौहर को बीवी

पर और न बाप को औलाद पर। वजह ज़ाहिर है। यह सब निशानी है ईमान की कमज़ोरी की कि ईमान की कमज़ोरी के साथ मुसलमानों में ईमानदारी और अमानत की कमी आ गयी है और इस ख़ूबी के कम होने पर उन की आख़िरत भी बिगड़ी, और दुनिया में भी रुसवाई, ज़िल्लत और पस्ती उन के हिस्से में आयी।

दोस्तो! आम तौर पर लोग अमानत का मतलब बस इतना ही जानते हैं कि अगर कोई आमदनी किसी के पास अपना माल या सामान रख दे, तो इस की हिफ़ाज़त की जाए और जब वह मांगे तो उसे इस का माल या सामान वापस कर दिया जाए। यह तो ठीक है कि अमानत का एक मतलब यह भी है, लेकिन इस का मतलब बस इतना ही नहीं है। क़ुरआन और हदीस की रोशनी में देखा जाए तो अमानत का मतलब बहुत बड़ा है। क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला का इर्शाद है—

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ۔

इन्ना अ़रज़्नल अमा-न-त अलस्समावाति वल अर्ज़ि वल जिबालि फ़ अबै-न अंय्यह्मिलनहा व अश्फ़क़्-न मिन्हा व ह-म-ल-हल इन्सानु०

'हम ने आसमानों, ज़मीन और पहाड़ों पर अमानत का बोझ डाला, तो उन्होंने उस के उठाने से इन्कार कर दिया और उस से डर गये, लेकिन इंसान ने उसे उठा लिया।'

ज़ाहिर है कि यहां अमानत का वह मतलब नहीं लिया जा सकता जो आम तौर पर लोग लेते हैं, बल्कि इस से मुराद अल्लाह तआला की मर्ज़ी पूरी करने, उस के हुक्मों को मानने और उस की मंशा के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने की वह ज़िम्मेदारी है, जिसे क़ुबूल करने की सलाहियत न आसमानों में थी, न ज़मीन में और न पहाड़ों में, बल्कि अल्लाह तआला ने यह सलाहियत इंसानों को अता फ़रमायी थी। उसे इरादे और अख़्तियार की आज़ादी दी गयी थी, उसे सोचने और समझने की सलाहियत बख़्शी थी और उसे यह ताक़त दी गयी थी कि वह फ़ितरत के भेद मालूम करे और उन से काम ले। इंसान की यही एक ख़ुसूसियत ऐसी है जो दूसरी मख़्लूक़ में नहीं पायी जाती, उस की ज़िंदगी में क़दम-क़दम पर ऐसे मौक़े आते हैं कि अगर वह चाहे तो अमानत के तक़ाज़े पूरे करे और चाहे तो ख़ियानत का रवैया अपनाए।

भाइयो ! इंसान को जो कुछ अता हुआ है, उस की हैसियत अमानत ही की है। इंसान किसी एक चीज का भी पैदा करने वाला नहीं है, उस के अपने जिस्म और अपनी तमाम सलाहियतों से लेकर उस के आस-पास जो कुछ भी है, वह उनमें से किसी चीज़ का भी बनाने वाला नहीं है, यह सब कुछ उसे अता किया गया है और इस एतबार से उन में से एक-एक चीज अमानत ही है। इंसान की अक्ल अल्लाह तआला की तरफ़ से अमानत है। अब अगर वह उस से इस तरह काम ले, जिस तरह अल्लाह की मर्जी है तो यह काम अमानत के मुताबिक़ है, लेकिन अगर वह इस से इस तरह काम ले जो अल्लाह की मंशा के खिलाफ़ है, तो यही खियानत है। हमारा जिस्म भी अमानत है। हमारा फ़र्ज़ है कि हम उस की हिफ़ाजत करें, उसे नुक़सान से बचाएं और खास तौर पर इस बात को ध्यान में रखें कि हम इस अमानत को किसी ऐसी तरह काम में न लाएं, जिस के नतीजे में कल क़ियामत के दिन इस जिस्म को आग का ईंधन बनना पड़े। जिस्म के बारे में यह सब से बड़ी खियानत होगी।

हमारी औलाद भी अल्लाह की अमानत है। अल्लाह तआला ने अपने कुछ बंदों को हमारे हवाले किया है। उन का पालना-पोसना, उनकी देख-भाल और उन की सेहत बनाए रखने की कोशिश हमारा फ़र्ज़ है और इसी तरह यह भी हम पर फ़र्ज़ है कि हम अख्लाक़ और खुदापरस्ती के लिहाज से उन्हें वह तर्बियत दें, जो अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ हों। अगर हम इस तरफ़ से कोताही करते हैं और हमारी किसी ग़लती की वजह से यह अल्लाह की नाराज़ी मोल लेकर दोज़ख का ईंधन बनते हैं, तो औलाद के मामले में यह हमारी सब से बड़ी खियानत होगी। अल्लाह तआला का इर्शाद है—

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا

या ऐयुहल्लज़ी-न आमनू क़ू अन्फ़ुसकुम व अह्लीकुम नारा०

'ऐ ईमान वालो ! अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख की आग से बचाओ।'

भाइयो ! हम में से कोई ऐसा नहीं है, जिसे अल्लाह तआला ने किसी न किसी दायरे में कोई अख्तियार फ़रमाया हो, कोई ऐसा है जिसे पूरा शहर मानता है, कोई ऐसा है, जिस का बिरादरी में बड़ा असर है, कोई अपने घर का बड़ा है, किसी की बात उस के मिलने-जुलने वालों के

हलक़े में मानी जाती है, यह असर और इक़्तिदार जिसे भी अता हुआ हो, यह भी अल्लाह तआला की तरफ़ से अमानत है। इस अमानत के बारे में भी सवाल किया जाएगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि—

كُلُّكُمْ رَاعٍ وَّكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ

कुल्लुकुम राअिन व कुल्लुकुम मस्ऊलुन अन रअी-य-तिही॰

'तुम में से हर शख़्स किसी न किसी हलक़े में निगरां और ज़िम्मेदारी की हैसियत रखता है और तुम में से हर शख़्स से उन लोगों के बारे में सवाल किया जाएगा, जो उस की निगरानी और मातहती में दिए गए थे।'

अब अगर कोई शख़्स अपने असर और अपने इक़्तिदार से लोगों में सुधार, उन के अख़्लाक़ और मामलों को ठीक-ठाक करने के लिए इस्तेमाल नहीं करता है, तो इस का मतलब यही है कि वह अल्लाह की दी हुई अमानत में ख़ियानत कर रहा है और इस कोताही की ज़िम्मेदारी उसे भुगतनी पड़ेगी।

ऐसे ही हुकूमत के ज़िम्मेदार अल्लाह की ओर से एक बड़ी अमानत के ज़िम्मेदार हैं। मुल्क की पूरी आबादी उन के हाथों में अमानत है और जहां उन से उन के शख़्सी अमल और अक़ीदे के बारे में पूछा जाएगा, वहां उन्हें इस बात का भी जवाब देना होगा कि उन्होंने लोगों के हक़ों को अदा करने, उन के बीच इंसाफ़ क़ायम करने और उन्हें ग़लत राहों से हटा कर अच्छे रास्तों पर लगाने की कोशिश की और उस अमानत का कहां तक हक़ अदा किया जो उनके हवाले की गयी थी। रह गये वे हाकिम जो अल्लाह की इस अमानत में सुधार करने के बदले ख़ुद ज़ुल्म करते हैं, तो वे सबसे बड़े ख़ियानत करने वाले हैं और उन्हें इस ख़ियानत का पूरा-पूरा बदला एक दिन भुगतना ही पड़ेगा।

इसी तरह जिन लोगों को अल्लाह तआला ने दीन का इल्म अता फ़रमाया है, चाहे वह थोड़ा हो या बहुत, उन के पास भी दीन का यह इल्म अल्लाह की अमानत है। अगर उन्होंने अपने इल्म से काम लेकर इल्हाद, कुफ़्र और बे-दीनी का मुक़ाबला किया, दीन न जानने वालों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाया और दीन को बदलने और बिगड़ने से बचाया, उन की गिनती अमानतदारों में होगी और अगर इस बारे में उन्होंने

कोताही की, चाहे यह कोताही किसी लालच की वजह से हो या किसी डर की वजह से, तो यक़ीनी तौर पर वे ख़ियानत के मुजरिम होंगे और उन्हें अपनी इस कोताही का जवाब देना पड़ेगा, चाहे वे अपनी निजी ज़िदगी में कैसे ही नमाज़ी और मुत्तक़ी क्यों न रहे हों।

इसी तरह हमारी बोलने की सलाहियत, हमारी लिखने की सलाहियत, हमारी सूझ-बूझ, ग़रज़ यह कि तमाम सलाहियतें अल्लाह तआला की अमानत हैं और हमारा फ़र्ज़ है कि हम उनमें से किसी चीज़ को अल्लाह की मंशा और मर्ज़ी के खिलाफ़ इस्तेमाल न करें।

भाइयो ! अल्लाह तआला ने हमें जो कुछ माल और दौलत अता फ़रमाया है, चाहे वह थोड़ा हो या बहुत, वह भी उसी की बख़्शी हुई अमानत है। हमारे लिए ज़रूरी है कि हम अल्लाह की बख़्शी हुई इस अमानत को अपनी और अपने से मुताल्लिक़ लोगों की जायज़ ज़रूरतों पर खर्च करें और जो कुछ हमारी ज़रूरतों से ज़्यादा हमें अता किया गया है, उसे नेकी और भलाई के कामों में लगाएं, खुशहाल और खाते-पीते लोग अगर अपनी ज़रूरत से ज़्यादा दौलत को अल्लाह के दीन को सरबुलंद करने के लिए और ज़रूरतमंदों की ज़रूरतें पूरी करने के लिए काम में लाते हैं, तो यक़ीनन वे अमानतदार और ईमानदार गिने जाएंगे, लेकिन अगर वे उस दौलत को ऐश व इशरत में उड़ाते हैं, फ़िज़ूलखर्ची करते हैं और नाम और दिखावे के कामों में लगाते हैं तो वे अल्लाह के हुज़ूर ख़ियानत के मुजरिम की हैसियत से पेश होंगे।

दोस्तो ! ये कुछ इशारे हैं अमानत के उस फैले हुए मतलब की तरफ़, जो क़ुरआन और हदीस की रोशनी में सामने आता है, लेकिन हमारे लिए बड़े अफ़सोस और बड़ी तवज्जोह की बात यह है कि इस वक़्त जो सूरत हो गयी है, वह बड़ी चिन्ता से भरी हुई है। इस सूरत का ज़बर्दस्त तक़ाज़ा है कि हम में से हर-हर शख़्स यह फ़ैसला कर के उठे कि अब तक जो हुआ, सो हुआ, लेकिन अब वह अपनी हद तक कोशिश में कमी न करेगा।

इस वक़्त इल्म की अमानत का यह हाल है कि शायद इल्म वालों में यह एहसास भी ख़त्म हो गया है कि यह इल्म उन के पास अमानत है। ये लोग अपनी सलाहियतों को दुनिया के मामूली फ़ायदों के बदले बेच रहे हैं और पेट के लिए ये न सिर्फ़ यह कि इस इल्म से वे काम नहीं लेते जो लेना चाहिए, बल्कि उलटा ग़लत काम लेते हैं।

यही हाल हमारे हुकूमत करने वालों का है और यही हाल हर उस शख्स का है, जिसे अल्लाह तआला ने कुछ भी असर और इक्तिदार अता फ़रमाया है। ये लोग अपने असर को अपनी दुनिया बनाने और अपने लिए ऐश और आसानियां पैदा करने के लिए इस्तेमाल करते हैं, लेकिन उन्हें कभी यह ख्याल नहीं आता कि यह भी अल्लाह की अमानत है और इस के बारे में उन्हें जवाबदेही करनी होगी। हमारे अन्दर खुशहाल लोग भी मौजूद हैं, अगरचे वे कम हैं, लेकिन उन की खुशहाली का इस्तेमाल, फ़िज़ूलखर्ची, बेजा रास्मों, नाम-दिखावा और ऐश व आराम के सिवा और कुछ नहीं रह गया है। ये औलाद की तर्बियत की तरफ़ से ग़ाफ़िल हैं। रिश्तेदारों के हक़ों की इन्हें फ़िक्र ही नहीं और भलाई और नेकी के कामों के लिए इन की दौलत में शायद कोई हिस्सा ही नहीं।

यही हाल औलाद वालों का है। उन की नज़र में उन पर औलाद की ज़िम्मेदारी बस इतनी है कि उन के खाने-पीने के लिए जायज़ या नाजायज़, जिस तरह हो, कोई इन्तिज़ाम कर दिया जाए। रही तालीम और तर्बियत, तो उस की कोई खास अहमियत ही नहीं, बहुत हुआ तो किसी स्कूल में भेज दिया, इस के बाद उन्हें कुछ खबर नहीं कि अल्लाह तआला की इस अमानत के साथ क्या मामला हो रहा है, बच्चों को क्या पढ़ाया जा रहा है, किस क़िस्म के ख्याल और कैसे अक़ीदे उन के दिमाग़ों में उतारे जा रहे हैं, उनके वक़्त कहां लगते हैं, वे किन लोगों में उठते-बैठते हैं, उन के अख्लाक़ और आदतें कैसी बन रही हैं, इस्लाम के साथ उनका क्या ताल्लुक़ है ?

भाइयो ! अच्छी तरह समझ लीजिए कि यह आप की सबसे ज़्यादा नाज़ुक ज़िम्मेदारी है, आने वाली नस्लें सब से क़ीमती अमानत हैं, जो आप के सुपुर्द की गयी हैं। इस अमानत के बनने या बिगड़ने पर इस मुल्क में इस्लाम का मुस्तक़्बिल क़ायम है। यह तो इस की वह हैसियत है जो इस दुनिया के ख्याल से है, आखिरत में इस अमानत में खियानत का जो वबाल भुगतना पड़ेगा, वह इन्तिहाई सख्त है और अगर कोई शख्स इसकी परवाह नहीं करता तो या तो उसे आखिरत का पूरा-पूरा यक़ीन नहीं है या फिर वह किसी और ग़लतफ़हमी का शिकार है, जिस के बारे में उसे यक़ीनी तौर पर सोचना और फ़ैसला करना चाहिए।

भाइयो ! आप की ज़िम्मेदारी का दायरा सिर्फ़ आप की औलाद तक नहीं है, बल्कि आप की बीवियां, आप के रिश्तेदार और आप के असर

में जो लोग भी हैं, वे सब अमानत में दाखिल हैं। आजकल लोग खानदान की इस हैसियत को भूल जाते हैं। वे ख्याल नहीं करते कि उन की बीवी ज़ीनत व लिबास के मामले में शरई हदों का ख्याल रखती है या नहीं? इबादत व अख़्लाक़ में वह अल्लाह तआला के हुक्मों की पाबन्द है या नहीं? रिश्तेदार और अज़ीज़ खुल्लम-खुल्ला अल्लाह की नाफ़रमानी तो नहीं कर रहे हैं और ये सब जन्नत के रास्ते पर जा रहे हैं या जहन्नम के? और उन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए क्या किया जा सकता है? इस मामले में लापरवाई का नतीजा है कि आज अच्छे-अच्छे दीनदारों के घरों से इल्हादी पैदा हो रहे हैं और शरीअत की पाबंदी धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है।

भाइयो! इस सूरतेहाल का एक ही इलाज है। हर शख्स अपने रब की तरफ़ पलटे, अपने को सुधारने का फ़ैसला करे और अपनी तमाम कोशिशें हिक्मत और सूझ-बूझ के साथ दूसरों को सुधारने में लगा दे। यह उसी वक़्त हो सकता है कि जब हर शख्स अपने रब के वायदों को सामने रखे, आखिरत में उस की खुशी को अपना मक़्सद बनाए और इस बात से बचने की कोशिश करे कि कल क़ियामत के दिन वह उस के हुज़ूर खियानती मुज्रिम की हैसियत से पेश न हो। बेशक हमारे रब का अज़ाब बड़ा ही सख्त है, अल्लाह तआला हम सब को उस से बचाए रखे और ऐसे काम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, जिन से उस की खुशी हासिल होती है—

بَارَكَ اللّٰهُ لِيْ وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ- وَنَفَعَنِيْ وَاِيَّاكُمْ بِمَا
فِيْهِ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ- اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ
مِّنْ كُلِّ ذَنْبٍ فَاسْتَغْفِرُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ-

बारकल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरआनिल अज़ीम व नफ़-अ-नी व इय्याकुम बिमा फ़ीहि मिनल आयाति वज़्ज़िक्रिल हकीम अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम मिन कुल्लि ज़म्बिन फ़स्तग़्फ़िरूहु इन्नहु हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

# माल की मुहब्बत

الحمد لله فاطر السمٰوٰت والارض - جعل لكم من انفسكم ازواجا و
من الانعام ازواجا - يذرؤكم فيه ليس كمثله شيء وهو السميع البصير
شهد ان لا اله الا الله وحده لا شريك له - له مقاليد السمٰوٰت والارض
يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر - انه بكل شيء عليم - واشهد ان محمدا
عبده ورسوله - صلى الله عليه وعلى اله واتباعه اجمعين -
اما بعد - فاعوذ بالله من الشيطٰن الرجيم يايها الذين امنوا انفقوا
من طيبٰت ما كسبتم ومما اخرجنا لكم من الارض ولا تيمموا الخبيث
منه تنفقون ولستم باخذيه الا ان تغمضوا فيه - واعلموا ان الله غني
حميد - الشيطٰن يعدكم الفقر ويامركم بالفحشاء - والله يعدكم
مغفرة منه وفضلا - والله واسع عليم -

अल हम्दु लिल्लाहि फ़ातिरिस्समावाति वल अर्ज़ि ज अ-ल लकुम मिन अन्फ़ुसिकुम अज़्वाजंव-व मिनल अन्आमि अज़्वाजा यदरउकुम फ़ीहि लै-स क-मिस्लिही शैइवं-वहुवस्समीउल बसीर० अश्हदु-अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहू मक़ालीदुस्समावाति वल अर्ज़ि यब्सुतुर्रिज़-क़ लिमंय-यशाउ व यक़्दिर० इन्नहू बिकुल्लि शैइन अलीम० व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व अत्बाअिही अज्मअीन०

अम्मा बअ्दु फ़ अअूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम या ऐयुहल्लज़ी-न आमनू अन्फ़िक़ू मिन तय्यिबाति मा कसब्तुम व मिम्मा अख़्रज्ना लकुम मिनल अर्ज़ि व ला तयम्ममुल ख़बी-स मिन्हु तुन्फ़िक़ू-न व लस्तुम बिआख़ि-ज़ीहि इल्ला अन् तुग़्मिज़ू फ़ीहि वअलमू अन्नल्ला-ह ग़नीयुन हमीद० अश्शैतानु यअिदुकुमुल फ़क़्-र व यअ्मुरुकुम बिल फ़ह्शाइ वल्लाहु यअि-दुकुम मग़्फ़िरतम मिन्हु व फ़ज़्ला वल्लाहु वासिउन अलीम०

अज़ीज़ो और दोस्तो ! बेचैनी और बे-इत्मीनानी का एहसास सब

को है। हर शख़्स महसूस कर रहा है कि हमारे समाज में कोई कमी है, उसे पूरा होना चाहिए और कोई बुराई है जिसे दूर होना चाहिए। फिर हर शख़्स अपने ख्याल के मुताबिक़ सुधारने का तरीक़ा भी अपनाता है और कोई न कोई तज्वीज़ भी सामने रखता है। आम तौर पर इस वक़्त जो बात ज़ेहनों पर छायी हुई है, वह यह है कि असल में ख़राबियों की जड़ माल और माली बद-हाली है। यह अगर दूर हो जाए तो सब कुछ ठीक हो सकता है, चुनांचे इसी का नतीजा है कि क़रीब-क़रीब हर ज़ेहन इस तरह सोचता है कि जिस तरह भी मुम्किन हो, इधर उधर हाथ मार कर ज़्यादा से ज़्यादा दौलत कमाया जाए और जो कुछ कमा लिया है, उसे या तो रोक कर रखा जाए और या अपनी ख्वाहिश के मुताबिक़ अलल्ले-तलल्ले ख़र्च किया जाए।

ज़ेहनों का जायज़ा लीजिए, तो आप को इस ताल्लुक़ से दो बातें बहुत उभरी हुई नज़र आएंगी। पहली बात दौलत की हविस और मुहब्बत और दूसरी बात रुपए का ख़र्च, ज़रूरतों से ज़्यादा नफ़्स की ख्वाहिश पूरी करने और नाम पैदा करने के लिए। इंसानी ज़ेहन का यह रोग कुछ नया नहीं है। शैतान ने हमेशा इन्हीं दो पहलुओं से अल्लाह की बख़्शी हुई नेमतों के इस्तेमाल को ग़लत राहों पर लगाया है। एक ओर शैतान ज़ेहन में यह बात डालता है कि अगर तुमने ज़्यादा से ज़्यादा दौलत न कमायी, और बे-वजह हराम और हलाल, जायज़ और ना जायज़ के चक्कर में पड़े रहे, तो तुम दूसरों के मुक़ाबले में पीछे रह जाओगे। दुनिया में तरक़्क़ी करने वाली क़ौमों को देखो, वह किस तरह दौलत कमाने के मैदान में आगे बढ़ रही हैं, फिर जब दौलत आने लगती है तो शैतान ज़ेहन में यह बात डालता है कि अब उसे रोक कर रखो, दौलत की मुहब्बत दिल में पैदा होती है और फिर वह भलाई के कामों में ख़र्च नहीं होती। शैतान बराबर यह सिखाता रहता है कि अगर तुमने अपने गाढ़े पसीने की इस कमाई को ग़रीबों और मुहताजों की मदद या दूसरे भलाई के कामों में लगा दिया तो कल किसी मुसीबत के वक़्त कौन तुम्हारे काम आएगा, अपने बुढ़ापे और अपनी बीमारी के ज़माने के लिए, तुम ख़ुद अपनी फ़िक्र न करोगे, तो कौन करेगा ?

सोचने का अन्दाज़ बड़ी आसानी के साथ हर उस मौक़े पर ज़ेहन में आ जाता है जब किसी भलाई के काम में ख़र्च करने का कोई मौक़ा सामने हो, लेकिन आप देखेंगे कि वही लोग जो कुछ मौक़ों पर बड़ी एहित-

यात करने वाले और दूर-दूर तक नज़र रखने वाले होते हैं, खूब दिल खोल कर दौलत उड़ाने लगते हैं। अगर सवाल नाम और दिखावे का हो या नफ़्स की ख्वाहिशों के पूरा करने और दिल का अरमान निकालने का मामला हो, आप देखेंगे कि यही दूर-दूर तक नज़र रखने वाले लोग शैतान के बहकावे में आकर फ़िज़ूलखर्चियों के नित नए तरीक़े ईजाद करते हैं और नफ़्स की अपनी ख्वाहिशों को पूरा करने के लिए इंतिहाई बे-दर्दी से रुपया उड़ाते हैं। इंसानी ज़ेहन की इस बुनियादी खराबी की तरफ़ से होशियार रहने के लिए अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया है कि—

الشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ۔

अश-शैतानु यअिदुकुमुल फ़क़-र व यअ्मुरुकुम बिल फ़ह्शाइ०

यानी शैतान हर वक़्त इस घात में लगा हुआ है कि वह तुम्हारे ज़ेहन को खराब कर दे और तरह-तरह के ये अंदेशे तुम्हारे सामने लाए कि देखो तुम मुहताज हो जाओगे। अगर तुमने अपने पैसों को रोक-रोक कर न रखा, फिर इतना ही नहीं, वह दौलत के ताल्लुक़ से इंसान को तंग-दस्ती और मुहताजी के ग़म में डालने के साथ-साथ इंसान को बे-हयाई के नए-नए सबक़ पढ़ाता है ऐयाशी और फ़िज़ूलखर्ची के लिए नए-नए रास्ते ईजाद करता है और वही दिल जो किसी ज़रूरतमंद को एक वक़्त का खाना खिलाने के लिए नहीं पसीजता, वह बात-बात पर हज़ारों रुपए उड़ाने के लिए तैयार हो जाता है।

भाइयो और अज़ीज़ो! इस वक़्त हमारे समाज की एक बहुत बड़ी खराबी यह है कि हम में से बहुत से लोगों के ज़ेहनों में शैतान के डाले हुए इस वस्वसे ने अच्छी तरह घर कर लिया है कि अगर तुम ऐसा और ऐसा न करोगे तो हरगिज़ दूसरी क़ौमों के मुक़ाबले में तुम बाज़ी नहीं ले सकते और अगर तुम अपना पैसा फ़्लां-फ़्लां कामों में लगाओगे, तो खुद खाली हाथ रह जाओगे। एक ओर दौलत के मामले में यह ज़ेहन और दूसरी ओर दौलत ही के ताल्लुक़ से फ़िज़ूलखर्ची और इस्राफ़ की वह शान, जिस का तजुर्बा हम में से हर शख्स को है, साफ़-साफ़ यह बताते हैं कि हम शैतान के डाले हुए ग़रीबी के डर में पड़े हुए हैं और उसके बताए हुए बे-हयाई के रास्ते पर चल रहे हैं।

भाइयो! शैतान के डाले हुए ग़रीबी के डर की अनगिनत शक्लें हैं, जो हर दौर में नए-नए ढंग में सामने आती रही हैं। यह शैतान का डाला

ग़रीबी का डर ही था कि एक जमाने में लोग अपनी औलाद को क़त्ल कर देते थे। उन्हें यह सहन नहीं था कि उन की रोज़ी में कुछ और नन्हें-मुन्ने शरीक हों और उन्हें तंगी बर्दाश्त करना पड़े। शैतान का डाला हुआ ग़रीबी का यह डर आज भी ज़ेहनों पर छाया हुआ है, सिर्फ़ शक्ल और नाम बदला हुआ है। पहले लोग इतने होशियार नहीं थे कि पैदा होने से पहले औलाद को क़त्ल कर सकते, इस लिए वे पैदा होने के बाद यह काम करते थे। अब इंसानी इल्म इतना आगे बढ़ गया है कि वह पैदा होने से पहले भी औलाद के क़त्ल की क़ुदरत रखता है। अंदेशा उस वक़्त भी यही था कि रोज़ी में तंगी आएगी और आज भी इसी बात से डराया जा रहा है कि अगर इंसानी पैदाइश का हाल यही रहा तो खाने को कहां से आएगा? पहले लोग अपने इस जुर्म को 'क़त्ले औलाद' ही का नाम देते थे, लेकिन आज के अक़्लमंदों ने इस को 'परिवार कल्याण नियोजन' का सुन्दर नाम दे दिया है। रूह एक ही है, वही बात है, कहने का अन्दाज़ बदला हुआ है। यहां भी हमें एक ओर शैतान का ग़रीबी में पड़ जाने का डरावा और दूसरी तरफ़ बेहयाई का हुक्म साफ़-साफ़ नज़र आता है। आज के परिवार कल्याण नियोजन के पीछे जो जज़्बे काम कर रहे हैं, उन का जायज़ा लेकर देखिए, आप आसानी के साथ यह बात महसूस कर लेंगे कि इस के पीछे एक फ़िज़ूलखर्च और अय्याशी की ज़िंदगी गुज़ारने का जज़्बा बड़ी हद तक काम करता है। ग़रज़ यह कि आप जितना ग़ौर करेंगे, यही पाएंगे कि हमारा समाज इस वक़्त पूरी तरह शैतान के ग़रीबी के वायदे और बे-हयाई के हुक्म की पकड़ में है और उस के नुक़्सानदेह असर सैंकड़ों नयी-नयी शक्लों में हमारे तजुर्बे में आ रहे हैं।

भाइयो! अब इसके मुक़ाबले से आइए यह देखें कि अल्लाह तआला क्या रहनुमाई फ़रमाता है। सूरः बक़रः में जहां अल्लाह तआला ने वह बात फ़रमायी है, जिस की तफ़्सील अभी आप के सामने आयी, वहीं फ़िक्र और अमल की वह तस्वीर भी सामने रख दी है, जिस में हमारी भलाई और कामियाबी है। पहले फ़रमाया—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ

या एयुहल्लज़ी-न आ मनू अन्फ़िक़ू मिन तय्यिबाति मा कसब्तुम व मिम्मा अख़रजना लकुम मिनल अर्ज़ि०

'मुसलमानो! हमने जो तुमको जो पाक रोज़ी दी है, उसमें से हमारी

राह में ख़र्च करो और हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से जो नेमतें उगायी हैं, उन में से भी हमारी राह में दो।'

यह है वह सोचने का ढंग, जो इस्लाम इंसान की माली समस्याओं को हल करने के लिए पैदा करता है। पहला इशारा इस तरफ़ है कि जो कुछ कमाओ, वह पाक हो, जायज़ तरीक़े पर हो, दूसरों का हक़ मार कर के या दूसरों को धोखा देकर जो कुछ कमाया जाता है, उस से चाहे किसी एक की जेब भरती हो, लेकिन समाजी और क़ौमी एतबार से यही चीज़ माली निज़ाम में सब से बड़ी रुकावट पैदा करती है। जब तक किसी क़ौम के माली निज़ाम में नुक़्सान का यह पहलू मौजूद रहेगा, हरगिज़ उस के मस्अले हल न होंगे, बल्कि हर मस्अले के हल के लिए जो कुछ किया जाएगा, उस से कोई और नया मस्अला पैदा हो जाएगा। ज़्यादा तफ़्सील में न जाने का मौक़ा नहीं है, जो लोग इस मस्अले पर ग़ौर करते हैं, वे अच्छी तरह जानते हैं कि हलाल व हराम और जायज़ व ना-जायज़ की क़ैद से आज़ाद होकर जब लोग दौलत कमाने लगते हैं, तो उन का यही दौलत कमाना माली बिगाड़ का सोत बन जाता है।

इस के बाद दूसरी हिदायत ख़र्च करने की है। जिस समाज में यह एहसास बाक़ी न रहे कि लोगों का लोगों पर क्या हक़ है, वहां क़ानून के ज़ोर पर चाहे जिस तरह भी बराबरी क़ायम करने का ढोंग रचाया जाए, माली मस्अले का सही हल मुम्किन नहीं। बनावटी बराबरी से मस्अले का हल करना ऐसा ही है जैसे बुख़ार के रोगी के शरीर को बर्फ़ से ठंडा करके यह समझ लेना कि इलाज हो गया। मस्अले का असल हल सिर्फ़ यह है कि ज़ेहनों की तर्बियत इस तरह की जाए कि हर आदमी के दिल में दूसरे के लिए मुहब्बत और हमदर्दी हो और कोई आदमी अपनी हमदर्दी और मुहब्बत का बदला पाने के लिए दूसरों से कोई उम्मीद न लगाए। हर शख़्स दूसरों के लिए जो कुछ कर सकता है, ज़रूर करे, बे-ग़रज़ होकर करे और बदले के लिए सिर्फ़ ख़ुदा से उम्मीद लगाए। जिस समाज में ज़ेहन इस तरह तर्बियत पाते हैं, वहां माली मस्अला इस तरह हल हो जाता है कि समाज में मदद करने वाले मौजूद होते है, लेकिन इस मदद से फ़ायदा उठाने वाले बाक़ी नहीं रहते।

भाइयो! इस्लाम की नज़र में इस मस्अले का हल यही है कि लोग सिर्फ़ जायज़ तरीक़ों से कमाएं और जो कुछ कमाएं, उसे अपनी जायज़ ज़रूरतों के अलावा फ़िज़ूलख़र्ची और ऐयाशी में उड़ाने के बदले उन लोगों

की हमदर्दी में खर्च करें, जो किसी वजह से इस क़ाबिल नहीं हैं कि अपनी ज़रूरतें खुद पूरी कर लें और इस काम के लिए उन के अन्दर तैयारी और हौसला पैदा करने की वजह सिर्फ़ वह हो, जिस का ज़िक्र दूसरे मौक़े पर अल्लाह तआला ने इन लफ़्ज़ों में फ़रमाया है—

وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا

वल्लाहु यअ़िदुकुम मग़्फ़ि-र तम मिन्हु व फ़ज़्ला०

यानी अल्लाह तुम से इस बात का वायदा फ़रमाता है कि अगर तुम ने अपने नफ़्स की ख्वाहिशों को रोक कर और अपनी ज़रूरतों को थोड़ी कर के अल्लाह की दी हुई रोज़ी का इस्तेमाल इस तरह किया, जिस तरह वह हुक्म दे रहा है, तो तुम्हें इस के बदले वह नेमत मिलेगी, जो हर नेमत से ज़्यादा क़ीमती है, यानी यह कि अल्लाह तुम्हारी कोताहियों से नज़रें चुरा लेगा और तुम्हें अपनी नवाज़िशों से मालामाल कर देगा, इस दुनिया की ज़िंदगी में भी और उस ज़िंदगी में भी, जहां उस की मेहरबानी के सिवा कोई दूसरी दौलत काम दे ही नहीं सकती।

अज़ीज़ो और दोस्तो ! सोचने का यही ढंग असल में मस्अले का सही हल है, लेकिन इस ज़िंदगी में उस के सब को पहुंचने वाले फ़ायदे उसी वक़्त सामने आ सकते हैं, जब सब मिल-जुल कर उसे अपनाएं, अल-बत्ता अलग-अलग एक-एक आदमी, जो उसे अपनाएगा, वह यक़ीनी तौर पर आख़िरत में अल्लाह की बेहतरीन नेमतों का हक़दार होगा और उस की ज़िंदगी में दिल का वह इत्मीनान और सुकून पाएगा, जो दौलत की किसी भी मिक़दार से किसी तरह हासिल हो ही नहीं सकता। بَارَكَ اللّٰهُ لِيْ وَلَكُمْ

فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ، وَنَفَعَنِيْ وَاِيَّاكُمْ بِالْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔

बारकल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरआनिल अज़ीम व न-फ़-अनी व ईयाकुम बिल आयाति वज़्ज़िक्रिल हकीम०

# इज़्ज़त का मेयार

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ
لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَىْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ۔ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ
اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا
وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ۔ سُبْحٰنَهٗ وَتَعَالٰى عَمَّا يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ
عُلُوًّا كَبِيْرًا ۔ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا ۔

اَمَّا بَعْدُ ۔ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۔ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَاللّٰهُ
يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۔ وَقَالَ تَعَالٰى وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا
اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ۭ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۔

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल अर्ज़ि व लम यत्तख़िज़ व-ल-दंव-व लम यकुल्लहू शरीकुन फ़िल मुल्कि व ख़-ल-क़ कुल-ल शैइन फ़ क़द-द-रहू तक़्दीरा० वत्तख़ज़ू मिन दूनिही आलिहतल्ला यख़्लु क़ू-न शैअंव-व हुम युख़्लकून व ला यम्लिकू-न लि अन्फ़ुसिहिम ज़र्रं व-व ला नफ़-अंव-व ला यम्लिकून मौतवं-व ला हयातंव-व ला नुशूरा० सुब्हा-नहू व तआला अम्मा यक़ूलुज़्ज़ालिमू-न अुलूवन कबीरा० अश्हदु अल्ला-इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़ अअूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम० ज़ुय्यि-न लिल्ल-ज़ी-न क-फ़-रुल हयातुद्दुन्या व यस्ख़रू-न मिनल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ीनत्तक़ौ फ़ौक़हुम यौमल क़ियामति वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशाउ बिग़ैरि हिसाब० व क़ा-ल तआला व कज़ालि-क फ़तन्ना बअ्-ज़हुम बिबअ्ज़िल्लि यक़ूलू अ हाउलाइ मन्नल्लाहु अलैहिम मिम बैनना अलैसल्लाहु बिअअ्-ल-म बिश्शाकिरीन०

भाइयो और अज़ीज़ो ! ईमान एक छिपी हुई चीज़ है, इसका सही-सही अन्दाज़ा आदमी को ख़ुद अपने बारे में भी नहीं हो पाता, अल-बत्ता कुछ निशानियां ऐसी हैं, जिन से यह मालूम हो जाता है कि किसी आदमी के अन्दर किस दर्जे का ईमान मौजूद है। इंसान के आमाल, उसकी दिल-चस्पियां, उस की भाग-दौड़ की शक्लें, उस के अख़्लाक़ व किरदार, ग़रज़ यह कि बहुत-सी चीज़ें ऐसी हैं, जिन से यह अन्दाज़ा हो जाता है कि दिल में ईमान की कैफ़ियत क्या है।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसी बहुत-सी बातों की तरफ़ इशारा फ़रमाया है, जिन से हमें अपने ईमान को नापने में मदद मिलती है। ऐसे ही पैमानों में से एक पैमाना यह है कि आप अपने दिल को टटोलें और यह देखें कि इस में किस क़िस्म के लोगों की इज़्ज़त और मुहब्बत ज़्यादा है।

भाइयो ! आज हम देखते हैं कि लोगों में इज़्ज़त का मेयार ओहदा और माल व दौलत बन गया है। बहुत से लोग हैं कि जो अपने अख़्लाक़ व किरदार में इंतिहाई गिरेहुए हैं, वे ख़ियानत करते हैं, झूठ बोलते हैं, दूसरों को झूठ बोलने पर मजबूर करते हैं, झूठ की पैरवी करते हैं, हराम और ना-जायज़ तरीक़ों से दौलत कमाते हैं, क़ानून और अख़्लाक़ की हदों को तोड़ते हैं, लेकिन इस के बावजूद उन की बड़ी इज़्ज़त की जाती है, हर मौक़े पर वे बुलाए जाते हैं, हर मज्लिस में उन्हें शरीक किया जाता है और हर जगह वे आगे-आगे नज़र आते हैं। इस के ख़िलाफ़ आप किसी इंतिहाई ईमानदार, अमानतदार और सच्चे कारोबारी के बारे में सोचिए, वह अपने अख़्लाक़ और आदतों में बेहतरीन आदमी है। वह गिरी हुई बातें नहीं करता, लेकिन चूंकि वह एक छोटा-सा दुकानदार या ग़रीब मज़दूर है, जिसके पास पैसा नहीं, कोठी, बंगला और मोटर नहीं, इसलिए वह किसी जगह नहीं पूछा जाता। लोगों की नज़रें उस पर नहीं पड़तीं, और उसे इज़्ज़त की वह जगह नहीं दी जाती, जिसका वह हक़दार है, यह खुली हुई निशानी है, इस बात की कि हमारे यहां इज़्ज़त का मेयार दौलत है, अख़्लाक़ और किरदार नहीं।

भाइयो ! यह बात इस्लाम के मिज़ाज और उस की तालीमात के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है—

مَنْ وَقَّرَ صَاحِبَ بِدْعَةٍ فَقَدْ أَعَانَ عَلَى هَدْمِ الْإِسْلَامِ

मन वक़्क़-र साहि-ब बिद अतिन फ़क़द अआ-न अला हद्मिल इस्लाम०

'जिस शख़्स ने किसी बिद्अती की इज़्ज़त की, उसने इस्लाम के ढाने में मदद की।'

बिद्अती उस शख़्स को कहते हैं, जिस ने इस्लाम के अन्दर कोई ऐसी नयी बात दाखिल कर दी हो जो इस्लाम से टकराती हो या उस से मेल न खाती हो।

एक और मौक़े पर हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया—

لَا تَقُولَنَّ لِلْمُنَافِقِ سَيِّدٌ فَإِنَّهُ إِنْ يَكُنْ فَقَدْ أَسْخَطْتُمْ رَبَّكُمْ

ला तक़ूलन-न लिल मुनाफ़िक़ि सय्यिदुन फ़इन्नहू इंय्यकुन फ़क़द अस्ख़त्तुम रब्बकुम०

'मुनाफ़िक़ को सरदार मत कहो, इस लिए कि अगर ऐसा हुआ तो तुम ने अपने रब को नाराज़ किया।'

मुनाफ़िक़ उस शख़्स को कहते हैं जो ज़ाहिर में तो मुसलमान बनता हो, लेकिन उसे इस्लाम की तालीमात के बारे में शक हो और जिस का अमल उस के क़ौल के मुताबिक़ न हो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐसे आदमी को अपना सरदार न बनाओ। ऐसा करोगे तो तुम ख़ुदा की नाराज़ी मोल लोगे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० का फ़रमान है कि शराब पीने वाले जब बीमार पड़ें तो उन को पूछने मत जाओ।

इन सब बातों से अन्दाज़ा होता है कि मोमिन की नज़र में इज़्ज़त और विक़ार का मेयार क्या होना चाहिए। इस एतबार से हमें हर वक़्त अपना जायज़ा लेते रहना चाहिए। अगर ख़ुदा से फिरे हुए लोगों की इज़्ज़त और मुहब्बत दिल में बैठने लगे, तो फिर ऐसे दिल में अल्लाह की बड़ाई और उस के नेक बंदों की मुहब्बत के लिए कम ही जगह बाक़ी रह जाती है। मोमिन की नज़र में वह ग़रीब और बे-दौलत आदमी, जिसे ईमान की दौलत मिल गयी हो, ख़ुदा से फिरे हुए हर उस वज़ीर, लीडर और दौलतमंद से कहीं बढ़ कर है, जिन्हें लोग इज़्ज़त की जगह देते हैं और उन की बड़ाई और सरदारी के आगे झुकते हैं।

मोमिन की यह ख़ूबी जिसकी ऊपर ओर इशारा किया गया है, बिल्कुल

एक फ़ितरी तक़ाज़ा है। इंसान उसी चीज़ की बड़ाई को मानता है, जिसे वह खुद पसन्द करता हो या जिस जगह तक जाने को वह खुद अपने लिए पसन्द करे। खुदा से ग़ाफ़िल, दौलत के नशे में मस्त और अख्लाक़ व किर-दार से महरूम लोग कभी मोमिन की नज़र में प्यारे नहीं बन सकते। मोमिन न उन को बड़ा मानता है और न उनकी बड़ाई तस्लीम करता है। अल्लाह की नज़र में बुज़ुर्गी का मेयार तक़्वा और नेकी है। ठीक यही मेयार मोमिन के लिए भी दुरुस्त है, उसकी नज़र में भी जो आदमी जितना ज़्यादा नेक, खुदा का फ़रमांबरदार और उस के दीन पर चलने वाला है, उतना ही वह उसे अज़ीज़ है। हमारे लिए ज़रूरी है कि हम आपस में मुह-ब्बत और बड़ाई के लिए उस मेयार को सामने रखें, दुनिया के फ़ायदों या अंदेशों को सामने रख कर लोगों की बड़ाई करना मोमिन का काम नहीं।

हदीस शरीफ़ में आया है कि एक बार नबी सल्ल० अपने कुछ साथियों के साथ तशरीफ़ रखते थे कि सामने से एक आदमी गुज़रा। हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० से पूछा कि बताओ, उस आदमी के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ? लोगों ने कहा, हुज़ूर ! यह अपने क़बीले का एक बड़ा आदमी है। सब लोग इसकी इज्ज़त करते हैं। यह अगर कहीं शादी के लिए पैग़ाम दे, तो कोई इन्कार न करेगा और अगर किसी के हक़ में यह किसी से कोई सिफ़ारिश कर दे तो वह ज़रूर मान ली जाएगी, रद्द नहीं की जाएगी और अगर यह कोई बात कहे तो लोग बड़े ध्यान से इस की बातें सुनेंगे। लोग इस की बड़ी इज़्ज़त करते हैं।

थोड़ी ही देर के बाद एक दूसरे शख्स का गुज़र हुआ। नबी सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस के बारे में भी अपने साथियों से वही सवाल किया, जो इस से पहले किया था। लोगों ने बताया कि यह एक ग़रीब मुसलमान है। इस के पास पल्ले कुछ है नहीं। अगर यह कहीं शादी का पयाम दे, तो कोई मंज़ूर न करेगा, किसी की सिफ़ारिश करे तो कोई कान न धरेगा और कोई बात कहे तो कोई ध्यान न देगा ! ग़रज़ यह कि लोगों की नज़र में इस की कोई जगह नहीं। सहाबा रज़ि० की ये बातें सुन कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, 'लोगो ! तुम्हारी नज़र हक़ीक़त पर नहीं है—

هٰذَا خَيْرٌ مِّنْ مِّلْءِ الْأَرْضِ مِثْلَ هٰذَا۔

हाज़ा खैरुम मिन मिल इल अर्ज़ि मिस-ल हाज़ा०

'तुमने पहले जो आदमी देखा, अगर सारी ज़मीन पर उसी जैसे आदमी आबाद हों तो वे सब मिल कर भी उस एक मोमिन भाई के बराबर नहीं हो सकते। उस की बड़ाई और रुत्बा बहुत ऊंचा है।

भाइयो! यह एक खुला हुआ पैमाना है, जिस से हम लोगों के रुत्बे को बहुत आसानी के साथ नाप सकते हैं। इस्लाम की नज़र में यही पैमाना ठीक है और मोमिन को इसी पैमाने से काम लेना चाहिए—

وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ۔ اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ وَاسْتَغْفِرُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ۔

व लिल्लाहिल इज़्ज़तु व लिरसूलिही व लिल मुअ् मिनी-न व लाकिन्नल मुनाफ़िक़ी-न ला यअ्लमून० अक़ूलु क़ौली हाजा व अस्तग़्फ़िरुल्लाह ली व लकुम व लि साइरिल मुस्लिमी-न वस्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

---

# जुमा की नमाज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ وَاَشْكُرُهٗ
وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۔ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ۔ اَرْسَلَهُ اللّٰهُ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ ۔ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ
تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا ۔

अल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन॰ अर्रहमानिर्रहीम॰ मालिकि यौमिद्दीन॰ इय्याकनअबुदु व इय्याकनस्तअीन॰ इह्दिनस्सिरातल मुस्त-क़ीम॰ अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबी यना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अर्स-ल हुल्लाहु बिल हुदा व दीनिल हक़्क़ि लि युज़्हि-र-हू अलद्दीनि कुल्लिही॰

अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिन व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरा॰

अज़ीज़ो ! अल्लाह तआला की बड़ी मेहरबानी है कि उसने हमारे लिए दीन को मुकम्मल कर दिया। अपना रसूल भेज कर हम पर अपनी नेमतों की इंतिहा कर दी और हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमायी कि हमने उसका दीन इस्लाम क़ुबूल किया। अल्लाह तआला की सबसे बड़ी नेमत और उस का सब से बड़ा करम यही है कि वह किसी बंदे को हिदायत क़ुबूल करने की सआदत अता फ़रमाए। अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है कि हम सब मुसलमान हैं और उस के हबीब की उम्मत में हैं।

भाइयो ! अल्लाह तआला ने हमारे ही फ़ायदे के लिए और हमारी दुनिया और आख़िरत की ज़िंदगी को कामियाब बनाने के लिए हमें बहुत-से हुक्मों का पाबंद फ़रमाया है। उसने हम पर कितनी ही चीज़ें फ़र्ज़ की हैं और कितने ही कामों से रोका है। आप सब जानते हैं कि ईमान लाने के

बाद सब से अहम फ़र्ज़, जो एक मुसलमान के ज़िम्मे है, वह नमाज़ अदा करना है। अल्लाह तआला ने हमें पांच वक़्त नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया है। नमाज़ इस्लाम के अर्कान में सब से अहम रुक्न है। जो शख़्स नमाज़ क़ायम नहीं कर सकता, समझो वह दीन पर भी क़ायम नहीं रह सकता। जो कोई नमाज़ न पढ़े, उस शख़्स का न दीन सही है और न इस्लाम दुरुस्त। नमाज़ों में जुमा की नमाज़ की भी बड़ी अहमियत है। अल्लाह तआला ने हमें हुक्म दिया है कि जब जुमा की नमाज़ के लिए पुकारा जाए तो हम अपने सारे कारोबार बन्द करके नमाज़ की तरफ़ लपकें। जुमा की नमाज़ के वक़्त किसी मुसलमान के लिए जायज़ नहीं है कि वह दुनिया के किसी भी काम में लगा रहे। अल्लाह तआला का इर्शाद है—

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ
وَذَرُوا الْبَيْعَ ۔ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۔ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ
فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ○

या ऐयुहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नूदि-य लिस्सलाति मिय्यौमिल जुमुअ़ति फ़स् औ इला ज़िक्रिल्लाहि व ज़रुल बै-अ ज़ालिकुम ख़ैरुल्लकुम इन कुन्तुम तअ़्ल-मून० फ़-इज़ा क़ुज़ियतिस्सलातु फ़न्तशिरू फ़िल अर्ज़ि व-ब्तग़ू मिन फ़ज़्लिल्लाहि वज़्कुरुल्ला-ह कसीरल्लअ़ल्लकुम तुफ़्लिहून०

'मुसलमानो ! जब जुमा के दिन नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए, तो ख़ुदा की याद (यानी नमाज़) की तरफ़ दौड़ पड़ो और ख़रीदना-बेचना बन्द कर दो। अगर तुम समझो तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। फिर जब नमाज़ हो चुके, तो अपने-अपने कारोबार में लग जाओ और ख़ुदा की मेहरबानी खोजो, और ख़ुदा को ज़्यादा से ज़्यादा याद करते रहो ताकि तुम्हें कामियाबी नसीब हो।'

अज़ीज़ो ! इन आयतों में यों तो जुमे की नमाज़ का ज़िक्र है, लेकिन उन से यह मालूम होता है कि मोमिन के लिए अल्लाह तआला के हुक्मों की क्या अहमियत है। इस से हमें मालूम होता है कि जब मोमिन को अल्लाह के किसी हुक्म की तरफ़ बुलाया जाए, तो फिर उसके लिए जायज़ नहीं है कि वह उस के सिवा दूसरे धंधों में फंसा रहे। इस्लाम का मतलब है गरदन रख देना। एक मुस्लिम की हैसियत इस के सिवा कुछ है ही नहीं

कि वह हरहाल में अल्लाह का बंदा है, उस के हुक्मों का मानने वाला है और अल्लाह के हुक्मों के मुक़ाबले में कोई दूसरा तक़ाज़ा ऐसा मुम्किन ही नहीं, जो उसे अल्लाह की इताअत से रोक सके। ज़ाहिर में माली नुक़सान हो या किसी दूसरे का दबाव, मोमिन किसी हाल में जान-बूझ कर अल्लाह की ना-फ़रमानी नहीं कर सकता।

भाइयो ! आप का अक़ीदा है कि हर क़िस्म का नफ़ा और नुक़सान सिर्फ़ अल्लाह के हाथ में है, फिर यह कैसे मुम्किन है कि आप किसी नुक़सान के डर या किसी नफ़ा के लालच में कोई ऐसा काम करने लगें, जिस से अल्लाह की नाफ़रमानी होती हो।

भाइयो ! यह दुनिया इम्तिहान की जगह है। यहां हर लम्हा हमारी और आपकी जांच हो रही है। हो सकता है कि कभी ऊपरी हालात के तहत हमें अल्लाह के किसी हुक्म के मानने में किसी बड़े नुक़सान का डर हो, लेकिन मोमिन इतना तंगनज़र नहीं होता। इसकी नज़र फ़ौरन मिलने वाले नफ़ा और नुक़सान तक महदूद नहीं होती। उस की नज़रें तो उस की दुनिया की ज़िंदगी के उस पार तक जाती हैं। उस की नज़र में तो नफ़ा और नुक़सान के पैमाने ही दूसरे होते हैं। वक़्त आ जाए तो मोमिन अपना सब कुछ लुटा कर भी अपने आप को कामियाब समझता है। हद यह है कि जान दे देना उस की नज़र में ज़िंदा रहने से भी ज़्यादा प्यारा हो जाता है।

दूसरी बात इन आयतों से यह मालूम होती है कि मोमिन के नज़दीक अल्लाह को याद करने का मतलब यह नहीं है कि वह दुनिया के कारोबार से अलग होकर किसी कोने में जा बैठे, बल्कि इस के खिलाफ़ वह अल्लाहके फ़ज़्ल की खोज में इधर-उधर जाता है, जायज़ तरीक़े पर रोज़ी हासिल करने की कोशिश करता है, लेकिन इस हाल में भी वह अल्लाह को याद रखता है, रोज़ी को अपने बाहुबल का फल नहीं समझता, बल्कि उसे अल्लाह की मेहरबानी जानता है, उस के हाथ-पैर कारोबार के धंधों में लगे रहते हैं, लेकिन उस का दिल ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल नहीं होता। वह हर क़दम पर यह ध्यान रखता है कि कहीं कोई क़दम मालिक की मर्ज़ी के खिलाफ़ न उठ जाए, जायज़ और नाजायज़, हलाल और हराम हर वक़्त उस की नज़र के सामने रहते हैं।

मुसलमान भाइयो ! जुमा की नमाज़ हर अक़्ल वाले और बालिग़ मर्द पर वाजिब है। ख़ुत्बे का सुनना भी वाजिब है। ख़ुत्बे के वक़्त बिल्कुल

ख़ामोश रहना चाहिए और जो कुछ कहा जाए, उसे ग़ौर से सुनना चाहिए। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है, 'अगर तुमने जुमा के ख़ुत्बे के वक़्त ज़ुबान से किसी से यह भी कहा कि, 'चुप रहो, तो तुमने ग़लत काम किया।'

जुमा की नमाज़ की तरह जुमा के ख़ुत्बे को ख़ामोशी के साथ सुनने की भी बड़ी ताकीद आयी है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स सुस्ती और लापरवाही की वजह से तीन जुमे छोड़ दे, तो उस के दिल पर अल्लाह तआला मुहर कर देता है यानी फिर उसके लिए नेकी और भलाई की राह पर आना बड़ा मुश्किल हो जाता है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी इर्शाद फ़रमाया है कि जुमा में तीन क़िस्म के लोग आते हैं। कोई तो आकर फ़िज़ूल बातों और ग़लत कामों में लग जाता है। ऐसा शख़्स वही पाता है, जो वह करता है। कोई इस लिए आता है कि यहां आकर वह अल्लाह से अपनी कोई हाजत तलब करे। वह आकर अल्लाह से दुआएं मांगता है। अब अगर अल्लाह चाहता है तो उस की दुआ क़ुबूल फ़रमा लेता है और चाहता है तो क़ुबूल नहीं फ़रमाता। कोई इस हाल में आता है कि वह आकर निहायत ख़ामोशी और चुपके से (अल्लाह की याद में लगा रहता है) वह मुसलमानों की गरदनों पर से फलांग-फलांग कर नहीं आता और न किसी को तक्लीफ़ पहुंचाता है, तो ऐसे शख़्स के लिए उस का इस तरह आना अगले जुमा और तीन दिन तक के लिए गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है, यानी आगे दस दिन तक उस से जो कोताहियां होती हैं अल्लाह तआला अपनी मेहरबानी से इन कोताहियों को माफ़ कर देता है। فَاتَّقُوا اللّٰهَ - عِبَادَ اللّٰهِ -

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ

फ़त्तक़ुल्लाह अिबादल्लाह व सारिअू इला मग़्फ़ि-र-तिम मिर्रब्बिकुम व जन्नतिन अर्ज़ुहस्समावातु वल अर्ज़ु उअि द्दत लिल मुत्तक़ीन०

# रमज़ान न० १

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَصَّ بِالْفَضْلِ وَالتَّشْرِیْفِ بَعْضَ مَخْلُوْقَاتِهٖ
فَجَعَلَ شَهْرَ رَمَضَانَ اَفْضَلَ شُهُوْرِ الْعَامِ وَاَوْجَبَ صِیَامَهٗ وَحَثَّ فِیْهِ عَلَی
الطَّاعَاتِ۔

اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ۔ مَا اَعْظَمَ شَانَهٗ۔ وَهُوَ الْمَحْمُوْدُ عَلٰی كُلِّ حَالٍ۔ وَاَشْهَدُ
اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ۔ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ الْعَزِیْزُ الْغَفَّارُ۔ وَاَشْهَدُ
اَنَّ نَبِیَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ اَلْهَادِیْ اِلٰی سَبِیْلِ الرَّشَادِ۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهِ الْبَرَرَةِ الْاَخْیَارِ۔
وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا كَثِیْرًا۔

اَمَّا بَعْدُ۔ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ۔ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْٓ اُنْزِلَ فِیْهِ
الْقُرْاٰنُ۔ هُدًی لِّلنَّاسِ وَبَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰی وَالْفُرْقَانِ۔ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ
فَلْیَصُمْهُ۔

अल हम्दु लिल्लाहि अल हम्दु-लिल्लाहिल्ल-ज़ी खस-म बिल फ़ज़्लि वत्तशरीफ़ि बअ्-ज़ मख़्लू क़ातिही फ़ ज-अ-ल शह्-र र-म-ज़ा-न अफ्ज़-ल शहूरिल आमि व औ-ज-ब सिया-मह् व हस-स फ़ीहि अलत्ताआति०

अह्मदुहू सुब्हा नहू मा अअ्-ज़-म शानहू व हुवल मह्मूदु अला कुल्लि हाल व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू अल-मलिकुल क़ुद्दू सुल अज़ीज़ुल ग़फ़्फ़ार व अश्हदु अन-न नबी-य-ना मुहम्मदन अब्दु हू व रसूलु हू अल-हादी इला सबीलिर्र शाद०

अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिहिल ब-र-र तिल अख्यारि व सल्लिम तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़ अअूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम शह्रु र-म-ज़ा नल्लज़ी उन्ज़ि-ल फ़ीहिल क़ुरआनु हुदल्लिन्नासि० बय्यिनातिम मिनल हुदा वल फ़ुर्क़ान फ़ मन शहि-द मिन्कुमुश्शह्र फ़लयसुम्हु०

दीनी भाइयो ! अल्लाह की रहमतों और बरकतों का मौसम क़रीब है, बल्कि कहना चाहिए कि आ ही पहुंचा है। आम लोगों की नज़र में रमज़ानुल मुबारक और साल के बाक़ी ग्यारह महीनों में कोई ख़ास फ़र्क़ न हो तो न हो और वह उसके रात व दिन को भी आम दिनों की तरह ही समझते हों तो समझें, लेकिन अल्लाह और उस के रसूल के नज़दीक रमज़ान और दूसरे महीनों में बहुत बड़ा फ़र्क़ है। अगर इस फ़र्क़ की हक़ीक़त हमें मालूम हो जाए तो हम यक़ीनी तौर पर इन दिनों के आने पर बड़ी ख़ुशियां मनाएं और अपने आप को बड़ा ख़ुशनसीब समझें कि अल्लाह तआला ने हमें फिर एक बार इस रहमत और बरकत के मौसम से फ़ायदा उठाने का मौक़ा दिया।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमज़ानुल मुबारक का बड़े शौक़ के साथ इन्तिज़ार फ़रमाया करते थे। जब आप रजब और शाबान का चांद देखते तो दुआ फ़रमाते कि, 'ऐ अल्लाह ! हमें रमज़ान तक पहुंचा दे।' जब रमज़ान मुबारक बिल्कुल क़रीब आ जाता तो आप रमज़ान की फ़ज़ीलतों और बरकतों से भरे हुए ख़ुत्बे देते और सहाबा किराम को रमज़ान की बरकतों से पूरा-पूरा फ़ायदा उठाने को तैयार करते। हुज़ूर सल्ल० के कुछ ख़ुत्बे हदीस की किताबों में महफ़ूज़ हैं और अल्लाह का फ़ज़्ल है कि हम उन से फ़ायदा उठा सकते हैं। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार शाबान की आख़िरी तारीख़ में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुत्बा दिया और इर्शाद फ़रमाया—

'ऐ लोगो ! एक बड़ी अज़मतों और बरकतों वाला महीना तुम पर अपना साया करने वाला है। इस मुबारक महीने की एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है।'

हुज़ूर सल्ल० के इन लफ़्ज़ों से अन्दाज़ा होता है कि रमज़ान का महीना मोमिन की नज़र में कितनी बुज़ुर्गी और बड़ाई का महीना है और शबे क़द्र जिसे क़ुरआन में भी हज़ार महीनों से बेहतर कहा गया है, इसी महीने में होती है, इस के बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया—

अल्लाह तआला ने इस पूरे महीने के रोज़े फ़र्ज़ किए है और इसकी रातों की नमाज़ यानी तरावीह को बड़े सवाब का काम क़रार दिया है। जो शख़्स इस महीने में कोई सुन्नत या नफ़्ल इबादत करता है तो उस को दूसरे ज़माने की फ़र्ज़ इबादतों के बराबर सवाब मिलता है और जो शख़्स इस महीने में फ़र्ज़ इबादत अदा करता है तो दूसरे महीनों के सत्तर फ़र्ज़ों

के बराबर सवाब मिलता है।

भाइयो! हुज़ूर सल्ल० के ये लफ़्ज़ हमारे लिए बड़े ही अहम हैं। इन में हमारे लिए बड़ी खुशखबरी है। अगर हमें आखिरत के अज्र व सवाब का यक़ीन है, अगर हम आखिरत के लिए ज्यादा से ज्यादा पूंजी जमा करने की कोशिश में लगे हुए हैं, तो हमारे लिए यह खुशखबरी बड़ी ही अहम है, जिस तरह एक लालची कारोबारी नफ़ा कमाने के मौसम में अपनी तमाम पूंजी व्यापार में झोंक देता है और पाई-पाई से खाली हाथ होकर और अपनी बहुत-सी ज़रूरतों को रोक कर अपना सब कुछ कारो-बार में लगा देता है, इसी तरह हर मोमिन इस खुशखबरी को सुन कर कोशिश करेगा कि जहां तक हो सके, इस मौक़े से फ़ायदा उठाए और इस वक़्त का कोई एक लम्हा भी ऐसा न गुज़रने दे, जिस में वह कोई न कोई काम अल्लाह की खुशी का न करे। हमारे लिए यह अल्लाह की खास रहमत का मौसम है। अगर हम इस से फ़ायदा उठाने के लिए कमर कस लें तो अल्लाह के फ़ज़्ल से उम्मीद है कि हम आखिरत के लिए बहुत कुछ जमा कर सकते हैं।

इस के बाद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—

'रमज़ान का यह महीना सब्र का महीना है और सब्र का बदला जन्नत है जो हमदर्दी दिखाने और एक दूसरे का ग़म बटाने का महीना है और वह महीना है, जिस में ईमान वालों की नेकियों का बदला और उन की रोज़ी बढ़ा दी जाती है।'

इस महीने में जो शख्स किसी रोज़ेदार को इफ़्तार कराए, तो यह उस के लिए गुनाहों की माफ़ी का और दोज़ख की आग से छुटकारा पाने का ज़रिया होगा और उस को उस रोज़ेदार के बराबर सवाब मिलेगा, बग़ैर इस के कि उस रोज़ेदार के सवाब में कोई कमी की जाए।

'यह वह महीना है कि इस का पहला हिस्सा रहमत का है, बीच का हिस्सा मग़्फ़िरत का है और आखिरी हिस्सा दोज़ख से छुटकारा पाने का है।'

हुज़ूर सल्ल० के इन लफ़्ज़ों से यह अन्दाज़ा होता है कि रमज़ानुल मुबारक में खास तौर पर मोमिन का क्या रवैया होना चाहिए।

पहली बात जिसकी ताकीद दी गयी है, वह सब्र है और हम जानते हैं कि सब्र दीन की रूह है। दीन की राह पर क़ायम रहने और ज़िन्दगी में

दीन के तक़ाज़े पूरे करने के लिए सब से बड़ी ताक़त सब्र है। रमज़ान का महीना इस ताक़त को हासिल करने के लिए बेहतरीन ज़माना है। जो कोई इस महीने में इस ख़ूबी को अपने अन्दर बढ़ाएगा, वह यक़ीनी तौर पर सख़्त से सख़्त हालात में भी दीन के तक़ाज़े पूरे कर सकेगा और अल्लाह की बतायी हुई राह पर चलने में जो मुसीबतें आएंगी, उन्हें झेल सकेगा और ज़ाहिर है कि ऐसे शख़्स के लिए अल्लाह तआला ने आख़िरत में जन्नत तैयार कर रखी है।

भाइयो! रमज़ान का महीना आपस के ताल्लुक़ात को बेहतर से बेहतर बनाने के लिए और एक-दूसरे के दुख-दर्द में शरीक होने के लिए बेहतरीन वक़्त है, इस मौक़े से फ़ायदा उठाना चाहिए। अल्लाह तआला की रहमतों का हक़दार बनने के लिए और उस के अज़ाब से निजात पाने की कोशिश करने के लिए यह वक़्त बड़ा क़ीमती है, इस के एक-एक लम्हे को अपने लिए मुफ़ीद बनाना चाहिए। इस ज़माने में अपने तमाम गुनाहों की माफ़ी मांगिए और आगे के लिए उस की मर्ज़ी की राह पर चलने का फ़ैसला कीजिए। अल्लाह के अज़ाब से निजात हासिल करने के लिए यही एक बेहतर शक्ल है।

अज़ीज़ो! यह है रहमत और बरकत का वह महीना, जो जल्द ही शुरू होने वाला है। बड़े ख़ुश क़िस्मत हैं वे लोग, जो इस वक़्त को अपनी ज़िंदगी का रुख मोड़ने के लिए काम में लाएं, जो इस ज़माने में अल्लाह की रहमतों के हक़दार बन जाएं और जो इन दिनों में अल्लाह के अज़ाब से निजात पाने का कोई सामान कर लें, बड़ी ख़ुशक़िस्मती है कि अल्लाह ने हमें फिर एक बार इन बरकत वाले दिनों से फ़ायदा उठाने की मोहलत अता फ़रमायी। अल्लाह ही जानता है कि हम में कितने ऐसे होंगे जिन के लिए यह मोहलत आख़िरी मोहलत हो। हर शख़्स को सोचना चाहिए कि शायद उस के लिए यह आख़िरी मोहलत है। यह सोच कर इन दिनों से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाने की कोशिश कीजिए। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रमज़ान से मुताल्लिक़ एक दूसरे ख़ुत्बे में इर्शाद फ़रमाया है—

'तुम इस महीने में चार चीज़ों में ख़ास तौर से ज़्यादती करो—एक ला इला-ह की ज़्यादती, दूसरे इस्तग़फ़ार की ज़्यादती, तीसरे जन्नत के सवाल और चौथे दोज़ख़ से पनाह मांगने की।'

भाइयो! जिस आदमी की ज़िंदगी तौहीद पर बसर हो गयी,

जिसने ला इला-ह के तक़ाज़े पूरे कर दिए, जिसने अल्लाह तआला से अपनी कोताहियों को माफ़ करा लिया और जो इस सब के नतीजे में दोज़ख से बच गया और जन्नत में दाखिल हो गया, बस जानो वही कामियाब है।

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ فَاتَّقُوا اللّٰهَ - عِبَادَ اللّٰهِ - وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ - بَارَكَ اللّٰهُ لِيْ وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ ۝

फ़ मन ज़ुह्ज़ि-ह अनिन्नारि व उदखिलल जन्न-त फ़क़द फ़ाज़ फ़त्तक़ुल्ला-ह अिबादल्लाह वअ् बुदू रब्बकुम वफ़ अलुल ख़ै-र लअल्लकुम तुफ़्लिहून बा-र-कल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरआनिल अज़ीम०

---

# रमज़ान न० २

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَكْمَلَ الدِّيْنَ۔ وَاَتَمَّ عَلَيْنَا نِعْمَتَهٗ وَ رَضِىَ لَنَا الْاِسْلَامَ دِيْنًا۔ اَحْمَدُهٗ اَنْ جَعَلَنَا خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهٰى عَنِ الْمُنْكَرِ۔ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ۔ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ بَعَثَهُ اللّٰهُ رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا۔ اَمَّا بَعْدُ۔

अल हम्दु लिल्लाह अल अम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अक्म-लद्दी-न व अतम-म अलैना निअ् म तहू व रज़ि-य लनल इस्ला-म दीना० अह्मदुहू अन ज-अ-ल ना ख़ै-र उम्मतिन उख़्रिजत लिन्नासि तअ्मुरु बिल मअ्-रूफ़ि व तन्हा अनिल मुन्करि व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबी-य ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू० ब-अ-सहुल्लाहु रह्मतल्लिल आलमीन०

अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरा० अम्मा बअ्दु०

भाइयो ! अल्लाह का शुक्र है कि आप और मैं एक बड़े इज़्ज़तदार महीने में सांस ले रहे हैं, इसका एक-एक लम्हा ख़ैर व बरकत है। यह रोज़ों का महीना है, नमाज़ों का महीना है, अल्लाह के ज़िक्र का महीना है, गुनाहों से माफ़ी मांगने का महीना है। इस में जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं। इस महीने में जहां तक हो सके, ज़्यादा से ज़्यादा नमाज़, ज़िक्र और क़ुरआन की तिलावत में वक़्त लगाइए। लड़ाई-झगड़े और गुनाहों के काम से दूर रहिए। ग़रीबों, मिस्कीनों की मदद कीजिए, ज़रूरतमंदों और मुहताजों की देख-भाल कीजिए, अल्लाह की रहमतों से फ़ायदा उठाने का बेहतरीन वक़्त आप को मिल रहा है, इस से फ़ायदा उठाइए और अपने लिए ज़्यादा से ज़्यादा नेकियों की पूंजी जमा कर लीजिए।

दोस्तो। रोज़ा बड़ी अहम इबादत है। बंदा सिर्फ़ अपने मालिक के

हुक्म को पूरा करने और उसकी खुशी हासिल करने के लिए अपना खाना-पीना छोड़ देता है और अपनी बहुत-सी जायज़ ख्वाहिशों के पूरा करने पर भी पाबन्दी लगा लेता है। दिलों को बुराइयों से पाक करने के लिए बंदे का यह अमल बहुत ही फ़ायदेमंद है, इससे तक़्वा पैदा होता है, बंदे के दिल में अल्लाह की ना-खुशी से बचने और उस की ना-फ़रमानी से डरने का जज़्बा पैदा होता है और फिर वह जो कुछ करता या कहता है, इस से पहले यह सोच लेता है कि मेरे इस काम से कहीं मेरा मालिक नाखुश तो न होगा। यही वह ताक़त है, जो इंसान की तमाम सलाहियतों को बुराई के रास्तों में लगने से बचा कर भलाई के रास्तों में लगाती है। इसी की वजह से इंसान शैतान बनने से बच सकता है और इंसान बन सकता है।

भाइयो! यह महीना जिस तरह बदनी इबादतों के लिए खास है, इसी तरह माली इबादतों के लिए भी इस की बड़ी अहमियत है। फ़क़ीरों और मिस्कीनों की मदद, अज़ीज़ों-नातेदारों के साथ अच्छा सुलूक और उनके दुख-दर्द में शिर्कत, अल्लाह के दीन को ग़ालिब करने के लिए ज्यादा से ज्यादा माली क़ुर्बानी, ये सारे काम ऐसे हैं कि इस महीने में उनका अज्र व सवाब कितने ही गुना बढ़ जाता है, माल का खर्च करना दिल की पाकी हासिल करने के लिए बेहद फ़ायदेमंद है, दिल के अनगिनत रोग अल्लाह की राह में माल खर्च करने से दूर होते हैं।

ज़कात अदा करने के लिए भी यह वक़्त बेहतरीन वक़्त है। ज़कात इस्लाम का एक स्तून है और इस्लामी निज़ाम का बहुत ही अहम स्तून है। अल्लाह तआला ने इसे हर उस शख्स पर फ़र्ज़ किया है जो निसाब का मालिक हो।

अज़ीज़ो! माल खर्च करने के बारे में मोमिन की सोच आम दुनियादारों से बिल्कुल अलग होती है। दुनियादार समझता है कि अल्लाह की राह में माल खर्च करने से माल घटता है, लेकिन मोमिन यह जानता है कि अल्लाह की राह में खर्च करना ही असल में माल का बचा लेना है। एक हदीसे क़ुदसी है, अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है—

يَاابْنَ اٰدَمَ، اَنْفِقْ اُنْفِقْ عَلَيْكَ-

.यब-न आद-म अन्फ़िक़ उन्फ़िक़ अलैक०

'ऐ आदम की औलाद! तू मेरी राह में खर्च कर, तो मैं तेरे ऊपर खर्च करूं।'

जायज़ कमाई से हासिल किया हुआ माल जब अल्लाह की राह में खर्च किया जाता है, तो उससे मोमिन के लिए दुनिया और आख़िरत दोनों में भलाई के दरवाज़े खुल जाते हैं। यह बात अगरचे किसी माद्दापरस्त दुनियादार की समझ में नहीं आ सकती, लेकिन मोमिन का ईमान है और अनगिनत ईमान वालों का तजुर्बा।

भाइयो! दो चीज़ें ऐसी हैं, जो सदक़ा और खैरात को बर्बाद कर देती हैं और फिर माल खर्च करने वाले को कुछ हाथ नहीं आता—

१. पहली चीज़ रिया यानी दिखावा है। जो माल दिखावे और नाम के लिए खर्च किया जाएगा, उस का कोई फल नहीं मिलेगा और क़ियामत के दिन उस से कह दिया जाएगा कि तू ने नाम के लिए माल खर्च किया था, तो तेरा नाम हो गया और तुझे लोगों ने बड़ा सखी-दाता कह दिया।

२. दूसरी चीज़ किसी को कुछ देकर एहसान जताना है। अल्लाह तआला का इर्शाद है कि, 'ऐ ईमान वालो! तुम लोगों पर एहसान जता कर अपने सदक़ों को बर्बाद न करो।

मोमिन जब किसी के साथ एहसान करता है, तो सच तो यह है कि वह खुद अपने ऊपर एहसान करता है, क्योंकि इस से वह अपने लिए अल्लाह की रहमतें हासिल करता है।

भाइयो! इस मुबारक महीने की बड़ाइयां कोई कहां तक बयान करे। इस महीने में वह रात भी है जिसे अल्लाह तआला ने हज़ार महीनों से बेहतर बताया है। हदीस शरीफ़ में है कि यह रात रमज़ान की आख़िरी दहाई की ताक़ रातों में से कोई रात है। इसी महीने की आखिरी दहाई में एतकाफ़ किया जाता है। रमज़ान की नेमतों से मालामाल होने के लिए एतकाफ़ बड़ा ही अच्छा ज़रिया है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमेशा एतकाफ़ फ़रमाया है। ग़रज़ यह कि ये ऐसे दिन हैं कि उनमें एक मोमिन बन्दा, जितना चाहे, अपने लिए नेकियों की पूंजी जमा कर ले। जिस किसी ने इन दिनों को अच्छी तरह गुज़ारा, अल्लाह के ज़िक्र, नमाज़ और तिलावत से लगाव रखा, अल्लाह के दीन की सरबुलन्दी के लिए ज़्यादा से ज़्यादा जद्दोजेहद की, उसे अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए कि उसने बड़ी नेमत हासिल कर ली। और जो इन नेमतों से महरूम रह गया, समझो, वह बड़े ही टोटे में रहा।

हम में से कोई नहीं कह सकता कि वह यक़ीनी तौर पर अगले साल भी इस रहमत के महीने से फ़ायदा उठाने के लिए मौजूद रहेगा, इस लिए

जो वक़्त और जो मोहलत मिल जाए, उसे ग़नीमत जानना चाहिए और उस से पूरा-पूरा फ़ायदा उठाना चाहिए।

ऐ अल्लाह ! हमें तौफ़ीक़ दे कि हम इन बरकत वाले दिनों से पूरा-पूरा फ़ायदा उठाएं। तेरी रहमत और तेरी मग़फ़िरत की दौलत से माला-माल हो जाएं। ऐ अल्लाह! तू हमें दोज़ख़ से निजात अता फ़रमा। हमारी ख़ताओं को माफ़ कर दे और हमारी कोताहियों को अपनी रहमत से ढांक ले। सिर्फ़ तेरी रहमत ही हमारा सब से बड़ा सहारा है—

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاۤءِ وَالْاَرْضِ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝

بَارَكَ اللّٰهُ لِيْ وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ. وَنَفَعَنِيْ وَاِيَّاكُمْ بِمَا فِيْهِ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ

व सारिअू इला मग़्फ़ि-र-तिम मिर्रब्बिकुम व जन्नतिन अर्ज़ुहा क अर्ज़िस्समाइ वल अर्ज़ि उअिद्दत लिल मुत्तक़ीन०

बारकल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरआनिल अज़ीम० व न-फ़-अनी व इय्याकुम बिमा फ़ीहि मिनल आयाति वज़्ज़िक्रिल हकीम०

---

# रमज़ान न० ३

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَصَّ بِالْفَضْلِ وَالتَّشْرِیْفِ بَعْضَ مَخْلُوْقَاتِهٖ فَجَعَلَ شَهْرَ رَمَضَانَ اَفْضَلَ شُهُوْرِ الْعَامِ اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ وَهُوَ الْمَحْمُوْدُ عَلٰی كُلِّ حَالٍ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهِ الْبَرَرَةِ الْاَخْیَارِ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا كَثِیْرًا.

اَمَّا بَعْدُ۔ فَیَا اَیُّهَا النَّاسُ قَدْ اَظَلَّكُمْ۔ شَهْرٌ عَظِیْمٌ۔ شَهْرٌ مُّبَارَكٌ شَهْرٌ فِیْهِ لَیْلَةٌ خَیْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ جَعَلَ اللّٰهُ صِیَامَهٗ فَرِیْضَةً وَّ قِیَامَ لَیْلِهٖ تَطَوُّعًا۔ مَنْ تَقَرَّبَ فِیْهِ بِخَصْلَةٍ مِّنَ الْخَیْرِ كَانَ كَمَنْ اَدّٰی فَرِیْضَةً فِیْمَا سِوَاهُ وَمَنْ اَدّٰی فَرِیْضَةً فِیْهِ كَانَ كَمَنْ اَدّٰی سَبْعِیْنَ فَرِیْضَةً فِیْمَا سِوَاهُ۔ وَهُوَ شَهْرُ الصَّبْرِ۔ وَالصَّبْرُ ثَوَابُهُ الْجَنَّةُ۔ وَشَهْرُ الْمُوَاسَاةِ

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ख़स-स बिलफ़ज़्लि वत्तश्रीफ़ि बअ्-ज़ मख़्लूक़ातिही फ़-ज-अ-ल शह-र र-म-ज़ा-न अफ़्ज़-ल शुहूरिल आमि अह्म-दुहू सुब्हानहू वहुवल मह्मूदु अला कुल्लि हालिन व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव व अला आलिही व अस्हाबिहिल ब-र-र-तल अख़्यारि व सल्लिम तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़-या ऐ युहन्नासु क़द अज़ल्लकुम शह्रुन अज़ीम शह्रुम मुबारकुन शह्रुन फ़ीहि लैलतुन ख़ैरुम मिनअल्फ़ि शह्रिन ज-अ-लल्लाहु सियामहू फ़रीज तंव-व क़िया-म लैलिही ततव्वुअन मन त क़र्र-ब फ़ीहि बिख़स्लतिम मिनल ख़ैरि का-न क-मन अद्दा फ़रीज़तन फ़ीमा सिवाहु व मन अद्दा फ़रीज़तन फ़ीहि का-न क-मन अद्दा सब-ओ-न फ़रीज़तन फ़ीमा सिवाहु व हु-व शह्रुस्सब्रि वस्सब्रु सवाबु हुल जन्नतु व शह्रुल मुवासात०

बड़ी बरकत वाली है वह ज़ात, जिसने अपनी मख़्लूक़ात में से कुछ को कुछ पर बुज़ुर्गी बख़्शी, चुनांचे साल के तमाम महीनों में उसने रमज़ान के

महीने को बड़ाई दी। अल्लाह तआला के नज़दीक रमज़ान का महीना बड़ी बड़ाई और बरकत का महीना है। इसी महीने में अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक नाज़िल फ़रमाया, जो तमाम इंसानों के लिए सब से बड़ी नेमत है, फिर अल्लाह तआला ने इस महीने को अपनी एक खास इबादत रोज़े के लिए चुना। क़ुरआन पाक से और सही हदीसों से इस महीने की बड़ाई और बुज़ुर्गी साबित है। इस महीने में इबादतों का सवाब बढ़ जाता है। नफ़्लों का सवाब फ़र्ज़ों के बराबर और फ़र्ज़ों का सवाब सत्तर गुना तक ज़्यादा हो जाता है। यों समझना चाहिए कि एक मोमिन के लिए रमज़ान का महीना गोया नेकियां कमाने की फ़स्ल है। इस महीने में एक रात तो ऐसी है जिसे खुद अल्लाह तआला नें हज़ार रातों से बेहतर फ़रमाया है।

भाइयो! इन मुबारक दिनों के दोबारा मयस्सर आने पर हमें अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए। नेमतें उसी वक़्त भलाई की वजह बनती हैं, जब उन का सही शुक्र अदा किया जाए। रमज़ान मोमिन के लिए एक बहुत बड़ी नेमत है, हम पर उस का शुक्र वाजिब है और शुक्र की बेहतरीन शक्ल यही है कि हम इस नेमत का सही इस्तेमाल करें और उस के ज़रिए अपने रब की खुशी ज़्यादा से ज़्यादा हासिल करें। हर वह मोमिन जिसे अल्लाह तआला ने ज़िंदगी में फिर एक बार रमज़ान की नेमत से फ़ायदा उठाने की मोहलत अता फ़रमायी है, बड़ा ही खुशनसीब है कि उसे अपनी नेकियों के भंडार में बढ़ौत्तरी करने का मौक़ा फिर हाथ आ रहा है, इस मौक़े से वही लोग फ़ायदा उठा सकते हैं, जो एक तरफ़ तो दिल से इस नेमत की क़द्र पहचानें और दूसरी तरफ़ इससे फ़ायदा उठाने के लिए वे जो कुछ कर सकते हैं, उस में कोताही न करें।

भाइयो! आप जानते हैं कि अल्लाह की इबादत से वही लोग फ़ायदा उठाते हैं, जो ज़ेहन की यकसूई और पूरे शौक़ के साथ अल्लाह की इबादत करते हैं। रस्मी तौर पर कुछ अर्कान अदा कर लेने से मुम्किन है कि फ़र्ज़ अदा हो जाए लेकिन इबादत से जो फ़ायदे एक मोमिन को मिलना चाहिएं, उन के दरवाज़े उस वक़्त तक नहीं खुल सकते, जब तक यकसूई, ज़ौक़ व शौक़ और मुहब्बत के साथ कोई इबादत न की जाए। यह बात नमाज़ के बारे में भी सही है और ज़कात और हज के बारे में भी और यही बात रोज़े के बारे में भी सही है। रोज़ा रख लेना एक बात है, लेकिन उस से जो फ़ायदे हासिल होना चाहिएं, वे उस वक़्त तक हासिल नहीं हो

सकते, जब तक रोज़ा पूरे ज़ेहन, यकसूई और ज़ौक़ व शौक़ के साथ, उन तमाम पाबन्दियों का ख्याल रखते हुए न रखा जाए, जो रोज़े के सिलसिले में ज़रूरी हैं। अल्लाह का बेहद व हिसाब शुक्र है कि उसने हमें फिर यह नेमत अता फ़रमायी। यह हमारी बड़ी बद-क़िस्मती होगी कि अगर हम इस नेमत को पाकर खाली हाथ रह जाएं, हमें पूरी कोशिश करनी चाहिए कि हम इस मौक़े से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा हासिल कर सकें।

अज़ीज़ो! रमज़ान से फ़ायदा हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि हम अपनी ज़िंदगी का जायज़ा लें, अपने ईमान को ताज़ा करें और अपनी कोताहियों को खुद तंहाई में बैठ कर महसूस करें। इस जायज़े के नतीजे में हमारी ज़िंदगी के जो कमज़ोर पहलू सामने आएं, उन पर क़ाबू पाने का फ़ैसला करें, अपनी कोताहियों की माफ़ी चाहें, गुनाहों की माफ़ी चाहने के लिए रमज़ान से बेहतर कौन-सा ज़माना हो सकता है? यह मौक़ा इस बात के लिए सब से ज़्यादा मुनासिब है कि आदमी अपने पूरी रवैए को खुद कड़ी नज़र से देखे, हमारी कोताहियों को खुद हम से ज़्यादा कौन जान सकता है? इस मौक़े पर हम यह फ़ैसला कर सकते हैं कि हमें क्या तर्क करना है और क्या-क्या अख्तियार करना है। ज़िंदगियों को बदलने और एक ढर्रे पर गुज़रने वाली ज़िंदगी को किसी अच्छे सांचे में ढालने के लिए रमज़ान से बेहतर कोई दूसरा ज़माना नहीं हो सकता।

भाइयो! रमज़ान की बरकतों से फ़ायदा उठाने के लिए हर दिन सोच-समझ कर रोज़ा शुरू कीजिए और दिल में उस ज़ौक़ और शौक़ को पैदा करने की कोशिश कीजिए कि आप जो कुछ करने जा रहे हैं, उस से आप का आक़ा, और मालिक खुश होगा और हर आने वाला दिन आपके अन्दर मुहब्बत और शौक़ के जज़्बों को बढ़ाए। इस तरह के रोज़े जो भी मयस्सर आ जाएं, उन्हें बड़ी दौलत समझना चाहिए। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि—

مَنْ صَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَّاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ۔

मन सा-म र-म-ज़ा-न ईमानंव-व एह्तिसाबन गुफ़ि-र लहू मा तक़-द्द-म मिन ज़म्बिही०

यानी जो कोई खुलूसे ईमान के साथ अल्लाह तआला की खुश्नूदी हासिल करने के लिए उस के सवाब की आरज़ू में रोज़ा रखेगा, अल्लाह तआला उस के गुनाहों को माफ़ कर देगा। एक मोमिन बंदे के लिए इस से

बड़ी खुशखबरी और बशारत क्या हो सकती है कि उस का मालिक उस की कोताहियों पर दर गुज़र फ़रमाएगा।

भाइयो ! जो शख्स ईमान की ताज़गी और अल्लाह तआला की खुशी हासिल करने के लिए ज़ौक़ व शौक़ के साथ सोच-समझ कर रोज़ा रखेगा, मुम्किन नहीं कि उस का रोज़ा उस के कामों पर असर न डाले, उस की बात-चीत का रंग बदल जाएगा, उस के सुबह-शाम के प्रोग्रामों में फ़िज़ूल बातों और कामों के लिए कोई गुंजाइश न रह जाएगी और उसकी ज़ुबान ग़लत और बुरी बातों के लिए गूंगी हो जाएगी। रोज़े से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाने के लिए उस ज़माने में इबादतों की ज़्यादती का एहतिमाम कीजिए। इबादतों के सिलसिले में आप का जितना भी अमल रहा है, उसे ज़्यादा कर दीजिए। एक लोभी व्यापारी, जिसे ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा कमाने की धुन सवार होती है, उस ज़माने में अपनी पूंजी की एक-एक पाई अपने कारोबार में लगा देता है, जिस ज़माने में उसे नफ़ा कमाने की उम्मीद होती है। रमज़ान का महीना मोमिन के लिए बिल्कुल ऐसा ही है। इस ज़माने में वह थोड़ी इबादत कर के बहुत सवाब कमाता है, इस लिए वह इस बात का लोभी होता है कि जहां तक मुम्किन हो, उस वक़्त से फ़ायदा उठाए और नेकी के जितने काम कर सकता हो, इन दिनों में करे। यह ज़माना क़ुरआन की तिलावत, अल्लाह तआला के ज़िक्र व नफ़्लों की ज़्यादती, और दूसरी इबादतों के लिए बेहतरीन मौक़ा है, जहां तक मुम्किन हो सके, इस ज़माने में क़ुरआन के समझने और पढ़ने का ज़्यादा से ज़्यादा मौक़ा निकालिए, दूसरी नेकियों की तरह यह ज़माना अल्लाह की राह में अपना माल खर्च करने के लिए भी बेहतरीन ज़माना है। मिस्कीनों की खबरगीरी, पास-पड़ोस के ज़रूरतमंदों की देख-भाल, दीन की खिदमत के लिए अपने पैसों का खर्च, ग़रज़ यह कि अल्लाह की राह में अपना माल खर्च करने की जो भी ज़्यादा से ज़्यादा गुंजाइश हो सके, उससे फ़ायदा उठाइए, ज़कात के अदा करने के लिए भी ये दिन बहुत ही मुनासिब हैं। जब इस ज़माने में नेकियों का सवाब कितने ही गुना बढ़ा-चढ़ा कर मिलता है, तो क्यों न एक मोमिन इस ज़माने को अपनी नेकियों के लिए खास कर ले।

दोस्तो और अज़ीज़ो ! आज जिन हालात में हम ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, उसका यह पहलू हमारे लिए बड़ी तवज्जोह के क़ाबिल है कि अब हमारे माहौल से अल्लाह की इताअत और उस की इबादतों की तरफ़ ज़ौक़ व

शौक़ वाली बात गुम होती जा रही है। पुरानी कहावत है कि खरबूज़े को देख कर खरबूज़ा रंग पकड़ता है यानी माहौल का असर हर शख्स पर पड़ता है। एक ऐसा शख्स जो किसी दीनी माहौल में वक़्त गुज़ार रहा हो, उस के लिए दीन के तक़ाज़ों को छोड़ना कठिन हो जाता है। यही वजह है कि एक मोमिन अपने सुधार के साथ-साथ अपने माहौल के सुधारने को ज़रूरी समझता है। एक तो इस लिए ज़रूरी कि अल्लाह तआला की तरफ़ से उस पर यह ज़िम्मेदारी डाली गयी है और दूसरे इस लिए भी कि ख़ुद उस के दीनदार रहने के लिए दीनी माहौल मुनासिब होता है। इस बात की रोशनी में आप अपने माहौल से भी ग़ाफ़िल न रहें। जहां तक मुम्किन हो, कोशिश करें कि आप के आस-पास जो लोग हैं, इन मुबारक दिनों की क़द्र व क़ीमत पहचानें और अल्लाह की रहमतों से अपना दामन भरने में कोताही न करें, ख़ुद आप के घर वाले, आप के पड़ोसी, मुहल्लेदार, कारोबार के साथी, मिलने-जुलने वाले और साथ उठने-बैठने वाले सब आप की तवज्जोह के हक़दार हैं। इन में से जितनों को आप अपने सफ़र का साथी बनाने में कामियाब हो जाएंगे, उतना ही आप का सफ़र आप के लिए आसान साबित होगा।

भाइयो! बड़ी मुबारक हैं वे घड़ियां जो रमज़ान की शक्ल में हमें मिलीं, कोशिश कीजिए कि इन दिनों में आप अपने ख्याल के कुछ ऐसे लोग पैदा कर लें, जिनके साथ बैठ कर आप दीनी बातें करें, मिल-जुल कर कुछ पढ़ें, क़ुरआन पाक को समझें और समझाएं और हदीस की नेमतों से अपने को मालामाल करें। थोड़ी-सी तवज्जोह करने से ज़रूर आप कोई न कोई ऐसा वक़्त निकाल सकेंगे जो आप इस काम के लिए ख़ास कर सकें। आप महसूस करेंगे कि इस तरह की जो कोशिश भी आप करेंगे, वह आपके लिए ग़ैर-मामूली तौर पर नफ़ा देने वाली साबित होगी। ख़ुदा करे कि हमें इन मुबारक मौक़ों से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ मिल सके और हम अल्लाह तआला की इस नेमत से, जो हमें इन मुबारक दिनों की शक्ल में मिली है, ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा पा सकें।

وَفَّقَنَا اللّٰهُ وَاِيَّاكُمْ لِمَا يُحِبُّ وَيَرْضٰى-

वफ़्फ़क़नल्लाहु व इय्या कुम लिमा युहिब्बु व यर्ज़ा०

# रमज़ान न० ४

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مُعِزِّ مَنْ اَطَاعَهٗ وَاتَّقَاهُ وَمُذِلِّ مَنْ اَضَاعَ اَمْرَهٗ وَعَصَاهُ۔ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ۔ اَحْمَدُهٗ سُبْحَانَهٗ وَاَشْكُرُهٗ وَاَسْاَلُ الْمَزِيْدَ مِنْ فَضْلِهٖ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ بَعَثَهُ اللّٰهُ بِالْحَقِّ وَاَنْزَلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنَ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۝ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صَلٰوتِكَ وَرَحْمَتَكَ وَبَرَكَاتِكَ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَاِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ وَخَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّابْعَثْهُ مَقَامًا يَّغْبِطُهٗ بِهِ الْاَوَّلُوْنَ ۝

अल हम्दु लिल्लाहि मुअिज्ज़ि मन अता अहू व अस्क़ा हु व मुज़िल्लि मन अज़ा-अ अम्-रहू व असाहु व मंय्युहि निल्लाहु फ़मा लहू मुक्रिम अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अस्अलुल मज़ी-द मिन फ़ज़्लिही व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू ब-अ-सहुल्लाहु बिल हक़्क़ि व अन-ज़-ल अलैहिल क़ुरआन हुदल्लिन्नासि व बय्यिनातिम मिनल हुदा वल फ़ुर्क़ान० अल्लाहुम-मज-अल सलाति-क व रह्म-त-क व ब-र-काति-क अला सय्यि-दिल मुर्सलीन० इमामिल मुत्तक़ीन व खातमिन्नबीयीन अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिव-व अब असहु मक़ामंय्यग़िबतुहू बिहिल अव्वलून०

दोस्तो और अज़ीज़ो ! हर शख़्स बड़ा बनना चाहता है, कोई इसके लिए दौलत को सहारा बनाता है, कोई इक़्तिदार की तरफ़ लपकता है, कोई इल्म के ज़रिए बड़ाई हासिल करना चाहता है, कोई अपने नसब और खानदान को बड़ाई के लिए बुनियाद बनाता है, कोई चाहता है कि हमेशा याद रह जाने वाली कोई चीज़ ईजाद करे, कोई किसी कला (फ़न) में माहिर बन कर बड़ा बनना चाहता है। ग़रज़ यह कि इस एक ख्वाहिश को पूरा करने के लिए हज़ार यत्न हैं।

भाइयो ! बड़ा बनने की ये तमाम कोशिशें, जिस की अनगिनत शक्लें हमारे सामने आती हैं, हमें साफ़ बताती हैं कि जो लोग इस शौक़

का शिकार हैं, वे सब के सब इंसानों के सामने बड़ा बनना चाहते हैं, वे लोगों की नज़रों में अपनी जगह ऊंची बनाने की ख़्वाहिश रखते हैं। उन का मक़सद सिर्फ़ दूसरे लोगों पर अपनी धाक बिठाने में ज़्यादा और कुछ नहीं होता, लेकिन अज़ीज़ो! इंसानों की नज़रों से बड़ा बनना अपनी हक़ीक़त के एतबार से बिल्कुल बे-असल और बे-फ़ायदा कोशिश है। मोमिन की नज़र में इस बड़ाई की कोई हैसियत नहीं। वजह ज़ाहिर है, जो ज़िंदगी कुछ दिनों की हो, ख़त्म हो जाने वाली हो, और जिस के बाद एक दूसरी हमेशा रहने वाली ज़िंदगी से इंसान को वास्ता भी पड़ता हो, तो इसे कौन पसन्द करेगा कि उस की नज़र में सिर्फ़ कुछ दिन की ज़िंदगी की बड़ाई बाक़ी रहे। जो आदमी कुछ दिन के सफ़र पर कहीं गया हो, वह कैसे इस पर इत्मीनान कर सकता है कि उसे जो कुछ मिलना हो, वह सफ़र में उसे मिल जाए, लेकिन जब लौट कर घर आए तो उस के पल्ले कुछ न हो। हर अक़्लमंद यही चाहेगा कि उसे जो कुछ मिलना है, वह उसके वतन में मिले और अगर सफ़र में उसे कुछ हाथ आए तो वह वतन में मिलने वाली इज़्ज़त और हैसियत के अलावा हो, ऐसा न हो कि वतन में तो ज़िल्लत और बर्बादी से दो चार होना पड़े और सफ़र में घड़ी, दो घड़ी के लिए इज़्ज़त और दर्जा हासिल हो जाए।

दोस्तो ! यही वह बड़ा फ़र्क़ है, जो एक मोमिन और ग़ैर-मोमिन के नज़रिए में पाया जाता है। मोमिन सिर्फ़ उस बड़ाई को बड़ाई समझता है, जो अल्लाह के नज़दीक बड़ाई हो। इस बड़ाई के बग़ैर दुनिया के बड़े-से-बड़े दर्जे की भी कोई क़ीमत उस की नज़र में नहीं होती। मोमिन को तो जभी इत्मीनान हो सकता है, जब उस का हक़ीक़ी मालिक उसे नवाज़े, लेकिन अगर वह उस मालिक की नज़रों में गिर जाए तो फिर वह सारी दुनिया की बादशाही को भी पसन्द नहीं करता।

दोस्तो ! इस फ़र्क़ को सामने रख कर जब हम सोचते हैं तो हम तुरन्त ही इस नतीजे पर पहुंच जाते हैं कि वाक़ई बड़ा कौन है। आप सब जानते हैं कि अल्लाह के नज़दीक इंसान की बड़ाई का एक ही मेयार है और वह यह कि इंसान ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह की ख़ुशी हासिल करना चाहता हो, उसकी नाराज़ी से डरने वाला हो। अल्लाह तआला का इर्शाद है कि—

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ

इन-न अक-र-म-कुम अिन्दल्लाहि अत्क़ाकुम०

'अल्लाह के नज़दीक तुम में सब से बड़ा वह है, जो सब से ज़्यादा तक़्वे वाला है।'

यही तक़्वा असल में इंसान के दर्जे को बुलंद करता है, यही तक़्वा वह पैमाना है, जिस से इंसान की हक़ीक़ी बड़ाई नापी जा सकती है, जो जितना ज़्यादा मुत्तक़ी है, हक़ीक़त के एतबार से वह उतना ही बड़ा आदमी है। इस के अलावा बड़ाई की जो बुनियाद है, वह ग़लत है।

भाइयो! यह रमज़ान के मुबारक दिन हैं। इन दिनों में अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर रोज़ा फ़र्ज़ किया है और रोज़े के बारे में अल्लाह तआला का इर्शाद है—يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝

या ऐयुहल्लज़ी-न आ मनू कुति-ब अलैकुमुस्सियामु कमा कुति-ब अलल्लज़ी-न मिन क़ब्लिकुम लअल्ल कुम तत्तक़ून०

'मुसलमानो! जैसे तुम से पहले लोगों के लिए रोज़ा फ़र्ज़ किया गया था, ऐसे ही तुम पर भी रोज़ा फ़र्ज़ किया गया है, ताकि तुम मुत्तक़ी बन सकों।'

इस एतबार से इन दिनों की अहमियत का अन्दाज़ा आप ख़ुद लगा सकते हैं। ये वह मुबारक दिन हैं, जिन में इस बात का ज़्यादा से ज़्यादा मौक़ा हमें हासिल है कि अगर हम चाहें तो तक़्वा की ज़िंदगी अख़्तियार करें, इस तरह अपने आक़ा और मालिक के नज़दीक इज़्ज़त और बुज़ुर्गी का दर्जा हासिल करें।

भाइयो! अल्लाह का तक़्वा अख़्तियार करो, उसकी इताअत करो और गुनाहों से बचो, रोज़े की बड़ी बड़ाई है। अल्लाह तआला ने उस के लिए बड़ा बदला रखा है। सही हदीस में आता है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि—

'रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उस का बदला दूंगा।'

बन्दा जब ख़ालिस नीयत के साथ सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म को पूरा करने में सिर्फ़ उस की ख़ुशी हासिल करने के लिए अपना खाना-पीना और दूसरी चीज़ें छोड़ता है, तो उस का यह काम यक़ीनी तौर पर उसे अल्लाह से क़रीब करता है। बंदा अपने रब की रहमत से उम्मीद लगाता है और अपने गुनाहों की माफ़ी चाहता है।

दोस्तो ! अगर रोज़ा सही तरीक़े से रखा जाए, तो उस से नफ़्स में पाकीज़गी पैदा होती है, अल्लाह की राह में जद्दोजेहद करने के लिए ताक़त मिलती है, अल्लाह की नेमतों का एहसास होता है, ग़रीबों और मिस्कीनों की परेशानियों का अन्दाज़ा होता है और अनगिनत बरकतें मोमिन के हिस्से में आती हैं।

अज़ीज़ो ! हम सब जानते हैं कि रोज़ा सिर्फ़ खाना और पीना छोड़ देने का नाम नहीं है, हक़ीक़त में बुराइयों को छोड़ने और भलाइयां अपनाने की एक सोची-समझी कोशिश जब तक न की जाए, रोज़े से वे फ़ायदे हासिल नहीं हो सकते जो होने चाहिएं। आप जानते हैं कि रोज़ा रख कर झूठ से बचना, ग़लत बातों से दूर रहना, ग़ीबत, बोहतान, गाली-गलोज और बेकार की बातों से ज़ुबान को रोकना कितना ज़रूरी है। जो शख़्स इन बातों पर नज़र नहीं रखता, उस के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि—

'बहुत से रोज़ेदार ऐसे हैं कि उन के हिस्से में सिवाए भूख और प्यास की तक्लीफ़ के और कुछ नहीं आता।'

हुज़ूर सल्ल० ने यह भी फ़रमाया है कि जो शख़्स रोज़ा रख कर झूठ बोलना और ग़लत काम करना न छोड़े, तो अल्लाह को इस बात की ज़रूरत नहीं है कि वह अपना खाना और पीना छोड़ दे।

भाइयो ! यह मुबारक दिन अल्लाह की राह में माल खर्च करने के लिए बेहतरीन ज़माना है। ग़रीबों की मदद, मिस्कीनों की देख-भाल और ज़रूरतमंदों की खबरगीरी के लिए ज़्यादा से ज़्यादा मौक़ा निकालिए। यों भी अल्लाह की राह में जो कुछ खर्च किया जाता है, वह मोमिन की नज़र में असल में खर्च नहीं होता, बल्कि वह एक बढ़ौतरी की वजह होती है। अल्लाह तआला का इर्शाद है कि—

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ

म-स-लुल्लज़ी-न युन्फ़ि क़ू-न अम्वालहुम फ़ी सबीलिल्लाहि क-म-स-लि हब्बतिन अम्ब-तत सब-अ़ सनाबि-ल फ़ी कुल्लि सुम्बुलतिन मिअतु हब्ब: वल्लाहु युज़ाअिफ़ु लिमंय्य शाउ वल्लाहु वासिअुन अलीम०

'उन लोगों की मिसाल, जो अल्लाह की राह में खर्च करते हैं, उस दाने की-सी है, जिस के पौधे में सात बालें आती हैं और हर बाल में सौ

दाने होते हैं। यानी अगर बंदा खुलूसे नीयत के साथ अल्लाह की राह में खर्च करे तो हो सकता है, उसे एक के बदले सात सौ मिलें और इतना ही नहीं बल्कि इस के बाद अल्लाह तआला का इर्शाद है कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है, सवाब की इस मिक्दार को कई गुना बढ़ा देता है। इस लिए कि अल्लाह तआला बड़ी वुस्अत वाला है और खूब जानता है कि किस शख्स ने किस जज्बे और किस खुलूस के साथ अपना माल खर्च किया है।'

और फिर यह तो हमें मालूम ही है कि इस मुबारक महीने में जो नेकियां की जाती हैं, उनका सवाब तो अल्लाह तआला और भी बढ़ा-चढ़ा कर अता फ़रमाता है। इस एतबार से अगर देखा जाए तो यह ज़माना मोमिन के लिए बड़ा नफ़ा कमाने का ज़माना है। पूरी कोशिश कीजिए कि इस में आप ज्यादा से ज्यादा नेकियां कमा सकें। ग़रीबों की मदद करना, अजीज़ों, रिश्तेदारों की खबरगीरी करना, दूसरे भलाई के कामों में अल्लाह के दिए हुए माल को खर्च करना और दीन की सरबुलंदी के लिए अपने साधनों को काम में लाना, इन दिनों में बड़े ही नफ़ा के काम हैं, खुलूस शर्त है। इस के बाद बन्दे को अपने मौला से ज्यादा से ज्यादा बदले की उम्मीद करनी चाहिए। अल्लाह की राह में खर्च करने से माल बर्बाद नहीं होता, बल्कि बढ़ता है। बेहतरीन इंसान वह है जो भलाई के कामों में अच्छे से अच्छा नमूना पेश करे और उस का वजूद नेकी और एहसान की वजह बन जाए।

दोस्तो ! अपने रब की खुशी हासिल करने के लिए यह बेहतरीन ज़माना है। हम सब को कोशिश करना चाहिए कि नेकी के कामों में हम एक दूसरे से आगे बढ़ जाएं, यही सब से बड़ी नेमत है।

अज़ीज़ो ! इस मुबारक ज़माने में जिस तरह दिन में रोज़ा इंतिहाई खैर व बरकत की वजह है, इसी तरह रात में नमाज़ का एहतिमाम इन्तिहाई अज्र और सवाब की वजह है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है—

مَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيْمَانًا وَّاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ ـ

मन क़ा-म र-म-ज़ा-न ईमानंव-व इह्तिसाबन--ग़ुफ़ि-र लहू मा तक़द्द-म मिन ज़म्बिही०

'जिस शख्स ने रमज़ान की रातों में खुलूसे नीयत के साथ अल्लाह तआला का अज्र हासिल करने के लिए नमाज़ पढ़ी, उसके गुनाह माफ़ कर

दिए जाएंगे । फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावा तरावीह की नमाज़, जो रमज़ान के महीने में पढ़ी जाती है, इन्तिहाई अज्र व सवाब की वजह है । तरावीह का पूरा एहतिमाम करना चाहिए, जो लोग सुस्ती या किसी दूसरी मसरूफ़ियत की वजह से इस नेमत से महरूम रहते हैं, वे यक़ीनी तौर पर एक बड़ी नेमत से अपने को महरूम कर लेते हैं। فَاتَّقُوا اللّٰهَ عِبَادَ اللّٰهِ ۔ وَاسْتَجِيبُوا لَهٗ وَاَنْفِقُوا

فِيْ سَبِيْلِهٖ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۔ بَارَكَ اللّٰهُ لِيْ وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ ۔

फ़त्तक़ुल्ला-ह अिबादल्लाह वस्तजीबू लहू व अन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिही वफ़अलुल खै-र लअल्लकुम तुफ़्लिहून० बारकल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरआनिल अज़ीम०

# कामियाब इन्क़िलाब

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ ۔ اَلْاَحَدِ الصَّمَدِ الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ وَلَمْ یَکُنْ
لَّهٗ کُفُوًا اَحَدٌ ۔ اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ وَاَشْکُرُهٗ ۔ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِیْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِیَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ ۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ
وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا ۔

اَمَّا بَعْدُ ۔ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ۔ یُدَبِّرُ الْاَمْرَ ۔ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ
وَلَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْوَلِیُّ الْحَمِیْدُ ۔

अल हम्दु लिल्लाहिल वाहिद० अल-अहदिस्समद० अल्लज़ी लम यलदि व लम यूलद व लम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद० अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअदु अला लहुल ख़ल्कु वल अम्-रु युदब्बिरुल अ-म-र युह्यी व युमीतु व लहू मा फ़िस्समावाति वल अर्ज़ि व हुवल वलीयुल हमीद०

भाइयो और अज़ीज़ो ! अगर कोई शख़्स यह माने कि जिस ज़ात ने ज़मीन और आसमान पैदा किए, इन्सान को ज़िंदगी बख़्शी और वह तमाम मख़्लूक़ पैदा की जो हमारे चारों तरफ़ फैली हुई है, वही इन सब का मालिक भी है, तो क्या यह कोई निराली और अचम्भे की बात हुई ? अचम्भे की बात तो यह है कि कोई यह कह दे कि इन तमाम चीज़ों का पैदा करने वाला ही कोई नहीं है, या वह यह कहने लगे कि बेशक पैदा तो उसने किया है, लेकिन यहां हुक्म इस के सिवा किसी और का चलना चाहिए, हालांकि साफ़ और सीधी बात यह है कि जिसने पैदा किया है, वही मालिक है और जो मालिक है, हुक्म उसी का ही चलना चाहिए। यह तो

बड़ी धांधली है कि मालिक कोई हो और हुक्म किसी और का चले। यही वह सच्ची और सीधी बात है जो इस्लाम की बुनियाद है। क़ुरआन इंसानों के सामने बार-बार इसी हक़ीक़त को पेश करता है और मांग करता है कि अल्लाह के बन्दो ! अल्लाह की ज़मीन पर उस के बंदे और ग़ुलाम बन कर रहो, न ख़ुद ख़ुदा बनने को कोशिश करो और न दूसरों को उस की ख़ुदाई में शरीक करो।

भाइयो ! क़ुरआन की दावत बड़ी हक़ीक़ी और बुनियादी दावत हैं। यही वह दावत है जो शुरू से अल्लाह के हर पैग़म्बर ने दी और यही वह दावत है, जिस के क़ुबूल करने के बाद इंसान ने सच्ची कामियाबी और सरफ़राज़ी पायी और इसी दावत के क़ुबूल करने और इस के तक़ाज़े पूरे करने पर इंसान की हमेशा रहने वाली ज़िंदगी की कामियाबी का मदार है। आप जानते हैं कि अब से लगभग चौदह सौ साल पहले अरब में अल्लाह के आख़िरी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को यही दावत दी और जब उन्होंने उसे क़ुबूल कर लिया, तो उन के हाथों दुनिया में एक ऐसा इंक़िलाब आया, जिस की मिसाल और कहीं नहीं मिलती।

इन्क़िलाब तो इन्सानी तारीख़ में बहुत-से आए हैं। बहुत-सी तह्रीकें और ताक़तें उभरी हैं और उन्होंने दुनिया के बड़े-बड़े हिस्सों पर क़ब्ज़ा कर लिया है, लेकिन इस्लामी दावत की शक्ल में जो इन्क़िलाब आया, वे अलग-अलग हैसियतों से बे-हद हैरत में डालने वाला है। कोई ज़रा ग़ौर से देखे, तो वह यह मानने पर मजबूर होगा कि जिस तरह यह दावत फैली, वह ख़ुद इस बात का सबूत है कि यह दावत हक़ है।

भाइयो ! यह दावत कुछ इस तरह फैली कि यह अपने साथ एक बड़ा अख़्लाक़ी, ज़ेहनी और फ़िक्री, तह्ज़ीबी, सियासी, तमद्दुनी और माली इन्क़िलाब लेकर आयी। इस के असर जहां-जहां भी पहुंचे, वहां इंसान के बेहतरीन जौहर खुलते चले गये और उस की बुरी सिफ़तें दबती चली गयीं। आप जानते हैं कि जब किसी तह्रीक को ग़लबा हासिल होता है, तो अक्सर ऐसा होता है कि उस के हाथों ज़ुल्म फैलता है और ज़मीन फ़साद से भर जाती है, लेकिन ख़ुदा की हाकिमियत और उस के सब से बड़े इक़्तिदार की बुनियाद पर जो इन्क़िलाब आया, उस में इंसानों के जौहर कुछ इस तरह निखारे कि आज तक हमें उसकी कोई दूसरी मिसाल नहीं मिलती। दुनिया ने यह देख लिया कि वे ख़ूबियां, जिन को सिर्फ़

दुनिया छोड़ देने वाले दरवेशों और कोने में बैठ कर अल्लाह-अल्लाह करने वालों के अन्दर ही देखने की उम्मीद की जा सकती थी, वे दुनिया का कारोबार चलाने वालों में बढ़-चढ़ कर पायी जाने लगीं, बड़े-बड़े हाकिमों की सियासत और हुकूमतों में अख़्लाक़ की बड़ाई के ऐसे-ऐसे नमूने देखे गये, जिन को इस से पहले कोई सोच भी नहीं सकता था। ये लोग जब इंसाफ़ की कुर्सी पर बैठे तो अदालतों में हक़ व इंसाफ़ के ऐसे जौहर दिखाए, जिस की उम्मीद बड़े-बड़े अख़्लाक़ी मुअल्लिमों (तालीम देने वालों) से ही की जा सकती थी। उन्होंने जब फ़ौजों की कमांड संभाली या सिपहसालार और सिपाही बन कर बड़ी-बड़ी जीतें जीतीं तो अख़्लाक़ व किरदार के ऐसे नमूने दुनिया के सामने आए, जिन्हें देख कर दुनिया दंग रह गयी, ग़रज़ यह कि उंची से ऊंची ज़िम्मेदारी से लेकर छोटे से छोटे कामों तक उन्होंने कुछ ऐसे नमूने पेश किए कि उन्हें देख कर दुनिया ने बेहद असर लिया और उन के बारे में कुछ सोचने और फ़ैसला करने पर मजबूर हुई। हुकूमत के मामूली कारिंदे, बाज़ारों में बैठकर कारोबार करने वाले दुकानदार, खेतों में काम करने वाले किसान और मज़दूर, आम रोज़ाना ज़िंदगी में शामिल होने वाले मामूली लोग, ग़रज़ यह कि ज़िंदगी के हर मैदान में जो जहां भी था, वह आप अपना नमूना था, दुनिया उन्हें देखती और असर लेती थी। उन के अख़्लाक़ और मामले ऐसे थे कि उन्हें देख कर लोग इस दावत को बे-दलील मानने के लिए तैयार हो जाते थे। वे देखते थे कि यह उस दावत ही का तो असर है कि उसे क़ुबूल करते ही इंसान कुछ से कुछ हो जाता है, वह अख़्लाक़ व किरदार के एतबार से इतना ऊंचा हो जाता है कि समाज के ऊंचे-ऊंचे लोग भी उस के मुक़ाबले में छोटे नज़र आने लगते हैं, वह वह्म और ख़ुराफ़ात के चक्कर से निकल जाता है। रंग, नस्ल, वतन और ज़ुबान की बुनियादों पर इंसानी भेद-भाव और तास्सुब से उस का ज़ेहन ख़ाली हो जाता है। इंसानों के दर्मियान ऊंच-नीच और छूत-छात की कोई कल्पना उस के ज़ेहन में नहीं रहती, बराबरी और भाई-चारे की एक निहायत ख़ुशगवार फ़िज़ा क़ायम हो जाती है। समाज जुर्मों और अख़्लाक़ी ख़राबियों से पाक हो जाता है, शराब और दूसरी नशा लाने वाली चीज़ें एकदम ख़त्म हो जाती हैं। समझौतों का ख़्याल, बात की सच्चाई, दुश्मनों के साथ इंसाफ़, जंग में वह्शियाना हरकतों से परहेज़, सुलह में समझौतों की पाबंदी, कारोबार में अमानतदारी और ईमानदारी, ग़रज़ यह कि उनकी ज़िंदगी का एक-एक कोना

दूसरों पर असर डालता था और ऐसा महसूस होता था कि दुनिया उन के इस अख्लाक़ी इन्क़िलाब की बढ़ती हुई रौ का मुक़ाबला किसी तरह नहीं कर सकती। यही वजह थी कि देखते-देखते एक ताक़तवर हुकूमत क़ायम हुई, खूंरेज़ी और बद-अम्नी का खात्मा हुआ, फ़िस्क़ व फ़ुजूर, बदकारी और ज़ुल्म मिटने लगे और इल्म, तह्ज़ीब, नेकी, अम्न, मुहब्बत, हमदर्दी और ऐसी ही दूसरी इंसानी सिफ़तें तेज़ी से फैलने लगीं।

भाइयो ! यह जो कुछ हुआ और जिस की तफ़्सील हमारी सही तारीख में मौजूद हैं यह सब उसी दीन की वजह से की, जिसके हम नामलेवा हैं। इस दीन के ये असर, जिन का हल्का-सा एक नक़्शा अभी मैंने आप के सामने पेश किया। यह खुद इस बात के सबूत के लिए काफ़ी है कि यह दीने हक़ है। किसी नाहक़ बात में यह ताक़त नहीं हो सकती कि वह कोई ऐसा इन्क़िलाब बरपा कर सके। यह इसी दीन का तुफ़ैल है कि मुसलमानों ने अपने ज़वाल के दौर में भी अख्लाक़ की जिस बुलंदी को ज़ाहिर किया है, उस की धूल को भी वे लोग नहीं पहुंच सकते, जो तह्ज़ीब और अदब का झंडा उठाए लिए फिरते हैं। यूरोप की क़ौमों ने अफ़्रीक़ा, अमरीका, एशिया और खुद यूरोप में मग़्लूब क़ौमों के साथ जो ज़ालिनाना सुलूक किया है, मुसलमानों की तारीख के किसी दौर में भी उस की मिसाल नहीं पेश की जा सकती। यह क़ुरआन की ही बरकत है जिसने मुसलमानों में इतनी इन्सानियत पैदा कर दी है कि वह कभी ग़लबा पाकर उतने ज़ालिम न बनसके, जितने ज़ालिम ग़ैर-मुस्लिम तारीख के हर दौर में पाए गए हैं और आज तक पाए जा रहे हैं। कोई आंखें रखता हो तो खुद देख ले कि स्पेन में, जहां मुसलमान सदियों तक हुकूमत करते रहे, उन्होंने ईसाइयों के साथ क्या सुलूक किया? और जब ईसाइयों को स्पेन में ग़लबा नसीब हुआ तो उन्होंने मुसलमानों के साथ क्या सुलूक किया ? यही हाल हिन्दुस्तान का है। आठ सौ साल तक मुसलमान यहां ग़ालिब और हाकिम की हैसियत से रहे, उस वक़्त उनके हाकिमों ने जो रवैया अपनाया, क्या आज के हाकिमों से आप मुसलमानों के हक़ में उस की कोई उम्मीद कर सकते हैं ? यही हाल यहूदियों का भी है—पिछले तेरह सौ वर्षों में मुसलमानों का रवैया उन के साथ क्या रहा ? और आज फ़लस्तीन में वे खुद क्या कर रहे हैं ?

भाइयो और अज़ीज़ो ! असल में खुदा को अपना मालिक और हाकिम तस्लीम कर लेने और उस की हिदायत को अपनी ज़िंदगी का क़ानून बना लेने के बाद इंसान के अन्दर लाज़िमी तौर पर वे सारी

तब्दीलियां पैदा होना चाहिएं, जिन की तरफ़ ऊपर इशारा किया गया है। ख़ुदा पर ईमान जिस दर्जे मज़बूत होगा, उतना ही इन्सानी ज़िंदगी पर उस का असर पड़ेगा। ख़ुदा के हुज़ूर जवाबदेही का यक़ीन इंसान के भीतर वह तब्दीलियां पैदा करता है, जो तब्दीलियां उस के अलावा किसी दूसरे तरीक़े से मुम्किन नहीं। फिर इन्सान के अन्दर जो इन्क़िलाब इस राह से आता है, वह इन्तिहाई मज़बूत और क़ायम रहने वाला होता है और उस के असर खुले तौर पर महसूस होते हैं।

भाइयो! बात तो छोटी-सी है, लेकिन इन्सान की तमाम परेशानियों का तंहा हल यही है कि वह अपने पैदा करने वाले को अपना मालिक माने और उसी के हुक्मों को अपनी ज़िंदगी का क़ानून बना ले। यही निजात का एक रास्ता है, इस ज़िंदगी में भी और इस के बाद आने वाली और हमेशा रहने वाली ज़िंदगी में भी। हम मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है कि सब से पहले हम इस हक़ीक़त को मान लें और अपनी ज़िंदगी को उस के तक़ाज़ों के मातहत ढालें और इसी हक़ीक़त को अल्लाह के तमाम बन्दों के सामने पेश करें। हमारी अपनी निजात और फ़लाह का रास्ता इस के सिवा कोई दूसरा नहीं है। इस हक़ीक़त को जितनी जल्दी मान लिया जाए, उतना ही बेहतर है। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम अपनी ज़िंदगियों को उस की मर्ज़ी के मुताबिक़ गुज़ार सकें, अपने क़ौल व अमल से उस के दीन की गवाही दें और कल क़ियामत के दिन उस के हुज़ूर सुर्ख़रू हों।

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ أَجْمَعِيْنَ. إِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّؤُوْفُ الرَّحِيْمُ

अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अजमअीन इन्नहू हुवल बर्रुर रऊफ़ुर्रहीम०

# इस्लामी अख़्लाक़

الحمد لله الذي أعطى كل شيء خلقه ثم هدى۔ فمن اتبع
هداه فلا يضل ولا يشقى۔ وإن له للآخرة والأولى۔ فأما من أعطى واتقى
وصدق بالحسنى يسره لليسرى۔ وأما من بخل واستغنى وكذب
بالحسنى يسره للعسرى۔ وإنه لغفار لمن تاب وآمن وعمل صالحا
ثم اهتدى۔ فله الحمد في الأولى والآخرة لا إله إلا هو له الأسماء
الحسنى۔ والصلوة والسلام على عبده الذي أنشأه على خلق عظيم فلما
بلغ أشده واستوى۔ بعثه ليتمم به مكارم الأخلاق واجتبى
وأنزل عليه الكتب المبين تذكرة لمن يخشى۔ فما ضل و
ما غوى وما نطق عن الهوى۔ إن هو إلا وحي يوحى۔ بين الله على لسانه
ما يحب ويرضى۔ وأكمل عليه الناس وبينهم الذي ارتضى۔ و
أتم عليهم نعمته وأرشدا إلى الطريقة المثلى۔ فمن أخذ بسنته و
اقتدى۔ فقد رشد واهتدى رضي الله عنهم وأرضى۔ وجعل الآخرة
لهم خيرا من الأولى۔

أما بعد۔ فأعوذ بالله من الشيطن الرجيم۔ سارعوا إلى مغفرة
من ربكم وجنة عرضها السموت والأرض۔ أعدت للمتقين
الذين ينفقون في السراء والضراء والكاظمين الغيظ والعافين
عن الناس ط والله يحب المحسنين۔

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अअ़ता कुल-ल शैइन ख़ल्क़हू सुम-म हदा
फ मनित्त ब-अ हदाहु फ़ला युज़िल्लु व ला यश्क़ा व इन-न लहू लल आख़ि-र-

त वल ऊला फ़ अम्मा मन अअ्ता वत्तक़ा वसद्-क़ बिल हुस्ना यस्सिरुहू लिल युस्रा व अम्मा मम बख़ि-ल वस्तग़्ना व कज्ज़-ब बिल हुस्ना यस्सिरुहू लिल अुसरा व इन्नहू लग़फ़्फ़ारुल्लिमन ता-ब व आ-म-न व अमि-ल सालिहन सुम्मह्तदा फ़ लहुल हम्दु फ़िल ऊला वल आख़िर-त ला इला-ह इल्ला हु-व लहुल अस्माउल हुस्ना वस्सलातु वस्सलामु अला अब्दिहिल्लज़ी अन्श-अ-हू अला ख़ुलुक़िन अज़ीम फ़ लम्मा ब-ल-ग़ अशुद्दहू वस्तवा ब-अ-स हू लियुतम्मि-म बिही मकारिमल अख़्लाक़ि वज्तबा व अन्ज़-ल अलैहिल किताबल मुबीनु तज्क़िरतल्लि-मंय्यख़्शा फ़मा ज़ल-ल व मा ग़वा व मा नुति-क़ अनिल हवा इन-हु-व इल्ला वह्युंय्यूहा बैन-ल्लाहि अला लिसानिही मायुहिब्बु व यर्ज़ा व अक्म-ल अजैहिन्ना-स व बै-न हुमुल्लज़ितंजा व उतिम-म अलैहिम नि-अ्-म-त-हू व अर-श-द इलत्तरीक़तिल मुस्ला फ़ मन अ-ख़-ज़ बिसुन्नतिही वक़्तदा फ़क़द र-श-द वह्तदा रज़ियल्लाहु अन्हुम व अर्ज़ा व ज-अ-लल आख़ि-र-त लहुम ख़ैरम मिनल ऊला०

अम्मा बअ्दु फ़ अअूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम सारिअू इला मग़्फ़ि-र-तिम मिर्रब्बिकुम व जन्नतिन अर्जु हुस्समावातु वल अर्जु उअिद्दत लिल मुत्तक़ीनल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न फ़िस्सर्राइ वज़्ज़र्राइ वल काज़िमीनल ग़ै-ज़ वल आफ़ी-न अनिन्नासि वल्लाहु युहिब्बुल मुह्सिनीन०

सब तारीफ़ उस ख़ुदा के लिए है, जिसने इंसान की ज़िंदगी बाक़ी रखने के लिए अनगिनत इन्तिज़ाम फ़रमाए और ज़िंदगी को इंसानियत के ज़ेवर से सजाने के लिए अपनी हिदायतों की नेमतें दीं।

भाइयो और अज़ीज़ो ! दुनिया में पैदा होने वाले हर इंसान के कुछ हक़ हैं और कुछ फ़र्ज़ और ज़िम्मेदारियां हैं। जब इंसान आपस में मिल-जुल कर रहते हैं तो उन की ज़िंदगी को ख़ुशगवार बनाने, बल्कि बाक़ी रखने के लिए इस बात की ज़रूरत है कि हर इंसान दूसरों के हक़ों को पहचाने और इस सिलसिले में उन फ़र्ज़ों और ज़िम्मेदारियों को अदा करे जो उस पर आती हैं। इन फ़र्ज़ों और ज़िम्मेदारियों को अदा करने का नाम अख़्लाक़ है और उस की अनगिनत शक्लें हैं। दुनिया की ख़ुशी, ख़ुशहाली, अम्न व अमान, और इत्मीनान का मदार इसी अख़्लाक़ पर है। अगर हर शख़्स दूसरों के हक़ों को पहचान कर अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करता रहे और अपने फ़र्ज़ों की अदाएगी में कोताही न करे तो सोचिए तो सही यह दुनिया कैसी जन्नत बन जाए। आज हम देखते हैं कि ज़िंदगी

बेचैनी और फ़साद से भरी हुई है, इस की ख़ास वजह यही है कि लोग अपने हक़ों को हासिल करने के लिए तो सब कुछ करने को तैयार हो जाते हैं, लेकिन वे अपनी ज़िम्मेदारियों और फ़र्ज़ों की तरफ़ मुश्किल ही से ध्यान देते हैं। आज मज़दूर और सरमाएदार का टकराव हो या हुकूमत और जनता के बीच झगड़े, सब की असल वजह यही है कि हक़ों की मांग हर तरफ़ है, लेकिन फ़र्ज़ों और ज़िम्मेदारियों से सब जान चुराते हैं। यही हाल एक-एक इंसान के दर्मियान झगड़ों का है और इसी ख़राबी की वजह से क़ौमें और ख़ानदान एक दूसरे के दुश्मन बने हुए हैं।

दोस्तो और बुज़ुर्गो! इस्लाम अल्लाह की सब से बड़ी नेमत है। इस्लाम चाहता है कि इंसानी ज़िंदगी सुकून और इत्मीनान से बसर हो। इंसान को ज़्यादा से ज़्यादा नेकी करने के मौक़े मिलें और फ़साद और फ़ित्ना दुनिया से मिट जाए। यही वजह है कि इस्लाम ने अख़्लाक़ पर बहुत ज़ोर दिया है। वह इंसान को इंसान बनाने के लिए एक मुकम्मल अख़्लाक़ी तालीम और अख़्लाक़ी ज़ाब्ते पेश करता है और उन्हें अख़्तियार करने पर बेहद ज़ोर देता है। आप जानते हैं कि हमें इस्लाम जैसी अल्लाह की नेमत, अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिए मिली है। आप का हाल यह था कि आप की ज़िंदगी का एक-एक वाक़िआ अख़्लाक़ का नमूना था, एक-एक बात अख़्लाक़ का सबक़ थी। क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला ने आप के बारे में फ़रमाया है कि—

إِنَّكَ لَعَلىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ

इन्न-क ल-अला ख़ुलुक़िन अज़ीम०

'बेशक आप अख़्लाक़ के बड़े दर्जे पर है।'

ख़ुद हुज़ूर सल्ल० ने एक बार फ़रमाया कि 'मैं तो इसी लिए भेजा गया हूं कि अच्छे अख़्लाक़ की तक्मील कर दूं।'

हज़रत अबूज़र रज़ि० के भाई जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखने के लिए मक्का आए तो उन्होंने अपनी क़ौम से जा कर यही कहा कि वह तो अपनी क़ौम को अच्छे अख़्लाक़ की तालीम देता है।

नजाशी के दरबार में हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब हुज़ूर सल्ल० का ग़ाइबाना तआरुफ़ कराया तो उनकी ज़ुबान से भी यही निकला कि, 'उसी ने हमको सिखाया कि हम पत्थरों को पूजना छोड़ दें, सच बोलें, एक दूसरे का ख़ून बहाने से हाथ रोकें, यतीमों का माल न खाएं, पड़ोसियों के काम आयें और पाकदामन औरतों को बदनाम न करें।'

यही हाल अबू सुफ़ियान का है, वह अभी मुसलमान नहीं हुए थे। उन्होंने क़ैसरेरूम के दरबार में हुज़ूर सल्ल० के बारे में यही बताया कि वह हमें एक खुदा की इबादत अख्तियार करने को कहते हैं। पाकदामनी की तालीम देते हैं, हमेशा सच बोलने की ताकीद करते हैं और क़रीबी रिश्तेदारों के हक़ों को अदा करने का हुक्म देते हैं।

ग़रज़ यह कि हुज़ूर सल्ल० की पूरी ज़िंदगी बेहतरीन अख्लाक़ का नमूना और आपकी तालीम मुकम्मल अख्लाक़ का सबक़ है, ऐसा अख्लाक़ जो ज़िंदगी के हर पहलू पर छाया हुआ है। घर में, बाज़ार में, अदालत की कुर्सी पर, हुकूमत के तख्त पर हर जगह उसी का ग़लबा है। ज़िंदगी का कोई मामला अख्लाक़ की पकड़ से आज़ाद नहीं, फिर इस्लाम ने अख्लाक़ के बारे में जो कुछ बताया है और उसके दायरे को उसने जितना फैला दिया है, वह सिर्फ़ लफ़्ज़ों की हद तक बात नहीं है, बल्कि इस्लाम ने जो कुछ अख्लाक़ी तालीम दी है, उन्हें ज़िंदगी में पूरी तरह अपनाने के लिए भी इन्तिज़ाम किए हैं। सब से अहम बात तो यह है कि इस्लाम ने अख्लाक़ के मामले में कोताही को एक माफ़ न किए जाने के लायक़ जुर्म कहा है अगर आप अख्लाक़ के तक़ाज़े पूरा न करें और इस तरह आप किसी इंसान का हक़ मारें, चाहे वह मुसलमान हो या न हो, तो आप का यह क़ुसूर उस वक़्त तक माफ़ ही नहीं हो सकता, जब तक कि वही शख्स आप को माफ़ न कर दे, जिसका हक़ आपने मारा हो। फिर इस जांच-पड़ताल का ताल्लुक़ दुनिया की हुकूमतों और अदालतों से तो है, बशर्ते कि इस्लामी निज़ाम मौजूद हो, लेकिन इस की अहमियत का अन्दाज़ा इस से लगाइए कि इन हक़ों के अदा करने की ज़िम्मेदारी से आप आख़िरत में भी नहीं बच सकते। आप को एक-एक शख्स का हक़ अदा करना होगा, जिस का हक़ आप के ज़िम्मे निकले और वहां आप जानते ही हैं कि हुक़ूक़ अदा करने के लिए नेकियों से काम लिया जाएगा। अगर आपने किसी का हक़ मारा होगा या किसी को कोई तक्लीफ़ पहुंचायी होगी, तो उस के कफ़्फ़ारे के तौर पर आप की नेकियां उस के पल्ले में डाल दी जाएंगी और अगरचे काफ़ी न होंगी तो उस की बुराइयों का बोझ आप पर डाला जाएगा।

भाइयो! कैसा भयानक है यह मंज़र कि आख़िरत जहां इंसान के पास कोई पूंजी न होगी और उस की निजात का मदार उसके अच्छे अमल पर ही होगा, वहां वह उन अच्छे आमाल से महरूम कर दिया जाए, सिर्फ़ इस लिए कि उसने दुनिया में उन लोगों के हक़ों के अदा करने में कोताही

की, जिन के हक़ उस के जिम्मे थे और कुछ लोगों को ना-हक़ सताया।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है, 'जिस भाई ने दूसरे भाई पर जुल्म किया हो, तो उसे चाहिए कि वह मज़्लूम भाई से इसी दुनिया में माफ़ करा ले, नहीं तो आखिरत में उसे उस का जुर्माना अदा करना पड़ेगा और वहां जुर्माना अदा करने के लिए दिरहम और दीनार न होंगे, बल्कि आमाल होंगे, ज़ालिम की नेकियां मज़्लूम को मिल जाएंगी और नेकियां न होंगी, तो मज़्लूम की बुराइयां ज़ालिम के सर डाल दी जाएंगी।'

अज़ीज़ो और दोस्तो! अख़्लाक़ की यह अहमियत बार-बार हमारे सामने आती रहती है। अभी जो बातें आपने मुझ से सुनीं, हम में से लग-भग हर शख़्स उन से कहीं ज़्यादा बातें जानता है, लेकिन उस जानने से हरगिज़ कोई फ़ायदा नहीं हो सकता, जब तक कि उस का असर हमारी ज़िंदगी पर न पड़े। हमारा अजीब हाल है। हम सब कुछ जानते हैं, लेकिन घरों में हमारा मामला न छोटों से दुरुस्त है और न बड़ों से, लेन-देन और मामलों में हमें ख़ूब मालूम है कि क्या करना चाहिए और क्या न करना चाहिए, लेकिन सामने नज़र आने वाले मामूली फ़ायदों के लिए हम फिसल जाते हैं और बिला तकल्लुफ़ दूसरों के हक़ों पर हाथ साफ़ कर देते हैं। हमेशा सच बोलना जो अच्छे अख़्लाक़ की बुनियाद है, हमारी ज़िंद-गियों से बहुत दूर हो चुका है, मामूली-से नफ़ा-नुक़्सान की ख़ातिर हम बड़ी आसानी से झूठ बोल लेते हैं। पड़ोसियों से मुहब्बत और मेल-जोल, ज़रूरतमंदों की ख़िदमत, आपसी बात-चीत में नर्मी और ख़ुशअख़्लाक़ी, एक दूसरे की इज़्ज़त का पास, दूसरों के नफ़ा और नुक़्सान की ऐसी ही फ़िक्र जैसी अपने नफ़ा-नुक़्सान की होती है, इज़्ज़त व पाकदामनी का लिहाज़, यतीमों और बेकसों के फ़ायदों की हिफ़ाज़त, ये सब चीज़ें हमारी ज़िंदगी से ग़ायब होती जा रही हैं, क्या यह शक्ल तवज्जोह की हक़दार नहीं? क्या इन बातों की तरफ़ पूरी तरह मुतवज्जह होने से कोई रोक रहा है? क्या यह भी कोई इख़्तिलाफ़ी मस्अला है? यहां तो मामला सिर्फ़ हमारा है और हमें अपने नफ़्स से ही निमटना है। तब्दीली किसी दूसरे में लाना हो तो आदमी मजबूर हो सकता है, लेकिन जब मामला हमारी ज़ात का है, तो फिर आप ही बताइए कि हमारा रोग कौन दूर कर सकता है?

भाइयो और बुज़ुर्गो! अल्लाह तआला का इर्शाद सुन लीजिए—

फ़रमाता है—

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِیْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۔

इक़्त-र-ब लिन्नासि हिसाबु हुम व हुम फ़ी ग़फ़्लतिम मुअ़ रि ज़ून०

'लोगों के लिए हिसाब की धड़ी क़रीब आ लगी और वे ग़फ़लत की वजह से मुंह मोड़े हुए हैं।' कोई नहीं जानता कि उस के तौबा करने और अमल करने की मोहलत कब ख़त्म हो जाए। हर शख़्स की मौत उस के सर पर मौजूद है। अक़्लमंद वही है, जो ख़तरे को महसूस करे और फ़ौरन होशियार हो जाए, फिर ज़रा देर के लिए यह भी तो सोचिए कि अख़्लाक़ की पाकीज़गी ही तो वह ख़ूबी है कि जिस का फ़ायदा तुरन्त ही मिलता है। इस दुनिया की ज़िंदगी के चैन और अम्न के लिए भी तो अच्छे अख़्लाक़ ही की ज़रूरत है। अच्छे अख़्लाक़ तो मोमिनाना ज़िंदगी की जान हैं। इंसानियत का हुस्न हैं और हर तरह की कामियाबी के ज़ामिन। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है—

'मुसलमानों में कामिल ईमान उस का है, जिस का अख़्लाक़ सब से अच्छा है।' आपने फ़रमाया—

'तुम में से सब से अच्छा वह है, जिस के अख़्लाक़ सबसे अच्छे हों।'

आगे कहा गया, 'क़ियामत की तराज़ू में अच्छे अख़्लाक़ से ज़्यादा भारी कोई चीज़ न होगी।'

'लोगों को अल्लाह की तरफ़ से जो चीज़ें दी गयी हैं, उन में सब से बेहतर अच्छे अख़्लाक़ हैं।'

'अल्लाह के बंदों में वह अल्लाह को सब से ज़्यादा प्यारा है जिस के अख़्लाक़ सब से अच्छे हों।'

एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने दो मुसलमान औरतों का ज़िक्र हुआ। एक रात भर नफ़्ल पढ़ती थीं और दिन को रोज़ा रखती थीं और अल्लाह की राह में माल भी ख़र्च करती थीं, लेकिन उन की ज़ुबान दराज़ी की वजह से उन के पड़ोसी उन से परेशान थे। दूसरी बीवी सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ ही पढ़ती थीं और फ़र्ज़ रोज़े रखती थीं और ग़रीबों की कुछ मदद भी कर देती थीं, लेकिन वे किसी को तक्लीफ़ न देती थीं।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहली ख़ातून के बारे में फ़रमाया, इस में कोई नेकी नहीं, वह अपने बुरे अख़्लाक़ की सज़ा भुग-

तेगी और दूसरी के मुताल्लिक़ फ़रमाया, 'वह जन्नती होगी।'

भाइयो ! क्या यह बहुत बड़ी बात है कि हम अपने अख्लाक़ और मामलों की दुरुस्ती का इरादा कर लें, पिछली बातों के सिलसिले में अल्लाह से तौबा करें, जिस-जिस का हक़ मार लिया हो, उस से माफ़ी की शक्लें पैदा करें और आगे के लिए ज़िंदगी का एक नया ढांचा तैयार करें, जिस में अच्छा अख्लाक़ हो और मामले हक़ और इंसाफ़ के साथ किए जाएं। अल्लाह हम सब को हिक्मत और जुरात अता फ़रमाए कि हम अपने नफ़्स को हराने में कामियाब हो जाएं और हमारा क़दम हक़ और इंसाफ़ से ज़रा भी न हटने पाए।

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ مِّنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ اِنَّهٗ هُوَالْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम मिन कुल्लि ज़म्बिंव-व अतूबु इलैहि इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

---

# पड़ोसी के हक़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتٰبَ- وَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الْجَهْلِ وَالضَّلَالِ اِلٰی نُوْرِ الْعِلْمِ وَالْهُدٰی- اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ وَاَشْكُرُهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ- اَرْسَلَهُ اللّٰهُ دَاعِيًا اِلَى الْهُدٰی وَالْاِصْلَاحِ- اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَ اَصْحٰبِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا-

اَمَّا بَعْدُ- فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ- وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا- وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِی الْقُرْبٰی وَالْيَتٰمٰی وَ الْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِی الْقُرْبٰی وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ-

अल हम्दु लिल्लाह अल हम्दु लिल्लहिल्लज़ी अन-ज़-ल अला अब्दि-हिल किता-ब व अख-र-ज बिही मिनल जह्लि वज़्ज़लालि इला नूरिल अिल्म वल हुदा अहमदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अर-स-लहुल्लाहु दाअियन इलल हुदा वल इस्लाहि अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्द फ़ अअूज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम वअबुदुल्ला-ह व ला तुश्रिकू बिही शैअंव-व बिल वालिदैनि एह्सानंव-व बिज़िल क़ुर्बा वल यतामा वल मसाकीनि वल जारि ज़िल क़ुर्बा वल जारिल जंबि वस्सा-हिबि बिल जंबि वब्निस्सबीलि व मा म-ल-कत ऐमानुकुम०

भाइयो और अज़ीज़ो ! अल्लाह तआला का इर्शाद है कि तुम सब अल्लाह की बन्दगी करो, उसके साथ किसी को शरीक न बनाओ, मां-बाप के

साथ नेक बर्ताव करो रिश्तेदारों यतीमों और मिस्कीनों के साथ अच्छे सुलूक से पेश आओ और पड़ोसी रिश्तेदारों से, अजनबी पड़ोसी से, पहलू के साथी और मुसाफ़िरों से और उन लौंडी-ग़ुलामों से जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों, एह-सान का मामला रखो। क़ुरआन के इस हुक्म की रोशनी में पड़ोसियों के सिलसिले में हम पर जो ज़िम्मेदारियां आती हैं, वे बड़ी लिहाज़ के क़ाबिल हैं। ख़ास तौर से हमारे समाज में उन पर तवज्जोह देना बहुत ही ज़रूरी हो गया है। आज हाल यह है कि पड़ोसियों के मामले में लगभग हर जगह कोताही बरती जाती है या तो उन से बड़ी हद तक बे-ताल्लुक़ी-सी रहती है या फिर लड़ाई-झगड़ा और फ़साद होता है, हालांकि इस्लाम जो समाज वजूद में लाना चाहता है, उस की ख़ास बात यह मालूम होती है कि पड़ो-सियों में ताल्लुक़ात इन्तिहाई ख़ुलूस के हों। हद यह है कि अगर किसी से ज़रा देर के लिए भी संगत हो जाए तो उस के साथ भी अच्छे सुलूक से पेश आने का हुक्म है, जैसे बाज़ार में किसी दुकान पर आप भी सौदा ख़रीदते हों और दूसरे भी, टिकट की खिड़की पर, सवारी में उतरते और चढ़ते वक़्त, आपस में सफ़र करते हुए, जहां कहीं भी आप का साथ दूसरे इंसानों से हो, वहां आप पर उनके कुछ हक़ होते हैं। इन हक़ों का तक़ाज़ा है कि जहां तक मुम्किन हो, आप उन के साथ नेक बर्ताव करें और उन्हें कोई तक्लीफ़ न पहुंचाएं।

पड़ोसियों के सिलसिले में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़ी ताकीद फ़रमायी है और बहुत खुले लफ़्ज़ों में हिदायतें दी हैं कि हम पर हमारे पड़ोसियों के क्या हक़ हैं और हमें यह ज़िम्मेदारी कहां तक अदा करनी चाहिए। कुछ बातों को ज़रा ग़ौर से सुनिए—

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ - وَاللّٰهِ لَا يُؤْمِنُ، وَاللّٰهِ لَا يُؤْمِنُ، وَاللّٰهِ لَا يُؤْمِنُ قِيْلَ مَنْ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ؟ قَالَ الَّذِىْ لَا يَاْمَنُ جَارُهٗ بِوَائِقَهٗ (بخاری،مسلم-ابوہریرہؓ)

क़ा-ल रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वल्लाहि ला युअ्मिनु वल्लाहि ला युअ्मिनु वल्लाहि ला युअ्मिनु क़ी-ल मन या रसू-लल्लाह क़ालल्लज़ी ला युअ्मनु जारुहू बिवाइ क़हू०

—बुख़ारी, मुस्लिम, अबूहुरैरह

'नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (तीन बार) फ़रमाया, ख़ुदा

की क़सम ! वह ईमान नहीं रखता। पूछा गया, ऐ अल्लाह के रसूल ! कौन ईमान नहीं रखता ? फ़रमाया कि वह शख्स जिस का पड़ोसी उस की तक्लीफ़ों से बचा न रहे।'

قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا زَالَ جِبْرِيْلُ يُوْصِيْنِيْ بِالْجَارِ

حَتّٰى ظَنَنْتُ اَنَّهٗ سَيُوَرِّثُهٗ (متفق عليه-عائشه)

क़ालन्नबीयु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मा ज़ा-ल जिब्रीलु यूसी नी बिल जारि हत्ता ज़नन्तु अन्नहू सयुवर्रिसुहू०

(बुख़ारी-मुस्लिम—हज़रत आइशा)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि 'जिब्रील अलै० मुझ को पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक करने की बराबर ताकीद करते रहे, यहां तक कि मैंने ख्याल किया कि पड़ोसी को पड़ोसी का वारिस बना देंगे।'

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ

لَيْسَ الْمُؤْمِنُ بِالَّذِيْ يَشْبَعُ وَجَارُهٗ جَائِعٌ اِلٰى جَنْبِهٖ - (مشكوٰة)

अनिब्नि अब्बासिन रज़ि० क़ा-ल समिअ़्तु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यक़ूलु लैसल मुअ्मिनु बिल्लज़ी यश्बअु व जारुहू जाइअुन इला जम्बिही०

—मिश्कात

'इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इर्शाद फ़रमाते सुना कि मोमिन ऐसा नहीं होता है कि ख़ुद तो पेट भर कर खाए और उस का पड़ोसी जो उस के पहलू में रहता हो, भूखा रहे।'

—मिश्कात

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا اَبَا ذَرٍّ اِذَا طَبَخْتَ مَرَقَةً

فَاَكْثِرْ مَاءَهَا وَتَعَاهَدْ جِيْرَانَكَ (مسلم)

का-ल रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या अबा ज़र्रिन इज़ा तबख़-त म-र-क़तन फ़अक्सिर मा-अहा व तआहद जीरानक०

—मुस्लिम

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबूज़र रज़ि० से फ़रमाया, 'ऐ अबूज़र ! जब तू शोरबा पकाए तो कुछ पानी ज़्यादा कर दे और अपने पड़ोसियों की ख़बरगीरी कर।'

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا نِسَاءَ الْمُسْلِمَاتِ لَا تَحْقِرَنَّ
جَارَةٌ لِجَارَتِهَا وَلَوْ فِرْسِنَ شَاةٍ (بخاری، مسلم۔ ابوہریرہؓ)

क़ा-ल रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या निसाअल मुस्लिमाति ला तह्क़िरन-न जारतुन लिजारतिहा व लौ फ़र्सि-न शातिन०

—बुख़ारी, मुस्लिम, अबूहुरैरह

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ मुसलमान औरतो ! कोई पड़ोसिन अपनी पड़ोसिन को हद्या देने को हक़ीर न समझे अगरचे वह एक बकरी की खुर ही क्यों न हो।

औरतों की ज़ेहनियत यह होती है कि कोई मामूली चीज़ अपनी पड़ोसिन के घर भेजना पसन्द नहीं करतीं। उन की ख़्वाहिश यह होती है कि उन के यहां कोई अच्छी चीज़ भेजें, इसी लिए आपने औरतों को हिदायत फ़रमायी कि मामूली से मामूली हद्या भी अपने पड़ोसियों के यहां भिजवाओ और जिन औरतों के पास पड़ोस से हद्या आए और वह मामूली हो तो भी उन्हें मुहब्बत से ले लेना चाहिए। उस को न तो हक़ीर समझें और न बुरा-भला कहें।

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنَّ لِيْ جَارَيْنِ فَاِلٰى اَيِّهِمَا
اُهْدِيْ؟ قَالَ اِلٰى اَقْرَبِهِمَا مِنْكِ بَابًا۔ (بخاری)

अन आइ श-त क़ालत क़ुल्तु या रसूलल्लाहि इन-न ली जारैनि फ़ इला अय्यिहिमा हुदी क़ा-ल इला अक़्रबिहिमा मि-न्कि बाबन०

—बुख़ारी

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि मेरे दो पड़ोसी हैं, तो उन में से किसके यहां हद्या भेजूं ? आपने फ़रमाया, उस पड़ोसी के यहां, जिसका दरवाज़ा तेरे दरवाज़े से ज़्यादा क़रीब हो।

पड़ोस का दायरा आस-पास के चालीस घरों तक है और इनमें सब से ज़्यादा हक़दार वह है, जिस का घर क़रीब हो।

قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ سَرَّهٗ اَنْ يُّحِبَّهُ اللّٰهُ وَ
رَسُوْلُهٗ فَلْيَصْدُقْ حَدِيْثَهٗ اِذَا حَدَّثَ، وَلْيُؤَدِّ اَمَانَتَهٗ اِذَا ائْتُمِنَ
وَلْيُحْسِنْ جِوَارَ مَنْ جَاوَرَهٗ. (مشکوٰة۔ عبدالرحمٰن بن ابی قرادؓ)

क़ालन्नबीयु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मन सर-रहू अंय्युहिब्बहु-ल्लाहु व रसूलुहू फ़ल यस्दुक़ हदीसहू इज़ा हद्-स वल युअद्दि अमान-त हू इज़्अ् तुमि-न वल युह्सिन जिवा-र मन जावरहू०

—मिश्कात, अब्दुर्रहमान बिन अबी क़िराद रज़ि०

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख्स को यह पसन्द हो कि अल्लाह और रसूल उस से मुहब्बत करे तो उस को चाहिए कि जब वह बातें करे तो सच बोले और उस के पास अमानत रखी जाए तो अपने पास रखी गयी अमानत को मालिक के पास हिफ़ाज़त से लौटाए और अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा बर्ताव करे।

قَالَ رَجُلٌ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اِنَّ فُلَانَةَ تُذْكَرُ مِنْ كَثْرَةِ صَلَاتِهَا وَ صِيَامِهَا وَصَدَقَتِهَا غَيْرَ اَنَّهَا تُؤْذِيْ جِيْرَانَهَا بِلِسَانِهَا. قَالَ هِيَ فِي النَّارِ، قَالَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ فَاِنَّ فُلَانَةَ تُذْكَرُ قِلَّةُ صِيَامِهَا وَ صَدَقَتِهَا وَصَلَاتِهَا وَاَنَّهَا تَصَدَّقُ بِالْاَثْوَارِ مِنَ الْاَقِطِ وَلَا تُؤْذِيْ بِلِسَانِهَا جِيْرَانَهَا، قَالَ هِيَ فِي الْجَنَّةِ. (مشكوٰة - ابوہریرہؓ)

क़ा-ल रजुलुन या रसूलल्लाह इन-न फ़ुला-न-त तुज़्करु मिन कस्रति सलातिहा व सियामिहा व स-द-क़तिहा ग़ै-र अन्नहा तुअ्ज़ी जीरा-नहा बिलिसानिहा क़ा-ल हि-य फ़िन्नारि क़ा-ल या रसूलल्लाहि फ़ इन-न फ़ुला न-त तुज़्करु क़िल-लतु सियामिहा व स-द-क़तिहा व सलातिहा व अन्नहा तसद्दक़ु बिल अस्वारि मिनल इक़िति व ला तुअ्ज़ी बिलिसानिहा जीरानहा क़ा-ल हि-य फ़िल जन्नति० —मिश्कात, अबूहुरैरह

'एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि फ़्लां औरत बहुत ज़्यादा नफ़्ल नमाज़ें पढ़ती, नफ़्ल रोज़े रखती और सद्क़ा करती है और इस लिहाज़ से वह मशहूर है, लेकिन अपने पड़ोसियों को अपनी ज़ुबान से तक्लीफ़ पहुंचाती है। आपने फ़रमाया कि वह जहन्नम में जाएगी। उस आदमी ने फिर कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! फ़्लां औरत के बारे में बयान किया जाता है कि वह कम नफ़्ल रोज़े रखती है और बहुत कम नफ़्ल नमाज़ पढ़ती है और पनीर के टुकड़े सद्क़ा करती है, लेकिन अपनी ज़ुबान से पड़ोसियों को तक्लीफ़ नहीं पहुंचाती। आप ने फ़रमाया कि यह जन्नत में जाएगी।'

पहली औरत जहन्नम में इस लिए जाएगी कि उसने बंदों के हक़ मारे हैं। पड़ोसी का हक़ यह है कि उसे तक्लीफ़ न दी जाए और उसने यह हक़ अदा न किया और दुनिया में उसने अपने पड़ोसी से माफ़ी भी नहीं मांगी, इस लिए उसे जहन्नम ही में जाना चाहिए।

قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَوَّلُ خَصْمَيْنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

جَارَانِ ۔ (مشکوٰۃ عقبہ بن عامرؓ)

क़ा-ल रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अव्वलु ख़स्मैनि यौमल क़ियामति जारानि० —मिश्कात, उक़्बा बिन आमिर

'अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिन दो आदमियों का मुक़दमा सब से पहले क़ियामत के दिन पेश होगा, वे दो पड़ोसी होंगे।'

यानी क़ियामत में अल्लाह के बंदों के हक़ों के सिलसिले में सब से पहले ख़ुदा के सामने वे दो शख़्स पेश होंगे, जो दुनिया में एक दूसरे के पड़ोसी रहे और एक ने दूसरे को सताया और ज़ुल्म किया। इन दोनों का मुक़दमा सब से पहले पेश होगा।

भाइयो और दोस्तो! आपने देखा, प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादों की रोशनी में हमारे पड़ोसियों का मस्अला किस दर्जा अहम है। बहुत-से लोग जब इस मस्अले पर ग़ौर करते हैं, तो वे एक उलझन का शिकार हो जाते हैं। वे कहते हैं कि हम तो अपने पड़ोसी से बेहतर सुलूक करने के लिए बहरहाल तैयार हो सकते हैं, लेकिन वह तो ऐसा और ऐसा है। भला ऐसे आदमी से क्या उम्मीद की जा सकती है? यक़ीनन यह इस मस्अले का एक कठिन पहलू है। बेशक अगर वह आदमी निहायत नेक और शरीफ़ होता तो आप बे-तकल्लुफ़ उस से मामले ठीक कर लेते, लेकिन भाइयो! सोचने की बात तो यह है कि अगर वह ऐसा ही मेयारी आदमी होता, जैसा आप उसे देखना चाहते हैं तो शायद ना-ख़ुशगवारी की नौबत ही न आती और अगर आती भी तो वह आप से पहले आगे बढ़ कर मामले कभी के ठीक कर चुका होता, आप के लिए मस्अला बाक़ी ही क्यों रहता। आप के लिए तो यह मस्अला पैदा ही इस लिए हुआ कि वह उस मेयार का आदमी नहीं है, जैसा आप चाहते हैं। आप को अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए कि उस ने आप को दीन का शऊर अता फ़रमाया। उस के पाक रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

इर्शाद आप तक पहुंच गये, आपने सुना और अब आप के लिए मौक़ा है कि आप उन के पालन में क़दम आगे बढ़ाएं, इस में आप के लिए अज्र है। अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता आप का वास्ता किसी ऐसे शख़्स से पड़ गया है, जिस के सुधारने पर आप को क़ुदरत नहीं, तो भी आप का अज्र कहीं नहीं गया। आप के इरादे और आप की कोशिश का अज्र आपको मिलेगा और आप इस के लिए सब कुछ करें।

ख़ूब अच्छी तरह समझ लीजिए कि आप के पड़ोसी आपका आईना हैं। किसी आदमी के अच्छा होने का एक मेयार यह भी बताया गया है कि उस के पड़ोसी उसे अच्छा कहें। यहां तफ़्सील से बहस करने का मौक़ा नहीं। अल-बत्ता एक बात हमेशा सामने रखिए कि अगर आप अपनी तबियत पर दबाव डाल कर यह तै कर लें कि फ़्लां आदमी के साथ मामले ठीक ही रखने हैं, तो फिर आपको नाकामी बहुत ही कम होगी। अल-बत्ता यह काम बड़ा सख़्त है और इस के लिए बड़े दिल-गुर्दे की ज़रूरत है। ख़ास तौर पर जो लोग अल्लाह का कलिमा बुलंद करने की आरज़ू रखते हैं और लोगों के सुधार के लिए कुछ करना चाहते हों, उन की तबियत का पहला दरवाज़ा उन के पड़ोसी हैं। उन्हें सब से पहले इसी मोर्चे पर कामियाबी हासिल करना चाहिए।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ عِبَادَ اللّٰهِ وَاقْتَدُوْا بِالرَّسُوْلِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي

اَقْوَالِهٖ وَاَفْعَالِهٖ — اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ۔

फ़त्त क़ुल्लाह अिबादल्लाह वक़्तदू बिरंसूलि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ी अक़्वालिही वअफ़ आलिही—अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अज मअीन०

# शिर्क सब से बड़ा ज़ुल्म

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ۔ وَلَهُ
الْحَمْدُ فِى الْاٰخِرَةِ۔ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ۔ اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ وَ
اَشْكُرُهٗ۔ وَقَدْ وَعَدَ بِالزِّيَادَةِ لِلشّٰكِرِيْنَ۔ وَاَشْهَدُ اَنْ
لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ۔ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ اَرْسَلَهُ اللّٰهُ رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ۔
فَبَلَّغَ رِسَالَةَ رَبِّهٖ۔ وَهَدَى النَّاسَ اِلٰى اَقْوَمِ طَرِيْقٍ۔ اَللّٰهُمَّ
صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ اِلٰى يَوْمِ
الدِّيْنِ۔ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا۔ فَقَدْ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى۔ وَهُوَ
اَصْدَقُ الْقَائِلِيْنَ۔ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا
دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاءُ۔ اَمَّا بَعْدُ۔

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि वलहुल हम्दु फ़िल आख़िरति व हुवल हकीमुल ख़बीर अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू व क़द व-अ-द बिज़्ज़ियादति लिश्शाकिरीन व अश्हदु अल्ला-इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबीयना मुह-म्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अर-स-ल हुल्लाहु रह्मतल्लिल आलमीन फ़ बल्ल-ग़ रिसाल-त रब्बिही व हदन्ना स इला अक़्वमि तरीक़िन अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हा-बिही इला यौमिद्दीनि व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा० फ़ क़द क़ालल्लाहु तआला व हु-व अस्दक़ुल क़ाइलीन इल्लल्ला-ह ला यग़्फ़िरु अंय्युश-र-क बिही व यग़्फ़िरु मा दू-न ज़ालि-क लिमंय्यशाउ अम्मा बअ्दु०

भाइयो और अज़ीज़ो ! अल्लाह तआला की तमाम मख़्लूक़ात में इन्सान ही वह मख़्लूक़ है जिसे अल्लाह तआला ने सूझ-बूझ दी है और अक़्ल से नवाज़ा है। अल्लाह तआला की बख़्शी हुई इस हिक्मत व दानाई

का सबसे पहला तक़ाज़ा यह है कि इंसान अपने रब के मुक़ाबले में शुक्र-गुज़ारी और एहसानमंदी का रवैया अपनाए, न कि नेमत के इंकार का, नमकहरामी और बग़ावत का रवैया। फिर इतना ही नहीं कि इंसान सिर्फ़ ज़ुबान से अल्लाह का शुक्र अदा करे, बल्कि उसे सोच-विचार, कथनी-करनी और तीनों शक्लों में अपने रब का शुक्रगुज़ार होना चाहिए। इस के लिए ज़रूरी है कि वह दिल से यह यक़ीन रखता हो और यही बात उसके ज़ेहन व दिमाग़ में अच्छी तरह रची-बसी हो कि मुझे जो कुछ भी मिला है, वह सब ख़ुदा का दिया हुआ है। मेरी सलाहियतें, मेरा जिस्म, मेरे देह के अंग, मेरा माल व दौलत, मेरी औलाद, ग़रज़ यह कि मेरी हर चीज़ उसी की अता की हुई है। दिल में इस यक़ीन और एहसास के साथ-साथ उसकी ज़ुबान हमेशा अल्लाह तआला के एहसानों को मानती हो, उस की ज़ुबान पर शुक्र के कलिमे जारी हों और अगर उसे कोई तक्लीफ़ भी पहुंचे तो ज़ुबान पर ना-शुक्री और शिकवा व शिकायत की बात न लाए, फिर वह अमली तौर पर भी ख़ुदा का फ़रमांबरदार हो, कोई बात उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ न करे और किसी ऐसे काम के क़रीब न जाए जो ख़ुदा को ना पसन्द हो। हमेशा उस की रज़ामंदी के कामों की तरफ़ लपके। उस की ख़ुशी के लिए दौड़-धूप करे और उसने उसे जो नेमतें दी हैं, उन्हें वह उस के इन बंदों तक पहुंचाए जो उन से महरूम हैं, फिर अमली शुक्र की एक बड़ी अहम शक्ल यह भी है कि इंसान अल्लाह के बाग़ियों के मुक़ाबले में जां-तोड़ कोशिश करे और ऐसी सूरतेहाल को क़ायम करने में अपनी तमाम सलाहियतें लगा दे कि जिस में अल्लाह की ख़ुशी पर चलना आसान हो और अल्लाह के बाग़ियों का ज़ोर टूटे, उस के हुक्म और क़ानून अमली तौर पर लागू हों और उस की नाफ़रमानी खुल्लम खुल्ला न होने पाए।

यही असल में अल्लाह तआला की नेमतों का शुक्र है और हर वह शख़्स जो ख़ुदा को मानता हो और जिस का ईमान हो कि जो कुछ दिया है, उसी ने दिया है, उस के लिए ज़रूरी है कि वह अल्लाह की नेमतों का शुक्र पूरी तरह अदा करे, दिल से भी, ज़ुबान से भी और अपने अमल से भी।

भाइयो! अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी की यह मांग कुछ इस लिए नहीं है कि इस से अल्लाह का कोई फ़ायदा है। असल में जब इंसान ना-शुक्री करता है, जिस का दूसरा नाम कुफ़्र है, तो वह अपना ही नुक़सान करता है। अल्लाह तआला का इस से कोई नुक़सान नहीं होता,

वह बे-नियाज़ है, वह किसी के शुक्र का मुहताज नहीं। सारी खुदाई शुक्र करे तो उस की खुदाई में कोई बढ़ौतरी नहीं होती और अगर सब के सब कुफ़्र करने लगें, तो उसे कोई नुक्सान नहीं पहुंचता। वह तो अपनी ज़ात में खुद पसंदीदा है। कायनात का ज़र्रा-ज़र्रा उस के कमाल और जमाल की गवाही दे रहा है। एक-एक चीज़ उस के पैदा करने वाला और रोज़ी देने वाला होने की गवाही पेश कर रही है और हर मख़्लूक़ ज़ुबाने हाल से उस की तारीफ़ कर रही है।

अल्लाह तआला के बारे में जब यह सच्चाई किसी इंसान के ज़ेहन में उतर जाती है, तो फिर वह दूसरों को भी उसकी जानकारी कराता है। खास तौर पर वह उस पहलू से अपनी औलाद पर तवज्जोह करता है। वह जानता है कि उसकी औलाद सीधे-सीधे उसकी ज़िम्मेदारी में है। इस से उन के बारे में पूछा जाएगा—क़ुरआन पाक में ऐसे ही एक मोमिन लुक़मान का ज़िक्र आया है। अल्लाह तआला ने हमें बताया है कि लुक़मान ने किस तरह अपने बेटे की तरफ़ तवज्जोह दी और किस तरह उन्होंने सब से पहले अपने बेटे को यही ताकीद की कि देखो, किसी को अल्लाह का शरीक न ठहराना, शिर्क सब से बड़ा ज़ुल्म है, ऐसा गुनाह जो कभी माफ़ नहीं होता।

ज़ुल्म का असल मतलब है किसी का हक़ मारना और इंसाफ़ के खिलाफ़ काम करना। शिर्क इस वजह से बड़ा ज़ुल्म है कि आदमी उन हस्तियों को अपने पैदा करने वाले, रोज़ी देने वाले और इनाम व एहसान करने वाले के बराबर ला खड़ा करता है, जिन का न उस के पैदा करने में कोई हिस्सा है, न उस के रोज़ी पहुंचाने में कोई दखल और न इन नेमतों के अता करने में कोई साझेदारी, जिन से आदमी उस ज़िंदगी में फ़ायदे उठाता है। यह ऐसी बे-इंसाफ़ी है कि इस से बड़ी बे-इंसाफ़ी हो ही नहीं सकती।

आदमी पर उसके पैदा करने वाले का यह हक़ है कि वह सिर्फ़ उसी की बन्दगी करे और उसी के सामने अपना सर झुकाए, मगर वह दूसरों की बन्दगी और ग़ुलामी अख़्तियार करता है और दूसरों के आगे सर झुकाता है। इस तरह वह अपने पैदा करने वाले, रोज़ी देने वाले और पालने वाले का हक़ मारता है, फिर दूसरों की बन्दगी और इताअत के लिए वह जो कुछ अमल करता है, उस के लिए वह अपने ज़ेहन, दिमाग़ और जिस्म से काम लेता है और उनके अलावा दुनिया की अनगिनत चीज़ों

को काम में लाता है, हालांकि उस का ज़ेहन, दिमाग़ और जिस्म और दुनिया की ये तमाम चीज़ें अल्लाह की पैदा की हुई हैं, उन्हें अल्लाह के सिवा किसी दूसरे ने पैदा नहीं किया है, इस लिए उसे यह हक़ नहीं है कि वह इन चीज़ों को अल्लाह की बन्दगी के अलावा किसी और की बन्दगी में इस्तेमाल करे, इस तरह वह उन सब चीज़ों पर ज़ुल्म करता है। फिर जब वह यह हरकत करता है तो वह अपने नफ़्स और अपने जिस्म को ज़िल्लत और अज़ाब में डाल देता है। उसके नफ़्स और जिस्म का उस पर यह हक़ था कि वह उन्हें न ज़लील होने देता और न अज़ाब में डालता, लेकिन वह पैदा करने वाले को छोड़ कर जब मख़्लूक़ की बन्दगी करता है तो अपने नफ़्स को भी ज़लील करता है और अज़ाब का हक़दार बनता है और दूसरी बहुत-सी चीज़ों से ग़लत काम लेकर उन पर ज़ुल्म करता है। इसी तरह मुश्रिक की पूरी ज़िंदगी सरासर ज़ुल्म ही ज़ुल्म हो जाती है। अपने ऊपर ज़ुल्म और दुनिया की अनगिनत मख़्लूक़ पर ज़ुल्म।

क़ुरआन पाक में जहां अल्लाह तआला ने इंसानों को इस ज़ुल्म के ख़िलाफ़ तंबीह की है, वहां साथ ही साथ मां-बाप के साथ अच्छे सुलूक की भी ताकीद फ़रमायी है। ऐसा कई जगह हुआ है। इस से अन्दाज़ा होता है कि अल्लाह तआला के नज़दीक मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक एक बड़ी बुनियादी ख़ूबी है जो ख़ुदापरस्तों में होनी ही चाहिए। अल्लाह तआला ने बड़ी ताकीद फ़रमायी है कि मां-बाप की इताअत की जाए और उनका शुक्र अदा किया जाए, क्योंकि उन्होंने इन्सान की परवरिश ऐसे हाल में की, जब वह ख़बरगीरी और मदद का बहुत मुहताज था. लेकिन इस सब के बावजूद अल्लाह का हक़ मां-बाप के हक़ से बढ़ कर है। अगर कभी मां-बाप कोई ऐसा हुक्म दें जो अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ हो या वह उस राह से हटाने की कोशिश करें जो ख़ुदा की राह है, तो फिर उन की इताअत का कोई सवाल नहीं। अल्लाह के हुक्मों के ख़िलाफ़ मां-बाप के हुक्म मानने के लायक़ नहीं रहे। यह बात कि वे ख़ुद सीधी राह पर न हों तो इस के बावजूद उन के साथ भला सुलूक करना ही होगा और सही तरीक़े पर उन की देख-भाल की ज़िम्मेदारी उठानी ही होगी, चाहे वे काफ़िर और मुश्रिक ही क्यों न हों।

औलाद को अगर दीन की राह पर चलाना हो तो उस के लिए सब से पहले ज़रूरत तो इसी बात की है कि उन के अन्दर ईमान और यक़ीन की कैफ़ियत पैदा की जाए, उन्हें अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात का इल्म

हो और वे उन पर ईमान लाएं। वह उसे हाज़िर व नाज़िर और अपने आप को उस के हुज़ूर जवाबदेह और ज़िम्मेदार समझें। जब तक यह बात न होगी, दीन की राह पर उनका क़ायम रहना मुम्किन नहीं। इस मरहले के बाद उन्नसे अल्लाह तआला की इताअत ख़ास तौर से नमाज़ के एहतिमाम के बारे में कहा जा सकता है और उसके बाद उनसे यह उम्मीद हो सकती है कि वे दूसरों को भी नेक राह की तरफ़ दावत देंगे और बुरी बातों से रोकेंगे। जो लोग औलाद की तर्बियत में इन बातों का ध्यान नहीं रखते, उन्हें औलाद के बड़ा हो जाने पर अक्सर मायूसी होती है। ईमान ही वह ताक़त है, जिस के होते इन्सान अल्लाह की राह में पहुंचने वाली कड़ी से कड़ी मुसीबतों को झेल लेता है। इससे इंसान में वह हिम्मत और वह दिल-गुर्दा पैदा होता है कि वह ना-खुशगवार हालात में भी हक़ पर क़ायम रह सके और रुकावटों के बावजूद आगे ही बढ़ता रहे।

दूसरों को भली बातों की दावत देना और बुराइयों से रोकना एक बड़ा अहम काम है और इस में वही लोग कामियाब होते हैं जो अच्छे अख़्लाक़ के मालिक हों, लोगों से खुले दिल और हंसते चेहरे से पेश आएं और अपनी बात दिल पसंद अन्दाज़ में दूसरों तक पहुंचाएं। बुरे स्वभाव के, चिड़चिड़े, घमंडी और दिल दुखाने वाली बातें करने वाले लोग इस मक़सद में कभी कामियाब नहीं होते। ऐसे लोग मक़सद को बहुत ज़्यादा नुक़्सान पहुंचा देते हैं, उन से कोई भलाई ज़ाहिर नहीं होती। ये ख़ुद भी जल्द मायूस हो जाते हैं और दूसरों को भी मायूस करते हैं।

अल्लाह तआला हम सब को भलाई पर अमल करने और भलाई को फैलाने और भलाई की तरफ़ दावत देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ عِبَادَ اللّٰهِ وَاقْتَدُوْا بِالرَّسُوْلِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

فِیْ اَقْوَالِهٖ وَاَفْعَالِهٖ۔

फ़त्त क़ुल्ला-ह अिबादल्लाह! वक़्तदू बिर्रसूलि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ी अक़्वालिही व अफ़आलिही०

# आख़िरत का यक़ीन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ۔ وَ لَهُ الْحَمْدُ فِی الْاٰخِرَةِ۔ وَهُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ۔ یَعْلَمُ مَا یَلِجُ فِی الْاَرْضِ وَمَا یَخْرُجُ مِنْهَا۔ وَمَا یَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا یَعْرُجُ فِیْهَا وَهُوَ الرَّحِیْمُ الْغَفُوْرُ۔ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ لَا رَبَّ لَنَا سِوَاهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّآ اِیَّاهُ۔ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِیَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَرْسَلَهُ اللّٰهُ رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ۔ فَبَلَّغَ رِسَالَةَ رَبِّهٖ۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا كَثِیْرًا۔

اَمَّا بَعْدُ۔ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ بَلْ هُمْ فِیْ شَكٍّ مِّنْهَا، بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ۔ قُلْ سِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِیْنَ۔

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि व लहुल हम्दु फ़िल आख़िरति व हुवल हकीमुल ख़बीर यअ् लमु मा यलिजु फ़िल अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समाइ व मा यअ्रुजु फ़ीहा व हुवर्रहीमुल ग़फ़ूर व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू ला रब-ब लना सिवाहु व ला नअ्बुदु इल्ला इय्याहु व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अर-स-लहुल्लाहु रह्मतल्लिल आलमीन फ़ बल्ल-ग़ रिसाल-त रब्बिही अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम तस्ली-मन कसीरा०

अम्मा बअ्दु क़ालल्लाहु तआला बलिद्दार-क अिल्मुहुम फ़िल आख़िरति बल हुम फ़ी शक्किम मिन्हा बल हुम मिनहा अमून क़ुल सीरू

फ़िल अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल मुजरिमीन०

भाइयो और अज़ीज़ो ! क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से आयी हुई हिदायत है। दुनिया में बसने वाले हर इन्सान के लिए हिदायत है, लेकिन इस किताब की रहनुमाई से फ़ायदा सिर्फ़ वही लोग उठा सकते हैं जो पहले उन हक़ीक़तों को तस्लीम करें, जो क़ियामत के बारे में इस किताब में पेश की गयी हैं, जैसे यह कायनात बे-ख़ुदा नहीं है, इसका एक पैदा करने वाला है, वही इस का मालिक है, उसी ने इन्सान को भी पैदा किया है। इन्सान इस दुनिया में बिल्कुल ख़ुद-मुख़्तार और आज़ाद नहीं है कि उससे पूछ-गछ ही न हो। इन्सान जवाबदेह और ज़िम्मेदार है। एक दिन ऐसा आएगा कि इन्सान को इस जवाबदेही के लिए अपने मालिक के हुज़ूर खड़ा होना होगा। ये और इसी तरह की बुनियादी हक़ीक़तें, जो क़ुरआन में पेश की गयी हैं, उन्हें जो शख़्स मान ले और फिर मान लेने के बाद अपनी अमली ज़िंदगी में भी वह रवैया अपनाने के लिए तैयार हो, जिस की मांग यह क़ुरआन करता है, तब ही वह इस रहनुमाई से फ़ायदा उठा सकता है, जो क़ुरआन पेश करता है।

भाइयो ! यह एक मुक़र्रर की हुई राह है, वह राह जिस पर चलने की ताकीद हर ज़माने में अल्लाह के रसूलों ने की है, लेकिन इस राह पर चलने में जो चीज़ सब से बड़ी रुकावट बनती है, वह आख़िरत का इंकार है। यही आख़िरत का इंकार इंसान को ग़ैर-ज़िम्मेदार बना देता है। इस की वजह से वह अपनी ख़्वाहिशों का बंदा और दुनिया की ज़िंदगी का शैदाई बन जाता है। इसके बाद आदमी का ख़ुदा के आगे झुकना और अपने नफ़्स की ख़्वाहिशों को अल्लाह की पाबंदियों में जकड़ना मुम्किन नहीं रहता। क़ुरआन पाक में ऐसी बहुत-सी क़ौमों के नमूने पेश किए गये हैं, जो सिर्फ़ आख़िरत के इंकार की वजह से ज़िंदगी का सीधा रास्ता न पा सकीं और जिन्होंने दुनिया में एक सबसे बुरी मिसाल छोड़ी। फ़िरऔन और उस की क़ौम को देखिए। समूद की क़ौम के सरदारों पर नज़र डालिए और लूत की क़ौम के हालात पर ग़ौर कीजिए, उन की सीरतें आख़िरत की फ़िक्र से बे-नियाज़ी पर बनी थीं और इस के नतीजे में अपने नफ़्स की बंदगी ही उन की रविश हो गयी थी। अल्लाह के रसूलों ने उन के सामने कैसी खुली-खुली निशानियां रखीं, लेकिन वे ईमान लाने के लिए तैयार न हुए। उलटे उन लोगों के दुश्मन हो गये, जिन्होंने उन को नेकी और भलाई की तरफ़ बुलाया, उन्होंने अपनी बद-कारियों पर ज़ोर दिया और अपने हाल

में मस्त रह कर जिस राह पर चल रहे थे, उसी पर चलते रहे। यहां तक कि अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें आ लिया और वे दुनिया के लिए नसीहत पकड़ने का एक निशान बन कर रह गये। उन्हें आखिर वक़्त तक होश नहीं आया और अपने भले और बुरे के समझने की उन्हें कोई मोहलत न मिली।

आख़िरत के इंकार या उस से ग़ाफ़िल हो जाने के बाद ऐसे ही नमूने सामने आते हैं, जिन की तरफ़ ऊपर इशारा किया गया, लेकिन आख़िरत का यक़ीन हो तो फिर ज्यादा से ज्यादा दौलत और बड़ी सी बड़ी हुकूमत के बावजूद इंसान नफ़्स का बन्दा और ख्वाहिशों का ग़ुलाम नहीं बन सकता। इस क़िस्म की ज़िंदगी का नमूना क़ुरआन पाक में हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का पेश किया गया है। आप को खुदा ने दौलत, हुकूमत और शान व शौकत बड़े पैमाने पर दी थी, लेकिन इस सबके बाव-जूद चूंकि वे अपने आप को अल्लाह के हुज़ूर जवाबदेह समझते थे और आख़िरत की ज़िंदगी पर उन्हें पूरा यक़ीन था, इस लिए उन्हें इस बात का अच्छी तरह एहसास था कि उन्हें जो कुछ हासिल है, वह सब अल्लाह तआला की बख्शिश और अता का नतीजा है और इस लिए उन का सर हर वक़्त अल्लाह के आगे झुका रहता था और घमंड और ग़ुरूर का टुकड़ा भी उन के अन्दर न पाया जाता था।

फिर क़ुरआन ही में एक वाक़िआ सबा की मलका का भी आपने पढ़ा होगा। यह निहायत मशहूर, दौलतमंद क़ौम पर हुकूमत करती थी। उस के पास तमाम ऐसे साधन मौजूद थे, जो किसी इंसान को नफ़्स के घमंड में डाल सकते हैं। उसे वह सब कुछ हासिल था, जिस के बल पर इन्सान घमंड कर सकता है। फिर वह एक मुश्रिक क़ौम से ताल्लुक़ रखती थी। बाप-दादा के मज़हब के साथ जिस क़िस्म का ताल्लुक़ आम तौर पर मुश्रिकों में पाया जाता है, वह भी उस के अन्दर मौजूद था। फिर अपनी क़ौम की सरदारी बाक़ी रखने के लिए भी उस के लिए ज़रूरी था कि वह अपने मुश्रिकाना मज़हब पर जमी रहे, लेकिन जैसे ही उस के अन्दर खुदा के हुज़ूर जवाबदेही का एहसास पैदा हुआ, तो फिर न नफ़्स की बन्दगी ने उसकी राह रोकी और न ख्वाहिशों की ग़ुलामी ने, न क़ौम का दबाव उसे सीधे रास्ते पर क़दम बढ़ाने से रोक सका और न ख़ुद उस के नफ़्स का ग़ुरूर कोई रुकावट बन सका।

भाइयो और अज़ीज़ो ! ये सिर्फ़ कुछ मिसालें हैं, वरना आप जितना

भी ग़ौर करेंगे, यह हक़ीक़त आपके सामने खुलती चली जाएगी कि आख़िरत के ज़िंदा यक़ीन के बग़ैर इंसान ख़ुदा की रहनुमाई से फ़ायदा नहीं उठा सकता और न उन ख़राबियों से बच सकता है जो इन्सान को इन्सानियत से दूर और हैवानियत से क़रीब करने वाली हैं। इस लिए आख़िरत के बारे में पूरा यक़ीन और इस यक़ीन को बुनियाद बना कर ज़िंदगी का रुख़ तै करना इंसानी सुधार के लिए सब से अहम ज़रूरत है। आख़िरत नज़रों से ओझल एक हक़ीक़त है। उस का यक़ीन करने के लिए या तो इन्सान उन लोगों की बातों पर भरोसा करे, जिन्होंने तारीख़ के हर दौर में ख़ुदाई पैग़ाम इन्सान तक पहुंचाए हैं और सबने एक ज़ुबान होकर कहा कि आख़िरत एक हक़ीक़त है और यह यक़ीनी तौर पर आकर रहेगी या फिर वह उन क़ौमों के हाल पर नज़र करे, जिन्होंने आख़िरत को नज़रंदाज़ किया है। कोई क़ौम और कोई गिरोह ऐसा नहीं, जिसने आख़िरत को पीठ पीछे डाला हो, और वह मुजरिम बने बग़ैर रह सकी हो। ऐसे लोग हमेशा ग़ैर-ज़िम्मेदार बन कर रहे, उन्होंने ज़ुल्म व सितम ढाए, फ़िस्क़ व फ़ुजूर का शिकार हुए और अख़्लाक़ की तबाही ने आख़िरकार उनको बर्बाद कर के छोड़ा। यह इन्सानी तारीख़ का एक ऐसा लगातार तजुर्बा है, जो हमेशा सच रहा है और आज भी सच है। आख़िरत के मानने और न मानने का बहुत गहरा ताल्लुक़ इन्सानी रवैए के सही होने या उसके ग़लत होने से है, इस को माना जाए तो इन्सानी ज़िंदगी का रवैया ठीक रहता है, न माना जाए तो यह रवैया ग़लत हो जाता है, यह हमेशा का तजुर्बा है और इसी लिए इससे यह बात साबित होती है कि आख़िरत यक़ीनी तौर पर एक सच्चाई है। यह मुम्किन नहीं है कि किसी ग़ैर-हक़ीक़ी चीज़ के मानने या न मानने से इन्सानी ज़िंदगी पर ऐसे असर पड़ें कि उसे माना जाए तो इन्सानी ज़िंदगी ठीक डगर पर चलती रहे और न माना जाए तो ज़िंदगी की गाड़ी पटरी से उतर जाए।

आख़िरत के यक़ीन की इस अहमियत को सामने रखने के बाद एक तरफ़ तो हम सब को अपनी-अपनी ज़ात के बारे में निहायत तवज्जोह से इस बात का जायज़ा लेना चाहिए कि क्या सही मानी में यह यक़ीन हमारे दिल में बैठ चुका है या नहीं ? और इस का अन्दाज़ा लगाने के लिए हमें अपने हर दिन के कामों पर और अपने मामलों पर नज़र करना चाहिए, जिस तरह आख़िरत के यक़ीन से ज़िंदगी का रुख़ तै होता है, उसी तरह ज़िंदगी के रुख़ को देख कर भी पता लगाया जा सकता है कि दिल में

आख़िरत का यक़ीन है या नहीं और है तो किस दर्जे का ?

بَارَكَ اللّٰهُ لِي وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ، وَنَفَعَنِي وَاِيَّاكُمْ بِمَا فِيْهِ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔ اَقُوْلُ قَوْلِي هٰذَا وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ لِي وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ فَاسْتَغْفِرُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ۔

बार-र-कल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरआनिल अज़ीम व न-फ़-अ-नी व ईयाकुम बिमा फ़ीहि मिनल आयाति वज़्ज़िक्रिल हकीम अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम व लिसाइरिल मुस्लिमी-न मिन कुल्लि ज़म्बिन फ़स्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

# दीन की तब्लीग़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ، وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ، وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ
مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا
مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ
تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا۔

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ
اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ۔

अल-हम्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तअीनुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नअूज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना व मिन सय्यिआति अअ्मालिना मंय्यह्दिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल-ल लहू व मंय्युज़्लिल फ़ ला हादि-य लहू व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्ली-मन कसीरन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़अअूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम वल तकुम मिन्कुम उम्मतुंय्यद्अू-न इलल ख़ैरि व यअ्मुरू-न बिल मअ्रूफ़ि व य-हौ-न अनिल मुन्करि व उलाइ-क हुमुल मुफ़्लिहून ।

अज़ीज़ो और दोस्तो ! अल्लाह के उस एहसान को याद करो कि उसने हमें अपने आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत बनाया और हमें बेहतरीन उम्मत के लक़ब से नवाज़ा। यह तो आप जानते ही हैं कि जितना जिस का दर्जा ऊंचा होता है, उतनी ही उस की ज़िम्मेदारियां बड़ी होती हैं। हमें जो अल्लाह तआला ने सब उम्मतों से बेहतर

बनाया तो हम पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी भी डाली। वह ज़िम्मेदारी यह है कि अब क़ियामत तक अल्लाह अपना कोई नबी नहीं भेजेगा, क्योंकि उसने अपने आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिए अपना दीन मुकम्मल कर दिया जो क़ियामत तक के लिए है, तो ऐसी शक्ल में दुनिया के तमाम इन्सानों तक अल्लाह का दीन पहुंचाने की ज़िम्मेदारी उन लोगों पर है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह का आख़िरी नबी मानते हैं।

भाइयो ! अल्लाह का शुक्र है कि हमारा ईमान है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल थे और आख़िरी रसूल थे और आप को अल्लाह तआला ने अपना आख़िरी और मुकम्मल दीन देकर भेजा था। अब जो शख़्स भी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान रखता है, उस की ज़िम्मेदारी है कि जहां तक उस से बन पड़े, वह अल्लाह के बन्दों तक अल्लाह का दीन पहुंचाए और पूरी हमदर्दी और मुहब्बत के साथ कोशिश करे कि अल्लाह के बंदों को दोज़ख़ में जाने से बचा ले।

भाइयो ! कुछ लोग समझते हैं कि यह काम तो बड़े-बड़े आलिमों का है, हम भला क्या कर सकते हैं। बेशक जिस शख़्स को अल्लाह तआला ने ज़्यादा इल्म दिया है, उस पर उतनी ही ज़्यादा ज़िम्मेदारी है, बल्कि यों समझिए कि इल्म ही नहीं, बल्कि माल व दौलत, असर व रुसूख़, हुकूमत और इक़्तिदार, जो कुछ भी अल्लाह ने किसी मुसलमान को दिया है, उसी के एतबार से वह ज़िम्मेदार है कि अल्लाह की बख़्शी हुई उन तमाम सलाहियतों को वह दीन को फैलाने और अल्लाह के बन्दों को सीधे रास्ते पर लाने में ख़र्च करे, लेकिन इस का मतलब यह नहीं है कि यह काम बस कुछ ख़ास लोगों के ही करने का है और बाक़ी लोग इस ज़िम्मेदारी से अलग हैं। ऐसा नहीं है, यह ज़िम्मेदारी तो हर शख़्स की है, किसी की कम, किसी की ज़्यादा और अल्लाह के यहां हर शख़्स इस ज़िम्मेदारी को अदा करने के लिहाज़ से ही दर्जे पाएगा।

अज़ीज़ो और दोस्तो ! यह बात शायद आप के लिए नयी हो और आप में से कुछ लोग इस तरह सोचने-लगें कि भला यह काम हम से कैसे होगा ? आप की यह परेशानी असल में कुछ बातें न जानने की वजह से है। बात असल में यह है कि आम तौर पर लोगों ने यह समझ रखा है कि शायद अल्लाह के दीन को पहुंचाने का मतलब यह है कि लोग दीनी किताबें

पढ़-पढ़ कर सुनायें या दीनी बातें ज़ुबानी तौर पर लोगों को समझाएं, तो यह बात तो ठीक है कि तह्रीर और तक़रीर की सलाहियत हर शख़्स में नहीं होती और यह बात भी दुरुस्त है कि तह्रीर और तक़रीर अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने का एक कामियाब ज़रिया भी हैं, लेकिन जहां तक इस ज़िम्मेदारी के अदा करने का ताल्लुक़ है, जिस का ज़िक्र ऊपर किया गया, उस के लिए तह्रीर व तक़रीर मुफ़ीद तो है, शर्त नहीं। असल ज़रूरत इस बात की है कि मुसलमान अपनी ज़ात में दीन का एक चलता-फिरता नमूना हो। ऐसी शक्ल में उसकी हर-हर बात से दीन का परिचय होगा और चाहे वह कुछ कहे या न कहे, लोग यह समझने लगेंगे कि इस्लाम क्या है और इस्लाम किस तरह के इंसान बनाता है। असल में तब्लीग़ का यह पहलू इंतिहाई ज़रूरी है, इतना ज़रूरी कि अगर यह न हो तो इस के बिना तक़रीर और तह्रीर से भी ठीक-ठीक काम नहीं चलता और यह पहलू ऐसा है कि अपने-अपने दायरे में हर मुसलमान उसे अख़्तियार कर सकता है और यह मुम्किन नहीं कि फिर जिस माहौल में वह रहता है, वहां उस का असर न पड़े, एक दहकते हुए अंगारे को अपने माहौल को गर्म करने के लिए ख़ुद कोई काम नहीं करना पड़ता है। अंगारे में जो गर्मी होती है, उस से माहौल अपने आप गर्म होने लगता है।

दोस्तो और अज़ीज़ो! इस पहलू से आप सोचें तो आप यह नहीं कह सकेंगे कि आप यह काम नहीं कर सकते। दीन की तब्लीग़ की ज़िम्मेदारी पूरी करने के लिए हर-हर शख़्स के सामने सब से पहले उसकी अपनी ज़ात का मस्अला होना चाहिए। आप चाहे पढ़े-लिखे हों या अन-पढ़, मालदार हों या ग़रीब, हर हालत में आप इस ज़िम्मेदारी को अदा कर सकते हैं और आपको अदा करना चाहिए। इस काम के लिए शुरूआत आप को अपनी ज़ात से करनी होगी और यह ज़ाहिर है कि हर आदमी को सब से ज़्यादा अख़्तियार ख़ुद अपनी ज़ात पर ही हासिल है। अल-बत्ता यह सही है कि यह काम सख़्त है और मेहनत चाहता है, लेकिन यह तो अल्लाह की जन्नत का सौदा है और ऐसी क़ीमती चीज़ के लिए बहरहाल मेहनत तो करनी ही पड़ेगी।

दीन की राह में काम करने वालों के लिए पहली ख़ूबी जिसके बग़ैर वे उस राह में एक क़दम आगे नहीं बढ़ा सकते, यह है कि अल्लाह से उन का ताल्लुक़ दुरुस्त हो और वे जो कुछ करें, सिर्फ़ अल्लाह के लिए करें। अल्लाह से ताल्लुक़ ठीक होने का मतलब यह है कि उन्हें अल्लाह की ज़ात

और उस की सिफ़ात पर ठीक-ठीक ईमान हो। वे किसी को किसी हैसियत से उस का शरीक और साझी न समझते हों, सिर्फ़ उसी पर भरोसा रखते हों, सिर्फ़ उसी को ज़रूरत पूरी करने वाला और कारसाज़ मानते हों। उन की नज़र में फ़रियादें सुनने वाला और बिगड़ी बनाने वाला उस के सिवा कोई न हो, वे हर तरफ़ से कट कर सिर्फ़ उस से जुड़ गये हों। उन्होंने हर ऐसी इताअत से मुंह मोड़ लिया हो जो ख़ुदा की इताअत से आज़ाद हो। वे हर किसी का हुक्म मानने से पहले यह देख लेते हों कि वह ख़ुदा के हुक्म के ख़िलाफ़ तो नहीं है। फिर उन्होंने अपने भीतर यह ख़ूबी पैदा कर ली हो कि वे जो कुछ करें, ख़ालिस ख़ुदा के लिए करें, दुनिया में लोग जितने काम भी करते हैं, उन में कहीं भी यह बात आप न पाएंगे कि उन के शुरू करने से पहले इंसान का ताल्लुक़ ख़ुदा से दुरुस्त किया जाए, क़ौम और वतन के लिए या अपने नफ़्स या अपने ख़ानदान के लिए लोग तरह-तरह के काम करने उठते हैं। यह सब काम ख़ुदा से बे-ताल्लुक़ होकर भी किए जा सकते हैं, यहां तक कि ख़ुदा का इंकार करके भी ये सब काम हो सकते हैं, लेकिन अल्लाह के दीन का काम एक ऐसा काम है, जिस में कोई कामियाबी उस वक़्त तक मुम्किन नहीं, जब तक आदमी का ताल्लुक़ अल्लाह के साथ दुरुस्त न हो, इस कमी को न इल्म दूर कर सकता है, न दौलत, इस के बग़ैर अच्छी-से-अच्छी लिखी हुई किताबें और बेहतर से बेहतर तक़रीरें सब बेकार हैं। दौलत के ढेर भी इस कमी को पूरा नहीं कर सकते, अल्लाह के दीन का काम करने के लिए ज़रूरी है कि आदमी जो कुछ करे अल्लाह के लिए करे और अल्लाह से अपना ताल्लुक़ दुरुस्त कर के करे।

दोस्तो और अज़ीज़ो ! अब आप ही सोचिए कि क्या यह कोई ऐसी बात है कि जो सिर्फ़ पढ़े-लिखों ही के करने की हो या उस के लिए मालदारी शर्त हो। यह तो हर शख़्स का अपना काम है और इस के लिए उसे सब से पहले अपने नफ़्स से निमटना पड़ेगा। बस यही आप का इम्तिहान है। आप यह नहीं कह सकते कि यह काम तो हमारे बस का नहीं। इरादा शर्त है, इरादा होगा तो इस काम के सारे तक़ाज़े आप मालूम कर सकते हैं। दीन का काम करने के लिए और भी बुनियादी बातों की ज़रूरत है, उन का ज़िक्र आगे इनशाअल्लाह आप के सामने आएगा। अल्लाह से दुआ कीजिए कि वह हम सब के दिलों को दीन का काम करने के लिए तैयार कर दे और उस राह की तमाम मुश्किलों को हमारे लिए आसान बना दे।

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِیْمَ۔ لِیْ وَلَکُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِیْنَ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ۔ فَاسْتَغْفِرُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ۔

अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्लाहल अज़ीम ली व लकुम व लि साइरिल मुस्लिमीन मिन कुल्लि ज़म्बिन फ़स्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

---

# सच्ची कामियाबी—१

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ - اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ - وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا - مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهٗ - وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ - اَرْسَلَهُ اللّٰهُ رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ - اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا -

اَمَّا بَعْدُ - فَقَدْ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ۝

अल हम्दु लिल्लाह अल हम्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नुअ्मिनु बिही व न-त-वक्कलु अलैहि व नअूज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना व मिन सय्यिआति अअ्मालिना मंय्यह्दिहिल्लाहु फ़ ला मुज़िल-ल लहू व मंल्युज़्लिल फ़ला हादि-य लहू व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहु अर-स-ल-हुल्लाहु रह्मतल्लिल आलमीन अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़क़द क़ालल्लाहु तआला अ यह्सबू-न अन्नमा नुमिद्दुहुम बिही मिम्मालिंव-व बनी-न नुसारिअ़ु लहुम फ़िल ख़ैराति बल ला यश्अुरून०

अज़ीज़ो और दोस्तो ! कामियाबी कौन नहीं चाहता ? हर शख़्स यही चाहता है कि वह कामियाब ज़िंदगी बसर करे और भलाई और कामियाबी उस के हिस्से में आए, अल-बत्ता सोचने के अन्दाज़ का फ़र्क़ अपनी जगह है । यों तो कामियाबी के अनगिनत पैमाने और कल्पनाएं हो सकती हैं, लेकिन एक मोमिन की नज़र में बड़ी-बड़ी दो क़िस्में हैं ।

कामियाबी का एक माद्दी ख्याल है, जिस में अच्छा खाना, अच्छा कपड़ा, अच्छा घर, माल-औलाद, नाम और दिखावा, असर और रसूख, इक़्तिदार और हुकूमत सब चीज़ें शामिल हैं। जो लोग कामियाबी का यह फ़िक्र रखते हैं, उन की नज़र में यह माद्दी कामियाबी जिस दर्जे में हासिल हो गयी, वह उसी दर्जे में कामियाब है, लेकिन इस्लाम की नज़र में कामियाबी का मतलब उस माद्दी कामियाबी के मतलब से बिल्कुल अलग है। इस्लाम की नज़र में कामियाब वह है, जो इस दुनिया से इस तरह रुख़्सत हो कि उसे आख़िरत में ख़ुदा की ख़ुशी, उस की जन्नत और उस का क़ुर्ब हासिल हो जाए।

कामियाबी के इस पैमाने में फ़र्क़ की वजह से लोगों के सोचने का अन्दाज़ बिल्कुल बदल जाता है। अक्सर ऐसा हुआ है कि जब अल्लाह तआला ने लोगों को माद्दी नेमतों से नवाज़ा और माद्दी एतबार से वे ख़ुशहाल और कामियाब हो गये तो वे इस ग़लतफ़हमी का शिकार भी हो गये कि वह अपने को कामियाब समझने के साथ-साथ सीधे रास्ते पर भी समझने लगे और यह समझ बैठे कि हम ख़ुदा के प्यारे भी हैं और उस के खिलाफ़ जिन लोगों को अल्लाह तआला ने माद्दी ख़ुशहाली अता नहीं फ़रमायी, उस के बारे में वे यह समझने लगे कि ये लोग यक़ीनी तौर पर ग़लत रास्ते पर हैं और ख़ुदा उन से नाराज़ है, जब ही तो ये तरह-तरह की मुसीबतों का शिकार हैं।

इस तरह की ग़लतफ़हमी की बहुत बड़ी वजह यह है कि लोग यह नहीं जानते कि यह दुनिया 'बदले का घर' नहीं है, बल्कि 'अमल का घर' है, यानी यह कि यहां हर इंसान जिस हाल में भी है, असल में वह इम्तिहान की हालत में है। यहां एक तो इंसान को उस के कामों का अख़्लाक़ी बदला और सज़ा मिलती ही नहीं और अगर मिलती भी है तो बहुत महदूद पैमाने पर। यहां हर हालत में इम्तिहान ही इम्तिहान है। एक शख़्स को अगर नेमतों से नवाज़ा गया है, माल व दौलत, औलाद, इक़्तिदार और हुकूमत उसे मिली है, तो उस का इम्तिहान इस हालत में हो रहा है और यह देखा जा रहा है कि इस जगह तक पहुंचने के बाद वह क्या तरीक़ा अपनाता है, दूसरी ओर अगर कोई कठिनाइयों का शिकार है और उस पर आफ़तों पर आफ़तें आ रही हैं तो इस का मतलब यह हरगिज़ नहीं है कि उस की यह हालत ज़रूर ही उस के लिए सज़ा ही है। हक़ीक़त यह है कि यह हालत भी इम्तिहान ही की हालत है। अगर कोई शख़्स या कोई क़ौम

नेकी के रास्ते से हटी हुई है, फ़िस्क़ व फ़ुजूर में पड़ी हुई है और ज़ुल्म और ना-इंसाफ़ी को उसने अपनी आदत बना लिया है, उस के बावजूद उसकी रस्सी ढीली है, उस पर नेमतों की बारिश हो रही है, तो यह इस बात की निशानी है कि असल में अल्लाह ने उसे बहुत बड़ी आज़माइश में डाल दिया है। उस पर अल्लाह की रहमतें नहीं हैं, बल्कि ख़ुदा का अज़ाब है, क्योंकि हो सकता था कि अगर उस की ग़लतियों पर उसे कोई चोट लगती और ज़ुल्म और ना-इंसाफ़ी के बाद वह किसी मुसीबत का शिकार हो जाता, तो शायद उस की आंखें खुल जातीं। वह अपने रवैए पर पछताता और उसे तौबा नसीब हो जाती, लेकिन अब जबकि उस पर नेमतों की बारिश हो रही हो, तो कौन-सी वजह हो सकती है कि वह अपनी ग़लती पर चौंके और ज़रा ठहर कर अपने रवैए पर ग़ौर करे। वह तो माल व दौलत से बद-मस्त होकर और ज़्यादा शरारत पर उतर आएगा और इस तरह अपने आपको ख़ुदा के ग़ज़ब का और ज़्यादा हक़दार बनाएगा। इसके ख़िलाफ़ जहां एक तरफ़ सच्ची ख़ुदापरस्ती हो, पाकीज़ा अख़्लाक़ हों, मामले अच्छे हों, अल्लाह की मख़्लूक़ के साथ रहमत और मुहब्बत का बर्ताव हो और इसके बावजूद वह शख़्स मुसीबतों का शिकार हो और चोटों पर चोटें उसे लग रही हों तो उस के बारे में यह फ़ैसला हरगिज़ सही नहीं है कि उस की हालत ख़ुदा की नाराज़ी की निशानी है।

सच्चाई पर अगर नज़र हो तो यह हालत ख़ुदा का ग़ज़ब नहीं, उस की रहमत ही है। सुनार जब सोने को खोट से पाक करके खरा बनाने का फ़ैसला करता है, तो उसे बार-बार भट्ठियों में तपाता है, यहां तक कि वह कुन्दन बन जाता है। मोमिन बंदा जब सख़्तियों का शिकार होता है तो उसे ख़ुदा की तरफ़ पलटना, अपनी कोताहियों पर नज़र करना और ख़ुदा की रहमत तलब करने की तरफ़ तवज्जोह देना ज़्यादा आसान होता है। तक्लीफ़ों के कफ़्फ़ारे में उस की छोटी-मोटी ग़लतियां माफ़ हो जाती हैं और इस तरह यह हालत उस के लिए रहमत की वजह बन जाती है।

फिर आदमी के ईमान के दावे के सच्चा होने का सबूत भी इस से मिलता है कि वह कई मुसीबतों में कहां तक साबित क़दम रहा, मोमिनों की शान तो यह है कि वह दुनिया में ख़ुदा से बे-ख़ौफ़ होकर नहीं रहते कि जो जी चाहे करते रहें, और कभी न सोचें कि ऊपर कोई ख़ुदा भी है, जिस की ख़ुशी और ना-ख़ुशी का ख़्याल उन्हें हर वक़्त रखना चाहिए। वे ख़ुदा की निशानियों पर ग़ौर करते हैं और उसकी उतारी हुई आयतों पर ईमान

लाते हैं, वे अपने तमाम कामों पर बड़ी गहरी नज़र रखते हैं कि कहीं किसी तरह वे बर्बाद न हो जाएं। जैसे आप जानते हैं दिखावा एक तरह का शिर्क है और उस से अच्छे-अच्छे आमाल अकारत हो जाते हैं। उन का हाल यह होता है कि वह अल्लाह की फ़रमांबरदारी में जो कुछ भी नेकियां करते हैं, जो कुछ भी ख़िदमतें अंजाम देते हैं, जो कुछ भी क़ुर्बानियां करते हैं, उन पर वे फूलते नहीं हैं, न उन के नफ़्स में यह घमंड पैदा होता है कि वे बड़े मुत्तक़ी हैं और न अपने ख़ुदा को पहुंचे हुए होने का एहसास करके वे अपने को कोई बड़ी चीज़ समझने लगते हैं। उनका हाल तो यह होता है कि एक तरफ़ वे अपनी क़ुदरत भर नेक काम करते रहते हैं, मगर सब कुछ करने के बाद भी डरते रहते हैं कि ख़ुदा जाने यह क़ुबूल हो या न हो। कहीं ऐसा न हो कि नेकियों के मुक़ाबले में हमारे गुनाह भारी साबित हों और हम अपने रब की मग़्फ़िरत से महरूम रह जाएं। इस ख़्याल से वे बराबर कांपते रहते हैं और हर वक़्त अपने रब से डरते रहते हैं। आपने सुना होगा कि हज़रत उमर रज़ि० जैसा महान इंसान जब दुनिया से रुख़्सत होने लगा, तो उसने कहा कि मैं अगर आख़िरत में बराबर-सराबर भी छूट जाऊं तो ग़नीमत है। यही है मोमिन के सोचने का अन्दाज़। हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने क्या ख़ूब फ़रमाया है कि मोमिन इताअत करता है और फिर भी डरता रहता है और मुनाफ़िक़ गुनाह करता है और फिर भी बे-ख़ौफ़ रहता है।

ज़िंदगी वही कामियाब है, जो आख़िरत की कामियाबी की वजह बन सके। इस एतबार से हमें बराबर अपनी हालत पर नज़र रखना चाहिए। ज़ेहन और फ़िक्र का सुधार पहले है, इस से आमाल में सुधार होता है। अल्लाह तआला हमें और आप को सही ईमान की दौलत से नवाज़े और अपनी ख़ुशी के कामों की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हमें यह ताक़त बख़्शे कि हम हर हाल में उस के फ़ैसले पर राज़ी रहें।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِیْمَ لِیْ وَلَكُمْ

وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِیْنَ فَاسْتَغْفِرُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ۔

अल्लाहुम-म इन्नी अस्अलु-क मा तुहिब्बु व तर्ज़ा वस्तग़्फ़िरुल्लाहल अज़ी-म ली व लकुम व लिसाइरिल मुस्लिमीन फ़स्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

# सच्ची कामियाबी-२

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ
شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ۔
وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ۔ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ
لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ اَللّٰهُمَّ
صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ
تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا۔

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ـــــ رُبَمَا
يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝ ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا
وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝

अल हम्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नऊज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना व मिन सय्यिआति अअ्मालिना मंय्यह्दिल्लाहु फ़ ला मुज़िल-ल लहू व मंय्युज़्लिल फ़ला हादि-य लहू व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-म सल्लि व सल्लिम अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़ अअूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम—रु-ब-मा यवद्दुल्लज़ी-न क-फ़-रू लौ कानू मुस्लिमीन० ज़र हुम यअ्कुलू व यत-त-मत्तअू व युल्हिहि मुल अ-म-ल फ़सौ-फ़ यअ्लमून०

अज़ीज़ो और दोस्तो ! अल्लाह तआला का इर्शाद है—

'ना-मुम्किन नहीं कि एक वक़्त वह आ जाए, जब वही लोग, जिन्हों ने आज इस्लाम क़ुबूल करने से इंकार कर दिया है, पछता-पछता कर कहेंगे कि काश ! हम मुसलमान हो गये होते, छोड़ो इन्हें, खाएं-पिएं, मज़े

करें और भुलावे में डाले रखे उन को झूठी उम्मीद, बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा।'

आप सब मुसीबत और तक्लीफ़ का मतलब जानते हैं और ऐश व आराम का मतलब भी समझते हैं। अगर कोई शख़्स ग़रीबी का शिकार है या बीमार है या किसी हादसे से दो चार हो गया है, तो आप कहते हैं कि वह सख़्त मुसीबत में पड़ गया और बड़ी तक्लीफ़ झेल रहा है। इस तरह अगर कोई इंसान खूब खाता-पीता है, ज़िंदगी की आसानियां उसे हासिल हैं, वह तन्दुरुस्त है और आराम से ज़िंदगी बसर कर रहा है, तो आप कहते हैं कि वह आराम में है—लेकिन आप की यह राय सिर्फ़ उस के ज़ाहिर को देख कर क़ायम होती है, इसे आख़िरी राय न समझिए।

फ़र्ज़ कीजिए कि ग़ैब का वह परदा, जो मौत के बाद उठने वाला है, आज ही उठ जाए और अंजाम की वह तस्वीर जो आख़िरत में सामने आने वाली है, आज ही आप के सामने आ जाए और आप यह देखें कि वह ग़रीब और कंगाल, जिसे कभी इत्मीनान के साथ भर पेट खाना नसीब न हुआ हो, उसे तो आज बड़े इनाम मिल रहे हैं और उस का दर्जा बुलन्द हो रहा है, क्योंकि उसने ग़रीबी में न कभी शिकायत का कोई लफ़्ज़ मुंह से निकाला, न कभी अपने अल्लाह से ना-उम्मीद हुआ, दिल उस का मुत्मइन और ग़नी रहा, उसने हर हाल में उन नेमतों का शुक्र अदा किया, जो उसे हासिल थीं और उन नेमतों के न मिलने का शिकवा न किया, जिन से वह महरूम था। वह अगर ग़रीब था, तो उसने तन्दुरुस्ती और ईमान पर अल्लाह का शुक्र अदा किया, ग़रज़ यह कि शुक्र और तवक्कुल से उस का दिल मुत्मइन रहा। इस लिए आज अल्लाह उस से राज़ी है और अब जो इनाम उस पर हो रहे हैं, उस पर वह भी राज़ी और खुश है, तो आप ही बताइए कि आप में से कौन ऐसा होगा, जो यह न चाहने लगे कि काश! उसे भी ऐसे ही हालात से दो चार होना पड़ता और वह भी उस शख़्स की तरह कामियाब होता।

इसी तरह उस आदमी के बारे में सोचिए जो हमेशा बीमार रहा, लेकिन पूरे तौर पर सब्र करने वाला और शुक्र करने वाला साबित हुआ, तक्लीफ़ें झेलीं, लेकिन हमेशा शुक्र अदा किया या उस पर मुसीबतों के पहाड़ टूटे, और वह हादसों से दो चार हुआ, लेकिन उसके हाथ से अल्लाह का दामन कभी न छूटा—आज वह नवाज़ा जा रहा है और उसने जो कुछ खोया, उस का लाखों गुना आज उसे दिया जा रहा है, तो आप कैसे यह

कह सकेंगे कि यह शख्स बद-नसीब रहा।

एक और मिसाल की कल्पना कीजिए। एक आदमी आम ज़िंदगी में एक औसत दर्जे का मुसलमान था, जिस की ज़िंदगी में बयान करने के क़ाबिल कोई भलाई नज़र न आती थी। इस के ख़िलाफ़ बहुत-सी कोताहियां, जैसा कि आम तौर पर पायी जाती हैं, वे सब उस में मौजूद थीं। अचानक वह किसी हादसे का शिकार हो गया। कुछ गुंडों और ज़ालिमों ने उसे सिर्फ़ मुसलमान जान कर तरह-तरह की तक्लीफ़ें दीं और उसे जान से मार डाला। लेकिन कमज़ोर और बे-बस होने के बावजूद उसने आख़िर वक़्त तक हिम्मत से काम लिया, ज़ुल्म के ख़िलाफ़ उस से जो कुछ करते बना, वह सब कुछ किया, अपने ईमान पर क़ायम रहा और इस हाल में जान दी कि उसे मरते दम तक अल्लाह याद रहा। उसकी इस हिम्मत और ईमान पर क़ायम रहने की वजह से उसे तो विलायत का दर्जा अता हो गया। उस की गिनती शहीदों में हुई और आप जानते हैं कि नबियों और सिद्दीक़ों के बाद अल्लाह के यहां शहीदों का दर्जा ही ऊंचा होता है।

अब सोचिए कि अगर ग़ैब का पर्दा उठ जाए और आप काफ़िरों के हाथों मारे जाने वाले उस मुसलमान मज़्लूम का यह अंजाम किसी तरह देख लें तो क्या आप यह आरज़ू न करेंगे कि काश ऐसा ही अंजाम आप का भी होता।

इसी तरह आप उन लोगों के बारे में ग़ौर कर लीजिए, जो आज दौलत और इक़्तिदार के नशे में मस्त हैं, जिन के लिए ज़ाहिर मैं ऐश ही ऐश है, जिन के लिए किसी चीज़ की कमी नहीं, लेकिन ग़ैब का परदा उठ जाने के बाद आप देखते हैं कि उन के लिए सब से बुरा अज़ाब है। क़ब्र से लेकर हश्र तक और हश्र से लेकर जहन्नम न सोचे जाने लायक़ मुसीबतों का शिकार है। उन का हाल यह है कि जहन्नम की पहली लपट लगने के बाद ही उन से जब पूछा गया कि बताओ कभी तुम आराम और ऐश की ज़िंदगी भी तो गुज़ार चुके हो? तो वे कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमने कभी सुख और आराम देखा ही नहीं, एक ही लपट में वे दौलत और हुकूमत के सारे ऐश व आराम भूल जाएंगे। जिस आदमी को आख़िरत का यक़ीन है, वह तो इस मंज़र को मानो अपनी आंखों से देख रहा है, जिस का नक़्शा ऊपर तिलावत किए हुए अल्लाह तआला के लफ़्ज़ों में खींचा गया है कि, 'वह वक़्त दूर नहीं, जब इन मुश्रिकों और काफ़िरों के ऊंचे से ऊंचे आदमी यह आरज़ू करेंगे कि काश! उन्होंने अल्लाह की इताअत क़ुबूल कर ली होती

श्रौर श्राज वे अपने मालिक के हुज़ूर बाग़ी और ग़द्दार की हैसियत से नहीं, बल्कि एक वफ़ादार ग़ुलाम की हैसियत से पेश होते ।'

भाइयो और दोस्तो ! इस मंज़र को सामने रखो श्रौर फिर फ़ैसला करो कि सच्चा ऐश क्या है ? और वाक़ई मुसीबत किस चीज़ का नाम है ? अल्लाह का शुक्र है, आप सब लोग आखिरत पर ईमान रखते हैं, आख़िरत की ज़िंदगी को असल ज़िंदगी जानते हैं, आख़िरत ही की कामियाबी को असल कामियाबी मानते हैं और इसी कामियाबी के लिए बराबर कोशिश कर रहे हैं । आपको यह धोखा कैसे हो सकता है कि आप मुसीबत और तक्लीफ़ का सही मतलब न समझें या दुनिया के ऐश व आराभ को कोई बड़ी चीज़ समझ लें । अल्लाह तआला का इर्शाद है—

عَسٰۤی اَنْ تُحِبُّوْا شَیْـًٔا وَّهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ

असा अन तुहिब्बू शैअंव-व हु-व कुर्हुल्लकुम०

'हो सकता है कि तुम एक चीज़ को पसन्द करो, लेकिन वह तुम्हारे लिए बुरी हो ।' या

عَسٰۤی اَنْ تَكْرَهُوْا شَیْـًٔا وَّهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ

'असा अन तक्रहू शैअंव-व हु-व ख़ैरुल्लकुम०'

'हो सकता है कि तुम एक चीज़ को ना पसन्द करो, लेकिन वह तुम्हारे लिए अच्छी हो ।'

भाइयो ! दुनिया की हालत के बारे में यह है वह सही सोचने का अन्दाज़, जो इस्लाम हमें बताता है । अल्लाह की किताब और उसके रसूल के इर्शादात से उस आख़िरी और हमेशा रहने वाली ज़िंदगी की झलकियां हमारे सामने आती हैं और उस सच्चाई का कुछ न कुछ हमें इल्म हो जाता है, जो हर शख़्स की मौत के बाद उस के सामने आने वाली है । यह अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है । अब जिन लोगों का इस सच्चाई पर ईमान है, उन की नज़र में न दुनिया की मुसीबत कोई मुसीबत है और न यहां का ऐश कोई ऐश । वे तो हर वक़्त इस धुन में लगे रहते हैं कि चाहे हालात मुसीबत या तक्लीफ़ के हों या ऐश व आराम के, हरहाल में उन का वह रवैया रहना चाहिए जो अल्लाह को पसन्द हो और जिसके नतीजे में उन्हें आख़िरत की कामियाबी मिले ।

आपने सुना होगा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्यारे चचा हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद किए गये । दुश्मनों

ने उन के मुबारक जिस्म की बे-इज़्ज़ती की। उन का कलेजा निकाल कर चबा डाला। इसी तरह कितने ही अल्लाह के प्यारे, जिन के बारे में यक़ीन है कि वे बेहतरीन इन्सानों में थे, यहां तक कि कितने ही नबी और रसूल ज़ालिमों के सितम का निशाना बने, तो यह सब क्या है? असल में इसी तरह उन अल्लाह के प्यारों के रुत्बे बुलन्द हुए। उन को हमेशा वाली ज़िदगी में ऊंचे दर्जे मिले और इस लिए ये सब हालात उनके हक़ में गोया रहमत ही रहमत थे।

भाइयो! अल्लाह की ऐसी रहमत के हक़दार अब से पहले भी बहुत लोग हो चुके हैं और अब भी होते रहते हैं, फ़ैसला इस बात पर है कि किसने अपना इम्तिहान किस तरह दिया? वह इम्तिहान जो मुसीबतों में भी होता है और ऐश व आराम में भी।

अल्लाह से दुआ कीजिए कि वह हमें अपनी मर्ज़ी के रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और तंगी हो या मुसीबत, खुशहाली हो या आराम, हर हालत में अपनी रहमत से दूर न करे और हमारा अंजाम ऐसा कर दे कि हमें आख़िरत में उसके नेक और पसन्दीदा बंदों का साथ मिले। असल कामियाबी यही है।

وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ـ اَقُوْلُ قَوْلِىْ هٰذَا
وَاسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ ـ لِىْ وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ ـ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ
فَاسْتَغْفِرُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ـ

व आख़िरु दअ्वाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन० अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्लाहल अज़ीम ली व लकुम व लि सा-इरिल मुस्लिमीन मिन कुल्लि ज़म्बिन फ़स्तग़्फ़िरूहु इन्नहु हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

# इन्सानी बराबरी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْغَنِيِّ الْحَمِيْدُ۔ اَلْمُبْدِئُ الْمُعِيْدُ۔ ذِى الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ
فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ۔ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ۔ اَحْمَدُهٗ وَاَشْكُرُهٗ وَاَشْهَدُ
اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهُ الْعَزِيْزُ الْحَمِيْدُ۔ وَاَشْهَدُ
اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَفْضَلُ مَنْ دَعَا اِلَى الْاِيْمَانِ
وَالتَّوْحِيْدِ۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ
اَجْمَعِيْنَ۔ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا۔

اَمَّا بَعْدُ۔ فَقَدْ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَزَّوَجَلَّ يٰاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ
مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ۭ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ
عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ۔

अल-हम्दु लिल्लाहिल ग़नीयिल हमीद् अल-मुब्दिउल मुईद ज़िल अर्शिल मजीद फ़अ्-आलुलिलमा युरीद व हु-व अला कुल्लि शैइन शहीद अह्मदुहू व अश्कुरुहू व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहुल अज़ीज़ुल हमीद व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अफ़्ज़-ल मन द आ इलल ईमानि वत्तौहीदि अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिव-व अला आलिही व अस्हाबिही अजमईन व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़ क़द क़ालल्लाहु तआला अज़्-ज़ व जल-ल या ऐयुहन्नासु इन्ना ख़लक़्नाकुम मिन ज़-क-रिंव-व उन्सा व जअल-नाकुम शुअूबंव-व क़बाइ-ल लि तआरफ़ू इन-न अक-र-म कुम अिन्दल्लाहि अत्क़ाकुम इन्नल्ला-ह अलीमुन ख़बीर०

दोस्तो और अज़ीज़ो ! अल्लाह का इर्शाद है कि—

'लोगो ! हमने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया, फिर तुम्हारी क़ौमें और बिरादरियां बना दीं ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो। हक़ीक़त में अल्लाह के नज़दीक तुम में सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला

वह है जो तुम्हारे अन्दर सब से ज़्यादा परहेज़गार है। यक़ीनी तौर पर अल्लाह सब कुछ जानने वाला और बा-ख़बर है।'

भाइयो ! इंसान की एक गुमराही ऐसी है जिसने हमेशा बड़े-बड़े फ़साद मचाए हैं, बल्कि यह कहना बिल्कुल ठीक है कि आज तक जितने बड़े-बड़े फ़साद दुनिया में हुए हैं, उन की एक बहुत बड़ी वजह यही गुमराही है, जिसकी इस्लाह अल्लाह तआला ने इस आयत में फ़रमायी है, जिस की तिलावत अभी आप के सामने की गयी। पुराने ज़माने से आज तक इंसान इस गुमराही का शिकार रहा है कि उसने इंसानियत की बड़ी कल्पना को छोड़ कर हमेशा अपने गिर्द छोटे-छोटे दायरे बनाए हैं। अब जो कोई इस दायरे के अन्दर पैदा हुआ है, उसे उसने अपना जाना और उस दायरे के बाहर जो इंसान मौजूद थे, उन्हें उसने ग़ैर समझा और अपना दुश्मन जाना। ये दायरे किसी अक़्ली या अख़्लाक़ी बुनियाद पर नहीं खींचे गये, बल्कि हमेशा सिर्फ़ इत्तिफ़ाक़ी पैदाइश की बुनियाद पर खींचे गये। कहीं इंसान ने अपने ख़ानदान को दायरा बनाया और अपने ख़ानदान से बाहर पैदा होने वाले को ग़ैर समझा, कभी यह दायरा क़बीले और नस्ल की बुनियाद पर खींचा गया और जो लोग इस क़बीले या नस्ल से बाहर थे, उन्हें अपना दुश्मन और मुख़ालिफ़ समझा गया। कभी यह दायरे जुग़राफ़ियाई ख़ित्तों की बुनियाद पर बने और कभी एक ख़ास रंग रखने वालों ने अपने को एक दायरे के अन्दर समझा और उस के बाहर के लोगों को ग़ैर जाना, यहां तक कि कभी ज़ुबान को इस दायरे की बुनियाद बनाया गया और हर उस इंसान को ग़ैर समझा गया, जो वह ज़ुबान न बोलता हो। फिर इतना ही नहीं हुआ कि इन दायरों के अन्दर आने वालों के साथ इंसान कुछ ज़्यादा मुहब्बत और उलफ़त का बर्ताव करता और आपस में कुछ ज़्यादा हमदर्दी और एक दूसरे की मदद करने का अमल करता और इस दायरे के बाहर जो इंसान थे, उनसे मुहब्बत और हमदर्दी का ताल्लुक़ कुछ कम होता, बल्कि इसे इंसानियत की बद-नसीबी कहिए कि इन्सान ने अपने दायरे के बाहर वाले इंसानों से नफ़रत और दुश्मनी का ताल्लुक़ क़ायम किया, उन्हें अपने से कमतर समझा और उन्हें ज़लील और हक़ीर जान कर उन पर हर तरह के ज़ुल्म और सितम को जायज़ कर लिया। इन्सान ने अपनी इस बेवक़ूफ़ी के लिए तरह-तरह के फ़लसफ़े गढ़े, यहां तक कि ऐसे मज़हब भी पैदा हो गये, जिन्होंने इंसान को अलग-अलग दायरे में तक़सीम करने की ताईद की और उन के सहारे ऐसे क़ानून बनाए गये कि

इंसानों के एक गिरोह ने सदियों तक दूसरे गिरोहों को अपना गुलाम बनाए रखा। आपने सुना होगा कि यहूदियों ने बनी इस्राईल को अल्लाह तआला की चहेती क़ौम क़रार दिया और अपने मज़हबी हुक्मों तक में यहूदियों और ग़ैर-यहूदियों के लिए अलग-अलग क़ानून बनाए। हिन्दुओं के यहां तो बाक़ायदा वर्ण आश्रम धर्म का अंग बना लिया गया, कुछ को सवर्ण और अवर्ण समझा गया और सब इंसानों पर ब्राह्मणों की बरतरी क़ायम कर दी गयी। सवर्णों को पाक और अवर्णों को नापाक समझा गया और कुछ वर्गों को तो इंतिहाई ज़लील और नीच समझा गया। कुछ ऐसी ही हालत अमरीका में काले और गोरों के दर्मियान क़ायम हो गयी। गोरों ने अपने आप को उच्च और श्रेष्ठ जाना और कालों पर हर प्रकार के ज़ुल्म व सितम को जायज़ समझा। ग़रज़ यह कि इंसानों के बहुत-से गिरोहों में यह ख्याल मौजूद रहा और अब तक मौजूद है कि उनके अपने दायरे के बाहर जो इंसान पाए जाते हैं, वे ज़लील हैं और उन के जान व माल पर हाथ डालने में कोई हरज नहीं। इसी क़िस्म के विचारों का यह नतीजा है कि आज दुनिया में जहां मौक़ा मिल जाता है, एक दायरे के लोग अपने दायरे से बाहर वालों के साथ इंतिहाई वह्शियाना बर्ताव करते हैं और उन के जान व माल को अपने लिए बिल्कुल हलाल जानते हैं। इसी क़िस्म के ख्यालों के नमूने हमें अपने मुल्क में भी नज़र आते हैं और बाहर भी।

भाइयो ! सोचने की बात यह है कि क्या वह कोई अच्छी निशानी है ? क्या यह बात समझ में आ सकती है कि एक इंसान सिर्फ़ इस लिए ज़लील और हक़ीर ठहरा दिया जाए कि वह किसी खास दायरे में पैदा हो गया है, हालांकि इस पैदाइश में न उस के अख्तियार को दखल है और न ख्वाहिश को और क्या सिर्फ़ इंसान को इस लिए बड़ा और इज़्ज़त के क़ाबिल मान लिया जाए कि वह इत्तिफ़ाक़ से किसी खास नस्ल या खानदान में पैदा हो गया है या उस का रंग सफ़ेद या लाल है, या वह फ़्लां और फ़्लां ज़ुबान बोलता है या उस का वतन फ़्लां मुल्क या फ़्लां शहर है, हालांकि उस के अपने अख़्लाक़ और मामले चाहे कैसे ही क्यों न हों।

दोस्तो और अज़ीज़ो ! अल्लाह तआला के अनगिनत एहसानों में से उस का सब से बड़ा एहसान उस की वह हिदायत है, जो इस्लाम की शक्ल में हमारे सामने मौजूद है। उस का एक हिस्सा यह भी है कि इस्लाम ने इस तरह के दायरों की बुनियाद पर इंसानों और इंसानों के दर्मियान

इज़्ज़त और ज़िल्लत के मेयार क़ायम करने को बिल्कुल ग़लत ठहराया। वह यह कहता है कि ऐ इंसानो! तुम सब एक ही बाप और एक ही मां की औलाद हो। आज तुम्हारी जितनी नस्लें पायी जाती हैं और तुम जितने भी खानदान या क़बीलों में बटे हुए हो, वे सब हैं एक ही जोड़े की औलाद और इस तरह गोया सब भाई-भाई हैं। और इंसान होने के नाते, न कोई ऊंचा है और न नीचा। फिर इस्लाम यह बताता है कि ऐ इंसानों! तुम सब का पैदा करने वाला भी एक ही है। ऐसा नहीं कि किसी को तो किसी बड़े दर्जे के देवता ने पैदा किया हो और कोई किसी छोटे दर्जे के देवता की मख्लूक़ हो। फिर अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में इस हक़ी-क़त को भी बार-बार याद दिलाया है कि तुम सब इंसान एक ही तरह के माद्दे से बने हो। ऐसा नहीं कि किसी की पैदाइश का माद्दा तो बहुत पाकीज़ा और बढ़िया हो और किसी का घटिया या नापाक। सब की पैदा-इश उसी हक़ीर पानी से होती है जो अगर बढ़िया है, तो सब के लिए बढ़िया है और नापाक है तो सब के लिए नापाक। तुम सब एक ही तरीक़े से पैदा होते हो और सब की पैदाइश का माद्दा एक-सा ही है।

इस अहम हक़ीक़त को बताने के बाद इस्लाम इस बात को सही बात की हैसियत से तस्लीम करता है कि इंसान अलग-अलग क़ौमों और बिरादरियों में बेशक बटे हुए हैं, जैसा कि इस आयत में फ़रमाया गया, जो आप के सामने तिलावत की गयी है, लेकिन वह कहता है कि यह क़ौमों और बिरादरियों की तक़्सीम आपसी जान-पहचान के लिए है। इस की बुनियाद न किसी ऊंच-नीच पर है और न ज़िल्लत और इज़्ज़त पर। इस बुनियाद पर किसी को यह हक़ नहीं कि वह दूसरों पर अपनी बड़ाई जताए और अपने को ऊंचा और दूसरों को नीचा समझे। यह हक़ न किसी खास रंग वाले को है और न किसी खास मुल्क वाले को।

इस सच्चाई को बताने के बाद इस्लाम बताता है कि इंसानों और इंसानों के दर्मियान बड़ाई और बुज़ुर्गी की बुनियाद अगर कोई है और हो सकती है तो वह सिर्फ़ अख्लाक़ी बड़ाई है। जन्म के एतबार से तुम सब बराबर हो, लेकिन अपने ख्याल और अमल के एतबार से यक़ीनन तुम में से कुछ लोगों को दूसरों पर बड़ाई हासिल है और होना चाहिए। अगर पैदाइश की बुनियाद पर फ़ज़ीलत और बड़ाई का फ़ैसला कर दिया जाता तो वह बड़ा ज़ुल्म होता, क्योंकि तुम में से किसी को भी यह अख्तियार हासिल नहीं कि वह अपनी मर्ज़ी या ख्वाहिश से जिस दायरे में चाहे, पैदा

हो जाए। अल-बत्ता तुममें से हर एक को यह अख़्तियार ज़रूर दिया गया है कि वह जैसे चाहे काम करे, इस लिए तुम्हारे दर्मियान अगर बड़ाई और बुज़ुर्गी का कोई मेयार हो सकता है, तो वह सिर्फ़ तुम्हारे आमाल की बुनियाद पर हो सकता है। इस एतबार से असल चीज़ जिस की बुनियाद पर एक इंसान दूसरे इंसान से अफ़ज़ल हो जाता है, वह यह है कि वह दूसरों से बढ़ कर ख़ुदा से डरने वाला हो, बुराइयों से बचने वाला हो, नेकी और पाकीज़गी की राह पर चलने वाला हो। ऐसा आदमी चाहे किसी ख़ानदान और नस्ल से ताल्लुक़ रखता हो, किसी मुल्क में पैदा हुआ हो, किसी रंग का हो या कोई ज़ुबान बोलता हो, वह अपनी निजी ख़ूबियों की वजह से क़द्र के क़ाबिल है और सही मानी में उन लोगों से अफ़ज़ल है, जो इन ख़ूबियों में उस के बराबर न हों। इंसानों में असल मानी में ज़लील और नीच इंसान वही है, जो इन ख़ूबियों से महरूम हो, चाहे वह काला हो या गोरा, पूरब में पैदा हुआ हो या पच्छिम में, किसी ख़ानदान या नस्ल या वतन का ताल्लुक़ से उसे बुज़ुर्ग और इज़्ज़तदार नहीं बना सकता।

भाइयो और दोस्तो ! यह है वह सब से बड़ा एहसान इस्लाम का, जो उसने इंसानियत पर किया। इस एहसान की मिसाल आपको इस्लाम के सिवा कहीं दूसरी जगह नहीं मिल सकती। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़ी ताकीद से बार-बार इस बात को साफ़ फ़रमाया है। जब मक्का फ़त्ह हुआ तो आपने काबे के तवाफ़ के बाद एक तक़रीर फ़रमायी और इस में फ़रमाया, शुक्र है उस ख़ुदा का जिसने तुम से जाहिलियत का ऐब और घमंड दूर कर दिया। लोगो ! तमाम इंसान बस दो ही हिस्सों में बंट जाते हैं—एक नेक और परहेज़गार जो अल्लाह की निगाह में इज़्ज़त वाला है। दूसरा फ़ाजिर और शक़ी जो अल्लाह की निगाह में ज़लील है, वरना सारे इंसान आदम की औलाद हैं और अल्लाह ने आदम को मिट्टी से पैदा किया था।

ऐसे ही लफ़्ज़ हुज़ूर सल्ल० ने आख़िरी हज के मौक़े पर अरफ़ात के मैदान में तक़रीर फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाए, फ़रमाया, 'लोगो ! ख़बरदार रहो, तुम सब का ख़ुदा एक है। किसी अरब को किसी अजमी पर और किसी अजमी को किसी अरब पर और किसी गोरे को किसी काले पर और किसी काले को किसी गोरे पर कोई बुज़ुर्गी हासिल नहीं है, मगर तक़्वा के एतबार से, अल्लाह के नज़दीक तुम में से ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है, जो सब से ज़्यादा परहेज़गार हो।'

इस तरह के कितने ही इर्शाद हदीसों में मौजूद हैं, जिनमें आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बाप-दादा पर फ़ख़्र करने से मना फ़रमाया है। फ़रमाया है कि क़ियामत के दिन तुम्हारा नसब नहीं पूछा जाएगा। अल्लाह तुम्हारी शक्लों और तुम्हारे माल को नहीं देखता, बल्कि वह तुम्हारे अमल देखता है।

यही वह बेहतरीन तालीम है, जिसकी बुनियाद पर इस्लाम ही एक ऐसी आलमी बिरादरी बना सकता है, जिस में न छूतछात हो, न ऊंच-नीच। इस बिरादरी में शरीक होने वाले तमाम इंसान चाहे वे किसी नस्ल या मुल्क से ताल्लुक़ रखते हों, बराबर के हक़ पा सकते हैं।

इंसानी बराबरी और इकाई के जो कामियाब उसूल इस्लाम ने दिए हैं, आज भी किसी दूसरी जगह उनकी मिसाल नहीं मिलती, हालांकि अब इंसानियत इस तरह की बनावटी और ज़ालिमाना तक़्सीमों से तंग आ चुकी है और हर तरफ़ से बराबरी और इकाई की ज़रूरत के नारे बुलंद हो रहे हैं और इंसानों को जोड़ने के लिए तरह-तरह के फ़लसफ़े और उसूल बनाए जा रहे हैं। यहां यह बात भी ग़ौर करने की है कि इस्लाम ने जिस ज़माने में इंसानी बराबरी और इकाई का यह सबक़ दिया था, वह आज के ज़माने से बहुत अलग था। उस वक़्त तो कोई यह सुनना पसंद भी न करता था कि सारे इंसान बराबर हो सकते हैं। उस दौर में ग़ुलामी का रिवाज था। उस दौर में यहूदी विचार छाये हुए थे, उस दौर में शूद्रों की हैसियत नापाक जानवरों से भी बुरी थी और उस दौर में इंसान भेड़-बकरियों की तरह ख़रीदे और बेचे जाते थे। उस वक़्त इंसान ने इंसानी बराबरी और इकाई का यह सबक़ सिखाया और अमली तौर पर एक ऐसा समाज बना कर दिखाया जहां वाक़ई इन उसूलों पर पूरा-पूरा अमल होता था।

भाइयो और अज़ीज़ो! यही एक पहलू ऐसा है कि अगर इंसाफ़ के साथ ग़ौर किया जाए तो यह समझ में आ सकता है कि यह दीन यक़ीनी तौर पर उस ख़ुदा की तरफ़ से आया है जो सारे इंसानों का रब है। यह किसी इंसान का बनाया हुआ मज़हब नहीं, क्योंकि ऐसा होता तो उस में भी यक़ीनी तौर पर नस्ली या मुल्की-या क़ौमी बरतरी का वैसा ही रंग मौजूद होता, जैसा इंसानों के बनाए हुए दूसरे ज़ाब्तों, क़ानूनों, उसूलों या मज़हबों में पाया जाता है। हम अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं कि उसने हमें उस दीन पर पैदा किया और हमें उस की पैरवी की तौफ़ीक़ अता फ़र-

मायी। यक़ीनी तौर पर यह उस का सब से बड़ा फ़ज़्ल है। यह हमारे लिए दुनिया की भी सब से बड़ी दौलत है और ग्राखिरत की भी। ग्रल्लाह से दुग्रा है कि वह हमें इस पर क़ायम रहने की तौफ़ीक़ ग्रता फ़रमाए ग्रौर हमें ग्रपनी खुश्नूदी के काम करने की सग्रादत बख्शे, ताकि हमारे ग्रन्दर सही मानी में वह खूबियां पैदा हो सकें जिनकी बुनियाद पर इंसान ग्रल्लाह की नज़र में इज्ज़त का हक़दार हो जाता है ग्रौर ऊंचा दर्जा पाता है।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ۔ وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا أَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ۔ أَقُوْلُ قَوْلِي هٰذَا وَأَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِي وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِينَ۔ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ۔

रब्बना ला तुज़िग़ क़ुलूबना बग्र्-द इज़ इदैतना व हब लना मिल्लदुन-क रह्मतन इन्न-क ग्रन्तल वह्हाब व ग्राखिरु दअ्वाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल ग्रालमीन अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़िफ़रुल्ला-ह ली व लकुम व लिसाइरिल मुस्लिमीन० रब्बिग़्फ़िर वर्ह़म व अन-त खैरुर्राहिमीन०

# अस्मा-ए-हुस्ना (भलेनाम)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْکِتَابَ وَاَخْرَجَ النَّاسَ بِهٖ مِنَ الْجَهْلِ وَالضَّلَالِ اِلٰی نُوْرِ الْعِلْمِ وَالْهُدٰی، اَحْمَدُهٗ سُبْحَانَهٗ وَ اَشْکُرُهٗ، وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِیَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَرْسَلَهُ اللّٰهُ دَاعِیًا اِلَی الْهُدٰی وَالْاِصْلَاحِ۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ، وَعَلٰی اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ، وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا۔

اَمَّا بَعْدُ۔ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ۔ حٰمٓ تَنْزِیْلُ الْکِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِیْزِ الْعَلِیْمِ ۝ غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِیْدِ الْعِقَابِ ذِی الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَیْهِ الْمَصِیْرُ ۝

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन-ज़-ल अला अब्दिहिल किता-ब व अख़-र-जन्ना-स बिही मिनल जह्लि वज्ज़लालि इला नूरिल अिल्मि वल हुदा अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अर-स-ल हुल्लाहु दाअियन इलल हुदा वल इस्लाह० अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिन व अला आलिही व अस्हा-बिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़अ़ अूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम० हामीम तंज़ीलुल किता-ब मिनल्लाहि ल अज़ी ज़िल अलीम० ग़ाफ़िरिज़्ज़म्बि व क़ाबिलि त्तौबि शदीदिल अिक़ाबि ज़ित्तौलि ला इला-ह इल्ला हु-व इलैहिल मसीर०

अज़ीज़ दोस्तो ! क़ुरआन पाक में जगह-जगह अल्लाह तआला के अस्मा-ए-हुस्ना का ज़िक्र आया है। अल्लाह तआला के ये नाम असल में उस की सिफ़तें हैं। ईमान की तक्मील के लिए उन तमाम सिफ़तों पर

यक़ीन करना ज़रूरी है। यही सिफ़तें इंसान के सोचने-समझने और अमल करने के रुख को तै करती हैं। अभी जो आयत आपके सामने तिलावत की गयी, उसमें अल्लाह तआला की कुछ सिफ़तों का बयान है। फ़रमाया गया कि वह अज़ीज़ है। अज़ीज़ का तर्जुमा 'ज़बरदस्त' हो सकता है, यानी यह कि वह सब पर ग़ालिब है। वह जो फ़ैसला कर ले, उसे कोई टाल नहीं सकता। वह जो चाहता है, होकर रहता है। कायनात में कोई हस्ती ऐसी नहीं कि जो उस से मुक़ाबला कर के जीत जाए, न कोई उस की पकड़ से बच सकता है, इस लिए अगर कोई शख़्स उससे मुंह मोड़ कर कामियाबी की उम्मीद रखता है, तो वह धोखे में है। हो सकता है कि कुछ दिन उस की रस्सी ढीली छोड़ दी जाए और कुछ अर्से के लिए उस को मनमानी करने के छूट दे दी जाए, लेकिन इस से यह न समझना चाहिए कि कोई उसे नीचा दिखा सकता है। ऐसा अगर कोई सोचता है तो वह सख़्त धोखे में है।

दूसरी तरफ़ इसी सिफ़त में उस के मोमिन बन्दों के लिए बड़ी ढारस का सामान है। हो सकता है कि ख़ुदा की राह पर चलते हुए वे सताए जाएं, सख़्तियों का निशाना बनाए जाएं, लेकिन इस का मतलब यह नहीं होगा कि अगर ऐसा हो रहा है तो वे ना-काम हो रहे हैं। उन का रब सब पर ग़ालिब है। तमाम मामले उस के क़ब्ज़े में हैं। वह जब चाहेगा, पांसा पलट जाएगा।

फिर इसी सिफ़त के साथ दूसरी सिफ़त 'अलीम' भी लगी हुई है, यानी यह कि वह सब कुछ जानने वाला है, कोई बात उस से छिपी हुई नहीं। वह वफ़ादारों की वफ़ादारी से भी बा-ख़बर है और बाग़ियों की बग़ावत को भी देख रहा है। वह जो कुछ करता है, किसी वहम और गुमान और अन्दाज़े की बुनियाद पर नहीं करता, बल्कि वह हर चीज़ का सीधा-सीधा इल्म रखता है।

अज़ीज़ो और दोस्तो ! आप जानते हैं कि मुसलमान बहुत-सी ऐसी चीज़ों पर यक़ीन रखता है, जिन्हें कभी उसने नहीं देखा और न कोई उन को देख सकता है, जैसे जन्नत और दोज़ख़ पर यक़ीन रखता है, फ़रिश्तों के वजूद पर यक़ीन रखता है, आख़िरत में पेश आने वाली उन तमाम बातों को सच जानता है, जिनकी ख़बर अल्लाह और रसूल ने दी है। इस ईमान की बुनियाद भी अल्लाह तआला की यही इल्म की सिफ़त है। मोमिन बंदे को यक़ीन है कि अल्लाह सब कुछ जानता है और उसाक इल्म बिल्कुल

ठीक है, इस में कभी कोई ग़लती नहीं होती। इसी बुनियाद पर वह यह यक़ीन रखता है कि जिन हक़ीक़तों की जानकारी अल्लाह दे रहा है, सिर्फ़ वही सही हो सकती हैं। इंसान अगर उन्हें न मानेगा या उन के ख़िलाफ़ बातों पर यक़ीन रखेगा तो वह यक़ीनन जिहालत का शिकार हो जाएगा। फिर इल्म की इसी सिफ़त का एक तक़ाज़ा यह भी है कि अल्लाह ही सही तरीक़े पर जानता है कि इन्सान की हक़ीक़ी कामियाबी किस बात में है। इस लिए जब वह फ़लाह की कोई राह बताता है तो फिर उस से बेहतर राह दूसरी नहीं हो सकती। इसी यक़ीन का यह तक़ाज़ा है कि इंसान उन तमाम उसूलों और ज़ाब्तों की पैरवी को कमियाबी की वजह समझे, जो अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर किए जाएं, क्योंकि उस की दी हुई हिदायत की बुनियाद हिक्मत और सही इल्म पर है, जिस में ग़लती मुम्किन नहीं। ऐसे अलीम की तरफ़ से आयी हुई हिदायतों को इंसान अगर क़ुबूल नहीं करेगा, तो इस का मतलब यही होगा कि वह ख़ुद ही तबाही के रास्ते पर जाना चाहता है। इल्म की इसी सिफ़त का एक तक़ाज़ा यह भी है कि इंसान अपने कामों के बारे में हमेशा चौकन्ना रहे, क्योंकि उसे यह यक़ीन होना चाहिए कि उस की कोई हरकत अल्लाह से छिपी हुई नहीं है। वह सब कुछ देख रहा है। वह सीनों में छिपे हुए इरादों और नीयतों को भी जानता है। किसी की मजाल नहीं कि उस के हुज़ूर बहाने बना कर बच निकले।

तीसरी सिफ़त जो यहां बयान हुई है, वह 'ग़ाफ़िरुज़्ज़म्बि' और 'क़ाबिलुत्तौबि' है यानी गुनाह माफ़ करने वाला और तौबा क़ुबूल करने वाला। यही वह अहम सिफ़त है कि जिस से इंसान की ढारस बनती है और ज़िंदगी का रुख़ तब्दील करने का चाव पैदा होता है। जो लोग ग़फ़लत और नादानी या शरारत और सरकशी की वजह से ख़ुदा की नाफ़रमानी करते रहे हों, उन्हें भी मायूस होने की ज़रूरत नहीं। अल्लाह तआला की यह सिफ़त उन्हें अपने रवैए पर दोबारा ग़ौर करने की दावत देती है। इस में खुला हुआ एलान है कि अगर अब भी वे ग़लत रवैए से रुक जाएं तो अल्लाह की रहमत के दामन में जगह पा सकते हैं। अल्लाह तआला की असल सिफ़त रहम है। वह मेहरबानी ही करना चाहता है और करता है। अज़ाब और सज़ा तो उन बंदों के लिए है जो पूरी ढिठाई के साथ ग़लत रवैए पर जमे रहें और तौबा किए बग़ैर ही इस दुनिया से रुख़्सत हो जाएं।

जहां तक गुनाहों के माफ़ करने का ताल्लुक़ है, वह तो अक्सर तौबा के बग़ैर भी अल्लाह तआला माफ़ फ़रमाता रहता है, जैसे एक शख़्स ख़ताएं भी करता है और नेकियां भी। उस की नेकियां ख़ताओं के माफ़ होने का ज़रिया बन जाती हैं, चाहे उसे तौबा करने का मौक़ा मिला हो या न मिला हो। इसी तरह दुनिया में इंसान पर जो मुसीबतें और तक्लीफ़ें आती हैं, जैसे बीमारियां, रंज व ग़म, या नुक़्सान वग़ैरह, वे सब उस की ख़ताओं का बदल बन जाती हैं, लेकिन यह याद रखना चाहिए कि ख़ताओं की बख़्शिश की यह रियायत सिर्फ़ उन ईमान वालों के लिए है, जिन का आम रवैया सरकशी और बग़ावत के जज़्बे से ख़ाली हो। रहे कुफ़्फ़ार और मुश्रिक और वे सरकश और बाग़ी इंसान जो जान-बूझ कर ख़ुदा की ना-फ़रमानी करते रहते हैं, उन की माफ़ी के लिए तौबा ज़रूरी है।

चौथी सिफ़त, जिस का ज़िक्र ऊपर आया है, वह है सख़्त 'सज़ा देने वाला।' इस सिफ़त का ज़िक्र कर के यह तंबीह की गयी है कि बन्दगी की राह अपनाने वालों के लिए अल्लाह तआला जितना रहीम व मेहरबान है, बग़ावत और सरकशी करने वालों के लिए वह उतना ही सख़्त भी है।

पांचवीं सिफ़त यह है कि वह 'साहिबे फ़ज़्ल' है यानी उस की रहमतें और इनायतें महदूद नहीं हैं। वह बहुत कुछ दे सकता है और देता है। वह ग़नी है, फ़य्याज़ है और उस की नेमतों और एहसानों की कोई हद नहीं, बंदों को जो कुछ मिल रहा है वह उसी के फ़ज़्ल व करम का नतीजा है। हर चीज़ उसी के फ़ज़्ल और एहसान से पल रही है।

भाइयो और अज़ीज़ो! अल्लाह तआला के अस्मा-ए-हुस्ना में से चार-पांच का ज़िक्र आपने सुना, इसी तरह उस के सारे नाम असल में उस की सिफ़तें हैं। उन सिफ़तों पर आप जितना ग़ौर करेंगे, आपका दिल इसी बात पर मुत्मइन होगा कि माबूदे हक़ीक़ी कोई दूसरा नहीं है और न हो सकता है। लोगों ने चाहे कितने ही झूठे माबूद बना लिए हों, वे सब ग़लत हैं। उन में से किसी में वे सिफ़तें मौजूद ही नहीं जो एक माबूद में होना चाहिए। ये सिफ़तें सिर्फ़ एक ज़ात में हैं और वह अल्लाह की ज़ात है—

और आख़िरी बात यह है कि आख़िरकार सब को उसी की तरफ़ पलट कर जाना है। वही हिसाब लेता है, कोई दूसरा लोगों के आमाल का हिसाब लेने वाला और जज़ा और सज़ा देने वाला नहीं, इस लिए उस को छोड़ कर अगर कोई शख़्स दूसरे माबूदों की तरफ़ रुख़ करता है तो वह अपनी इस ग़लती को इस ज़िंदगी में भी भुगतेगा और आख़िरत में भी उसे

इस हिमाक़त का क़डुवा नतीजा भुगतना ही पड़ेगा।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ
وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व लहुल अस्मा उल हुस्ना अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अज्मईन अल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०

# अमानतदारी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ لَہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ۔ وَلَہُ الْحَمْدُ فِی الْاٰخِرَۃِ وَھُوَ الْحَکِیْمُ الْخَبِیْرُ۔ یَعْلَمُ مَا یَلِجُ فِی الْاَرْضِ وَمَا یَخْرُجُ مِنْھَا، وَمَا یَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا یَعْرُجُ فِیْھَا وَھُوَ الرَّحِیْمُ الْغَفُوْرُ۔ اَحْمَدُہٗ سُبْحَانَہٗ وَاَشْکُرُہٗ وَاَسْئَلُہُ الْمَزِیْدَ مِنْھَا۔ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ نَبِیَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ۔ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا۔
اَمَّا بَعْدُ۔ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ۔ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُکُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمَانَاتِ اِلٰی اَھْلِھَا۔

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि व लहुल हम्दु फ़िल आख़िरति व हुवल हकीमुल ख़बीर यअ़लमु मा यलिजु फ़िल अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समाइ व यअ़रुजु फ़ीहा वहु वर्रहीमुल ग़फ़ूर अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अस् अलु हुल मज़ी-द मिन्हा व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ़्दु फ़अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम इन्नल्ला-ह यअ्-मुरुकुम अन तुअद्दुल अमानाति इला अह्लिहा०

बुज़ुर्गो और दोस्तो !

अल्लाह तआला का इर्शाद आपने सुना, फ़रमाता है कि, 'मुसल-मानो ! अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें अमानत वालों के सुपुर्द कर दो ।'

यह इर्शाद हम पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी डालता है। मोमिन की पूरी

ज़िंदगी अल्लाह तआला की एक अमानत है। इस का मतलब इस के सिवा क्या है कि इस अमानत को इस के असल मालिक की मंशा के मुताबिक़ काम में लाना चाहिए, इस लिए अगर हमारी ज़िंदगी, अल्लाह की बख़्शी हुई सलाहियतें और अल्लाह के बख़्शे हुए वसीले और ज़रिए अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ काम में लग रहे हैं, तब तो ठीक है, यह अमानत का सही इस्तेमाल है और अगर कहीं इन्हें हम अपनी मर्ज़ी या अपने अलावा दूसरे इंसानों की मर्ज़ी के मुताबिक़ काम में ला रहे हैं, तो यह अमानत में ख़ियानत है। इस एतबार से देखा जाए, तो हर-हर क़दम पर हमारी आज़माइश हो रही है और हम या तो इस आज़माइश में कामियाब हो रहे हैं या नाकाम।

भाइयो और अज़ीज़ो! अगर आप का ताल्लुक़ आम लोगों से है यानी समाज में आपको कोई अहम ज़िम्मेदाराना हैसियत हासिल नहीं है, तब भी आप यह नहीं कह सकते कि आप के सुपुर्द कोई अमानत नहीं है। सच पूछिए तो एक बहुत बड़ी अमानत आप के सुपुर्द की गयी है और वह यह है कि आप ख़ुद नेकी और भलाई का रास्ता अपनाएं, कोई काम अल्लाह की ना-ख़ुशी का न करें और जहां तक बन पड़े, उस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई क़दम न उठाएं और फिर उस राह में आप ऐसे सरगर्म हों कि कोई लीडर, कोई नेता, कोई हाकिम या कोई असर रखने वाला शख़्स बुराई फैलाना चाहे, तो वह आम लोगों के भलाई चाहने के जज़्बे के सामने मग़लूब हो जाए और बुराई के इरादे से रुक जाए। जैसे अगर वह चाहता है कि वह फ़िस्क़ व फ़ुजूर का कोई अड्डा क़ायम करे, जुएबाज़ी को ख़ूबसूरत शक्लें और अच्छे-अच्छे नाम देकर चालू करे; नाच-गाना की महफ़िलें जमाए और इस तरह समाज में बुराई को आम करे, तो यह देख कर उस की हिम्मतें पस्त हो जाएं कि जनता उसकी इन स्कीमों का बाइकाट करती है और इन चीज़ों की तरफ़ होकर नहीं फटकती। अगर समाज में यह ताक़त पैदा हो जाए, तो फिर शरारत पसन्द नेताओं को पंजे जमाने का मौक़ा नहीं मिलेगा, बल्कि उन के बदले भलाई चाहने वाले लोग ऊपर आएंगे और रहनुमाई और ज़िम्मेदारी उनके हाथों में चली जाएगी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कैसी सच्ची बात फ़रमायी है कि, 'जैसे तुम होगे, वैसे ही तुम पर हाकिम ग़ालिब होंगे।' इस से यह अन्दाज़ा होता है कि आम लोग सारी ज़िम्मेदारी लीडरों और हुकूमत करने वालों के सर डाल कर ज़िम्मेदारी से अलग नहीं हो सकते, बल्कि उन्हें यह समझना पड़ेगा

कि मामलों को सही रुख पर लाने में ख़ुद उन की ज़िम्मेदारी भी दूसरों से कम नहीं है।

भाइयो! यह बात बिल्कुल सच है कि आम तौर पर हुकूमत करने वाला गिरोह सोसाइटी का मक्खन होता है और अब इस दौर में, जबकि जनता ही के हाथों ये लीडर और नुमाइन्दे चुने जाते हैं, यह बात बिल्कुल सही है कि आम लोग जैसे होंगे, वैसे ही लोगों को वे ऊपर लाएंगे। अब रहे वे लोग जो रहनुमाई की जगह पर रखे जाते हैं, उन को रहनुमाई की अमानत दी गयी है। अगर वे इस अमानत का सही इस्तेमाल नहीं करते, तो वे खियानत करते है, ऐसे लोगों का फ़र्ज़ है कि वे अपने मर्तबे की ज़िम्मेदारी को महसूस करें, और उन्हें जो काम सौंपा गया है, उसे पूरी दयानतदारी और ख़ुलूस के साथ अंजाम दें।

हुकूमत और इक़्तिदार के अलावा भी अमानत की बहुत-सी शक्लें हैं, जैसे अगर आप को सूझ-बूझ और अक़्ल व फ़ह्म की अमानत दी गयी है, तो इस अमानत का तक़ाज़ा है कि आप उस से काम लें और जो बात सही हो, उसे ज़ाहिर करें और जनता को बार-बार किसी एक ही बिल से डसे जाने की मुसीबत से बचाएं और अपनी अक़्ल और समझ की रोशनी में आपने जिस बात को हक़ जाना है, उस के ज़ाहिर करने में कोई झिझक महसूस न करें। आम तौर पर अपना ही फ़ायदा सोचने वाले लोग हर चढ़ते सूरज की पूजा करने के लिए तैयार रहते हैं। उन के नज़दीक हक़ और ना-हक़ के पैमाने बदलते रहते हैं। ऐसे लोग समझते कुछ हैं, लेकिन कहते कुछ हैं और उसे वे अपनी ज़ुबान में 'मस्लहत' कहते हैं। अल्लाह की दी हुई समझ और अक़्ल की अमानत का तक़ाज़ा यह है कि आदमी इस के रवैए को न अपनाए। जब किसी मौक़े पर हक़ के ख़िलाफ़ आवाज़ें उठ रही हों, तो जो लोग यह समझते हों कि हक़ क्या है और ना-हक़ क्या, उन के लिए ऐसे मौक़े पर खामोश रहना अमानत में खियानत करना है। इसी लिए कहा गया है कि सच्ची गवाही का छिपाना भी अमानत में खियानत करना है।

भाइयो और अज़ीज़ो! हम में से हर शख़्स अपने-अपने दायरे में किसी न किसी अमानत का अमानतदार है और यहां किसी अमीन की ज़िम्मेदारी दूसरे से कम नहीं है, क्योंकि हर एक को अलग-अलग अमानत देने वाले के हुज़ूर खड़ा होना है और अपनी अमानतों का हिसाब देना है। मैं चाहता हूं कि आप सब भाइयों को उन की इस अहम ज़िम्मेदारी की

तरफ़ मुतवज्जह करूं।

आज हम सब के लिए इस पहलू की तरफ़ तवज्जोह करने का मौक़ा बाक़ी है, क्योंकि हम सब को अल्लाह की बख़्शी हुई मोहलत मिली हुई है। ऐसा न हो कि हमारे तवज्जोह करने से पहले यह मोहलत ख़त्म हो जाए और हम अपने मालिक के हुज़ूर ख़ुदा न करे इस हाल में पेश हों कि अमानत में ख़ियानत करने का इल्ज़ाम हम पर हो और हम कोई सफ़ाई पेश न कर सकें।

بَارَكَ اللّٰهُ لِیْ وَلَكُمْ وَاسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّ اَتُوْبُ اِلَيْهِ۔ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ۝

बार कल्लाहु ली व लकुम वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली वलकुम मिन कुल्लि ज़म्बिन व अतूबु इलैहि इन्नहू हुवल बर्रुर्रहीम०

# हौसला बुलंद रखो

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدَانَا لِلْاِسْلَامِ ۔ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِیَ لَوْلَآ اَنْ هَدَانَا اللّٰهُ ، وَجَعَلَنَا خَیْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ ، تَاْمُرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهٰی عَنِ الْمُنْكَرِ ، وَتُؤْمِنُ بِاللّٰهِ ، اَحْمَدُهٗ سُبْحَانَهٗ وَاَشْكُرُهٗ ، وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِیَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَرْسَلَهٗ بِالْهُدٰی وَالنُّوْرِ ۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا كَثِیْرًا ۔

अल-हम्दु लिल्लहिल्लज़ी ह्दाना लिल इस्लामि व मा कुन्ना ल-नह्तदि-य लौला अन ह्दानल्लाहु व ज-अ-ल-ना खै-र उम्मतिन उख्रिजत लिन्नासि तअ्मुरु-बिल मअ्रुफ़ि व तन्हा अनिल मुन्करि व तुअ् मिनु बिल्लाहि अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबी-य-ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अर-स-लहू बिलहुदा वन्नूरि अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा०

दोस्तो और अज़ीज़ो !

क़ुरआन करीम में जगह-जगह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और पिछले नबियों से यह कहा गया है कि—

'बश्शिरिल मुअ्मिनीन' यानी ईमान लाने वालों को खुशखबरी दे दो। بَشِّرِ الْمُؤْمِنِیْنَ

सूरः बक़रः में फ़रमाया—

بَشِّرِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

व बश्शिरिल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति अन-न लहुम जन्नातिन तज्री मिन तह्तिहल अन्हार०

'ऐ पैग़म्बर ! जो लोग ईमान ले आएं और अपने अमल दुरुस्त कर

लें, उन्हें ख़ुशख़बरी दे दो कि उन के लिए ऐसे बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बहती होंगी।'

इस ख़ुशख़बरी देने का एक मतलब तो यह है कि आख़िरत में निजात उन ही लोगों के लिए है। ये उस हमेशा रहने वाली ज़िंदगी में अल्लाह की नेमतों से नवाज़े जाएंगे और वहां उन को बड़ी इज़्ज़त और आराम से रखा जाएगा, लेकिन साथ ही इस का मतलब यह भी है कि इन ईमान वालों को अल्लाह की राह में हक़ के दुश्मनों की तरफ़ से जो तक्लीफ़ें पहुंचेंगी और हक़ का कलिमा बुलन्द करते हुए उन्हें बातिल का झंडा बुलंद करने वालों से मुक़ाबला करने में जो कठिनाइयां पेश आएंगी और दुनिया की ज़िंदगी में ये जिन-जिन मुसीबतों से दो चार होंगे, उन सब का अंजाम भी बहुत अच्छा होगा।

आपने सुना होगा कि मिस्र में बनी इस्राईल को फ़िर्औन और उस की क़ौम के हाथों कैसी-कैसी मुसीबतें झेलनी पड़ीं। उसी ज़माने में जब ये अल्लाह के बंदे फ़िर्औन के ज़ुल्म व सितम का निशाना बनाए जा रहे थे, अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा और उन के भाई को यह हिदायत की कि तुम मिस्र में अपनी क़ौम के लिए कुछ मकान का इन्तिज़ाम कर लो और यहां जमाअत के साथ नमाज़ का एहतिमाम करो। इस हिदायत देने के बाद फ़रमाया—

"وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ"

व बश्शिरिल मुअ्मिनीन०

यानी ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दो।

मुराद यह है कि हालात के दबाव से ईमान वालों पर मायूसी रौब व दबदबे का असर और ना-उम्मीदी की जो कैफ़ियत छायी हुई है, वह दूर होना चाहिए। मोमिनों को उम्मीद रखनी चाहिए। उन की हिम्मत बंधाओ, और उन के हौसले बढ़ाओ, उन के अन्दर यह एतमाद पैदा करो कि हर मामले में आख़िरी फ़ैसला बहरहाल अल्लाह के हाथ में है। उन्हें उस की ताक़त पर भरोसा करना चाहिए। उन्हें यह यक़ीन रखना चाहिए कि जब वह फ़ैसला कर लेगा तो हालात को बदलते देर नहीं लगेगी। मोमिनों के लिए मायूस और दुखी होने की ज़रूरत नहीं, उन का वली और सरपरस्त बहुत ज़बरदस्त है। उन्हें बस एक बात की फ़िक्र करनी चाहिए और वह यह कि उन का ख़ुदा उन से ख़ुश रहे, इस के बाद उन के लिए ख़ुशख़बरी ही ख़ुशख़बरी है।

भाइयो और अज़ीज़ो! मोमिन जब अल्लाह की राह में कुछ काम

करने के लिए उठता है, तो उस की राह में कठिनाइयां भी आती हैं और उसे ना-मुवाफ़िक़ हालात से दो चार भी होना पड़ता है, लेकिन खुशनसीब हैं वे लोग, जिन के दिलों में ऐसे हालात में मायूसी और बद-दिली पैदा नहीं होती। मोमिन हरहाल में उम्मीद बांधे रखता है, क्योंकि उस की ज़िम्मेदारी बस इतनी ही है कि वह जो कुछ कर सकता है, उसे करता रहे, नतीजे क्या निकलते हैं, उस की ज़िम्मेदारी इस पर नहीं। मोमिन अल्लाह की राह में बिना किसी शर्त के जद्दोजेहद करता है। वह यह शर्त लगा कर काम नहीं करता कि मेरी कोशिशों के नतीजे में बुराइयां ज़रूर ही मिट जाएंगी, न वह यह समझता है कि अगर उस की कोशिशों के बावजूद हक़ क़ायम नहीं हुआ और बातिल मैदान से नहीं हटा, तो वह नाकाम रहेगा। मोमिन के सामने सिर्फ़ एक बात होती है, वह यह कि मेरे ख़ुदा ने मुझ पर यह ज़िम्मेदारी डाली है कि मैं बुराई को मिटाने के लिए भरपूर कोशिश करूं, हक़ को ग़ालिब करने के लिए अपनी सारी सलाहियत लगा दूं, भलाइयों का हुक्म दूं, और बुराइयों से रोकूं, लोगों को भलाई की राह पर चलाऊं और बुराई के रास्ते बन्द करूं और इस काम में अल्लाह की दी हुई ताक़त और उस की बख्शी हुई सलाहियत को पूरी तरह लगा दूं, इस के बाद अगर दुनिया से बुराइयां न मिटें, हक़ का ग़लबा न हो और बातिल मैदान से न हटे, तो मैं ना काम नहीं हूं।

भाइयो! मुझे और आप को यही जज़्बा अपने अन्दर पैदा करना चाहिए। इस के बाद हमारे लिए मायूसी की कोई बात नहीं। यह जज़्बा अगर जाग जाए तो एक अकेला आदमी हक़ के लिए पूरी दुनिया से लड़ाई मोल ले सकता है और पूरी हिम्मत और बे-खौफ़ी के साथ बुराई के खिलाफ़ लड़ाई करने के लिए मैदान में उतर सकता है।

दोस्तो! एक बात आप हमेशा अपने सामने रखें, वह यह है कि भलाई का काम कभी बर्बाद नहीं होता। आप हरगिज़ यह न समझ लें कि बुराई और शर के खिलाफ़ आप जो थोड़ी-सी ताक़त लगाएं, तो उस का फ़ायदा ही क्या है। आप नेकी को ताक़त पहुंचाने के लिए और भलाई का झंडा बुलंद करने के लिए चाहे कितना ही थोड़े से थोड़ा अमल करें, वह कभी बर्बाद नहीं होता, वह अपना फल लाकर रहता है, चाहे उस पर एक ज़माना ही गुज़र जाए। आप भलाई को फैलाने के लिए जो कुछ भी करते हैं, वह बहरहाल अपना असर छोड़ता है। यह असर कभी जल्द दिखायी दे जाता है और कभी बहुत दिनों के बाद दिखायी देता है। कुछ लोग जब

अपनी कोशिशों के नतीजे तुरन्त नहीं देखते या उन्हें किसी क़रीब ज़माने में अपनी कोशिशों के नतीजे निकलते नज़र नहीं आते तो उन के हाथ-पैर ढीले पड़ने लगते हैं। वे कहते हैं कि बुराई की इस बाढ़ के सामने एक तिनका खड़ा करने का फ़ायदा ही क्या ! ख़राबियों के मौजूदा तूफ़ान के मुक़ाबले में वे अपनी कोशिशों को बहुत मामूली समझते हैं, लेकिन ऐसा समझना किसी तरह भी दुरुस्त नहीं। पहली बात तो यही है कि उन की कोशिशें बहरहाल उन के लिए फ़ायदेमंद होती हैं। अल्लाह तआला के नज़दीक ख़ुलूस की क़ीमत है। नतीजे उस के अपने हाथ में हैं। उसने हमें नतीजे का ज़िम्मेदार नहीं ठहराया है, हमारी कोशिशें किसी हाल में भी बेकार नहीं जातीं और बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं है कि आख़िरत के अज्र और सवाब के लिहाज़ से हमें मायूस न होना चाहिए, बल्कि दुनिया के नतीजों को देखते हुए भी हमें यह यक़ीन रखना चासिए कि भलाई के लिए जो छोटी से छोटी कोशिश की जाती है, वह अपना असर रखती है और कभी न कभी उस का नतीजा सामने आता है।

ज़रूरत इस बात की है कि हालात चाहे कैसे भी हों, अल्लाह के लिए काम करने वालों के दिलों में मायूसी और ना-उम्मीदी हरगिज़ न पैदा होने पाए। मोमिन यह सोच ही नहीं सकता कि वह भलाई के लिए कोई काम करे और वह बर्बाद हो जाए या उसके लिए बे-नतीजा रहे। इस राह में आप अपना माल-वक़्त और अपनी दूसरी सलाहियतें, जो कुछ भी लगाएंगे, उस का फल भी आप को मिलेगा और उस के असर भी पड़ेंगे, अल-बत्ता अगर आप किसी वजह से मायूस होकर अपना वक़्त, अपना माल और अपनी सलाहियतें अल्लाह की राह में ख़र्च करने में कोताही करेंगे तो आप का बदला कम हो जाएगा और अगर जान-बूझ कर आप पहलू बचा-एंगे तो इस बात का डर है कि अल्लाह तआला के सामने इस कोताही का जवाब देना पड़ जाए। अल-बत्ता इस बात का पूरा यक़ीन रखिए कि अगर आपने अपनी हद तक पूरी-पूरी कोशिश कर ली, तो आप को आख़िरत में पूरा अज्र मिलेगा, चाहे आपकी कोशिशों के नतीजे में इस दुनिया से बुराई मिटे या न मिटे। हक़ का वह निज़ाम जो आप क़ायम करना चाहते हैं, वह आप की आंखों के सामने क़ायम हो या न हो।

राहे हक़ के मुसाफ़िरों के लिए यही वह पहलू है, जिस की बुनियाद पर हमेशा यही कहा गया है कि—

'बश्शिरिल मुअ्मिनीन'

(मोमिनों के लिए खुशखबरी दे दो)

यक़ीनन मोमिनों के लिए खुशखबरी ही खुशखबरी है, इस दुनिया में भी और आखिरत में भी।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ عِبَادَ اللّٰهِ وَاَخْلِصُوْا لَهُ الْعَمَلَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ۔

फ़त्त क़ुल्ला-ह अि़बादल्लाहि व अख्लिसू लहुल अ-म-ल व अती उ़ल्ला-ह व रसूलहू लअ़ल्लकुम तुर्हमून०

---

# तीन अच्छाइयां और तीन बुराइयां

نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَتُوْبُ اِلَيْهِ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ
عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا ـ مَنْ يَّهْدِهِ
اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ـ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا
اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ـ اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا ـ
اَمَّا بَعْدُ ـ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ـ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ
وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝

नह्मदुहू व नस्तग्रीनुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नतूबु इलैहि व नुअ्मिनु बिही व न-त-वक्कलु अलैहि व नअूज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना व मिन सय्यिआति अअ्मालिना मंय्यह्दिल्लाहु फ़ला मुज़िल-ल लहू व मंय्युज़्लिलहु फ़ला हादि-य लहू व नश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व नश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हा-बिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़ अअूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम इन्नल्ला-ह यअ्मुरु बिल अद्लि वल इह्सानि व ईताइ ज़िल क़ुर्बा व यन्हा अनिल फ़ह्शाइ वल मुन्करि वल बग़्यि यअिज़ुकुम लअल्लकुम तज़क्करून०

बुज़ुर्गो और दोस्तो ! अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया कि 'अल्लाह अद्ल और एह्सान और रिश्ता जोड़े रखने का हुक्म देता है और बेहयाई और ज़ुल्म व ज़्यादती से मना करता है, वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम सबक़ लो।'

इस छोटी-सी आयत में तीन ऐसी चीज़ों का हुक्म दिया गया है, जिन पर पूरे इंसानी समाज की दुरुस्ती का इन्हिसार है और तीन ऐसी

बुराइयों से रोका गया है जो तबाही की असल वजहें हैं। पहली चीज़ अद्ल(-इंसाफ़) है, इस में दो बातें शामिल हैं—

एक यह कि लोगों के दर्मियान हक़ों में मुनासिब अन्दाज़ की बराबरी रहे, यानी जिस को जितना मिलना चाहिए, उतना मिले और दूसरा यह कि हर एक का जो हक़ है, वह उसे बे-लाग तरीक़े से दिया जाए, हमारी ज़ुबान में अद्ल के मुक़ाबले में जो लफ़्ज़ बोला जाता है, वह इंसाफ़ है, लेकिन इससे कुछ ऐसा ख़्याल पैदा होता है कि दो आदमी के दर्मियान हक़ों की तक़्सीम बराबर-बराबर होनी चाहिए, लेकिन यह बात फ़ित्रत के ख़िलाफ़ है और अद्ल का मतलब इस से कुछ अलग है। अद्ल चाहता है कि हक़ों की तक़्सीम मुनासिब अन्दाज़ में हो, हर अन्दाज़ में बराबरी शर्त नहीं है। बेशक कुछ चीज़ें ऐसी हैं, जिन में बराबरी ही होनी चाहिए। इस हद तक यह बात अद्ल के मतलब में शामिल है, 'जैसे शहरी हुक़ूक़ में सब लोगों को बराबर होना चाहिए, लेकिन कुछ पहलू ऐसे भी हैं जहां बराबरी अद्ल के ख़िलाफ़ है, जैसे समाजी और अख़्लाक़ी एतबार से मां-बाप और औलाद के दर्मियान बराबरी दुरुस्त नहीं। ऊंचे दर्जों की ख़िदमतों को अंजाम देने वालों और कम दर्जे की ख़िदमतें अंजाम देने वालों के मुआवज़े में बराबरी मुनासिब नहीं। हम जानते हैं कि इंसानी समाज में जहां इस क़िस्म की बे-क़ैद बराबरी पर अमल करने की कोशिश की गयी वह न तो कामियाब हुई और न उस के अच्छे नतीजे निकले। इस्लाम इंसाफ़ क़ायम करना चाहता है। अल्लाह तआला के हुक्म का मंशा यह है कि हर शख़्स को उस के अख़्लाक़ी, समाजी, माली, क़ानूनी और सियासी और रहने-सहने के हक़ पूरी ईमानदारी के साथ अदा किए जाएं। आज इंसानी समाज इसी इंसाफ़ से महरूम है, या तो हक़ों की तक़्सीम निहायत ना-इंसाफ़ी के साथ हो रही है या फिर उस के तोड़ पर बनावटी और ग़ैर-फ़ितरी बराबरी क़ायम करने की कोशिशें की जा रही हैं। नतीजा यह है कि अम्न और इत्मीनान की हालत मयस्सर नहीं।

दूसरी चीज़ जिस का हुक्म अल्लाह तआला दे रहा है, एहसान है। इस का मतलब है, नेक बर्ताव, फ़य्याज़ी का मामला, हमदर्दी का रवैया, अच्छा अख़्लाक़, माफ़ी, एक दूसरे के साथ रियायत और एक दूसरे का पास व लिहाज़। दूसरे को उस के हक़ से कुछ कम पर राज़ी हो जाना यह इंसाफ़ से ज़्यादा एक चीज़ है। मिली-जुली ज़िंदगी में उस की अहमियत अद्ल से भी ज़्यादा है। कोई समाज सिर्फ़ इस बुनियाद पर खड़ा नहीं रह

सकता कि उस का हर शख्स हर वक़्त नाप-तौल कर देखता रहता है कि उस का क्या हक़ है, ताकि उसे वसूल कर के छोड़े और दूसरे का कितना हक़ है, ताकि उसे उतना ही दे दे, इस तरह जो ताल्लुक़ात क़ायम होंगे, हो सकता है कि इस में संघर्ष न हो, हक़ों की चीख़-पुकार न हो, लेकिन मुहब्बत, शुक्रगुज़ारी, त्याग, इख़्लास और ख़ैरख़्वाही से वह समाज महरूम रहेगा, ज़िंदगी होगी, जिस में चाहे उलझनें न हों लेकिन उस में मिठास और आनन्द भी नहीं होगा।

तीसरी चीज़, जिस का हुक्म अल्लाह तआला ने दिया है, वह ताल्लुक़ात का जोड़ना है, यानी रिश्तेदारों के साथ अच्छा मामला करना और उन के हक़ों को अदा करना। इस का मतलब बस इतना ही नहीं है कि आदमी अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा बर्ताव करे, ख़ुशी और ग़म में शरीक रहे और जायज़ हदों के अन्दर उनका हामी व मददगार बने, बल्कि इस का मतलब यह भी है कि हर खाता-पीता आदमी अपने माल पर सिर्फ़ अपनी ज़ात और अपने बाल-बच्चों ही के हक़ों को न समझे, बल्कि अपने रिश्तेदारों के हक़ों को भी माने। ख़ानदान के ख़ुशहाल लोगों पर शरीअत यह ज़िम्मेदारी डालती है कि वह अपने ख़ानदान के लोगों को भूखा-नंगा न छोड़े। इस्लाम की निगाह में वह समाज बहुत बुरा है, जिस में एक आदमी ऐश करे और उसी के ख़ानदान के दूसरे लोग मुहताज और परेशान हों। ख़ानदान के ग़रीब लोगों का पहला हक़ अपने ख़ानदान के खाते-पीते लोगों पर है। खाते-पीते लोगों पर यह ज़िम्मेदारी है कि पहले वे अपने ग़रीब रिश्तेदारों का हक़ अदा करें, इसके बाद दूसरे लोगों के हक़ उन पर आते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बात की बार-बार तश्रीह फ़रमायी है कि आदमी के सब से पहले हक़दार उस के मां-बाप हैं, उस के बीवी-बच्चे हैं, उस के भाई-बहन हैं और फिर जो ज़्यादा क़रीब हैं, उतना ही ज़्यादा उन का क़रीबी हक़ है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार इसी उसूल के मातहत एक यतीम बच्चे की परवरिश का ज़िम्मेदार उस के चचेरे भाइयों को बनाया, रिश्तेदारों के होते सब से पहली ज़िम्मेदारी रिश्तेदारों पर आती है, इस के बाद दूसरों पर। इस्लाम एक ऐसा समाज बनाना चाहता है, जिस का हर शख्स अपने-अपने लोगों को संभालने और ऊपर उठाने का ज़िम्मेदार हो। अगर यह पहलू सही तरीक़े पर हमारे सामने रहे तो ज़ाहिर है कि हमारे कितने ही मस्अले हल हो सकते हैं। जिस समाज में

इन तीनों बातों पर ठीक-ठीक अमल हो, ज़ाहिर है कि उसमें कैसी ख़ुशहाली होगी और समाजी एतबार से वहां कैसा मेल-जोल और कैसी मुहब्बत पायी जाएगी और अख़्लाक़ी हैसियत से उसका मक़ाम कैसा बुलन्द होगा। कायनात के मालिक की ये हिदायतें हमारे सारे दुखों का इलाज हैं, बशर्ते कि हम उन्हें अपनाएं और उन के होते फिर और दूसरी तज्वीज़ों और तर्कीबों की तरफ़ न देखें।

इसी आयत में अल्लाह तआला ने तीन भलाइयों के मुक़ाबले में तीन बुराइयों का भी ज़िक्र किया है और उन से रोका है।

पहली चीज़ फ़ह्शा है, जिस में तमाम बेहूदा और शर्मनाक काम दाख़िल हैं, जैसे नंगापन, बेहयाई, बद-फ़ेली की सारी शक्लें, चोरी, शराब पीना, भीख मांगना, कंजूसी, ज़ुल्म, गालियां बकना, बद-कलामी, ग़ीबत वग़ैरह सारी ख़राबियां इस में दाख़िल हैं। इन कामों का करना भी बुरा, उन का फैलाना भी बुरा, इसीलिए झूठा प्रोपगंडा, तोहमत लगाना, छिपे हुए जुर्मों का प्रचार, बद-कारियों पर उभारने वाली कहानियां और नाटक और फ़िल्म, नंगे चित्र, औरतों का बन-ठन कर बाहर निकलना, औरतों और मर्दों का मेल-जोल, स्टेज पर औरतों का नाचना और गाना और इसी तरह की तमाम चीज़ें, ये सब फ़ह्शा में शामिल हैं। किसी समाज को तबाही की तरफ़ ले जाने वाली और उसे बर्बाद करने वाली चीज़ों में यह एक बहुत अहम ख़राबी है।

दूसरी चीज़ जिस से अल्लाह तआला ने रोका है, मुन्कर है, इस में हर वह बुराई शामिल है, जिसे हर ज़माने में इंसान ने आम तौर पर बुरा समझा है और जो हमेशा हर मज़हब में ना-पसंदीदा समझी गयी है।

तीसरी चीज़ 'बग़्य' है, इसका मतलब है हद से गुज़र जाना। आप दूसरों के हक़ों पर हाथ डालें, तो यह 'बग़्य' है। इंसानों के हक़ों को मारना भी बग़्य है और ख़ुदा के हक़ों को अदा न करना भी बग़्य है, ख़ुदा का यह हक़ है कि हुक्म वह दे जिसने पैदा किया है, वही हुक्म चलाने का भी हक़दार है। अब अगर यह हक़ किसी दूसरे का माना जाए, तो यह 'बग़्य' है, ख़ुदा की इताअत के मुक़ाबले में दूसरों की इताअत करना 'बग़्य' है। इसी तरह ख़ुदा का यह हक़ है कि बन्दगी और परस्तिश उस की की जाए, दुआएं उससे मांगी जाएं। अब अगर किसी दूसरे के आगे सर झुकाया जाए, उस की परस्तिश और बन्दगी की जाए या उस से हाजतें तलब की जाएं तो यह 'बग़्य' है और यही सारे बिगाड़ की जड़ है कि इंसान ख़ुदा

के हक़ों से मुंह मोड़े और बंदों के हक़ मार ले।

भाइयो और दोस्तो ! अल्लाह तआला ने तीन बातों का हुक्म दिया और तीन बातों से रोका। ग़ौर कीजिए तो आप के सारे दुखों का इलाज गोया इस छोटी-सी हिदायत में मौजूद है, लेकिन इलाज चाहे कैसा ही बेह-तर से बेहतर तज्वीज़ किया जाए और दवा चाहे कैसी ही उम्दा से उम्दा मालूम की जाए, लेकिन फ़ायदा तो उसी वक़्त होगा, जब उसे इस्तेमाल भी किया जाए। यही हाल उन बातों का भी है, जो अभी आप के सामने आयीं। यह हमारा काम है कि हम सब से पहले अपनी निजी ज़िंदगी में और फिर सब की मिली-जुली ज़िंदगी में अद्ल क़ायम करें, एहसान की फ़िज़ा पैदा करें और रिश्तेदारों के हक़ों से लापरवाही करना छोड़ दें। अपने समाज को फ़ह्शा से पाक करें, मुन्कर से रोकें और बग़्य से बचाएं। यही हमारी कामियाबी की कुंजी है। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम इन हिदायतों की अहमियत को समझें, उन्हें क़ुबूल करें और दुनिया के सामने एक कामियाब समाज का नमूना पेश कर दें। यही सब से बड़ी सआदत है और यही सब से बड़ी कामियाबी है।

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ أَجْمَعِيْنَ إِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ○

अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अजमईन इन्नहू हुवल० बर्रुर्रहीम

———

# दीन की दावत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ، وَ
لَهُ الْحَمْدُ فِی الْاُوْلٰی وَالْاٰخِرَة، وَهُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ۔ اَحْمَدُهٗ عَلٰی
نِعَمِهٖ وَاَشْكُرُهٗ، وَقَدْ تَاَذَّنَ بِالزِّیَادَةِ لِلشَّاكِرِیْن۔ وَاَشْهَدُ اَنْ
لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ، لَا شَرِیْكَ لَهٗ، لَا رَبَّ لَنَا سِوَاهُ وَلَا نَعْبُدُ
اِلَّا اِیَّاهُ۔ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِیَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی
عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا كَثِیْرًا۔
اَمَّا بَعْدُ فَقَدْ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی "وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ یَّدْعُوْنَ
اِلَی الْخَیْرِ وَیَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ، وَیَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ، وَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ"

अल-हम्दु लिल्लाहि अल् हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि व लहुल हम्दु फ़िल ऊला वल आख़िरति व हुवल हकीमुल ख़बीर० अह्मदुहू अला निअ्मिही व अश्कुरुहू व क़द त-अज़्ज़-न बिज़्ज़ियादति लिश्शाकिरीन व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू ला रब-ब लना सिवाहु व ला नअ्बुदु इल्ला इय्याहु व अश्हदु अन-न नबी-य-ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहु-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़-क़द क़ालल्लाहु तआला वल तकुम मिन्कुम उम्म-तु य्यद्‌अू-न इलल ख़ैरि व यअ्मुरून बिल मअ्रूफ़ि व यन्हौ-न अनिल मुन्करि व उलाइ-क हुमुल मुफ़्लिहून०

अज़ीज़ो और दोस्तो ! दीन की तरफ़ दावत देने का काम अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर फ़र्ज़ किया है। मुसलमान इस बात का ज़िम्मेदार है कि अल्लाह की ज़मीन बुराई और बिगाड़ से पाक रहे। अल्लाह की

नज़र में सबसे बड़ा बिगाड़ यह है कि अल्लाह के बंदे किसी और को अपना आक़ा और मालिक बना लें या अपने मालिक को भूल जाएं और समझ लें कि उन का कोई मालिक और आक़ा है ही नहीं।

भाइयो। आपने एक मुद्दत से अपनी इस ज़िम्मेदारी को जैसा अदा करना चाहिए, अदा नहीं किया। यह तो आप जानते ही हैं कि अगर आप किसी बुराई को रोकने की तरफ़ से ग़फ़लत बरतेंगे, तो उस का सब से पहला नतीजा यह निकलेगा कि आप के दिल से बुराई की नफ़रत कम होने लगेगी और अच्छी बातों की क़द्र आप के दिल में घट जाएगी और इतना ही नहीं, कुछ दिनों के बाद हालत यह होगी कि बुरी बातें भली मालूम होने लगेंगी और अच्छी बातों से दिल उचाट हो जाएगा।

—और इतना ही नहीं, मामला इस से भी आगे बढ़ता है और इंसान की बद-नसीबी इस हद तक पहुंच जाती है कि फिर वह बुराई का अलमबदार हो जाता है और भलाई को मिटाने पर तुल जाता है। जब यह नौबत आ जाती है तो खुल्लम खुल्ला बदी का प्रचार होने लगता है और नेकी की राहें बन्द हो जाती हैं, भले लोगों की ज़िंदगी कठिन हो जाती है, बुरे लोग हर तरफ़ छा जाते हैं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार दीन की दावत की तरफ़ से ग़फ़लत बरतने के नतीजों को बयान फ़रमाते हुए असर-दार अन्दाज़ में इर्शाद फ़रमाया—

كَيْفَ اَنْتُمْ اِذَا طَغٰى نِسَاءُكُمْ وَفَسَدَ شَبَابُكُمْ وَتَرَكْتُمْ جِهَادَكُمْ۔

कै-फ़ अन्तुम इज़ा तग़ा निसाउकुम व फ़-स-द शबाबुकुम व तरक्तुम जिहा-द-कुम०

'उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा, जब तुम्हारी औरतें बे-क़ाबू हो जाएंगी, तुम्हारे नव-जवान बद-चलन हो जाएंगे और तुम दीन की राह में जद्दोजेहद करना छोड़ बैठोगे।'

भाइयो ! आप जानते हैं कि किसी समाज में सब से बड़ी ख़राबी यह है कि उस समाज की औरतें उन हदों से बाहर हो जाएं, जिनका ध्यान करना समाज-सुधार के लिए ज़रूरी है। औरत की तरफ़ से अगर आवा-रगी और आज़ादी की शुरूआत हो और वह चाल-चलन के एतबार से बे-क़ैद हो जाए, तो फिर इस समाज में अख़्लाक़ और पाकीज़गी नाम की

कोई चीज़ बाक़ी नहीं रह जाती। यही सूरत नव-जवानों की बद-अख़्लाक़ी की है। जब ये बिगड़ते हैं तो फिर सुधार का कोई मौक़ा बाक़ी नहीं रहता—फिर उस वक़्त उस बिगाड़ की इन्तिहा हो जाती है, जब नेक और भले लोग इन ख़राबियों का मुक़ाबला करने के लिए जद्दोजेहद भी छोड़ बैठें और कोनों में बैठ कर अल्लाह-अल्लाह करने में ही अपनी निजात समझ लें।

जिहाद असल में दीन की रूह है। हर ख़्याल और हर निज़ाम को अपने क़ियाम के लिए इस की ज़रूरत है कि उस के मानने वाले उस को क़ायम करने और क़ायम रखने के लिए लगातार जद्दोजेहद करते रहें। जब किसी निज़ाम के क़ायम करने और क़ायम रखने वाले हाथ ढीले पड़ जाते हैं, तो फिर वह निज़ाम क़ायम नहीं रहता। यही बात इस्लामी निज़ाम के बारे में भी सच है। इस को क़ायम रखने के लिए एक ओर तो एक भला समाज और बेहतरीन अख़्लाक़ी क़द्रों की ज़रूरत है, लेकिन दूसरी ओर लगातार जद्दोजेहद की भी ज़रूरत है। इन्हीं दो बातों की ओर हुज़ूर के इर्शाद में इशारा किया गया है।

जब सहाबा किराम रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ज़ुबान से यह बात सुनी तो उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ, क्योंकि उनके सामने जो इस्लामी समाज मौजूद था, उस को देखते हुए यह कुछ अनहोनी-सी बात मालूम होती थी कि औरतें और नव-जवान इस तरह बुराई का शिकार हो जाएंगे और मुसलमान अल्लाह की राह में जद्दोजेहद करना छोड़ देंगे। चुनांचे उन्होंने ताज्जुब के साथ अर्ज़ किया—

"قَالُوْا وَاِنَّ ذٰلِكَ لَكَائِنٌ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟"

क़ालू व इन ज़ालि-क ल-काइनुन या रसूलल्लाह ?

'बोले, ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या यह भी होने वाला है ?'

तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

"قَالَ نَعَمْ وَالَّذِىْ نَفْسِىْ بِيَدِهٖ وَاَشَدُّ مِنْهُ سَيَكُوْنُ"

क़ा-ल नअम वल्लज़ी नफ़्सी बियदिही व अशद्दु मिन्हु स-यकून०

'हां, बेशक यह भी होगा और क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, इस से भी ज़्यादा कठिन मरहला आने वाला है।'

हुज़ूर सल्ल० की ज़ुबाने मुबारक से यह बात सुन कर तो सुनने वालों को और ज़्यादा ताज्जुब हुआ और उन्होंने पूछा, ऐ अल्लाह के

रसूल ! इस से ज्यादा सख़्त मरहला और कौन-सा है ? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—

كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا لَمْ تَأْمُرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ

कै-फ़ अन्तुम इज़ा लम तअ्मुरू बिल मअ्रुफ़ि व तन्हौ अनिल मुन्करि०

'उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा, जब न तुम नेकी का हुक्म दोगे और न बुराई से रोकोगे ?'

सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन के लिए यह खबर और भी ज़्यादा हैरत में डालने वाली थी, उनके ज़ेहनों में तो ईमान वालों का नक़्शा यही था कि यह ऐसी जमाअत का नाम है, जिस की ज़िंदगी का मक़्सद ही नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना है। वे यह सोच भी नहीं सकते थे कि कोई मुसलमान ऐसा भी हो सकता है, जो न नेकी का हुक्म करे और न बुराई से रोके। चुनांचे उन्होंने फिर बड़े ताज्जुब के साथ अर्ज़ किया कि—

'ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या यह भी होने वाला है ?'

इस के जवाब में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फिर वही इर्शाद फ़रमाया। फ़रमाया, हां, ऐसा भी होगा। साथ ही फ़रमाया कि उस खुदा की क़सम ! जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, इस से भी सख़्त मरहला सामने आने वाला है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! वह क्या मरहला है ? इर्शाद हुआ—

كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا رَأَيْتُمُ الْمَعْرُوفَ مُنْكَرًا وَالْمُنْكَرَ مَعْرُوفًا

कै-फ़ अन्तुम इज़ा रऐ तुमुल मअ्रू-फ़ मुन्क-र वल मुन्क-र मअ्रूफ़न०

'उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम देखोगे कि मारूफ़ मुन्कर बन गया और मुन्कर मारूफ़ हो गया।'

यह बात और भी ज्यादा ताज्जुब की थी। उस वक़्त के ज़ेहनों में यह बात आ ही नहीं सकती थी कि अल्लाह के दीन के नाम लेवा और रसूलुल्लाह सल्ल० के उम्मती ऐसे हो जाएंगे कि उन की नज़र में बुराई और बदी भली हो जाए और जो बातें अच्छी हैं और अल्लाह को पसन्द हैं, उन्हें वह ना-पसन्द करने लगें। उनके ज़ेहनों में मुसलमानों की जो ख़ूबियां थीं, उनको देखते हुए वे लोग ऐसा सोच भी नहीं सकते थे, चुनांचे

उन्होंने फिर अपने और ज़्यादा ताज्जुब को ज़ाहिर किया और कहा कि, 'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या ऐसा भी हो जाएगा ?

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया, 'हां ऐसा भी हो जाएगा बल्कि क़सम है उस ज़ात की, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है कि इस से भी ज़्यादा सख़्त मरहला आने वाला है। सहाबा रज़ि० ने फिर अर्ज़ किया कि 'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इससे ज़्यादा सख़्त और क्या मर-हला होगा ? तब इर्शाद फ़रमाया—

"كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا أَمَرْتُمْ بِالْمُنْكَرِ وَنَهَيْتُمْ عَنِ الْمَعْرُوْفِ"

'कै-फ़ अन्तुम इज़ा अमर्तुम बिल मुन्करि व नहैतुम अनिल मअ्-रूफ़ि'

'उस वक़्त तुम्हारा हाल क्या होगा, जब ख़ुद तुम बुराई का हुक्म दोगे और भलाई से रोकोगे ?'

इस कैफ़ियत का तो ख़्याल भी सहाबा रज़ि० के लिए बर्दाश्त के क़ाबिल न था। यह तो उनके लिए ऐसा ही था कि जैसे पानी का काम अगरचे आग बुझाना है, लेकिन कभी ऐसा हो जाए कि पानी ही से आग लगने लगे, उनके ज़ेहनों में यह बात आ ही नहीं सकती थी कि मुसलमान जो ख़ुद भलाई का सोत है, उस के दम से बदी फैलने लगे और जो पैदा ही हुआ है बदी मिटाने के लिए, वही बदी को परवान चढ़ाने लगे। चुनांचे उन्होंने फिर अपने भारी ताज्जुब को ज़ाहिर किया और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या यह भी होने वाला है ? अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि हां, उस ख़ुदा की क़सम ! जिसके हाथ में मेरी जान है, इससे भी ज़्यादा सख़्त मरहला आने वाला है। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है कि 'मैंने अपनी ज़ात की क़सम खायी है कि उस वक़्त मैं उनके लिए ऐसा फ़ित्ना पैदा करूंगा कि बड़े-बड़े संजीदा लोग भी चक्कर में पड़ जाएंगे।'

भाइयो और अज़ीज़ो ! यह है वह आख़िरी मंज़िल उस ख़राबी और बद-नसीबी की जिसकी शुरूआत दावत के काम की तरफ़ से बे-पर-वाई के नतीजे में होती है और फिर मंज़िल ब-मंज़िल तरक़्क़ी करते करते इस दर्जे को पहुंच जाती है कि फिर कोई इलाज मुम्किन नहीं रहता। भलाई का चिराग़ गुल हो जाता है, फ़साद और ज़ुल्म की अंधियारी छा जाती है। इन्सान की अख़्लाक़ी रहनुमाई के लिए कोई शक्ल बाक़ी नहीं

रहती और इन्सान अपने हाथों बोए हुए कांटों और झाड़-झंकाड़ में ऐसा उलझ कर रह जाता है कि फिर बचाव की कोई राह नज़र नहीं आती। हर तदबीर उलटी पड़ती है। जिस उलझन को दूर करना चाहता है, उस के नतीजे में दस नई उलझनें पैदा हो जाती हैं। जिस मुसीबत को दूर करना चाहता है, उसके नतीजे में सैकड़ों अज़ाब जान के लागू हो जाते हैं और फिर उसे कहीं कोई रोशनी दिखायी नहीं देती। दीन की दावत की तरफ़ से बे-नियाज़ी, अपने माहौल को बुराइयों से पाक करने की कोशिश से जान चुराना, बदी और फ़साद को फैलने देना, ऐसी बड़ी कोताही है कि उस की वजह से आप को निजी तौर पर तो अल्लाह तआला के सामने जवाबदेही करना पड़ेगी, लेकिन बात इतनी ही नहीं है, बल्कि मुसलमान अगर अपनी इस ड्युटी से ग़ाफ़िल होता है तो सारी इन्सानियत तबाही की शिकार होती है। आज दुनिया जिस बिगाड़ और बद-अम्नी की हालत में गिरफ़्तार है, वह असल में इस फ़र्ज़ से कोताही बरतने का नतीजा है। मुसलमानों की जमाअत को अल्लाह तआला ने दुनिया की रहनुमाई के लिए लगाया था। जब यही अपने फ़र्ज़ से ग़ाफ़िल हो गये तो नतीजा इसके सिवा क्या होता, जिसे अब हम अपनी आंखों से देख रहे हैं।

भाइयो और अज़ीज़ो! यह है आप की सही हैसियत इस दुनिया में और ये हैं आप की ज़िम्मेदारियां। अब इस हक़ीक़त की रोशनी में क्या हम में से हर-हर शख़्स के लिए यह ज़रूरी नहीं है कि वह अपनी हालत का जायज़ा ले, अपनी ज़िम्मेदारियों को समझे और अपनी सलाहियत और इस्तेदाद के मुताबिक़ अल्लाह से तौफ़ीक़ तलब करते हुए दीन की दावत के काम के लिए उठ खड़ा हो। अल्लाह तआला हम सब को अपनी ख़ुशी के काम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, जो कोताहियां हो चुकी हैं, उनसे दरगुज़र फ़रमाए और आगे के लिए हमें हिदायत दे कि हम अपनी ज़िम्मे-दारियों को समझें और अदा करें।

اَسْتَغْفِرُاللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ اِنَّهٗ هُوَالْغَفُوْرُالرَّحِيْمُ۔

अस्तग़िफ़रुल्ला-ह ली व लकुम अन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

# सच्चाई की क़द्र व क़ीमत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اَثْنٰى عَلٰى عِبَادِهِ الصَّادِقِيْنَ وَاَعَدَّ لَهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ وَصِدْقِهِمُ
اَلْفَوْزَ الْعَظِيْمَ۔ اَحْمَدُهٗ سُبْحَانَهٗ حَمْدَ مَنْ خَافَهٗ وَرَجَاهُ وَاَشْكُرُهٗ
مُعْتَرِفًا لَهٗ بِنَعْمَاهُ۔

وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهُ الصَّادِقُ الْاَمِيْنُ۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهِ
الَّذِيْنَ اَثْنَى اللّٰهُ عَلَيْهِمْ بِالصِّدْقِ وَوَصَفَهُمْ بِهٖ وَالتَّابِعِيْنَ لَهُمْ
بِاِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ۔

اَمَّا بَعْدُ۔ فَيَقُوْلُ اللّٰهُ سُبْحَانَهٗ: يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا
مَعَ الصّٰدِقِيْنَ۔

अल्हम्दु लिल्लाहि अस्ना अला इबादिहिस्सादिक़ीन व अ-अद-द लहुम बिईमानिहिम व सिद्क़िहिम अल-फ़ौज़ल अज़ीम० अह्मदुहू सुब्हानहू ह-म-द मन-ख़ा-फ़-हू वरजाहु व अश्कुरु हू मुअ्तरिफ़न लहू बिनिअमाहु०

व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अस्सादिक़ुल अमीन०

अल्लाहुम-म सल्लि व सल्लिम अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्म-दिंव-व अला आलिही व सह्बिहिल्लज़ी-न अस्नल्लाहु अलैहिम बिस्सिदक़ि व वस्स-फ़-हुम बिही वत्ताबिअीन लहुम बिएह्सानिन इला यौमिद्दीन०

अम्मा बअदु फ़यक़ूलुल्लाहु सुब्हानहू या ऐयुहल्लज़ी न-आमनुत्त-क़ुल्ला-ह व कूनू मअस्सादिक़ीन०

दोस्तो और अज़ीज़ो ! अल्लाह तआला का इर्शाद आप ने सुना, फ़रमाया कि ऐ वे लोगो ! जो ईमान लाए हो, तुम अल्लाह का तक़्वा

अपनाओ और सच्चों के साथी बन जाओ।'

अल्लाह तआला का यह फ़रमान उसके उन बन्दों के लिए है जो उसे अपना आक़ा और मालिक मानते हैं और जिन्होंने उसकी इताअत का इक़रार किया है, जिन्हें यह यक़ीन है कि उन का मालिक हर-हर बात से बा-ख़बर है और एक दिन उन्हें उसी के हुज़ूर खड़े होकर अपने अच्छे और बुरे कामों का हिसाब देना है।

ऐसे लोगों से कहा जा रहा है कि तुम ज़िंदगी में कोई काम ऐसा न करो जो अल्लाह को नाख़ुश करने वाला हो। हर वक़्त अल्लाह का ख़ौफ़ तुम्हारे दिल में मौजूद रहे और तुम जो कुछ करो, उसकी ना फ़र-मानी से बचते हुए करो, तुम्हें यह डर लगा रहे कि कहीं वह नाराज़ न हो जाए और तुम्हें उसके अज़ाब से दो चार होना पड़े। दिल की इसी कैफ़ि-यत का नाम तक़्वा है। यही कैफ़ियत इन्सान को बुरी बातों से रोकती है और नेकी के रास्तों पर चलाती है। इसी कैफ़ियत के नतीजे में ऐसे काम हो जाते हैं, जिनका नतीजा जन्नत है और यही कैफ़ियत इन्सान को उस रास्ते से महफ़ूज़ रखती है, जो दोज़ख़ की तरफ़ ले जाने वाला है और यह आप जानते ही हैं कि जिसे जन्नत मिल गयी और जो दोज़ख़ से बचा लिया गया, वही असल में सबसे बड़ा कामियाब शख़्स है। दुनिया में भी उसी के लिए भलाई है और आख़िरत में भी बेहतरीन अन्जाम उसी के लिए है।

अज़ीज़ो और दोस्तो! तक़्वा का रवैया अपनाने का हुक्म देने के साथ-साथ अल्लाह तआला ने यह भी इर्शाद फ़रमाया है कि तुम सच्चे लोगों के साथी बनो। सच्चे (सादिक़ीन) उन लोगों को कहा गया है, जो अपने ईमान में सच्चे हैं, जो अपने क़ौल में सच्चे हैं और जो अपने कामों में सच्चे हैं। फ़रमाया गया, तुम ऐसे ही लोगों को अपना साथी बनाओ। तुम्हें चाहिए कि तुम ईमान में उनके साथी बनो, जो ईमानी कैफ़ियतें उनके अन्दर हैं, वही तुम भी अपने भीतर पैदा कर लो। क़ौल में उनके साथी बनो जिस तरह की बातें उनके मुंह से निकलतीं हैं, वैसी ही बातें तुम करो, जिस तरह वे दीन की चर्चा करते हैं, दूसरों तक उस की बातें पहुंचाते हैं, लोगों से नर्मी और अच्छे अख़्लाक़ के साथ बातें करते हैं, वैसा ही अन्दाज़ तुम भी अपनाओ, फिर कामों में भी तुम उनके साथी बनो, उनके सुबह व शाम के मशाग़िल कैसे पाकीज़ा हैं, उनका वक़्त अल्लाह की इबा-दत में लगता है, ख़ुदा की मख़्लूक़ की ख़िदमत में लगता है, अल्लाह की

राह में जद्दोजेहद में लगता है, तुम भी ऐसा ही तरीक़ा अपनाओ, अमल में भी उनके साथी बनो। वे अल्लाह का कलिमा बुलन्द करने के लिए जद्दो-जेहद करते हैं, जान की बाज़ी लगाते हैं, तुम उनके दस्त व बाज़ू बनो, उनका साथ दो। दीन के लिए वे घर छोड़ कर निकलें, तो तुम भी उनके साथ निकलो, दीन के लिए वे जान लड़ाएं, तो तुम भी क़दम पीछे न हटाओ, हर मरहले में उनके साथ रहो। ये लोग वायदे के सच्चे हैं, जो कुछ किसी से कह देते हैं, वैसा ही करते हैं, तुम भी ऐसे ही बनो। ये लोग मामलों के खरे हैं, धोखा, छल, फ़रेब के क़रीब नहीं फटकते, तुम्हें भी ऐसा ही होना चाहिए, तुम भी उन्हीं जैसा बनने की कोशिश करो, ज़ाहिर में भी और बातिन में भी। यही है मतलब 'कूनू मअस्सादिक़ीन' का।

अल्लाह के बन्दो ! सच्चाई की क़द्र व क़ीमत पहचानो। यह इंसानी अख़्लाक़ में सब में सबसे ऊंचे दर्जे का अख़्लाक़ है। निजी ज़िन्दगी के लिए भी इंतिहाई ज़रूरी और जमाअती ज़िंदगी के लिए भी इंतिहाई अहम। किसी इंसान की इन्सानियत सच के बिना तरक़्क़ी नहीं कर सकती और समाजी ज़िन्दगी का कोई ढांचा बग़ैर सच के बाक़ी नहीं रह सकता। कोई आदमी या जमाअत, ख़ूबियों के मामूली दर्जे तक भी नहीं पहुंच सकती, जब तक उसमें सच्चाई की ख़ूबी न हो। सच्चाई ईमान की दलील है, नफ़्स की पाकीज़गी की निशानी है, दिल के सुधार की ज़मानत देता है, बल्कि कहना चाहिए कि तमाम इंसानी ख़ूबियों की बुनियाद है। यही वह चीज़ है, जिस से बन्दा अल्लाह को भी महबूब होता है और बन्दों को भी। जिस शख़्स को लोग सच्चा जानते हैं, उससे मुहब्बत करते हैं, अल्लाह भी उससे मुहब्बत करता है, सच्चे ही आदमी से लोग मामला करना पसन्द करते हैं, उसकी इज़्ज़त करते हैं। अगर वह आलिम है, तो उसके इल्म पर भरोसा करते हैं, फ़ायदा उठाते हैं। अगर डाक्टर है तो उसके मश्विरों को वज़न देते हैं और उसकी बतायी हुई तदबीरों पर अमल करते हैं। अगर वह व्यापारी है, तो उसकी तरफ़ पलटते हैं और उसी से मामला करते हैं, ग़रज़ यह कि ज़िन्दगी के हर मैदान में उसका मर्तबा ऊंचा रहता है और वह अपने सच की वजह से कामियाबी हासिल करता है, नफ़ा कमाता है, इज़्ज़त का दर्जा पाता है और लोगों का महबूब बन जाता है, लेकिन अगर किसी शख़्स से यह ख़ूबी जाती रही, लोग उसे झूठा समझने लगें, तो हमेशा वे उसके निफ़ाक़ से घबराते हैं, उसके धोखे और जाल से डरते हैं, कभी उस पर भरोसा नहीं करते और हमेशा डरते रहते हैं कि न जाने कब

और कहां धोखा दे जाए, क्योंकि जिसे अल्लाह का डर नहीं, वह बन्दों से क्या डरेगा। मामले का खरा और सच्चा तो वही आदमी हो सकता है, जिसे यह यक़ीन हो कि उसकी ज़ुबान से जो बात निकलती है, वह लिख ली जाती है और उसके कामों की निगरानी करने के लिए अल्लाह ने फ़रिश्ते मुक़र्रर कर दिए हैं।

भाइयो! आप जानते हैं कि अल्लाह तआला ने बड़ी ताकीद के साथ मना फ़रमाया है कि इंसान कोई बात बग़ैर इल्म के न कहे। अल्लाह तआला का इर्शाद है—

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا ۝

वला तक़्फ़ु मा लै-स ल-क बिही अिल्मुन इन्नस्सम्-अ वल-ब-स-र वलफ़ुआ-द कुल्लु उलाइ-क का-न अन्हु मस्ऊला।

'किसी ऐसी चीज़ के पीछे न लगो, जिसका तुम्हें इल्म न हो। यक़ी-नन आंख, कान और दिल सभी की पूछ-गछ होनी है यानी जो कुछ कहो, पूरे इल्म और यक़ीन की बुनियाद पर कहो, शुबहा और गुमान की बुनियाद पर बातें मुंह से न निकालो, क्योंकि इस शक्ल में इन्सान झूठ का अपराध करता है और ग़लत बातें मुंह से निकालने लगता है

सब से बड़ा झूठ अल्लाह के साथ दूसरों को उस के अख़्तियारों, हक़ों और सिफ़तों में शरीक करना है। इसी का नाम शिर्क है और इसी को अल्लाह तआला ने सबसे बड़ा ज़ुल्म और बिल्कुल माफ़ न किया जाने वाला जुर्म क़रार दिया है। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में कोई झूठ बात कहना बहुत बुरा गुनाह है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो कोई जान-बूझ कर मेरे बारे में झूठ बात कहे तो वह अपना ठिकाना दोज़ख़ में बना ले। हज़रत इब्ने मस्ऊद ज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि, देखो, सच को अपने ऊपर ज़रूरी बना लो, क्योंकि सच इंसान को नेकी की तरफ़ ले जाता है और नेकी जन्नत की तरफ़ ले जाती है और एक आदमी सच बोलता रहता है और सच पर ही जमा रहता है, यहां तक कि वह अल्लाह के नज़दीक सच्चा लिख दिया जाता है और देखो तुम झूठ से परहेज़ करो, क्योंकि झूठ गुनाह की तरफ़ ले जाता है और गुनाह दोज़ख़ की तरफ ले जाते हैं और एक

आदमी झूठ बोलता रहता है और झूठ पर जमा रहता है, यहां तक कि उसे अल्लाह के नज़दीक झूठा लिख लिया जाता है।' हुज़ूर सल्ल० ने यह भी इर्शाद फ़रमाया कि, 'निहायत अफ़सोस है उन लोगों पर जो लोगों में बैठ कर इधर-उधर की बातें इसलिए सुनाते हैं कि उन्हें हंसाएं और इसमें वे झूठ बोलते हैं, तो बड़ी तबाही है ऐसे लोगों के लिए बड़ी तबाही।'

अल्लाह के बन्दो ! फ़ैसला कर लो कि अब अल्लाह का तक़्वा अपनाओगे, हर मामले में सच्चाई अपनाना अपने ऊपर ज़रूरी बना लोगे, इसी से तमाम भलाइयों के दरवाज़े खुलते हैं, यही अल्लाह की मर्ज़ी का रास्ता है, यही रास्ता जन्नत की तरफ़ ले जाता है और खबरदार जानते-बूझते कभी झूठ के क़रीब न जाओ। झूठी बात मुंह से न निकालो, क्योंकि तमाम बुराइयों के दरवाज़े इसी से खुलते हैं। यही रास्ता अल्लाह की ना-ख़ुशी का रास्ता है और यही इंसान को दोज़ख तक ले जाता है।

अल्लाह तआला हम सबको ईमान और अमल की सच्चाई नसीब करे और हर तरह के झूठ से बचे रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, हमें यह सआदत अता फ़रमाए कि हम क़ुरआन पाक से और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिदायतों से अपनी ज़िन्दगी के लिए सही रोशनी हासिल करते रहें, ख़ुद सच्चे बनें और सच्चों के साथी बन जाएं, झूठ से दूर रहें और झूठों से हमारा कोई ताल्लुक़ न रहे।

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ

مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاسْتَغْفِرُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

अक़ूल क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम वलि साइरिल मुस्लिमनि मिन कुल्लि ज़म्बिन-वस्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

# अल्लाह का वायदा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِی
الطَّوْلِ ـ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ○ اَحْمَدُهٗ سُبْحَانَهٗ وَاَشْكُرُهٗ
وَاَسْئَلُهُ التَّوْفِيْقَ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ بِيَدِهِ
الْهِدَايَةُ وَالتَّوْفِيْقُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ○
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهِ التَّابِعِيْنَ
لَهُمْ بِاِحْسَانٍ ○

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِی الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِی ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ
مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِیْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِیْ شَيْئًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ
بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ○ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا
الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ○

अलहम्दु लिल्लाहि ग़ाफ़िरिज़्ज़म्बि व क़ाबिलित्तौबि शदीदिल अिक़ाबि ज़ित्तौलि लाइला-ह इल्ला हु-व इलैहिल मसीर० अह्मदुहु सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अस्अलुहुत्तौफ़ीक़ि व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू बयदिहिल हिदायतु वत्तौफ़ीक़ व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू खैरुल बरीम व अल्लाहुम-म सल्लिम व सल्लिम अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिवं-व आलिही व सह्बिहित्ताबिअीन लहुम बिएहसान०

अम्मा बअ्दु फ़ अअूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम० व-अ-दल्ला हुल्लज़ी-न आमनू मिनकुम व अमिलुस्सालिहाति ल-यस्तख्लिफ़न्नहुम फ़िल अर्ज़ि कमस्तख्लफ़ल्लज़ी-न मिन क़ब्लिहिम व-ल-युमक्किनन-न लहुम दीन-हुमल्लज़िर्तज़ा लहुम व ल-यु बद्दिलन्नहुम मिम बअ्दि खौफ़िहिम अम्ना०

यअबुदू-न-नी ला युश्रिकू-न बी शैअन व मन क-व फ़-रबअ-द ज़ालि-क फ़उलाइ-क हुमुल फ़ासिक़ून० व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-म व अती-अुर्रसूल लअल्लकुम तुर्हमून०

बुज़ुर्गो और भाइयो ! आपने अल्लाह तआला का इर्शाद सुना। वह फ़रमाता है कि अल्लाह ने वायदा किया है, तुममें से उन लोगों के साथ, जो ईमान लाएं और नेक अमल करें, कि वे उनको उसी तरह ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाएगा, जिस तरह उनसे पहले गुज़रे हुए लोगों को बना चुका है और उनके लिए उनको उस दीन को मज़बूत बुनियादों पर क़ायम कर देगा, जिसे अल्लाह ने उनके हक़ में पसन्द किया है और उनकी मौजूदा ख़ौफ़ की हालत को अम्न से बदल देगा, बस वे मेरी बन्दगी करें और मेरे साथ किसी को शरीक न करें और जो इसके बाद कुफ़्र करे तो ऐसे ही लोग फ़ासिक़ हैं, तुम नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो और रसूल सल्ल० की इता-अत करो। उम्मीद है कि तुम पर रहम किया जाएगा।

भाइयो ! आपने सुना कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ख़िला-फ़त अता करने का वायदा फ़रमाया है, लेकिन आप जानते हैं कि यह बात उन मुसलमानों से नहीं कही गयी है, जो सिर्फ़ गिनती के लिए मुसल-मान हैं, बल्कि यह वायदा उन मुसलमानों से है, जो ईमान में सच्चे हों, जिनके अख़्लाक़ व आमाल अच्छे हों और जो अल्लाह के इस दीन की ठीक-ठीक पैरवी करने वाले हों, जो अल्लाह को पसन्द हैं, फिर उनकी ज़िंदगी हर तरह के शिर्क से पाक हो। वे किसी को न ख़ुदा की ज़ात में शरीक ठहराते हों और न किसी को इन अख़्तियारों और हक़ों का मालिक समझते हों, जो अल्लाह के लिए ख़ास है। वे सिर्फ़ अल्लाह के बन्दे हों, उसके सिवा किसी की ग़ुलामी और इताअत का फंदा उनके गले में न हो, लेकिन जो लोग इन ख़ूबियों के एतबार से कोरे हों और सिर्फ़ ज़ुबानी ईमान के दावे-दार हों, तो उनसे न अल्लाह ने ख़लीफ़ा बनाने का वायदा किया है और न वे ख़िलाफ़त के लायक़ ही हैं, तो ऐसे लोगों को जिनमें वे ख़ूबियां न हों, जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ, कभी यह उम्मीद न रखनी चाहिए कि उन्हें वह इज़्ज़त और बड़ाई नसीब होगी, जिसका वायदा अल्लाह ने किया है।

भाइयो ! हुकूमतें तो दुनिया में क़ायम होती ही रही हैं और होती रहेंगी। दुनिया का इन्तिज़ाम बहरहाल चलेगा। अगर अल्लाह के नेक बन्दे और उसका नाम लेने वाले अपने अन्दर वे ख़ूबियां पैदा न कर सकेंगे, जिनका ज़िक्र अल्लाह तआला ने फ़रमाया है और जो उसका ख़लीफा बनने

के लिए जरूरी है, तो फिर उन्हें दुनिया का इन्तिजाम नहीं सौंपा जाएगा और फिर वे लोग आगे हो जाएंगे जो दूसरे एतबार से बेहतर होंगे। कुछ लोग जब अल्लाह के नाफ़रमानों और उस के बाग़ियों को हुकूमत की कुर्सियों पर देखते हैं तो उन्हें धोखा होने लगता है कि अल्लाह तआला का यह दावा कैसा है कि उसने ऐसे लोगों को हुकूमत अता फ़रमायी। असल में अल्लाह तआला ने खिलाफ़त का वायदा फ़रमाया है और इससे मुराद वह हुकूमत है जो अल्लाह के बनाए हुए क़ानून पर अमल करे और यह साबित कर दिखाए कि वह वाक़ई अल्लाह का नायब बनने का हक़ ठीक-ठीक अदा कर रहा है। अल्लाह ने इसी का वायदा किया है। ऐसी हुकूमत के हक़दार सिर्फ़ ईमान वाले हैं, वे ईमान वाले, जिनमें अख्लाक़ और भले अमल की सिफ़तें मौजूद हों। ऐसे ही नेक लोगों के हाथों अल्लाह का पसंदीदा दीन यानी इस्लाम मजबूत बुनियादों पर क़ायम होता है और यह नेमतें सिर्फ़ अल्लाह के उन बन्दों के नसीब में आती हैं जो खालिस अल्लाह की बन्दगी पर क़ायम रहें, जिनकी ज़िंदगी में शिर्क की मिलावट ज़रा भी न हो।

भाइयो! आपने देखा कि मुसलमानों से अल्लाह तआला ने कैसा बड़ा वायदा फ़रमाया है और हमारा ईमान है कि अल्लाह से ज़्यादा सच्चा वायदा और किसी का नहीं हो सकता। उसे हर तरह की क़ुदरत हासिल है। वह जो चाहे कर सकता है। उसके वायदे को पूरा करने में कहीं से कोई रुकावट नहीं डाली जा सकती। अब अगर मुसलमान खिलाफ़त से महरूम हैं, उन्हें दूसरों की गुलामी में ज़िंदगी गुज़ारनी पड़ रही है या वे तरह-तरह के खौफ़ और अंदेशों का शिकार हैं, उन की जान, माल और आबरू बची नहीं है, तो उसकी वजह इसके सिवा और क्या है कि वे अपने को मुसलमान कहते तो हैं, लेकिन उनकी बहुत बड़ी तायदाद इन खूबियों से महरूम है, जिनके बग़ैर अल्लाह का यह वायदा पूरा नहीं हो सकता।

भाइयो! यह बात खूब अच्छी तरह समझ लो कि अल्लाह के दीन को सर बुलन्दी इस पर नहीं मिलती कि लोग ज़्यादा हैं या कम। तारीख़ गवाह है कि तायदाद में कम लोगों ने बार-बार अपने से ज़्यादा लोगों पर फ़त्ह पायी है। अल्लाह का वायदा जो क़ियामत तक उसकी किताब में महफ़ूज़ कर दिया गया है, बिल्कुल सच्चा है। वह इस वायदे को पूरा कर के रहेगा, वह अपने लश्कर की मदद फ़रमाता रहा है और आगे भी फ़रमाएगा, जरूरत सिर्फ़ इस बात की है कि अल्लाह के बन्दों में ईमान, अख्लाक़ और भले अमल की वे खूबियां पैदा की जाएं, जिनकी जरूरत

है। अल्लाह के दीन की सरबुलन्दी के लिए, सिर्फ़ तायदाद की ज्यादती शर्त नहीं है, इसके लिए कुछ और ही ख़ूबियां चाहिएं।

बुज़ुर्गो और भाइयो ! जिन ख़ूबियों का ज़िक्र अल्लाह तआला ने अपने इस वायदे के साथ फ़रमाया है, उन पर पूरी तवज्जोह देना हममें से एक-एक आदमी की ज़िम्मेदारी है। ईमान, अख़लाक़ और भले अमल के एतबार से हमें अपना जायज़ा लेना चाहिए अल्लाह के दीन के साथ हमारा जो अमली ताल्लुक़ है, उस पर ग़ौर करना चाहिए। अल्लाह की बन्दगी और उसके इताअत के सिलसिले में हमारा जो हाल है, हमें उसे अपने सामने रखना चाहिए और अल्लाह के सिवा जिन दूसरों की ग़ुलामी और वफ़ादारी के तौक़ हमारी गरदनों में पड़ गये हैं, उन्हें हमें महसूस करना चाहिए और उन तमाम पहलुओं से हममें से हर एक को अपनी-अपनी ज़िंदगी को दुरुस्त करना चाहिए। यह तो नहीं हो सकता कि किसी एक दो या दस-बीस आदमियों के ठीक हो जाने के बाद ही अल्लाह का वायदा पूरा हो जाए और जिस हुकूमत का वायदा किया गया है, वह मिल जाए। इसके लिए तो बहरहाल वे सारी वजहें जमा होना ज़रूरी हैं, जिनके बग़ैर इन्क़िलाब नहीं आया करते, लेकिन हममें से हर शख़्स को ख़ूब अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि चाहे दुनिया में ख़िलाफ़त मिलने का वायदा आज पूरा हो या उसमें अभी कुछ वक़्त लगे, वह शख़्स बहरहाल कामियाब है, जिसने अपनी ज़िंदगी को दुरुस्त कर लिया। उसे यक़ीन रखना चाहिए कि अल्लाह की मदद उसकी शामिले हाल होगी, उस पर अल्लाह की ख़ास रहमत का साया रहेगा और अगर वह किसी आज़माइश का शिकार भी हो गया, तो यह भी उसके दर्जों की बुलन्दी की वजह बनेगा और नतीजे के एतबार से आख़िरत में वह उन ख़ुश नसीब लोगों में से होगा, जो उस दिन अल्लाह की रहमत के साए में होंगे, जिस दिन सिवाए उस की रहमत के और कोई साया न होगा। ऐसे शख़्स को अल्लाह तआला सुकूने ख़ातिर और इत्मीनाने क़ल्ब नसीब फ़रमाएगा, वह इन हालात में भी मुतमइन और साबित क़दम रहेगा, जिन हालात में उससे ज्यादा मज़बूत और ताक़तवर लोगों को आप इन्तिहाई परेशानी का शिकार देखेंगे। अल्लाह की ज़ात पर भरोसा, उसके रहम व करम पर भरोसा इंसान में वह ताक़त पैदा करता है, जिसका अन्दाज़ा वे लोग कर ही नहीं सकते, जो या तो ख़ुदा पर ईमान नहीं रखते या जिनका ईमान किसी एतबार से कमज़ोर है।

अज़ीज़ो और दोस्तो ! ईमान की जिन ख़ूबियों का ज़िक्र ऊपर

बार-बार आपके सामने किया गया, उनके पैदा करने के लिए जो तदबीर आपको करना है, उसका ज़िक्र भी अल्लाह तआला ने इसी मौक़े पर फ़रमा दिया। इर्शाद फ़रमाया कि नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो और रसूल की इताअत करो। उम्मीद है कि तुम पर रहम किया जाएगा। यह है वह तदबीर, जिससे आप अल्लाह तआला के रहम व करम को मुतवज्जह कर सकते हैं और जिसकी वजह से आपकी ज़िंदगी सही इस्लामी ज़िंदगी बन सकती है। नमाज़ों का एहतिमाम कीजिए इस तरह जैसे कि एहतिमाम करने का हक़ है, आप पाबंदी से नमाज़ पढ़ें, और सोच-समझ कर पढ़ें।

जमाअत का एहतिमाम करें और नमाज़ पढ़ते वक़्त आपके अन्दर वे ख़ूबियां ज़्यादा से ज़्यादा पैदा हों, जो एक अच्छी नमाज़ के लिए शर्त हैं। नमाज़ अल्लाह तआला के तमाम हक़ों में सबसे अहम हक़ है और उसकी तालीम का मतलब यही है कि आप अल्लाह के तमाम हक़ ठीक-ठीक अदा करें। इसी तरह ज़कात बन्दों के हक़ों में एक बहुत बड़ा बुनियादी हक़ है। उसकी तालीम से इशारा इस तरफ़ है कि तुम बन्दों के हक़ों में भी कोताही न करो। ज़कात इस्लामी इबादतों में एक निहायत अहम बुनियादी इबादत है। इसका नज़्म क़ायम करना, उसे पाबन्दी से अदा करना, मुसलमानों की निहायत अहम ज़िम्मेदारी है। यहां तफ़्सील का मौक़ा नहीं, अगर हम अपनी ज़कात का नज़्म ठीक कर लें, तो यक़ीन रखिए कि हमारे बहुत से समाजी मसअले बड़ी ख़ूबी के साथ हल हो जाएं और आख़िरी बात यह कि जब तक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूरी इताअत न होगी, सुन्नत की पैरवी का जज़्बा ज़िंदगी के तमाम कामों में मौजूद न होगा, हमारी ज़िंदगियां इस्लामी नहीं हो सकतीं, यही वे बातें हैं, जिनके बग़ैर हम अल्लाह के रहम व करम के हमेशा से ज़्यादा ज़रूरतमंद हैं। हमारे लिए उस रहम व करम के सिवा अब कोई सहारा बाक़ी नहीं है। हमने अपनी सब तदबीरें आज़मा देखीं, हमें कहीं से वह कामियाबी नहीं मिली जो हम चाहते थे। हमें यक़ीनन अपने आक़ा और मौला के रहम व करम की ज़रूरत है, इसके बिना हमारा कोई मसअला हल न होगा।

दोस्तो और अज़ीज़ो! अल्लाह तआला बड़ा रहीम व करीम है। इस की रहमत का दामन हर वक़्त हमें अपने साए में लेने को तैयार है। शर्त एक ही है कि हम उसके दामन के साए की तरफ़ क़दम तो बढ़ाएं, उसका वायदा है कि अगर हम इस तरफ़ एक क़दम बढ़ाएंगे, तो उसकी रहमत

हमारी मंज़िल आसान कर देगी। उसकी रहमत ख़ुद हमारी तरफ़ मुत-वज्जह होगी, लेकिन अगर हम मुंह फेर कर दूसरी तरफ़ भागते रहें और उसके रहमव करम से महरूम रहें तो फिर शिक्वा किस बात का। मामला हम में से हर शख़्स की अपनी ज़ात का है, ख़ुद अपने को दुरुस्त करे, अपने भाई का हाथ पकड़ें, अपने साथ ले चलने की कोशिश करे और बिल्कुल यकसू होकर रब की रहमत तलब करे, वह यक़ीनी तौर पर मिलेगी।

اِسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا يُّرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ

وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا۔

इस्तग़्फ़िरू रब्बकुम इन्नहू का-न ग़फ़्फ़ारंय्युर्सि लिस्समा-अ अलैकुम मिदरारा० व युम्दिदकुम बिअम्वलिव-व बनी-न व यजअल-लकुम जन्ना-तिव-व यजअल-लकुम अन्हारा०

भाइयो! अल्लाह से अपनी कोताहियों की माफ़ी चाहो, वह बड़ा मेहरबान और बख़्शिश करने वाला है। उसकी राह में जद्दोजेहद का पूरा-पूरा हक़ अदा करो। उसने तुम्हें एक बेहतरीन उम्मत बनाया है, वह तुम्हारा बेहतरीन मददगार है। हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि अल्लाह हमें अपनी किताब और अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत से फ़ायदा पहुंचाए और अब मैं अल्लाह से अपने लिए, आपके लिए और तमाम मुसलमानों के लिए हर गुनाह से इस्तग़्फ़ार करता हूं। आप भी अल्लाह से माफ़ी चाहें, बेशक वह माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है।

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ

اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ۔

अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम व लिसाइरिल मुस्लिमी-न मिन कुल्लि ज़म्बिंव-व अतूबु इलैहि व अस्तग़्फ़िरुल्ला-ह इन्नहू हुवल ग़फ़ूरु-र्रहीम०

# दुश्मन का मुक़ाबला

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَاَخْرَجَ النَّاسَ
بِهٖ مِنَ الْجَهْلِ وَالضَّلَالِ اِلٰی نُوْرِ الْعِلْمِ وَالْهُدٰی، اَحْمَدُهٗ سُبْحَانَهٗ
وَاَشْكُرُهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، وَ
اَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، اَرْسَلَهُ اللّٰهُ دَاعِيًا اِلَى الْهُدٰی
وَالْاِصْلَاحِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ
وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا- اَمَّا بَعْدُ-

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन-ज़-ल अला अब्दिहिल किता-ब व अख़रजन्ना-स बिही मिनल जह्लि वज़्ज़लालि इला नूरिल अिल्मि वल हुदा अह्मदुहु सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अर स-लहुल्लाहु दाअियन इलल हुदा वल इस्लाहि अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरा अम्मा बअ्दु०

भाइयो और अज़ीज़ो !

हालात मुवाफ़िक़ और मुख़ालिफ़ आते ही रहते हैं। हर इंसान की जिंदगी में भी नरम और गरम हालात आते हैं। क़ौमों को जिंदगी में भी आसानियां और सख़्तियां आती रहती हैं। अल्लाह तआला का बहुत बड़ा फ़ज़्ल है कि उसने हमें अपने दीन की नेमत से नवाज़ा। यह दीन हमें पूरी जिंदगी के लिए और ज़िंदगी के तमाम हालात के लिए खुली हिदायतें देता है। ज़िंदगी का कोई मरहला ऐसा नहीं, जिस के लिए रहनुमाई अल्लाह के दीन में मौजूद न हो, चुनांचे आराम और आसानियों की हालत में हमें क्या करना चाहिए, वह भी हमें बता दिया गया है और परेशानियों और मुश्किलों में हमारा तरीक़ा क्या हो, यह भी हमें सिखा दिया गया है। ज़रूरत इस बात की है कि दीन से हमारा रिश्ता मज़बूत हो और

हम हर हाल में दीन की रहनुमाई की तरफ़ रुजूअ करें और हर हाल में अल्लाह की हिदायतों से रोशनी हासिल करें।

अज़ीज़ो और दोस्तो ! इस वक़्त अलग-अलग वजहों से हम और आप बहुत सख़्त हालात से दो चार हैं। कुछ तो यों ही अम्न व अमान का माहौल ख़त्म हो रहा है, फिर ख़ासतौर पर हमारे लिए हालात और ज़्यादा सख़्त हैं। ऐसे हालात में हमें एक वाक़िए से रहनुमाई मिलती है। हज़रत उमर रज़ि० का ज़माना था। हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० अपने कुछ साथियों के साथ ग़ैर-इस्लामी देशों में दावत व तब्लीग़ के लिए तशरीफ़ ले गये थे, दुश्मन ताक़तवर था। हालात ख़तरनाक थे, ऐसे वक़्त हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० को नसीहत फ़रमाते हुए यह लिखा था कि, 'मैं तुम को और तुम्हारे साथ जो दूसरे मुसलमान हैं, उन सबको हुक्म देता हूं कि हर हाल में अल्लाह का तक़्वा अख़्तियार करो। यही अल्लाह का तक़्वा दुश्मन के ख़िलाफ़ सबसे बेहतर साज़ व सामान है और यही लड़ाई की बेहतरीन चाल है।

भाइयो ! आपने देखा कि दुश्मन के मुक़ाबले के लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुसलमानों को क्या मश्विरा दिया। आप जानते हैं कि यह मुसलमानों की तरक़्क़ी का दौर था। दुश्मन के मुक़ाबले में उनकी ताक़त कम न थी, ऐसे मौक़ों पर कोई कमांडर अपने सिपाहियों को जो मश्विरा भी देता, इससे बिल्कुल अलग मश्विरा हज़रत उमर रज़ि० ने अपने फ़ौजियों को दिया। असल बात यह है कि जब तक इंसान अल्लाह तआला की नाफ़रमानी से बचता है और उसकी ना-ख़ुशी से डरता रहता है, अल्लाह की ताईद और हिफ़ाज़त उसके साथ होती है और मोमिन का सबसे बड़ा सहारा अल्लाह की हिफ़ाज़त और मदद है। यह न हो तो बड़े से बड़े साज़ व सामान से भी काम नहीं चल सकता और यह हासिल हो तो मामूली ताक़त के साथ भी अपने से कहीं ज़्यादा ताक़त का मुक़ाबला किया जा सकता है। मोमिन का काम यह है कि वह किसी हाल में अपने आप को अल्लाह की हिफ़ाज़त और उस की मदद से महरूम न होने दे और उसके लिए बहरहाल तक़्वा की ज़रूरत है।

इसी मौक़े पर हज़रत उमर रज़ि० ने और अधिक नसीहत फ़रमाते हुए यह भी इर्शाद फ़रमाया था कि, 'देखो, तुम लोग दुश्मन से हिफ़ाज़त का जितना ख़्याल रखते हो, इससे ज़्यादा अपने को गुनाह से बचाने का ख़्याल रखना, इसलिए कि तुम्हारा गुनाह ख़ुद तुम्हारे लिए तुम्हारे दुश्मन

से ज़्यादा खौफ़नाक है। मुसलमान इसलिए कामियाब होता है कि उसके दुश्मन अल्लाह की नाफ़रमानी में गिरफ़्तार होते हैं और अल्लाह की ताईद और मदद से महरूम होते हैं। अगर यह बात न हो तो हम कभी उनके मुक़ाबले में कामियाब न हों, इसलिए न हम तायदाद में उनके बराबर हैं और न साज़ व सामान में। ऐसी हालत में अगर हम गुनाह और ना-फ़रमानी में भी उनकी सतह पर आ जाएं तो उनकी ताक़त हमसे बढ़ जाएगी, लेकिन अगर हम गुनाह और ना फ़रमानी से दूर रहें, तो हम उन पर ग़ालिब होंगे और यह ग़लबा ताक़त की ज़्यादती की वजह नहीं, बल्कि गुनाह और ना-फ़रमानी से दूर रहने की वजह होगा।

दोस्तो और बुज़ुर्गो! हज़रत उमर रज़ि० की इस नसीहत की रोशनी में अगर हम अपने गरेबान में मुंह डालें, तो हमें मालूम हो जाएगा कि हमारी परेशानी की असल वजह कहां है। बेशक हम तायदाद में कम हैं, साज़ व सामान भी हमारे पास थोड़ा ही है, लेकिन हम क्या गुनाह और ना-फ़रमानी में भी दूसरों से कम हैं! यक़ीनन नहीं, फिर बताइए कि हमें कामियाबी कैसे हासिल हो? अब दो ही शक्लें हैं—

अगर हम किसी दुश्मन से मुक़ाबला करना चाहते हैं, तो इस से ज़्यादा ताक़त और इस से ज़्यादा साज़ व सामान जुटाएं, फिर यह मुम्किन है कि अगर हम इस ना-फ़रमानी में उससे कम न हों, तब भी वह हमारा कुछ न बिगाड़ सके। दुनिया में दो मुक़ाबले की ताक़तों के फ़ैसले इसी बुनियाद पर होते रहते हैं, लेकिन अगर आप दुनिया की और दूसरी कौमों की तरह एक क़ौम नहीं है, बल्कि आप एक ऐसी उम्मत हैं, जिस का ताल्लुक़ अल्लाह से और अल्लाह के दीन से है, तो फिर आप के लिए कामियाबी की एक ही राह है, आप ना-फ़रमानी और गुनाह में दूसरों से कम रहें, बल्कि कहना चाहिए कि आप अल्लाह की ना-फ़रमानी से बिल्कुल दूर रहें। यों कभी कोई ग़लती हो जाए तो फ़ौरन तौबा करें, अपनी पूरी ज़िंदगी पर गहरी नज़र डालें। जहां-जहां अल्लाह की ना-फ़रमानी हो रही हो, तो उससे बचें, इबादतों में कोताही हो तो उसे पूरा करें, मामले में खराबी हो तो उसे दूर करें। ऐसे ही अख़्लाक़, समाज में रहने-सहने, खाने-कमाने और बन्दों के हक़ अदा करने, ग़रज़ यह कि पूरी ज़िंदगी को अल्लाह की हिदायतों के मुताबिक़ बसर करने का फ़ैसला करें। आप की ताक़त का असल सर चश्मा यही है। आपको पहली लड़ाई अपने नफ़्स और अपनी ख़्वाहिशों से लड़नी है। आप इस में जीत जाएंगे

तो अल्लाह तआला आप को हर दुश्मन पर फ़त्ह नसीब करेगा।

दोस्तो ! आप ख़ूब जानते हैं कि अल्लाह तआला का यह तरीक़ा रहा है कि जब उसके नाम लेवा नाफ़रमानी और गुनाहों के कामों में पड़ जाते हैं, तो वह उन पर ऐसे लोगों को मुसल्लत कर देता है, जो उनसे भी बुरे होते हैं। बनी इस्राईल ने जब अल्लाह की नाफ़रमानी की राह अपनाई तो उन पर मजूस को मुसल्लत कर दिया गया। जब मुसलमानों ने अल्लाह की राह से मुंह मोड़ा, तो उन पर कभी चंगेज़ियों को ग़लबा दिया गया और कभी इस्राईलियों को। आज जो हमारी हालत है, वह भी अल्लाह तआला की इसी सुन्नत के ठीक मुताबिक़ है। जब तक हम अल्लाह के ग़ज़ब को हरकत में लाने वाले काम करते रहेंगे, हमारे लिए कामियाबी की कोई राह हमवार न होगी। हमारा मामला दूसरे तमाम लोगों से अलग है। यहां दो क़ौमों का मस्अला नहीं है, बल्कि एक तरफ़ हम हैं, जो अल्लाह के वफ़ादार होने का दावा करते हैं और इसके बावजूद इस दावे के तक़ाज़े पूरे नहीं करते और दूसरी तरफ़ वे लोग हैं, जिन्होंने ऐसा कोई दावा नहीं किया, इस लिए यहां मामला दो क़ौमों का नहीं है, यहाँ कामियाबी और नाकामी के फ़ैसले के लिए कुछ दूसरे ही उसूल हैं। हमें तो जब भी ग़लबा नसीब होगा, वह सिर्फ़ अल्लाह की मदद और उस की रहमत और मदद की बुनियाद पर होगा। इसलिए हमारा सब से पहला काम यही है कि हम अपने आप को अल्लाह की मदद और उसकी रहमत का हक़दार बनाएं, अपने नफ़्स के ख़िलाफ़ अल्लाह से मदद तलब कीजिए, इसके बाद अपनी हर कामियाबी के लिए अल्लाह से फ़त्ह की तलब कीजिए। यही हमारी कामियाबी की राह है

दोस्तो! अल्लाह का तक़्वा अपनाने और उसकी नाफ़रमानी से दूर रहने का जो मश्विरा आप के सामने आया, आप सब मिल कर उस पर अमल करने लगें तो आप देखेंगे कि हम सब को फ़ायदे हासिल होंगे और हम सब मिल-जुल कर अल्लाह की मदद और मेहरबानी को अपनी आंखों से देखेंगे, लेकिन जब तक यह बात हासिल नहीं है, हममें से हर-हर शख़्स को निजी तौर पर तक़्वा अपनाने और नाफ़रमानी से बचने का फ़ौरन इन्तिज़ाम करना चाहिए, ऐसा करते ही हमें निजी फ़ाइदे हासिल होने लगेंगे, बिल्कुल मुम्किन है कि अगर आप का अपना निजी मामला अल्लाह से ठीक हो जाए तो अल्लाह तआला के फ़रिश्ते इस दुनिया में आप की हिफ़ाज़त करें और आप अलग-अलग परेशानियों से बचे रहें,

लेकिन यह भी हो सकता है कि ज़ाहिरी हालात में जब तक अल्लाह तआला की इज्तिमाई मदद न आए, आप को इस ज़िंदगी में कुछ नुक़्सान पहुंच जाए, लेकिन यह यक़ीन रखिए कि अगर तक़्वा की ज़िंदगी बसर करते हुए और नाफ़रमानी के कामों से दूर रहते हुए आप को यहां कोई नुक़्सान भी पहुंच जाए, यहां तक कि आप को अपने जान व माल से भी महरूम होना पड़े, तब भी हरगिज़ अफ़सोस की बात नहीं है। यह खुद एक बड़ी कामियाबी है। ऐसे लोगों को अल्लाह तआला के यहां जो बुलंद दर्जे नसीब होंगे, उनके मुक़ाबले में जान व माल के ये नुक़्सान कोई हक़ी-क़त नहीं रखते। मोमिन की नज़र हर हाल में आख़िरत के अन्जाम पर रहती है। वह पूरी बे-ख़ौफ़ी के साथ हालात का मुक़ाबला करता है और अगर वह कभी सख़्त हालात में घिर भी जाए, तो बहादुरी के साथ मुक़ा-बला करता है। वह दुश्मनों के लिए नरम चारा नहीं होता, वह अपनी हिफ़ाज़त के लिए आखिरी सांस तक संघर्ष करते हुए जान देता है, क्योंकि उसे यह बता दिया गया है कि जान व माल की हिफ़ाज़त के लिए भी अगर कोई शख़्स जान देता है, तो वह शहीद है और शहादत मोमिन की नज़र में सब से बड़ी दौलत है। शहीद का दर्जा अल्लाह तआला की नज़र में बहुत ऊंचा है और यह आप जानते हैं कि मोमिन की नज़र इसी आख़िरी अंजाम पर है, वह दुनिया का सब कुछ देकर भी अल्लाह के नज़-दीक ऊंचा दर्जा हासिल करना चाहता है। यही उसकी आरज़ू है और इसी के लिए वह कोशिश करता है कि अल्लाह तआला हम सब को उसी आख़िरी कामियाबी के लिए जान तोड़ कोशिश करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हमें अपनी खुशी से नवाज़े, जिस दिन सिवाए उस के फ़ज़्ल और रहमत के कोई सहारा मुम्किन न होगा, वह हमें अपने फ़ज़्ल और रहमत से सरफ़राज़ फ़रमाए।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلْقَوْمِ

الظّٰلِمِينَ وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ٥

रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्न-क अन्तस्समीअुल अलीम० रब्बना ला तज्अलना फ़ित्नतल्लिल क़ौमिज़्ज़ालिमीन० वग़्फ़िर लना वर्हमना व अन-त खैरुर्राहिमीन०

# ईमान का मतलब

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ وَرَبِّ الْعَالَمِيْنَ اَحْمَدُهٗ
سُبْحَانَهٗ لَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ـ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى
اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ ——— اَمَّا بَعْدُ ـ

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिस्समावाति व रब्बिल अर्ज़ि व रब्बिल आलमीन अह्मदुहू सुब्हानहू लहुल किब्रियाउ फ़िस्समावाति वल अर्ज़ि वहु-वल अज़ीज़ुल हकीम व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-म सल्लि व सल्लिम अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हा-बिही व सल्लिम० अम्मा बअ्दु—

अज़ीज़ो और दोस्तो !

आप जानते हैं कि इस्लाम की बुनियाद ईमान पर है और ईमान का मतलब यह है कि इन्सान अल्लाह पर, उसके रसूलों पर, उस की किताबों पर, क़ियामत के दिन पर, फ़रिश्तों पर और तक़्दीर पर ईमान लाए। यों तो ईमान के बहुत से हिस्से हैं, लेकिन अल्लाह पर ईमान इन सब हिस्सों की बुनियाद है। इस के बग़ैर ईमान के किसी दूसरे-हिस्से का एतबार नहीं। सब से पहले अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब अच्छी तरह समझ लेना चाहिए, इसका मतलब सिर्फ़ यह नहीं है कि अल्लाह है। अल्लाह तो यक़ीनन है। आप मानें तब भी, न मानें, तब भी। सिर्फ़ इतनी बात है कि 'अल्लाह है' तो बहुत से काफ़िर मानते हैं। अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब यह है कि आप यह बात मानें कि अल्लाह ही इस काय-नात का पैदा करने वाला है और हमें भी उसी ने पैदा किया है, वही उस का मालिक है। यहां जो कुछ है, उसी का है, वही हमारा हाकिम है और हम सब उसके मह्कूम हैं। इबादत के लायक़ सिर्फ़ वही है, हम सब उसके

ग़ुलाम हैं और हमें उस की बन्दगी करनी चाहिए। जब कोई आदमी इन सब बातों को सच्चे दिल से मान ले और इन सब बातों का इक़रार करे तो हम कहेंगे कि वह अल्लाह पर ईमान ले आया। इसी तरह अल्लाह के रसूल पर ईमान लाने का मतलब भी सिर्फ़ यही नहीं है कि आप मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह का रसूल मान लें, यह तो एक वाक़िए को ज़ाहिर किया गया। ईमान लाने का फ़ायदा जब होगा कि जब आप दिल से यह बात मान लें कि इस कायनात के हाकिम की तरफ़ से दुनिया के बसने वाले इन्सानों के लिए हिदायत का पैग़ाम लेकर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आए हैं। आप ने जो कुछ बताया है, वह अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ बताया है और अब हमें दुनिया के तमाम कामों में आप ही से हिदायत और रहनुमाई हासिल करना है। हम अब हर मामले में आप ही के बताए हुए रास्ते पर चलेंगे और आप ही की बात मानेंगे। आप की हिदायत और हुक्म के ख़िलाफ़ किसी की बात न मानेंगे और आपको छोड़ कर हम किसी दूसरे के पीछे नहीं चलेंगे।

इसी तरह अल्लाह की किताब पर ईमान लाने का मतलब भी सिर्फ़ यह नहीं है कि हम यह बात मान लें कि क़ुरआन मजीद मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लिखी किताब नहीं है, बल्कि यह ख़ुदा की तरफ़ से उतारी गयी है और हम यह बात मान लें कि अब हमारी रहनुमाई और हिदायत के लिए आख़िरी सनद यही किताब है। जो हिदायत या हुक्म इस किताब से साबित है वही मानने के क़ाबिल है। इसके ख़िलाफ़ किसी बड़े से बड़े इन्सान की बात भी मानने के क़ाबिल नहीं। हमारी ज़िदगी के लिए बुनियादी क़ानून वही है, जो इस किताब में दिया गया है। इसके ख़िलाफ़ कोई क़ानून ऐसा नहीं, जिस की इताअत की जाए। यही क़ानून इन्सान की ज़िदगी के लिए बेहतरीन क़ानून है। इसी तरह आख़िरत पर ईमान लाने का मतलब भी सिर्फ़ इतना न समझना चाहिए कि आप यह बात मान लें कि मरने के बाद इन्सान दोबारा ज़िदा होगा। यह ईमान भी उस वक़्त मुकम्मल होता है जब आप दिल से यह बात मान लें कि हम इस ज़िदगी में जो कुछ कर रहे हैं, हमें उसका हिसाब आख़िरत की ज़िदगी में अपने मालिक के हुज़ूर देना होगा और उसी के मुताबिक़ हमें अच्छा या बुरा बदला मिलेगा। हम उन सब बातों को दिल से सच्चा जानें, जो आख़िरत के बारे में क़ुरआन पाक में बयान हुई हैं या जिनका ज़िक्र सहीह हदीसों में आया है। जब तक इन्सान को अल्लाह तआला के सामने हाज़िर

हो कर अपने हर-हर काम के हिसाब देने का यक़ीन न हो, आखिरत पर यक़ीन मुकम्मल नहीं होता।

बुज़ुर्गों और दोस्तो ! यह तो है ईमान की तश्रीह, जब तक आप उन तमाम बातों को दिल से सच्चा न जानें और ज़ुबान से इक़रार न करें आप का ईमान मुकम्मल नहीं होता। इसी ईमान की बुनियाद पर इस्लाम क़ायम है। इस का मतलब यह है कि आपने जो कुछ माना है, आप उसी के मुताबिक़ अमल भी करने लगें। जैसे आप ने यह माना है कि हमारा आक़ा, मालिक और माबूद सिर्फ़ अल्लाह है। यह बात मान लेने के बाद आप वाक़ई अल्लाह के बन्दे बन जाएं, इबादत उसी की अदा करें, इताअत उसी की करें, उसके हुक्मों के खिलाफ़ कोई क़दम न उठाएं, उस की तरफ़ से जो हुक्म मिले, उसके अदा करने में कोई हीला-बहाना न खोजें, वह जिस काम से रोक दे, आप उस से रुक जाएं, वह जिस काम से मना करे, आप उसके क़रीब न जाएं, तो यह इस्लाम है। इसी तरह रसूल पर ईमान लाने को समझ लीजिए कि अगर वाक़ई आप ऐसी ज़िंदगी बसर कर रहे हैं, जिस में हर काम आप अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिदायत के मुताबिक़ कर रहे हैं, हर काम में उनकी इताअत को आगे रखते हैं और किसी ऐसे काम के क़रीब नहीं जाते, जिससे हुज़ूर सल्ल० ने मना फ़रमाया है, तो यही इस्लाम है। इस तरह अगर आप अल्लाह की उतारी हुई किताब क़ुरआन की हिदायतों पर अमल करते हैं और जो क़ानून इस किताब में दिया गया है, उसके मातहत ज़िंदगी गुज़ारते हैं और हर काम करते वक़्त यह ध्यान रखते हैं कि हर काम का बदला क़ियामत में अच्छा मिलेगा या बुरा और इस तरह आपकी ज़िंदगी क़ुरआनी हिदा-यतों के मुताबिक़ बसर हो रही है और हर मामले में आप आखिरत की जवाबदेही का ख्याल रखकर ही कोई रवैया अपनाते हैं, तो यही इस्लाम है। इस्लामी ज़िंदगी में जन्नत का शौक़ और दोज़ख का डर क़दम-क़दम पर ज़ाहिर होता है। मुसलमान को आप हर उस काम की तरफ़ लपकते देखेंगे जिससे जन्नत मिलती है और वह हर उस काम से दूर भागेगा जिस के नतीजे में दोज़ख का डर हो।

इस तरह आप ने देखा कि ईमान का मतलब है कि कुछ बातों का ज़ुबान से इक़रार करना और उन्हें दिल से मानना। इस्लाम का मतलब है, उन पर अमल करना। ईमान लाने के बाद जब कोई शख्स इस्लामी ज़िंदगी बसर करने का फ़ैसला करेगा, तो उस का हर काम अल्लाह और

उस के रसूल की हिदायत के मुताबिक़ होगा और हर काम की आख़िरी ग़रज़ आख़िरत की कामियाबी होगी। इस्लामी ज़िदगी के बुनियादी स्तून वे हुक्म हैं, जिन्हें पूरा करना हर मुसलमान पर ईमान लाते ही फ़र्ज़ हो जाता है। इसमें नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज इस्लामी ज़िंदगी के इंतिहाई अहम अर्कान हैं। उन के बिना आप इस्लाम की कोई कल्पना नहीं कर सकते। ये अगर न हों तो समझना चाहिए कि अभी इस्लाम में कसर है। यही वह अहम स्तून है जिन पर इस्लामी ज़िंदगी की इमारत खड़ी होती है।

आप यह बात भी अच्छी तरह जानते हैं कि इस्लाम इन्सान की पूरी ज़िंदगी को अल्लाह की हिदायतों के मुताबिक़ ढालना चाहता है। ऐसा नहीं है कि ज़िंदगी के कुछ मामलों और इबादतों का ताल्लुक़ तो इस्लाम से हो और ज़िंदगी के बाक़ी मामलों में इन्सान आज़ाद हो कि जो चाहे करे, लेकिन अक्सर ऐसा हुआ है और अब भी हो रहा है कि अल्लाह के बन्दे ज़िंदगी के तमाम मामलों में इस्लाम की बताई हुई राह पर या तो ख़ुद नहीं चलते या दूसरे उन्हें चलने नहीं देते। जब ऐसी सूरतेहाल पैदा हो जाए तो इस्लाम यह हिदायत देता है कि मुसलमानों को इस बात के लिए पूरी जद्दो जेहद करना चाहिए कि ज़िंदगी के तमाम मामलों में इस्लाम ही ग़ालिब रहे और मुसलमान की ज़िंदगी का कोई हिस्सा भी इस्लाम से बाहर न रहने पाए। इसी का नाम जिहाद है। इस के मानी यह हैं कि अल्लाह के बन्दों को अल्लाह का बन्दा बन कर रहने में जो रुकावटें सामने आयें, उन्हें दूर करने की जान तोड़ कोशिश की जाए, लोगों के ज़ेहनों को पलटने के लिए ज़रूरत हो तो तक़रीर और तह्रीर से काम लिया जाए, जिस तरह की दौड़-धूप की ज़रूरत हो वह की जाए और यह कोशिश उस वक़्त तक जारी रहे जब तक अल्लाह का दीन ग़ालिब न हो जाए, यहां तक कि अगर इस काम की ख़ातिर जान और माल की क़ुर्बानी की ज़रूरत भी हो तो पीछे न हटा जाए और जब इस राह में लड़ने की ज़रूरत आ जाए तो उस से भी मुंह न मोड़ा जाए। इस तरह जान लड़ाने और जद्दोजेहद करने को इस्लाम में सब से बड़ी इबादत कहा गया है। यही वह सब से अहम ज़िम्मेदारी है जो ईमान का इक़रार कर लेने के बाद हर मोमिन पर आ जाती है। उसे सब से पहले यह कोशिश करना पड़ती है कि जहां तक मुम्किन हो उस की अपनी ज़िंदगी इस्लामी हिदायतों के मुताबिक़ बसर हो, उस में कोई चीज़ इस्लाम के

ख़िलाफ़ न रहने पाए और फिर उसके बाद दूसरों तक अल्लाह के दीन की दावत पहुंचाना, अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की बन्दगी अपनाने के लिए तैयार करना और अल्लाह के दीन को दुनिया में ग़ालिब करने के लिए जहां तक मुम्किन हो, बराबर जद्दोजेहद करते रहना, मुसलमान की सब से अहम ज़िम्मेदारियां हैं। ये ज़िम्मेदारियां किसी ख़ास शख़्स या गिरोह या जमाअत के लिए ख़ास नहीं हैं, बल्कि हर शख़्स पर आ पड़ती हैं जो ईमान का इक़रार करे, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, बूढ़ा हो या जवान, मर्द हो या औरत, अमीर हो या ग़रीब, लिखा-पढ़ा हो या अनपढ़। दोस्तो और अज़ीज़ो! मैंने आप की ज़िम्मेदारियों की तरफ़ अपनी बातों में जो इशारे किए हैं, हो सकता है, वे आप को कुछ ज़्यादा भारी महसूस हों, लेकिन जब आप ईमान और इस्लाम को समझेंगे, तो महसूस कर लेंगे कि ये हमारी वे कम से कम ज़िम्मेदारियां हैं, जो हर मुसलमान पर आ ही जाती हैं और यह बात आप अच्छी तरह जानते हैं कि मुसलमान से अल्लाह तआला ने जिस नेमत भरी जन्नत का वायदा किया है, वह आख़िर कोई ऐसी गिरी पड़ी चीज़ तो नहीं है कि बग़ैर किसी मेहनत के यों ही किसी ख़ास ख़ानदान या घराने में पैदा हो जाने की वजह से किसी को मिल जाए। हर नेमत के लिए इन्सान को कुछ कोशिश करना पड़ती है। अल्लाह तआला ने तो साफ़-साफ़ इर्शाद फ़रमाया है कि मोमिन की जान और माल सब कुछ अल्लाह तआला ने जन्नत के बदले में ख़रीद लिया है। अगर आप इक़रार करते हैं कि आप मोमिन हैं, तो इसका मत-लब यही है कि कोई चीज़ आप की अपनी नहीं है, जिसे आप बचा कर रखें, आप तो सब कुछ जन्नत के बदले बेच चुके हैं। अब आप को ज़िंदगी सिर्फ़ इस तरह गुज़ारना है, जो अल्लाह को पसन्द हो और आप को अपनी तमाम सलाहियतें सिर्फ़ इस तरह काम में लानी हैं, जिस तरह अल्लाह की मर्ज़ी हो। इस काम के लिए सबसे पहली ज़रूरत तो यह है कि आप अपने दिल व दिमाग़ में इस बात का फ़ैसला कर लें कि चाहे हालात कैसे ही हों, आप को एक मुसलमान की तरह ज़िंदगी बसर करना है। हालात कैसे ही हों, आपको पक्का मुसलमान बन कर रहना है। इस फ़ैसले के बाद आप अपने वक़्त की क़द्र कीजिए, मेहनत से काम करने की आदत डालिए। वक़्त एक दौलत है जो अल्लाह ने दी है, उस को बेकार न होने दीजिए, कोई नहीं जानता कि यह मोहलत कब ख़त्म होने वाली है, आप को जो ताक़त और सलाहियत अल्लाह ने दी है, वह अल्लाह की अमानत है, चाहे

यह माल व दौलत हो या जेहनी व अमली सलाहियत, उसकी क़द्र कीजिए उस को सही कामों में लगाइए, जहां तक बन पड़े, अपनी दीनी मालूमात बढ़ाइए, अच्छी किताबें पढ़िए, दूसरों से पढ़वा कर सुनिए और दीनी जानकारियों से हमेशा अपने ईमान को ताज़ा रखिए और अमल की ताक़त बढ़ाइए, ऐसी किताबें जुटाइए जो आप को आपके दीन की जानकारी दें। क़ुरआन पढ़िए, उर्दू (हिन्दी) में क़ुरआन के तर्जुमे और तफ़्सीरें अच्छी-खासी मौजूद हैं, उन से फ़ायदा उठाने की कोशिश कीजिए। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों के तर्जुमे और तश्रीहें हमारी ज़ुबान में मौजूद हैं, उन को पढ़िए, उन पर ग़ौर कीजिए और उन के मुताबिक़ अमल करने की कोशिश कीजिए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत, आप के सहाबा रज़ि० की ज़िदगियों के हालात और बुज़ुर्गों की पाकीज़ा ज़िदगियों के हालात का मुताला कीजिए, इसी से आपके अन्दर दीनी रूह पैदा होगी। जिन लोगों के लिए मुम्किन हो, वे कुछ न कुछ अरबी ज़ुबान सीखने की ज़रूर कोशिश करें। अल्लाह की किताब से फ़ायदा उठाने और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात से नफ़ा हासिल करने के लिए यह बहुत ज़रूरी है।

इस्लामी ज़िदगी बसर करने के लिए नमाज़ का एहतिमाम ऐसा ही ज़रूरी है, जैसे ज़िदा रहने के लिए खाना। इस से कभी ग़फ़लत न बरतिए। इसके बाद नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज को उन की शरई पाबन्दियों के साथ अदा करने का एहतिमाम कीजिए। आज सारे माहौल में ग़ैर-इस्लामी ख्यालात और आमाल की बहुत ज़्यादती है, उन से दामन बचाने के लिए बड़े एहतिमाम की ज़रूरत है। हर तरह की बद-अख़्लाक़ी, बे-किरदारी और ग़ैर इस्लामी कामों से पूरी कोशिश के साथ बचिए। जब तक शुरू की ये बातें न अपनायी जाएं, और जहां तक आप के बस में है, आप अपनी ज़िदगी को इस्लामी सांचों में न ढालें, उस वक़्त तक अगला क़दम बढ़ाने की गुंजाइश नहीं निकल सकती। दीन को क़ायम करना आप की ज़िम्मेदारी है, पहले अपने नफ़्स पर, फिर अपने क़रीबी माहौल पर और फिर उस के बाद उस का दायरा आगे फैलता है, उस की सही तर्तीब यही है। जो लोग इस तर्तीब को उलट देते हैं, वे न यहां कामियाब होते हैं और न आख़िरत की कामियाबी उन के हिस्से में आती है—

أَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَاسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ۔

अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम व लि साइरिल मुस्लिमीन इन्नहू हुवल बर्र रहीम०

---

# क़ुरआन का हक़-१

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ
عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا۔ اَحْمَدُهٗ
سُبْحَانَهٗ عَلٰى نِعَمِهِ الَّتِیْ لَا تُعَدُّ وَلَا تُحْصٰى وَالشُّكْرُهٗ۔ اَشْهَدُ اَنْ لَّا
اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ۔ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ
مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ۔ اَمَّا بَعْدُ۔

अलहम्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तश्रीनुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नुअ्-मिनु बिही व न-त-वक्कलु अलैहि व नअूज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना व मिन सय्यिआति अअ्मालिना अह्मदुहू सुब्हानहू अला निअ-मि-हिल्लती ला तुअद्दु व ला तुह्सा व अश्कुरुहू अश्हदुअल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अअूज़ु बिल्लाहि मिनश-शैतानिर्रजीम किताबुन अन्ज़ल्ना-हु इलै-क मुबारकुल्लि यद्दब्बरू आयातिही व लि-त-ज़क्क-र उलुल अलबा-बि० अम्मा बअ्दु०

भाइयो और अज़ीज़ो !

हमारा और आप का ईमान है कि क़ुरआन पाक अल्लाह की आख़िरी किताब है। यह ज़मीन और आसमान के बादशाह की तरफ़ से इन्सानियत के नाम आख़िरी फ़रमान है और इस एतबार से इस की क़द्र व क़ीमत का हम जो अन्दाज़ा भी लगाएं वह कम ही होगा, जो लोग इस हक़ीक़त को जानते और मानते हैं और ख़ुदा का लाख-लाख शुक्र है कि हम और आप उन्हीं लोगों में से हैं। उन की सब से अहम ज़िम्मेदारी यह है कि वे ख़ुद अपने-से यह सवाल करें कि क्या वे उस फ़रमाने आली का हक़ अदा कर रहे हैं, वह हक़ जो उन्हें अदा करना चाहिए। यह बात इस

लिए भी बहुत ज़रूरी है कि हमारा अक़ीदा है कि आख़िरत की हमेशा रहने वाली ज़िंदगी की कामियाबी इस के बग़ैर मुम्किन ही नहीं कि हम उस फ़रमाने आली का हक़ ठीक-ठीक अदा करें।

भाइयो और अज़ीज़ो! मैं आज की सोहबत में आप को यह बताना चाहता हूं कि हर मुसलमान पर क़ुरआन के क्या-क्या हक़ हैं।

क़ुरआन का सब से पहला हक़ तो हम पर यह है कि हम उस पर ईमान लाएं। आप जानते हैं कि ईमान के दो पहलू हैं—एक ज़ुबान से इक़रार करना और दूसरे दिल से सच्चा जानना, तो क़ुरआन पर ईमान लाने का मतलब यह हुआ कि हम इस बात का इक़रार करें कि यह सब अल्लाह का कलाम है। इस में कोई एक लफ़्ज़ भी किसी और का शामिल नहीं है, जो कुछ हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के ज़रिए अल्लाह की तरफ़ से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरा था, वह यही है बिल्कुल मुकम्मल और ज्यों का त्यों। किसी ने इस में न कुछ घटाया है और न बढ़ाया है। यह बात हम ज़ुबान से भी कहें और दिल से भी इसी बात को सच्चा जानें, इस के ख़िलाफ़ कोई बात हम न मानें।]

अज़ीज़ो! ईमान का मामला भी अजीब है। ज़ुबान से इक़रार करने और दिल से सच्चा जानने के दावे के बावजूद कभी-कभी यह बहुत कमज़ोर हालत में होता है और इंसान को ख़ुद पता नहीं चलता कि उस के दिल में ईमान किस दर्जे में है। हां, दिल की कैफ़ियत को इंसान के ज़ाहिरी आमाल से एक हद तक परखा जा सकता है। यही क़ुरआन पर ईमान लाने की बात ले लीजिए। अगर क़ुरआन पर वैसा ईमान होगा, जैसा कि होना चाहिए, तो फिर आप के दिल में उस की बड़ी बड़ाई होगी। आप का दिल उसे पढ़ने को चाहेगा, पढ़ने में दिल लगेगा, पढ़ते वक़्त आप पर कैफ़ियत छा जाएगी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में आता है कि आप जब क़ुरआन पढ़ने खड़े होते तो ऐसा गुम हो जाते कि खड़े-खड़े आप के पांव सूज जाते थे, कभी एक तिहाई, कभी आधी और कभी दो तिहाई रात इसी तरह बसर हो जाती। कभी-कभी आप पर इतना ज़्यादा असर होता कि आप के आंसू बहने लगते। बात यही थी कि आप को पूरा-पूरा यक़ीन था कि यह अल्लाह का कलाम है। इस कलाम की बड़ाई से आप का दिल भरा हुआ था और यह मुम्किन नहीं था कि कहीं से इस की कोई आवाज़ कान में पड़ी हो और आप मुतवज्जह न हो गये हों। इस के मुक़ाबले में देखिए, हमारे दिलों का हाल

क्या है ! इसकी बड़ाई से हमारे दिल खाली हैं, पढ़ने में दिल नहीं लगता, इस पर ग़ौर व फ़िक्र की तरफ़ चाव नहीं होता, उस के हुक्म और हिदायतें बार-बार हमारे सामने आती हैं, लेकिन हम अक्सर सुनी-अनसुनी कर देते हैं, हद यह है कि जानते-बूझते बहुत-से ऐसे काम करते हैं, जिन से साफ़-साफ़ क़ुरआन मजीद में रोका गया है और ऐसे कामों से जान चुराते हैं जिन की ताकीद फ़रमायी गयी है।

अज़ीज़ो और दोस्तो ! मैं आप को मलामत करने नहीं खड़ा हुआ हूं, हां, अपना फ़र्ज़ समझता हूं कि मैं खुद अपने नफ़्स से और आप से यह कहूं कि हम ज़रा अपने दिल को टटोलें और देखें, कहीं ऐसा तो नहीं है कि हम सिर्फ़ एक विरासती अक़ीदे के तौर पर क़ुरआन को अल्लाह की किताब तो कहते हैं, लेकिन हमारी ज़िदगी और ज़िदगी के मामलों से उस का कोई ताल्लुक़ न हो।

आप के दिल में यह सवाल पैदा हो सकता है कि अच्छा फिर इस कमी को दूर करने के लिए हम क्या करें। इस का जवाब यह है कि इस ईमान को बढ़ाने का ज़रिया भी खुद क़ुरआन ही है। ईमान कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम बाहर से ला कर दिल में ठूंस दें। यह तो एक रोशनी है जो इंसान के अन्दर पैदा होती है। इस रोशनी को पैदा करने और बढ़ाने में खुद क़ुरआन के मुताले से ताक़त हासिल होती है। माहौल के असर और ग़लत तालीम व तर्बियत की वजह से इंसान के अन्दर की यह रोशनी हल्की पड़ने लगती है और धुंधली हो जाती है। बुरे आमाल और गन्दे काम भी ईमानी रोशनी को धुंधला करते हैं।

क़ुरआन का पढ़ना, जिस का ज़िक्र ज़रा तफ़्सील से इनशाअल्लाहु आगे आप के सामने आएगा, खुद इस बात के लिए काफ़ी है कि इस से आप की ईमानी कैफ़ियत में बढ़ोतरी हो। इस में वे दलीलें भी आप के सामने आएंगी, जिन से आप का यक़ीन बढ़ेगा, वह तफ़्सीली बातें भी आप पढ़ेंगे, जिन से ईमान को ताक़त मिलेगी, इस से दिल के मोर्चे दूर होते हैं, इसी से मुर्दा जज़्बात में ताज़गी आती है।

क़ुरआन पर ईमान जैसे-जेसे गहरा और मज़बूत होता जाएगा, क़ुरआन के साथ हमारे ताल्लुक़ में भी एक इन्क़िलाब आएगा। हम अपने सच्चे मालिक और आक़ा को देख नहीं सकते, उसकी कोई बात सुन नहीं सकते, हां उसका यह कलाम हमारे पास है और यह मुम्किन नहीं कि जिस की बड़ाई और मुहब्बत का एहसास हम अपने इस आक़ा के सिलसिले में

अपने दिल में पाएं, इसी लगाव, उसी मुहब्बत और उसी बड़ाई का एहसास उसी कलाम के बारे में हमारे दिलों में पैदा न हो। हमें महसूस होगा कि यही वह सब से बड़ी दौलत और सब से बड़ी नेमत है, जो हमें मिली हुई है, उस वक़्त उस की तिलावत हमारी रूह का भोजन बन जाएगी, उसके बग़ैर हमें चैन न आएगा और हमारे दिल व दिमाग़ के लिए यही एक रोशनी होगी, जिस की मदद से ज़िंदगी के हर शोबे में हम रहनुमाई हासिल कर सकें। इस के पढ़ने से कभी हमारा दिल न भरेगा, इस पर सोच-बिचार करने से रूहानी ख़ुशी हासिल होगी और हम अपनी बेहतरीन सलाहियतें इसी को समझने और समझाने पर लगाने में अपनी सब से बड़ी सआदत महसूस करेंगे।

दोस्तो और अज़ीज़ो! यह है अल्लाह की किताब का पहला हक़ जो हम पर आता है। हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह हमें इस हक़ के अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا وَاسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ۔ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِیْمُ۔

अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अज-मईन० इन्नहू हुवल बर्रु रहीम०

---

# क़ुरआन का हक़-२

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ
اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ، وَمَنْ
يُّضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهٗ، وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ
لَهٗ، خَلَقَ فَدَبَّرَ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَكْرَمُ
نَبِيٍّ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اَشْرَفُ كِتَابٍ، نَبِيٌّ اَكْمَلَ اللّٰهُ بِهِ الدِّيْنَ وَاَتَمَّ
عَلَيْنَا بِهِ النِّعْمَةَ۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ، وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ
تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا۔ اَمَّا بَعْدُ۔

अल-हम्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तओनुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नअूज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना व मिन सय्यिआति अअ्मालिना मंय्यह्दिल्लाहु फ़ला मुज़िल-ल लहू व मंय्युज़्लिल फ़ला हादि-य लहू व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू लाशरी-क लहू ख़-ल-क़ फ़-दब्ब-र व अश्हदु अन-न नबीय-ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अक्रमु नबीयिन उन्ज़ि-ल अलैहि अश-र-फ़ किताबिन नबीयुन अक्मलल्लाहु बिहिद्दी-न व अतम-म अलैना बिहिन्निअम-त०

अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिन व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा० अम्मा बअ्दु

अज़ीज़ो और दोस्तो !

क़ुरआन पाक की तिलावत एक बहुत बड़ी इबादत है और हम पर जो उसे ख़ुदा की किताब तस्लीम करते हैं, क़ुरआन का यह हक़ है कि हम उसकी तिलावत करें, ईमान को तर व ताज़ा रखने के लिए क़ुरआन की तिलावत एक बड़ा असरदार ज़रिया है। यों समझिए कि रूहानी ज़िंदगी के लिए उसकी हैसियत भोजन की-सी है। तिलावत अरबी भाषा

का एक लफ़्ज़ है, इसका मतलब है, बड़ी इज्ज़त और एहतिराम के साथ पवित्र आसमानी किताब समझते हुए उसे पढ़ना, समझना और उसकी ठीक ठीक पैरवी के लिए अपने आपको हवाले कर देना। क़ुरआन कोई ऐसी किताब नहीं है कि जिसे एक बार समझ लेना काफ़ी हो। अगर ऐसा होता तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसकी जरूरत नहीं थी कि आप उसे बार-बार पढ़ते, लेकिन क़ुरआन ही से मालूम होता है कि खुद अल्लाह तआला ने आपको लगातार क़ुरआन पढ़ते रहने की बार-बार ताक़ीद फ़रमायी है। मक्का की ज़िंदगी में जब हालात बहुत सख्त थे, तो इंतिहाई ताकीदी हुक्म हुआ कि रात का बड़ा हिस्सा आप अपने अल्लाह के हुजूर खड़े होकर और ठहर-ठहर कर क़ुरआन पढ़ने में बसर करें। इसके अलावा जब भी मुश्किलों और मुसीबतों का ज़ोर होता तो सब्र और जमाव की ताक़त हासिल करने के लिए नमाज़ और क़ुरआन पढ़ने ही का हुक्म होता। इससे मालूम होता है कि क़ुरआन की तिलावत लगातार करते रहना बेहद ज़रूरी है, खासतौर पर जब हालात सख्त हों, मुसीबतों की भीड़ हो और मुसलमान अपने को बे-यार व मददगार पाते हों, तो उस वक़्त उनको ताक़त देने वाली चीज़ों में नमाज़ और क़ुरआन की बड़ी अहमियत है। यह मोमिन की रूह का खाना है, इससे ईमान तर व ताज़ा होता है और तर व ताज़ा रहता है।

दोस्तो और अज़ीज़ो! क़ुरआन मजीद की तिलावत हर ज़माने में उन लोगों की ज़िदगी के रोज़ के कामों में शामिल रही है, जिन्हें दीनी ज़ौक़ था। क़ुरआन की तिलावत अगर पाबन्दी से हो रही है, तो यह इस बात की निशानी है कि मुसलमान का ताल्लुक़ दीन मे बाक़ी है, और वह उसे बाक़ी रखना चाहता है, इस लिए निहायत ज़रूरी है कि हर मुसलमान अपने हालात और सलाहियत को सामने रखकर कोई ऐसी मिक़्दार ज़रूर तै करे, जिसे वह पाबन्दी के साथ रोज़ाना पढ़ता रहे। क़ुरआन के इस तरह पढ़ने में इस बात का एहतिमाम भी करना चाहिए कि इसका कुछ न कुछ हिस्सा आप समझ कर ज़रूर पढ़ें। क़ुरआन समझने के लिए अरबी का जानना बेशक फ़ायदेमंद है, लेकिन शर्त नहीं। जो लोग अरबी नहीं जानते, वे भी तर्जुमों की मदद से काम चला सकते हैं और उर्दू ज़ुबान में तो ऐसी तफ़्सीरें भी मौजूद हैं, जिनसे क़ुरआन समझने में बड़ी मदद मिल सकती है। यह कहना सही नहीं है कि हर शख्स क़ुरआन को पूरी तरह समझ सकता है। बड़े-बड़े आलिम, जिन्होंने क़ुरआन ही के समझने में

अपनी उम्रें खत्म कीं, यह नहीं कह सकते कि उन्हों ने क़ुरआन को पूरी तरह समझ लिया है। क़ुरआन के बहुत से हिस्से ऐसे हैं, जिन पर वे लगातार विचार करते रहते हैं, लेकिन इस के बावजूद क़ुरआन के वे हिस्से जिनमें हमारे लिए नसीहतें हैं, जिनमें अल्लाह तआला की ज़ात और सिफ़ात का ज़िक्र है, जिनमें आख़िरत की याददेहानी कराई गई है, अज़ाब व सवाब का ज़िक्र है और जन्नत-दोज़ख़ के हालात बयान हुए हैं, ऐसे तमाम हिस्से आसान हैं और एक इन्सान अगर विचार करे तो वह उन से नसीहत हासिल कर सकता है, इसलिए यह फ़ैसला करना सही नहीं है कि हम क़ुरआन से कुछ नहीं पा सकते। कोशिश करना चाहिए, यक़ीनन बहुत सी बातें समझ में आएंगी। इस सिलसिले में इंतिहाई अहम बात जो हमेशा सामने रखना चाहिए, यह है कि क़ुरआन पढ़ने से जो बात आप को मालूम हो जाए, आप उसके मुताबिक़ जिंदगी में अमल करने की कोशिश करें। क़ुरआन के समझने में इसका भी बड़ा दख़ल है। अगर आप क़ुरआन के किसी हुक्म को समझ लें या क़ुरआन में बतायी हुई उसकी बात को सामने रख कर आप अपने रवैए में जरूरी तब्दीली कर लें तो आप देखेंगे कि फिर और ज्यादा क़ुरआन समझना आपके लिए आसान होता चला जाएगा। अल्लाह तआला का आम क़ायदा है कि वह उन लोगों की रहनुमाई फ़रमाता है जो भलाई के रास्ते पर क़दम बढ़ाते हैं और भलाई की रविश अख़्तियार करते हैं।

अज़ीज़ो और दोस्तो! क़ुरआन की बराबर तिलावत से कोई शख़्स भी बे-नियाज़ नहीं हो सकता। वे लोग भी जो दिन-रात क़ुरआन पर ग़ौर व फ़िक्र करते रहते हैं और क़ुरआन की एक-एक आयत समझने पर मुद्दतें लगा देते हैं और वे लोग जो क़ुरआन की तालीम देते रहते हैं। सब इस बात के मुहताज हैं कि वे पाबन्दी से तिलावत करें, बल्कि सच बात यह है कि दूसरों के मुक़ाबले में उन्हें क़ुरआन पढ़ने की ज़्यादा ज़रूरत है।

दोस्तो और बुज़ुर्गो!

क़ुरआन की तिलावत का एक हक़ यह भी है कि हर शख़्स अपनी हद तक अच्छे अन्दाज़ और अच्छी आवाज़ से क़ुरआन मजीद पढ़े। अच्छी आवाज़ हर शख़्स को भाती है और अच्छी चीज़ों को पसन्द करना तो इन्सान के स्वभाव में रखा गया है। इसे इस्लाम दबाना या मिटाना नहीं चाहता बल्कि इस जज़्बे को सही रुख़ पर लगाना चाहता है। इन्सान खूब-

सूरत चीज़ों को देखना पसन्द करता है। कोई वजह नहीं कि क़ुरआन मजीद की किताबत और प्रिंटिंग में वह हुस्न पैदा करना मुम्किन है। इंसान अच्छी आवाज़ सुनना पसन्द करता है। कोई वजह नहीं कि क़ुरआन अच्छी से अच्छी आवाज़ में न पढ़ा जाए।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि क़ुरआन को अपनी आवाज़ों से सजाओ और जो लोग अच्छी तरह क़ुरआन नहीं पढ़ते, उन्हें ना-पसन्द फ़रमाया है। अक्सर ऐसा होता था कि नबी सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी रास्ते से गुज़रते और किसी सहाबी को अच्छी आवाज़ से क़ुरआन पढ़ते हुए सुनते तो देर तक खड़े हो कर सुनते रहते और उस की तारीफ़ करते। कभी-कभी हुज़ूर सल्ल० अपने सहाबा रज़ि० से फ़रमाइश भी करते कि हमें क़ुरआन पढ़ कर सुनाओ। सहाबा कहते कि अल्लाह के रसूल ! आप पर तो क़ुरआन नाज़िल हुआ है, क्या हम आप को क़ुरआन सुनाएं ? तो हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते, हां ! मैं चाहता हूं कि दूसरों से सुनूं। फिर जब आप क़ुरआन सुनते तो आप पर एक कैफ़ियत छा जाती। कभी आंसू जारी हो जाते और कभी एक ही आयत को बार-बार पढ़ने की हिदायत करते। अल-बत्ता इस बारे में बड़ी एह-तियात की ज़रूरत है कि क़ुरआन के पढ़ने में बनावटी अन्दाज़ न अख़्तियार किया जाए। जो लोग गाने का अन्दाज़ अख़्तियार कर लेते हैं और ख़ामख़ाही बनावट के तरीक़े अपनाते हैं, वह हरगिज़ पसन्दीदा नहीं। क़िरात के वे अन्दाज़, जिस में कल्लेबाज़ी और बेजा तकल्लुफ़ का ग़लबा हो जाए, ना पसन्द किया गया है और इस से रोका गया है।

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ أَجْمَعِيْنَ - اَللّٰهُمَّ انْفَعْنَا بِالْقُرْآنِ
الْعَظِيْمِ وَارْفَعْنَا بِالْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ - وَتَقَبَّلْ مِنَّا قِرَاءَتَنَا إِنَّكَ
أَنْتَ الرَّؤُوْفُ الرَّحِيْمُ -

अस्तग़िफ़रुल्ला-ह ली व लकुम अजमईन अल्लाहुम-मन-फ़अ्ना बिल क़ुरआनिल अज़ीम वर-फ़अ्ना बिल आयाति वज़्ज़िक्रिल हकीम व तक़ब्बल मिन्ना क़राअतना इन्न-क अन्तर्र ऊफ़ुर्रहीम०

# क़ुरआन का हक़-३

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ الْقَادِرِ، هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ
وَالْبَاطِنُ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، الْعَزِيْزُ الْقَهَّارُ الْمُطَّلِعُ عَلَى السَّرَائِرِ
وَالضَّمَائِرِ خَلَقَ فَقَدَّرَ اَحْمَدُهٗ سُبْحَانَهٗ عَلٰى خَفِيِّ لُطْفِهٖ وَجَزِيْلِ بِرِّهٖ وَ
اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَاحِبُ الْاٰيَاتِ وَالْمُعْجِزَاتِ، اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ، وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا
اَمَّا بَعْدُ:-

अल हम्दु लिल्लाहिल अलीयिल अज़ीमिल क़ादिर हुवल अव्वलु वल आखिरु वज़्ज़ाहिरु वल बातिनु आलिमुल ग़ैबि वश्शहदतिल अज़ीज़ुल क़हहारुल मत्तलिअु अलस्सराइरि वज़्ज़माइरि ख़-ल-क़ फ़ क़द-द-र अह्म-दुहू सुब्हानहू अला ख़फ़ीयि लुत्फ़िही व जज़ीलि बिर्रिही व अश्हदु अल्ला-इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबीयना मुहम्म-दन अब्दहू व रसूलुहू साहिबुल आयाति वल मुअ्जिज़ाति अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिन व अला आलिही व अस्हा-बिही व सल्लिम तस्लीमन कसीरन अम्मा बअदु—

बुज़ुर्गो और दोस्तो !

क़ुरआन मजीद अल्लाह की किताब है, जो हमारी हिदायत और रहनुमाई के लिए उतारी गयी है। यह हम सब का ईमान है। इस एतबार से हम पर इस किताब के बहुत-से हक़ हैं। एक हक़ यह भी है कि हम जब तिलावत करें तो तिलावत के ज़ाहिरी अदब का भी ख़्याल करें। ज़ाहिरी अदब से मुराद यह है कि हम वुज़ू के साथ तिलावत करें, क़िब्ला रुख़ हो कर अदब के साथ बैठें और यह सोचते रहें कि यह उस बड़े बादशाह का कलाम है जो सारी कायनात का बादशाह है, जिस के हाथ में सारी काय-नात का इन्तिज़ाम है और जिस की तरफ़ से इंसानों की रहनुमाई के लिए

यह किताब नाज़िल हुई है। अल्लाह तआला की बड़ाई का जितना ख़्याल हमारे दिल में बैठेगा, उतनी ही बड़ाई हमारे दिल में अल्लाह के कलाम की होगी और उसी वक़्त यह मुम्किन होगा कि हम उसे नसीहत हासिल करने और हिदायत और हुक्म लेने के लिए पढ़ें, और उसी वक़्त हमारे अन्दर यह तैयारी पैदा होगी कि हम अपनी बुराइयों, अपने ख़्यालों और अपनी पसन्द और ना-पसन्द को छोड़कर उन चीज़ों को अपना सकें, जिन्हें अपनाने का हुक्म यह किताब देती है और उन चीज़ों को छोड़ सकें, जिन्हें यह किताब ना-पसन्दीदा क़रार देती है, चाहे वे चीज़ें ख़ुद हमें कितनी ही पसन्दीदा क्यों न हों। जो लोग पहले कुछ ख़्याल क़ायम कर लेते हैं और फिर उनकी ताईद के लिए क़ुरआन की आयतें ढूंढते हैं, वे इस से हिदायत हासिल नहीं करते, बल्कि अक्सर इस बात का अंदेशा रहता है कि वे और ज़्यादा गुमराही में पड़ जाएं। क़ुरआन मजीद के पढ़ने के लिए तिलावत का जो लफ़्ज़ इस्तेमाल होता है, वह बड़ा मानीदार है। तिलावत के मानी हैं पीछे चलना। इस लिए क़ुरआन का यह हक़ है कि हम उसे इस लिए पढ़ें कि हमें उसके पीछे चलना है, न यह कि क़ुरआन को अपनी रायों का पाबन्द बनाना है और अपने पसन्दीदा ख़्यालों और नज़रियों के लिए क़ुरआन से सनद हासिल करना है।

दोस्तो और अज़ीज़ो! क़ुरआन पाक की तिलावत की सब से ज़्यादा बेहतर शक्ल यह है कि आप इसे नमाज़ में पढ़ें, ख़ास तौर से तहज्जुद के वक़्त अपने रब के सामने हाथ बांध कर खड़े हों और इंतिहाई सुकून और इत्मीनान के साथ ठहर-ठहर कर पढ़ें और उसके मज़्मूनों को दिल में जमाएं। इस तरह ठहर-ठहर कर क़ुरआन पढ़ने को 'तर्तील' कहते हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसी बात का हुक्म दिया गया था कि आप रात को नमाज़ में ठहर-ठहर कर क़ुरआन पढ़ा करें।

इस तरह ठहर-ठहर कर क़ुरआन पढ़ने से क़ुरआन की बातें दिल में उतरती हैं और जब बन्दा अल्लाह की राह में उसके दीन के लिए मुसीबतों का मुक़ाबला करता है, तो उसी तर्तील से उस के दिल में सुकून-इत्मीनान और जमाव पैदा होता है। कठिन हालात का मुक़ाबला करने की ताक़त पैदा होती है और बन्दा अपने आप को रब की हिफ़ाज़त और हिमायत में महफ़ूज़ महसूस करने लगता है।

बुज़ुर्गो और दोस्तो! जब आप तर्तील का हक़ अदा करना चाहेंगे तो आप इस बात की ज़रूरत महसूस करेंगे कि आप को क़ुरआन का ज़्यादा

से ज़्यादा हिस्सा याद हो। अब से पहले आम तौर पर क़ुरआन याद करने का ज़ौक़ था। बद-क़िस्मती से यह भी लगभग ख़त्म-सा हो गया है। क़ुरआन याद करने की एक शक्ल तो यह थी कि पूरा क़ुरआन हिफ़्ज़ किया जाए। उसके लिए बचपन का ज़माना मुनासिब हो सकता है और उस वक़्त क़ुरआन के समझने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। पूरा क़ुरआन याद करने का यह ज़ौक़ भी अब कम हो रहा है। बस ले दे के ग़रीबों के एक तब्क़े ने उसे एक पेशे के तौर पर अपना लिया है। शरीफ़ और खाते-पीते घरानों में इस का कभी कोई ख़्याल भी नहीं आता, हालांकि अब से पहले शरीफ़ घरानों में इस का बड़ा रिवाज था। हर ख़ानदान कोशिश करता था कि कम से कम एक हाफ़िज़ तो उन के यहां होना ही चाहिए, वैसे कई-कई हाफ़िज़ भी एक ख़ानदान में होते थे। क़ुरआन हिफ़्ज़ करने का यह तरीक़ा निहायत मुबारक तरीक़ा है और क़ुरआन जो आज तक अपनी असल शक्ल में महफ़ूज़ है, उस की एक बड़ी वजह क़ुरआन हिफ़्ज़ करने का तरीक़ा भी है, लेकिन क़ुरआन के सिलसिले में तर्तील का हक़ अदा करने के लिए तो हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह ज़्यादा से ज़्यादा क़ुरआन हिफ़्ज़ करने का सिलसिला जारी रखे और जहां तक मुम्किन हो, वह रातों को अपने रब के हुज़ूर खड़े हो कर क़ुरआन की तर्तील का हक़ अदा करने की कोशिश करे। यह बहुत बड़ी महरूमी है कि यह ज़ौक़ ख़त्म हो गया है, अच्छे-अच्छे दीनदार और आलिम भी इस बात का एहतिमाम नहीं करते कि वे क़ुरआन की तर्तील का हक़ अदा करें बस ले-दे कर मस्जिदों के इमाम क़ुरआन के कुछ हिस्से याद कर लेते हैं, ताकि वे उन्हें नमाज़ें पढ़ाने में काम दे सकें और वह भी बस कुछ रुकूओं और कुछ सूरतों को याद कर लेना काफ़ी समझते हैं और उसी को हेर-फेर कर बार-बार पढ़ते रहते हैं, हालांकि जिस शख़्स को क़ुरआन से कुछ भी लगाव होगा, उस का तो दिल चाहेगा कि वह क़ुरआन के ज़्यादा से ज़्यादा हिस्से याद करता रहे, वह उसे अपनी असल पूंजी समझेगा, ताकि उस की मदद से वह तर्तील का ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा हासिल कर सके। रूह की ताज़गी और ख़ुदा से ताल्लुक़ की मज़बूती के लिए क़ुरआन से ताल्लुक़ बिल्कुल ज़रूरी है।

दोस्तो और अज़ीज़ो! क़ुरआन को मानने, पढ़ने और तिलावत व तर्तील का हक़ अदा करने के साथ क़ुरआन मजीद का सब से बड़ा हक़ यह है कि उसे समझा जाए। ख़ुदा का यह कलाम इसी लिए नाज़िल हुआ

है कि लोग उसे समझें और अपनी ज़िंदगी के लिए उस से रोशनी हासिल करें। जो लोग बिल्कुल बे-पढ़े-लिखे हों, उन के लिए तो यह जायज़ हो सकता है कि वे सिर्फ़ क़ुरआन के लफ़्ज़ पढ़ लिया करें, जिसे आम तौर पर तिलावत करना कहते हैं, इस से यक़ीनन उन्हें फ़ायदा होगा और सवाब भी मिलेगा, लेकिन जो लोग पढ़े-लिखे हैं या जो पढ़ने के क़ाबिल हैं, उन के लिए ज़रूरी है कि वे क़ुरआन की तिलावत के साथ-साथ उसे समझने की भी कोशिश करें। सोचने की बात है कि जिन लोगों ने दुनिया के इल्म सीखने के लिए अपनी उम्रें खपा दीं, जिन्होंने ग़ैर-ज़ुबानों के समझने और उन में महारत हासिल करने के लिए परेशानियां झेलीं, अगर उन्होंने क़ुरआन समझने के लिए कोई कोशिश ही नहीं की, तो वे अपनी इस कोताही का क्या जवाब देंगे, हालांकि सूरते हाल यह है कि एक औसत दर्जे के पढ़े-लिखे इंसान के लिए न तो यही बात कुछ ज़्यादा मुश्किल है कि वह अरबी भाषा में थोड़ी-सी महारत हासिल करे और इस तरह एक हद तक क़ुरआन का समझना उस के लिए आसान हो जाए और न यही बात दुश्वार है कि ऐसे लोग क़ुरआन मजीद के उर्दू (हिन्दी) तर्जुमों और तफ़्सीरों से क़ुरआन समझने की कोशिश करें। अरबी भाषा की बहुत थोड़ी सी शुरू की जानकारी के बाद हर पढ़ा-लिखा इंसान उर्दू तर्जुमों और तफ़्सीरों से मदद ले कर क़ुरआन मजीद के कम से कम उन हिस्सों के तो आसानी के साथ समझने के क़ाबिल हो सकता है, जिन का ताल्लुक़ अक़ीदों के सुधार, तर्बियत और नसीहत हासिल करने से है, बहुत-सी ऐसी मिसालें मौजूद हैं कि बा-क़ायदा तौर पर अरबी पढ़े बग़ैर लोगों ने थोड़ी-सी अरबी सीख कर क़ुरआन को अच्छा-ख़ासा समझ लेने की सलाहियत पैदा कर ली है। ज़रूरत इस बात की है कि इंसान के अन्दर क़ुरआन समझने का ज़ौक़ व शौक़ हो और वह इस के लिए पाबन्दी के साथ कुछ वक़्त निकाल कर मेहनत करे। यह बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि जहां तक क़ुरआन के समझने का ताल्लुक़ है, उस के अनगिनत दर्जे और मर्तबे हैं और हर इंसान अपनी सलाहियत, क़ाबिलियत, मेहनत और कोशिश के मुताबिक़ हिस्सा पा सकता है, यहां तक कि चाहे कोई शख़्स कितनी ही ज़्यादा क़ाबिलियत क्यों न रखता हो और वह कितनी ही ज़्यादा मेहनत और मशक़्क़त क्यों न करे, फिर भी वह यह दावा नहीं कर सकता कि उसने क़ुरआन को जैसा समझना चाहिए था, समझ लिया। इसी तरह चाहे कोई शख़्स कितनी ही कम सलाहियत और क़ाबिलियत

क्यों न रखता हो, वह अगर क़ुरआन समझने के लिए कोशिश करेगा, तो यह हरगिज़ नहीं हो सकता कि वह बिल्कुल महरूम रह जाए। क़ुरआन एक नसीहत और याददेहानी है। यह वही राह इंसान के सामने रखता है, जिसे इस की फ़ितरत तलब करती है और इस लिए हर शख्स को उस की लियाक़त और कोशिश के एतबार से हिस्सा ज़रूर मिलता है। यहां न महरूमी का सवाल है और न मिल जाने का। जिस तरह कोई शख्स यह नहीं कह सकता कि मैं ने क़ुरआन को जैसा समझना चाहिए था, समझ लिया, इसी तरह कोई यह भी नहीं कह सकता कि मैं ने कोशिश तो की, लेकिन मेरे हाथ कुछ न आया।

भाइयो और बुज़ुर्गो ! जो लोग लिखने-पढ़ने से बिल्कुल महरूम रह गये हैं और जिनके लिए अब इसका मौक़ा भी नहीं कि वे पढ़ना सीखें, उनके लिए तो इस की गुंजाइश निकल सकती है कि वे क़ुरआन को बिला समझे ही, जहां तक हो सके, पढ़ लिया करें। हद यह है कि कुछ न हो तो कम से कम बरकत और सवाब की नीयत से थोड़ी देर उसकी लाइनों पर उंगली ही फेर लिया करें और जहां तक हो सके, पढ़े-लिखे लोगों से क़ुरआन का मतलब सुनने का मौक़ा निकाल लिया करें। ऐसे लोगों को कोशिश करना चाहिए कि उन के मुहल्लों में कोई पढ़ा-लिखा आदमी उन्हें आसान तरीक़े पर क़ुरआन का मतलब समझाया करे, लेकिन जो लोग पढ़े-लिखे हैं, जिन्होंने दूसरी भाषाएं सीखी हैं, बी. ए. और एम. ए. की डिग्रियां रखते हैं, इंजीनियर, डाक्टर और वकील कहलाते है, वे अल्लाह के सामने यह कैसे कह सकेंगे कि उन्हें अगर ज़िंदगी में मौक़ा नहीं मिला, तो सिर्फ़ अरबी सीखने का मौक़ा नहीं मिला। ऐसे लोगों पर फ़र्ज़ है कि कम से कम इतनी अरबी ज़रूर सीख लें कि क़ुरआन मजीद का सरसरी मतलब उन की समझ में आने लगे और जैसा कि मैं ने कहा, इस हद तक अरबी सीख लेना हरगिज़ मुश्किल काम नहीं है, थोड़ी-सी तवज्जोह और शौक़ की ज़रूरत है और जिसे दीन के साथ शौक़ होगा, वह इस का मौक़ा ज़रूर निकाल ही लेगा। जो शख्स इस ज़िम्मेदारी की तरफ़ से ग़फ़लत बरत रहा है, वह असल में ख़ुद अपने ऊपर बड़ा ज़ुल्म कर रहा है। मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूं कि वह हम सबको अपनी किताब से फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, हमारे दिलों में उस के समझने और उस पर अमल करने का शौक़ अता फ़रमाए और हमारे लिए इस राह की कोशिशों को आसान बना दे।

بَارَكَ اللّٰهُ لِيْ وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ، وَنَفَعَنِيْ وَاِيَّاكُمْ بِمَا فِيْهِ مِنَ الْاٰيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ، اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا، وَاسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ وَ لِسَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ فَاسْتَغْفِرُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ.

बा-र-कल्लाहु ली व लकुम फ़िल क़ुरआनिल अज़ीम व न-फ़-अ-नी व ईयाकुम बिमा फ़ीहि मिनल आयाति वज़्ज़िक्रिल हकीम अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम व लिसाइरिल मुस्लिमीन मिन कुल्लि ज़म्बिन फ़स्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूर्रहीम०

# नबी-ए-रहमत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بَعَثَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰی رَحْمَةً لِّلْعَالَمِیْنَ
اَحْمَدُهٗ سُبْحَانَهٗ وَاَشْکُرُهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِیْكَ
لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ، اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی عَبْدِكَ
وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَالتَّابِعِیْنَ لَهُمْ بِاِحْسَانٍ ۔
اَمَّا بَعْدُ :۔ فَقَدْ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی "وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ"۔

अलहम्दु लिल्लाहि अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ब-अ-स रसूलहू बिल हुदा रह्मतल्लिल आलमीन अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-म सल्लि व सल्लिम अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव व अला आलिही व अस्हाबिही वत्ताबिई-न लहुम बिएहसान०

अम्मा बअ्दु फ़क़द क़ालल्लाहु तआला, व मा अर्सलना-क इल्ला रह्मतल्लि आलमीन०

बुज़ुर्गो और भाइयो ! अल्लाह तआला ने अपने नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में क़ुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमाया है कि ऐ नबी ! हम ने तो आपको सारे जहान के लिए रहमत बना कर भेजा है। हमारा ईमान है कि वाक़ई हुज़ूर सल्ल० का तश्रीफ़ लाना सारी दुनिया के लिए एक ऐसी बड़ी नेमत थी कि अगर दुनिया उस से महरूम रहती तो यही कहा जाता कि वह अल्लाह की सारी ही रहमतों से महरूम हो गई। हुज़ूर सल्ल० का तश्रीफ़ लाना तमाम इंसानों के लिए दीनी एतबार से भी रहमत था और दुनिया के एतबार से भी रहमत। हुज़ूर सल्ल० ही ने तो इन्सानों को यह बताया कि उनके पैदा करने वाले और पालने वाले की खूबियां क्या हैं। हुज़ूर सल्ल० ही ने यह समझाया कि बंदे और खुदा का सही ताल्लुक़ क्या है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही ने यह बताया कि बंदे पर खुदा के हक़ क्या-क्या हैं और बंदा

अपने मालिक को कैसे ख़ुश कर सकता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के ज़रिए दुनिया ने यह जाना कि इन्सान को किस लिए पैदा किया गया है, उस की ज़िंदगी का क्या अन्जाम होने वाला है और आख़िरत की ज़िंदगी में उसे कामियाबी कैसे हासिल हो सकती है? सोचने की बात है कि अगर इंसान इन तमाम बातों से बे-ख़बर रहता, तो यह उस के लिए कैसी बड़ी महरूमी थी। आज भी हम देखते हैं कि जो लोग जनाब रह्मतुल्लिल आलमीन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिदायतों से महरूम हैं या वे उनकी हिदायतों के मुताबिक़ अमल नहीं करते, वे कैसे-कैसे फंदों में फंसे हुए हैं ? वे नहीं जानते कि तौहीद क्या है? वे ख़ुदा को छोड़कर दूसरों के आगे झुकते हैं, उनसे उम्मीदें लगाते हैं और उनके आगे हाथ फैलाते हैं, हालांकि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है, वह देना चाहे तो कोई रोक नहीं सकता और न दे तो कोई दिलवा नहीं सकता। وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ۔

يَآاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ وَاللّٰهُ هُوَالْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ۔

वल्लज़ी-न तद्ऊ न मिन दूनिही मा यम्लिकू-न मिन क़ित्मीर०

'सब उसके मुहताज हैं, कोई किसी चीज़ का मालिक ही नहीं कि किसी को दे सके।

या ऐयुहन्नासु अन्तुमुल फ़ुक़राउ इलल्लाहि वल्लाहु हुवल ग़नीयुल हमीद०

'लोगो ! तुम सब अल्लाह के मुहताज हो, वही ग़नी और हमीद है।'

भाइयो ! इस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा के बारे में उनके अक़ीदे ठीक किए और तौहीद का सही मतलब उन्हें समझाया, उन्हें हरएक की ग़ुलामी से निकाल कर सिर्फ़ एक अल्लाह का बंदा बनाया और सारे झूठे ख़ुदाओं को हटा कर एक मालिकुल मुल्क की रियाया बनाया। यह इतनी बड़ी रहमत थी कि जिसकी क़द्र व क़ीमत का अंदाज़ा लगाना भी आसान नहीं। आज भी इन्सानियत के सारे दुखों की अगर जड़ है तो यही कि उसने इस रहमत की क़द्र नहीं पहचानी और ख़ुदा के बारे में जो अक़ीदा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दिया था, उसे सही तरीक़े पर नहीं अपनाया।

फिर यह देखिए कि इबादतों के सिलसिले में नबी सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने क्या रहनुमाई अता फ़रमायी। आपने ही तो इन्सान को यह बताया कि वह अपने हक़ीक़ी माबूद की इबादत कैसे करे। नमाज़ जो दिन-रात में पांच बार बंदे को अपने रब से क़रीब करती है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही ने सिखायी। यह वह इबादत है कि अगर ठीक तरीक़े से अदा हो जाए तो उसकी हैसियत ऐसी है जैसे बंदा अपने रब के दरबार में हाज़िरी दे आया। फिर यही वह नमाज़ है कि अगर ठीक-ठीक शर्तों के मुताबिक़ अदा हो जाए, तो यह इन्सान को तमाम बुराइयों से रोक देती है। फ़रमाया—

إِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ۔

इन्नस्सला-त तन्हा अनिल फ़ह्शाइ वल मुन्करि०

ये तो सिर्फ़ दो मिसालें हैं। ज़रा तफ़्सील में जाइए तो आप को यह मानना पड़ेगा कि दीनी एतबार से हुज़ूर सल्ल० का तश्रीफ़ लाना ऐसी बड़ी रहमत है कि अगर इन्सानियत इस रहमत से महरूम रहती तो वह इसी तरह वह्म व ख़ुराफ़ात का शिकार रहती, जैसी कि वह हुज़ूर सल्ल० के तश्रीफ़ लाने से पहले थी, जैसा कि अब भी इस रहमत से महरूम इंसान वह्म व ख़ुराफ़ात का शिकार है, हम देखते हैं कि जिन लोगों ने दीनी एतबार से रहमतुल्लिल आमलीन की पैरवी नहीं अपनाई, वे आज भी तरक़्क़ी के अनगिनत दावों के बावजूद किस तरह वह्म व ख़ुराफ़ात का शिकार हैं। इस रहमत से महरूम आज भी पहाड़ों और नदियों को पूजते हैं, बुतों और क़ब्रोंसे मुरादें मांगते हैं, जानवरों और कीड़े-मकोड़ों को पूजते हैं। ख़ुदा को नहीं मानते, लेकिन सैकड़ों बनावटी ख़ुदाओं की ग़ुलामी में जकड़े रहते हैं, नफ़्स और ख़्वाहिशों के हाथों में अपनी लगाम देकर बिल्कुल बे-बस हो जाते हैं।

दीनी एतबार से रहमत होने के अलावा आप दुनिया के एतबार से भी अल्लाह की सब से बड़ी रहमत हैं। आप ही ने तो इन्सानों को ज़िंदगी की वह दर्मियानी राह दिखायी, जिस पर चल कर उन्हें सच्चा सुकून हासिल हुआ और आज भी हासिल हो सकता है। आप ने यह बताया कि एक आदमी दूसरे आदमी से मामला किस तरह करे, समाजी मामलों में किस तरह एक दूसरे के हक़ों का ध्यान रखा जाए, हुक्म चलाने वाले और जिन पर हुक्म चलाया जाए, उनके ताल्लुक़ात क्या हों, ग़रीब और अमीर के दर्मियान ताल्लुक़ात की सही शक्ल क्या हो? आप ही ने तो सूद को

हराम फ़रमाया, क्योंकि इस की वजह से ग़रीब ज्यादा ग़रीब होते चले जाते हैं और मालदार ज्यादा मालदार होते रहते हैं। आप ही ने तो कारोबार के वे तरीक़े बताए, जिस के मुताबिक़ एक फ़रीक़ दूसरे का हक़ नहीं मार सकता। आप ही ने तो ख़रीदने-बेचने के उन तमाम तरीक़ों को ख़त्म किया, जिन में किसी एक का फ़ायदा यक़ीनी और दूसरे का ग़ैर-यक़ीनी हो। आप ही ने तो ऐश व इश्रत के उन दरवाज़ों को बंद फ़रमाया, जिनसे इन्सानी तबाही दाखिल होती है। आप ही ने तो मां-बाप के साथ बेहतरीन सुलूक की नसीहत फ़रमायी, रिश्तेदारों और अज़ीज़ों के हक़ों की ताकीद फ़रमायी, इन्सानों को जोड़ने की शक्लें बतायीं, फ़र्ज़ अदा करना, ज़िम्मेदारी का एहसास, पाकदामनी, शराफ़त और अख्लाक़, ग़रज़ यह कि इन्सान को उन तमाम ख़ूबियों से सजाया जिनके बग़ैर वह इन्सान नहीं बन सकता था। आप ही ने इन्सानी जान व माल और उस की इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त के लिए वह इन्तिज़ाम फ़रमाया, जिस की मिसाल कहीं दूसरी जगह नहीं मिलती। आप जानते हैं कि इन्सानी जान की हिफ़ाज़त के लिए मुहम्मदी शरीअत में क़त्ल की सज़ा क़त्ल है। माल की हिफ़ाज़त के लिए हिफ़ाज़त के लिए चोर की सज़ा हाथ काटना है और इज़्ज़त व नामूस की तोहमत लगाने की सज़ा अस्सी कोड़े और ज़िना की सज़ा मौत है। अगर ज़रा ग़ौर और इन्साफ़ की नज़र से देखा जाए तो हर शख्स समझ सकता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो हिदायतें दी हैं वे कैसी रहमत हैं।

फिर इतना ही नहीं कि रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अलग-अलग हर शख्स के लिए और सब को मिला कर पूरे समाज की भलाई के लिए कुछ उसूलों और क़ानूनों को बता दिया हो और बस। इस से मिलते-जुलते काम को किसी न किसी हद तक कुछ सुधारकों और सोच-विचार करने वालों ने भी कर लिए हैं। आप ने सिर्फ़ इतना ही न किया, बल्कि आपने उन उसूलों और क़ायदों को अमली तौर पर लागू करने और उन्हें क़ायम रखने के लिए क़ियामत तक अपनी उम्मत पर यह ज़िम्मेदारी भी डाल दी कि वह दुनिया से फ़साद मिटाने, अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की बन्दगी पर क़ायम रखने और खुदाई शरीअत को लागू करने के लिए बराबर जद्दोजेहद भी करते हैं। आपने उम्मत के लोगों को इस का ज़िम्मेदार ठहराया कि वे अल्लाह के कलिमे को बुलंद रखें। इस्लाम के झंडे को ऊंचा रखें और अपने अक़ीदों और खुदाई उसूलों की हिफ़ाज़त के लिए

हमेशा जान लड़ाते रहें और अल्लाह की राह में अपनी जान और अपना माल क़ुर्बान करते रहें और चाहे हालात कैसे ही सख्त हों, वे अपनी इस ज़िम्मेदारी से मुंह न मोड़ें, क्योंकि इस के बग़ैर वे अपने ख़ुदा को राज़ी न कर सकेंगे। उन्हें यह हुक्म दिया गया कि—

قَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ـ

क़ातिलूहुम हत्ता ला तकू-न फ़ित्नतंव-व यकूनद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाहि०

इस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ाते मुबारक सारी दुनिया के लिए रहती दुनिया तक रहमत है और अब यह उन लोगों का काम है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी का दम भरते हैं कि वे दुनिया को यह समझा सकें कि वाक़ई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लाया हुआ दीन सारी दुनिया के लिए कैसी बड़ी रहमत है।

दोस्तो और अज़ीज़ो !

अल्लाह से अपना ताल्लुक़ मज़बूत करो, अपनी हैसियत और अह-मियत को पहचानो। तुम्हें अल्लाह तआला ने यों ही बे-मक़सद नहीं पैदा किया है। तुम सब को उसी की तरफ़ लौट के जाना है।

दोस्तो ! वह ज़िंदगी जो अल्लाह के दीन पर क़ायम रहने और उसे क़ायम करने की जद्दोजेहद में बसर हो जाए, वही हक़ीक़ी ज़िंदगी है। नबी-ए-रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने और आप के सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन ने ऐसी ही ज़िंदगी का नमूना हमारे सामने रखा और ऐसी ही ज़िंदगी की नसीहत हमें फ़रमायी। हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि हमें रह्मतुल्लिल आलमीन के नमूने के मुता-बिक़ ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हमें वह काम करने की सआदत बख्शे, जिन पर हमें लगाया गया है और जिन की वजह से हम उसकी रिज़ा और ख़ुशी हासिल कर सकते हैं।

न-फ़-अ-नियल्लाहु व ईयाकुम बिल क़ुरआनिल करीम व बिहदयि सय्यिदिल मुर्सलीन० अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़िफ़रुल्ला-ह ली व लकुम व वलि साइरिल मुस्लिमीन मिन कुल्लि ज़म्बिन फ़स्तग़िफ़रूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम०

نَفَعَنِیَ اللّٰہُ وَاِیَّاکُمْ بِالْقُرْاٰنِ الْکَرِیْمِ وَبِھَدْیِ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ۔
اَقُوْلُ قَوْلِیْ ھٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ لِیْ وَلَکُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِیْنَ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ
فَاسْتَغْفِرُوْہُ اِنَّہٗ ھُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ۔

# डर का इलाज

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مَنْ تَوَكَّلَ عَلَيْهِ كَفَاهُ، اَحْمَدُهُ سُبْحَانَهُ وَتَعَالٰى،
لَا يَذِلُّ مَنْ يُّوَلَّاهُ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَ
اَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ، اَكْرَمَهُ اللّٰهُ بِرِسَالَتِهٖ
وَاصْطَفَاهُ، اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ
وَاَصْحَابِهٖ۔ اَمَّا بَعْدُ۔ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔
اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ۔

अलहम्दु लिल्लाहि मन तवक्क-ल अलैहि कफ़ाहु अह्मदुहू सुब्हानहू व तआला ला यज़िल्लु मंय्युवल्लाहु व अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न सय्यिदना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अक्र-म-हुल्लाहु बिरिसालतिही वस्तफ़ाहु अल्लाहुम-म सल्लि व सल्लिम अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिन व अला आलिही व अस्हाबिही अम्मा बअ्दु अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम०

अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़ कुम सुम-म र-ज़-क़ कुम सुम-म युमीतुकुम सुम-म युह्यीकुम०

दोस्तो और अज़ीज़ो !

अक्सर ऐसा होता है कि लोगों पर हक़ वाज़ेह हो जाता है कि वे ख़ूब समझ लेते हैं कि अल्लाह का दीन हम से क्या चाहता है और मुसलमान होने की हैसियत से हमें क्या करना चाहिए और क्या न करना चाहिए, लेकिन इसके बावजूद वे उस रवैए को नहीं अपनाते जिसे अपनाने की मांग दीन करता है। वे उस रास्ते से कतरा कर निकल जाना चाहते हैं, जिसके बारे में उनका दिल कहता है कि दीन का रास्ता तो यही हो सकता है। यह अमल अक्सर डर की वजह से होता है। डर दो क़िस्म का होता है कभी रोज़ी का और कभी मौत का आदमी यह समझ लेता कि करने का काम यही है, लेकिन उसका नफ़्स और शैतान उसे डराता है कि अगर तुमने यह

रवैया अपनाया तो करोबार मंदा पड़ जाएगा, फ़ला हैसियत से नुक़्सान हो जाएगा या रोज़ी का यह ज़रिया ख़त्म हो जाएगा, नौकरी छूट जाएगी, तरक़्क़ियां रुक जाएंगी और माली परेशानियां घेर लेंगी और दूसरा डर जो इससे बढ़ कर होता है, वह मौत का डर है। वह सोचता है कि इस राह में तो ख़तरा ही ख़तरा है, अपने पराए हो जाएंगे, हुकूमत मुख़ालिफ़ हो जाएगी और मालूम नहीं कब क़ैद व बन्द का सामना करना पड़े और कब ज़िंदगी से हाथ धोना पड़े।

भाइयो! ये हैं वे दो इन्सानी कमज़ोरियां, जो उस के क़दम हक़ के रास्ते पर बढ़ने नहीं देतीं। इस्लाम इन्सान की इन दोनों कमज़ोरियों को सामने रखता है और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना चाहता है। वह इंसान को एक ख़ुदा पर ईमान लाने की दावत देता है और यह बताता है कि वह ख़ुदा जो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है और जिस की मर्ज़ी के बग़ैर एक ज़र्रा हिल नहीं सकता, उसने इन्सान की रोज़ी और उसकी मौत अपने हाथ में रखी है। तुम्हें रोज़ी वही देता है, वह अगर देना चाहे, तो कोई रोक नहीं सकता और वह रोक ले तो कोई दिलवा नहीं सकता। इस अक़ीदे को निहायत मज़बूती के साथ मोमिन के दिल में बिठाया जाता है ताकि उसके दिल से यह ख़्याल ही निकल जाए कि ख़ुदा के सिवा कोई और भी ऐसा हो सकता है, जिसे रोज़ी पहुंचाने में अख़्तियार हासिल हो। मोमिन के दिल में यह ईमान मज़बूत किया जाता है कि नफ़ा और नुक़्सान सब ख़ुदा के हाथ मेंहै और सारे मामले का आख़िरी फ़ैसला उसी के अख़्तियार में है। ज़ाहिर में अगर कोई तुम पर मेहरबान होता है और उसी के हाथों तुम्हें रोज़ी पहुंचती है या तुम्हारे कारोबार में तरक़्क़ी होती है, तुम्हारे खेतों में अच्छी पैदावार होती है, तो चाहे इस की ऊपरी वजहें कुछ ही क्यों न हों, लेकिन असल मामला अल्लाह के हाथ में है, वही तुम्हें रोज़ी देता है, उसी के मंसूबे और उसी की मंशा के मुताबिक़ तुम्हारे लिए सामान जुटाए जाते हैं। उसका इर्शाद है—

وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ

व फ़िस्समाइ रिज़्क़ुकुम व मा तूअदून०

'तुम्हारी रोज़ी आसमान में है और जो कुछ तुम से वायदा किया गया है।' फिर फ़रमाया—

إِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ -

इन्नल्ला-ह हुवर्रज़्ज़ाक़ु ज़ुलक़ू-व-तिल मतीम०

'बेशक अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है। वह बड़ा ताक़तवर और मज़बूत है।'

यह है वह अक़ीदा जो इस्लाम पूरी ताक़त के साथ दिलों में बिठाता है है और इस तरह मोमिन के दिल में इस अन्देशे के लिए कोई गुंजाइश बाक़ी नहीं छोड़ता कि ख़ुदा के सिवा कोई और भी है, जो उसकी रोज़ी छीन सकता है या जिसे राज़ी कर लेने पर रोज़ी की तरफ़ से इत्मीनान हासिल हो सकता है।

दोस्तो और अज़ीज़ो ! हम सब ईमान का दावा करते है और अल्लाह के फ़ज़्ल से हम सब मोमिन ही हैं, लेकिन सब पहलुओं से हमारा ईमान कमज़ोर है और ईमान की इसी कमज़ोरी की वजह से हम तरह-तरह की ख़राबियों के शिकार हो जाते हैं। दीन के बहुत-से तक़ाज़े हमसे पूरे नहीं होते। इन्हीं कमज़ोरियों में से एक कमज़ोरी यह भी है कि रोज़ी के मामले में हमारा जो ईमान ख़ुदा पर होना चाहिए, उसमें कमी आ जाती है और हम हर मौक़े पर रोज़ी की ज़ाहिरी वजहों पर ज़्यादा इत्मीनान कर लेते हैं और अल्लाह तआला के रोज़ी देने वाला होने पर जो भरोसा होना चाहिए, उसमें कमी आ जाती है। यहां यह बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि मोमिन से यह मांग नहीं की जाती है कि वह रोज़ी हासिल करने की जो ज़ाहिरी वजहें होनी चाहिएं, उन को छोड़-छाड़ कर बस अल्लाह पर भरोसा करे और हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाए। इस्लाम ने इससे रोका है। असल चीज़ जिसकी तरफ़ हमें मुतवज्जह होना चाहिए, वह यह है कि हम रोज़ी हासिल करने के लिए या रोज़ी में ख़राबी आ जाने के डर से कोई ऐसी शक्ल अपना न लें जिसे इस्लाम ने ना-पसंद ठहराया है और न दीन के उन तक़ाज़ों को छोड़ बैठें, जिन्हें पूरा करने से ही हम ख़ुदा की ख़ुशी हासिल कर सकते हैं। ख़ुदा की ख़ुशी या ना ख़ुशी की परवाह किए बग़ैर अगर हम दूसरों की ख़ुशी का ध्यान रखेंगे, तो यही बात हमारे ईमान के दावे के ख़िलाफ़ होगी।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि एक शख़्स अपने घर से निकलता है, इस हाल में कि वह दीनदार होता है, फिर उस की मुलाक़ात एक ऐसे शख़्स से होती है, जिस से उस की कोई ग़रज़ जुड़ी

होती है, अब वह उस की तारीफ़ें करता है और कहता है, आप तो ऐसे हैं और ऐसे हैं और यह सब इस उम्मीद में करता है कि शायद उस की ज़रूरत पूरी हो जाए। उसकी इस हरकत से अल्लाह नाराज़ होता है और अब जो वह लौटता है, तो इस हाल में लौटता है कि उस का दीन उस के पास नहीं होता है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बात को ईमान की कमज़ोरी बताया है कि आदमी लोगों को राज़ी करने के लिए ऐसी हरकतें करे, जिन से अल्लाह ना-खुश होता है या वह उस रोज़ी को देख कर हसद करे, जो अल्लाह ने दूसरों को दिया है। आप ने फ़रमाया है कि न किसी लोभी की रोज़ी उस के लोभ की वजह से बढ़ती है और न किसी के ना पसन्द करने से किसी की रोज़ी घटती है।

अब दूसरे डर को लीजिए, जो इंसान को अक्सर सही रास्ते पर क़दम बढ़ाने से रोकता है और वह जान-बूझ कर दीन के तक़ाज़ों को नज़रंदाज़ कर देता है, यह डर मौत का डर है। इंसान को इस डर से निजात दिलाने के लिए इस्लाम इस अक़ीदे को निहायत मज़बूती के साथ दिल में बिठाता है कि मौत सिर्फ़ ख़ुदा के हाथ में है। मौत का एक वक़्त मुक़र्रर है, वह न एक लम्हा इस से पहले आ सकती है और न एक लम्हे के लिए उसे टाला जा सकता है। इंसान की यह ताक़त नहीं कि वह किसी तरीक़े से भी अपने आप को मौत से बचा ले। अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ जब किसी की मौत आएगी तो कोई बड़ी से बड़ी ताक़त उसे टाल नहीं सकती, अल्लाह तआला का इर्शाद है—

قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ

क़ुल लौ कुन्तुम फ़ी बुयूतिकुम ल-ब-र-ज़ल्लज़ी-न कुति-ब अलैहिमुल क़त्लु इला मज़ाजिअिहिम०

'उन से कह दीजिए, अगर तुम अपने घरों में भी होते, तो जिन लोगों की मौत लिखी हुई थी, वे ख़ुद अपनी क़त्लगाहों की तरफ़ निकल आते।'

यह भी इर्शाद फ़रमाया कि—

فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝

फ़इज़ा जा-अ अ-जलुहुम ला यस्ताख़िरू-न साअतंव-व ला यस्त-

ख़िदमून०

'तो जब उन की मौत का वक़्त आ जाता है तो वह उस से एक घड़ी भर भी आगे-पीछे नहीं हो सकता।'

मौत का डर इंसान की सब से बड़ी कमज़ोरी है और अगर यह डर दिल से निकल जाए और उस के बदले यह यक़ीन दिल में बैठ जाए कि जो मौत ख़ुदा की राह में आती है और उस की मर्ज़ी पर चलते हुए जो बन्दा अपनी जान देता है, वह हक़ीक़त के एतबार से इंतिहाई कामियाब और सुर्ख़रू है, तो यही अक़ीदा इंसान को इंतिहाई ताक़तवर बना देता है। इस्लाम अपने मानने वालों के दिलों में इसी यक़ीन को पक्का करता है कि मौत अपने वक़्त पर आती है और जो लोग अल्लाह के रास्ते में जान देते हैं या उस की मर्ज़ी पर चलते हुए जिन्हें मौत आती है, वे तो ऐसे कामियाब हैं कि उन्हें आम मानी में मुर्दा कहना भी सही नहीं। उन्हें तो ज़िंदा समझना चाहिए। ऐसे लोगों के दर्जे अल्लाह के नज़दीक बहुत ऊंचे हैं और ऐसी मौत हज़ारों ज़िंदगियों से कहीं ज़्यादा क़द्र किए जाने के क़ाबिल है। इस्लाम मोमिन को यह यक़ीन दिलाता है कि मौत असल में किसी नाकामी या मुसीबत का नाम नहीं है, बल्कि यह तो सिर्फ़ एक हालत से दूसरी हालत में इंतिक़ाल है यानी सिर्फ़ एक तब्दीली जो बहर हाल हो कर रहेगी। अब अगर यह इंतिक़ाल या तब्दीली इस तरह हो जाए कि उस के नतीजे में मौत के बाद वाली ज़िंदगी कामियाब हो जाए, तो यही सबसे बड़ी कामियाबी है, लेकिन अगर ऐसा न हो तो फिर यही सब से बड़ी नाकामी और महरूमी है, चाहे यह ज़िंदगी कैसी ही ख़ुश और कामियाब क्यों न नज़र आए। मौत के बारे में यह यक़ीन मोमिन को सब ख़तरों से बे-ख़ौफ़ कर देता है और उसे इन्तिहाई ताक़तवर बना देता है।

भाइयो और अज़ीज़ो! ये हैं इंसान की दो सब से बड़ी कमज़ोरियां और यह है वह तद्बीर, जिस से इस्लाम अपने मानने वालों को इन कमज़ोरियों से निजात दिलाता है। अपने इस ईमान को हर वक़्त ताज़ा रखिए कि रोज़ी और मौत दोनों अल्लाह के हाथ में हैं। इस बारे में किसी दूसरे को ज़र्रा बराबर भी अख़्तियार हासिल नहीं। हमारा ईमान है कि कोई जानदार उस वक़्त तक मरता नहीं, जब तक उसके मुक़द्दर की रोज़ी न पूरी हो जाए और जब तक उसकी मौत का वक़्त न आ जाए, जिसे अल्लाह ने मुक़र्रर कर दिया है। ख़ूब यक़ीन रखिए कि अल्लाह तआला बड़ी

क़ुदरत वाला है, बड़ी ताक़त वाला है। सब कुछ उस के अख़्तियार में है, वह अपने बन्दों के लिए बिल्कुल काफ़ी है, उस के होते बन्दे किसी दूसरे के मुहताज नहीं हैं। अल्लाह ही हमारा रोज़ी देने वाला है, वही हमारा पैदा करने वाला है, रोज़ी और मौत उसी के हाथ में है, वह हमारे लिए बिल्कुल काफ़ी है, उसे नाराज़ कर के हमें किसी को राज़ी करने या राज़ी रखने की कोई परवाह नहीं।

अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए हम सारी दुनिया की ना-ख़ुशी सह सकते हैं, उस की ख़ुशी हमारी कामियाबी है। अल्लाह तआला हम सब को अपनी ख़ुशी के रास्ते पर चलने की हिम्मत अता फ़रमाए और हमारे दिलों को दूसरों के डर और अंदेशों से पाक कर दे। हमें यक़ीन है कि अगर हम अल्लाह को राज़ी कर लें तो वह हम पर रोज़ी के दरवाज़े भी खोलेगा और दुश्मनों के मुक़ाबले में हमारी मदद भी फ़रमाएगा। यही हमारे लिए काफ़ी है। अल्लाह तआला हमें इंसानों को राज़ी करने की ख़्वाहिश से और उन के नाराज़ हो जाने के डर से बचाए रखे। होता वही है, जो अल्लाह चाहता है, उस की मंशा के बिना न कहीं से नफ़ा पहुंच सकता है और न नुक़्सान।

أَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا وَأَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ لِيْ وَلَكُمْ وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِيْنَ
مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ فَاسْتَغْفِرُوْهُ إِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ۔ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا
بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ۔

अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्ला-हल अज़ीम ली व लकुम व लि साइरिल मुस्लिमी-न मिन कुल्लि ज़म्बिन फ़स्तग़्फ़िरूहु इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रहीम ला हौ-ल वला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहिल अली यिल अज़ीम०

# शुक्र गुज़ारी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ۔ عَالِمُ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ
هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ۔ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ۔
وَلَهُ الْكِبْرِیَآءُ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ۔ نَحْمَدُهٗ
وَنَسْتَعِیْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ
لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَعَلٰۤی اٰلِهٖ
وَاَصْحٰبِهٖ اَجْمَعِیْنَ ٭

اَمَّا بَعْدُ۔ فَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَمَنْ یَّشْكُرْ فَاِنَّمَا یَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ۔ وَ
مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ حَمِیْدٌ۔

अल हुम्दु लिल्लाहि अल-हुम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व आलिमुल ग़ैबि वश्शहादति हुवर्रह्मानुर्रहीम रब्बुस्समावाति व रब्बुल अर्ज़ि रब्बुल अर्शिल अज़ीम व लहुल किब्रियाउ फ़िस्समावाति वल अर्ज़ि व हुवल अज़ीज़ुल हकीम नह्मदुहू व नस्तअीनुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व नश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व अला आलिही व अस्हाबिही अजमअीन०

अम्मा बअ्दु फ़क़ालल्लाहु तआला व मंय्यश्कुर फ़ इन्नमा यश्कुरु लिनफ़्सिही व मन क-फ़-रफ़ इन्नल्ला-ह ग़नीयुन हमीद०

भाइयो और अज़ीज़ो !

अल्लाह तआला के साथ ताल्लुक़ मोमिनाना ज़िंदगी की जान है। हर ताल्लुक़ की बुनियाद किसी न किसी जज़्बे पर होती है। मां-बाप से ताल्लुक़, औलाद से ताल्लुक़, पड़ोसियों और दोस्तों से ताल्लुक़, कारोबारी ताल्लुक़, ग़रज़ यह कि दुनिया में कोई ताल्लुक़ ऐसा नहीं होता, जिस की कोई बुनियाद न हो और यह भी आप जानते हैं कि अगर आप किसी से

अपने ताल्लुक़ात मज़बूत करना चाहते हैं, तो आप को उस ताल्लुक़ की बुनियाद को मज़बूत बनाना होता है। जब मैं यह कहता हूं कि अल्लाह से ताल्लुक़ मोमिनाना ज़िंदगी की जान है, तो तुरन्त यह सवाल ज़ेहन में आना चाहिए कि अल्लाह और बन्दे के ताल्लुक़ की बुनियाद क्या है, क्यों कि जब यह बुनियाद मज़बूत हो गयी तो ताल्लुक़ भी मज़बूत होगा, और अगर यह बुनियाद ही मौजूद न होगी, तो यह ताल्लुक़ भी ज़ुबानी जमा खर्च से ज़्यादा और कुछ न होगा।

बुज़ुर्गो और दोस्तो !

अल्लाह और बन्दे के ताल्लुक़ की सब से अहम बुनियाद शुक्र है। शुक्र का ताल्लुक़ दिल से भी है, ज़ुबान से भी और अमल से भी।

दिल का शुक्र यह है कि इंसान हर वक़्त यह महसूस करता रहे कि उस पर अल्लाह तआला के कैसे-कैसे इनामात हो रहे हैं। जब दिल शुक्र के जज़्बों और एहसासों से भरा होगा तो ज़ुबान से भी शुक्र के कलिमे अदा होंगे और अमल पर भी उस का असर पड़ेगा। इस लिए इस बुनियाद की मज़बूती का पहला ताल्लुक़ दिल से है। ज़रूरत इस बात की है कि इंसान के दिल में शुक्र का यह जज़्बा पाया जाता रहे।

भाइयो ! दिल के अन्दर शुक्र के जज़्बों को जगाए रखने के लिए भी इरादे और तवज्जोह की ज़रूरत है। जब तक हम ख़ुद यह महसूस न करें कि अल्लाह तआला ने हमें क्या-क्या नेमतें दी हैं और इस एहसास को हर वक़्त ताज़ा न रखें, शुक्र के जज़्बे हमारे दिल में पल-बढ़ नहीं सकते। हमारी यह बहुत बड़ी कमज़ोरी है कि अगर हम पर कोई मुसीबत आ पड़े या कोई नुक़्सान हो जाए तो उस का ध्यान हमें हर वक़्त रहता है। हम बार-बार उस का ज़िक्र करते हैं, हर वक़्त उसे महसूस करते रहते है, लेकिन अल्लाह तआला की अनगिनत नेमतें तो हमें हर वक़्त हासिल हैं, उन के एहसास से हमारा दिल ग़ाफ़िल रहता है और हमारी ज़ुबानों पर उन का चर्चा कम ही आता है। अब ज़ाहिर है कि जब हमें नेमतों का एहसास ही नहीं तो फिर नेमतें देने वाले का शुक्र और उस की एहसान-मंदी के जज़्बे हमारे दिल में कैसे पैदा होंगे। अल्लाह तआला से ताल्लुक़ मज़बूत करने के लिए पहली ज़रूरत तो यह है कि आदमी अपनी इस ग़फ़लत को दूर करे। हर दिन कोई न कोई वक़्त निकाले, जब वह अल्लाह की दी हुई नेमतों पर ग़ौर करे। इस तरह जब आप ग़ौर करेंगे तो अल्लाह की नेमतें सिर्फ़ अपने अन्दर ही नहीं, बल्कि अपने से बाहर भी

इस कायनात के कोने-कोने पर फैली हुई आप को दिखायी देने लगेंगी।

तनिक तन्हाइयों में बैठ कर ग़ौर तो कीजिए कि किस तरह आप का रोंगटा-रोंगटा अल्लाह की नेमतों को ज़ाहिर करने वाला है। आप तन्दुरुस्त हैं, चलते-फिरते हैं, तनिक बीमारों और अपाहिजों को देखिए, उन के मुक़ाबले में यह कैसी बड़ी नेमत है। आप को अल्लाह तआला ने देखने, सुनने, बोलने और सोचने-समझने की सलाहियतें दी हैं, तनिक अंधों बहरों, गूंगों और पागलों के मुक़ाबले में इन नेमतों का एहसास तो कीजिए, यक़ीनन आप का दिल शुक्र के जज़्बों से भर उठेगा। इसी तरह अपने बाहर नज़र डालिए। दिन और रात का उलट-फेर, मौसमों की तब्दीली, वर्षा और हवाओं का इन्तिज़ाम और सूरज और चांद से मिलने वाले फ़ायदे, ज़मीन से उगने वाली खाने की चीज़ें, ज़मीन की तहों में छिपे हुए अनगिनत ख़ज़ाने, नदियों का बहाव, समुद्रों के फ़ायदे, पहाड़ों के फ़ायदे, ग़रज़ यह कि दफ़्तर के दफ़्तर स्याह करते चले जाइए, लेकिन इंसान की क्या मजाल कि इन नेमतों को गिन भी सके, जिन के बल पर वह ज़िंदा है और ज़िंदगी के लुत्फ़ उठा रहा है। बड़ा ही एहसान भूल जाने वाला है वह दिल, जो यह सब कुछ देखे, महसूस करे और फिर भी उस के शुक्र के जज़्बे न उमड़ें।

अज़ीज़ो! यह तो अल्लाह तआला की नेमतों का हाल है और फिर यह भी सोचिए कि हमें अल्लाह ने जो यह सब कुछ दिया है, तो हमारा ख़ुदा पर कोई हक़ नहीं आता था कि उस ने इस हक़ को अदा करने के लिए हमें यह सब कुछ अता किया हो और न हमारी यह ताक़त कि हम इन नेमतों का कोई बदला अदा कर सकें, यह सब कुछ उस का करम ही करम है। उसी ने दिया है, बे-मांगे दिया है, बिला किसी हक़ के दिया है, फिर सब कुछ देने के बाद वह जब चाहे उसे छीन भी सकता है, कोई उस का हाथ नहीं पकड़ सकता, आज आप लाखों के मालिक हैं, हुकूमत के तख़्त पर विराजमान हैं, मगर आप ख़ाली हाथ हो सकते हैं, दर-दर की ठोकरें खा सकते हैं। आज आप तन्दुरुस्त हैं, कल बीमार हो सकते हैं। आज आप को बहुत-सी सलाहियतें मिली हुई हैं, कल आप मजबूर और माज़ूर हो सकते हैं। वह कौन है जो आप को नेमतें दे रहा है? जिस के इशारों पर ये नेमतें क़ायम हैं? क्या कोई दिल ऐसा एहसान न मानने वाला भी हो सकता है कि वह यह सब कुछ महसूस करे और फिर भी उस के अन्दर शुक्र के जज़्बे न उभरें? उस की ज़ुबान पर शुक्र के कलिमे न आएं? लेकिन

हम कम ही सोचते और ग़ौर करते हैं।

भाइयो ! बड़ी ज़रूरत इस बात की है कि आपका शऊर जागे और आप को सोचने और ग़ौर करने की आदत हो और आप हमेशा इस बात का एहतिमाम करें कि आप सब से पहले उन लोगों पर नज़र डालें जो अपने हालात और ज़रियों और वसीलों के लिहाज़ से आप से कम हैं। होता यह है कि हमारी नज़रें उन लोगों पर तो जाती हैं, जिन्हें अल्लाह ने हम से बेहतर हालात में रखा है, लेकिन हम उन्हें नहीं देखते जो हम से कमतर दर्जे की ज़िंदगी बसर कर रहे हैं नतीजा यह होता है कि हम तक़्दीर का शिकवा करते हैं और अपने से बद-गुमान रहते हैं, शुक्र के जज़्बों से हमारा दिल बिल्कुल ख़ाली रहता है। शुक्र के बदले दिल में शिकवे और शिकायतें पैदा होती हैं और बन्दे और ख़ुदा के दर्मियान ताल्लुक़ कमज़ोर होते-होते ख़त्म होने के क़रीब आ जाता है। जिस दिल को यह मरज़ लग जाए, उस को किसी हाल में चैन नहीं मिलता। हालात बेहतर हो जाएं, तब भी क्या, किसी न किसी के मुक़ाबले में तो इंसान कमतर ही होगा, वह फिर भी अपने से ऊपर वालों को देखेगा और कुढ़ेगा और यह ऐसा मर्ज़ है कि उसके होते शुक्रगुज़ारी का जज़्बा पैदा हो ही नहीं सकता और जिस दिल में शुक्र नहीं, उस का ताल्लुक़ ख़ुदा से कभी मज़बूत नहीं हो सकता। शेख़ सादी रह० ने एक हिकायत की शैली में एक बड़ी नसीहत भरी आप-बीती लिखी है। कहते हैं कि—

'जब एक बार मैं चलते-चलते एक शहर में पहुंचा, तो मैं बिल्कुल ख़ाली हाथ था। मेरा जूता टूट चुका था और मेरे पास पैसा नहीं था कि मैं जूता ख़रीद लूं। फटे हालों नए शहर में जाते हुए मुझे बड़ी तक्लीफ़ हो रही थी और दिल में ख़्याल आ रहा था कि अल्लाह ने ऐसा मजबूर कर दिया कि आज मैं एक जूता भी नहीं ख़रीद सकता। यही ख़्याल दिल में लिए हुए नमाज़ के लिए मस्जिद में गया। अचानक मेरी निगाह एक ऐसे शख़्स पर पड़ी, जिसके पैर ही नहीं थे और वह घसीट-घसीट कर ज़मीन पर चल रहा था। यह देखते ही मुझे ख़्याल आया कि मेरे रब का मेरे ऊपर कैसा करम और एहसान है कि उस ने मुझे तंदुरुस्त और सही व सालिम दो पैर दिए हैं, जिससे मैं चलता-फिरता हूं। अगर कहीं मैं भी इसी मजबूर की तरह होता तो क्या करता। यह ख़्याल आते ही अपने रब के हुज़ूर सज्दे में गिर पड़ा। मेरा दिल शुक्र के जज़्बों से भरा हुआ था और मेरी ज़ुबान पर उस मालिक के लिए तारीफ़ के कलिमे जारी थे, जिस

ने मुझे दो पैर दिए। अगर इनमें जूता न था तो न सही, पैर ही क्या कम बड़ी नेमत हैं कि उन का एहसान न हो और जूता न होने की वजह से दिल में शिकायत होने लगे।'

यह क़िस्सा एक मिसाल है। यह सामने रहे तो क्या बात कि हमारा दिल शुक्र के जज़्बों से ख़ाली रह सके और जब शुक्र होगा तो ख़ुदा से ताल्लुक़ भी मज़बूत होगा और अल्लाह का यह वायदा तो हर मोमिन के सामने रहना ही चाहिए—

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ

लइन शकर्तुम ल-अज़ीदन्नकुम०

'अगर तुम शुक्र अदा करोगे, तो हम तुम्हें और ज़्यादा देंगे।'

किसी के लिए एहसानमंद होने की यह शक्ल तो आप के सामने आ चुकी कि आदमी दिल से अपने मुह्सिन की क़द्र करे और ज़ुबान से उस की तारीफ़ करे। यह दिल और ज़ुबान का शुक्र है, लेकिन शुक्र की एक कैफ़ियत का ताल्लुक़ अमल से भी है और यह बहुत अहम पहलू है, उसे एक मिसाल से समझिए।

मान लीजिए कि एक आदमी आप को कुछ हथियार जुटा देता है, जिस से आप अपनी जान और माल की हिफ़ाज़त करते हैं, अपने दुश्मनों की शरारत को दूर करते हैं, यह यक़ीनी तौर पर उस का एक एहसान है। इस एहसान के बदले में आप दिल से उस की क़द्र करते हैं, ज़ुबान से उस की तारीफ़ भी करते हैं, लेकिन उसके दिए हुए हथियारों को आप उस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करते हैं या यों समझिए कि इन हथियारों से लैस हो कर आप ख़ुद उसी के घर पर धावा बोल देते हैं, तो ज़ाहिर है कि इस से बड़ी नमकहरामी और नाशुक्रा पन और क्या हो सकता है। उसके होते न दिल से एहसान समझने की कोई क़ीमत है और न ज़ुबान से गुन-गाने की। बस इस मिसाल से अल्लाह तआला की दी हुई नेमतों का मामला भी समझ में आ सकता है, चाहे आप दिल से अल्लाह की नेमतों की क़द्र कितनी ही पहचानते हों और ज़ुबान से उसकी कितनी ही तारीफ़ करते हों, लेकिन अगर आप अल्लाह की दी हुई नेमतों को उस के मर्ज़ी के ख़िलाफ़ इस्तेमाल कर रहे हैं, तो यह सब से बड़ा नाशुक्रापन है। उसने आप को माल व दौलत और बहुत-से साधन दिए हैं। अगर आप उन्हें उस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ इस्तेमाल कर रहे है, तो सिर्फ़ ज़ुबान से 'अलहम्दु

लिल्लाह' कहना क्या काम दे सकता है ? असल शुक्र तो यह है कि आप उसकी बख्शी हुई नेमतों को हरगिज़ उन की मर्ज़ी के खिलाफ़ इस्तेमाल न करें। आंखें बहुत बड़ी नेमत हैं, आप उनसे वे चीज़ें न देखें, जिन का देखना अल्लाह को पसन्द नहीं। कानों से वे कुछ न सुनें, जिस के सुनने से अल्लाह ने मना किया है, ज़ुबान से वे बातें न निकालें जो अल्लाह को पसन्द नहीं हैं, अपने ज़ेहन और दिमाग़ को उन ख्यालों से पाक रखें, जो अल्लाह के नज़दीक ना-पसन्दीदा हैं। यह अमली शुक्र है और यही सारे शुक्र की जान है और अगर दिल में अल्लाह के एहसानों का सही विचार होगा, तो यह मुम्किन नहीं कि उस का असर आप के कामों पर न पड़े। शुक्रगुज़ारी का सबूत इताअत ही की शक्ल में सामने आता है। शुक्रगुज़ार बन्दा कभी अल्लाह का नाफ़रमान और बाग़ी नहीं हो सकता।

भाइयो और अज़ीज़ो ! एक बार फिर सुन लीजिए कि शुक्र मोमिनाना ज़िंदगी की जान है, जो दिल में पैदा होता है, ज़ुबान से उस का इज़्हार होता है और अमल से उस का सबूत मिलता है। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि हम दिल से उस की नेमतों की क़द्र करें, ज़ुबान से उसकी हम्द व सना और अमल से उस की शुक्रगुज़ारी का पूरा-पूरा सबूत दें। उसी से हमारा ताल्लुक़ अल्लाह तआला से मज़बूत हो सकता है और उसी की वजह से हम उस की नेमतों और रहमतों के ज़्यादा से ज़्यादा हक़दार हो सकते हैं।

أَقُولُ قَوْلِي هٰذَا وَأَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِي وَلَكُمْ أَجْمَعِينَ - رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ - إِنَّكَ أَنْتَ الرَّؤُفُ الرَّحِيمُ ٥

अक़ूलु क़ौली हाज़ा वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अजमईन रब्बि औज़िअनी अनिश्कुर निअमत-कल्लती अन-अम-त अलय-य व अन अअम-ल सालिहन तर्ज़ाहु इन्न-क अन्तर्र ऊफ़ुर्रहीम०

# अल्लाह की राह में ख़र्च करना

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِى الْاٰخِرَةِ ۔ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۔ اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ وَاَشْكُرُهٗ ۔ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۔ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا ۔

اَمَّا بَعْدُ فَقَدْ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى ۔ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى كَالَّذِىْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۔ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ۔ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَىْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۔

अलहम्दु लिल्लाहि अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि वलहुल हम्दु फ़िल आख़िरति व हुवल हकीमुल खबीर अह्‌मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वह्‌दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबी-य-ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिंव्व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा०

अम्मा बअ्दु फ़क़द क़ालल्लाहु तआला या ऐयुहल्लज़ी-न आमनू ला तुब्तिलू स-द-क़ातिकुम बिल मन्नि वल अज़ा कल्लज़ी युन्फ़िक़ु मालहू रिया अन्नासि वा ला युअ्मिनु बिल्लाहि वल यौमिल आख़िरि फ़-म-स-लहू क-म-सलि सफ़्वानिन अलैहि तुराबुन फ़-असाबहू वाबिलुन फ़-त-र-कहू सल्दा ला यक़्दिरू-न अला शैइम मिम्मा क-स-बू वल्लाहु ला यह्‌दिल क़ौमल काफ़िरीन०

अज़ीज़ो और दोस्तो !

अल्लाह तआला क़ुरआन पाक में इर्शाद फ़रमाता है कि ऐ ईमान लाने वालो ! अपने सदक़ों को एहसान जता कर और दुख देकर उस शख़्स की तरह ख़ाक में न मिला दो, जो अपना माल सिर्फ़ लोगों के दिखाने को ख़र्च करता है और न अल्लाह पर ईमान रखता है, न आख़िरत पर। उस के ख़र्च की मिसाल ऐसी है, जैसे एक चट्टान थी जिस पर मिट्टी की तह जमी हुई थी। उस पर जब ज़ोर की वर्षा बरसी, तो सारी मिट्टी बह गयी और साफ़ चट्टान की चट्टान रह गयी। ऐसे लोग अपने नज़दीक ख़ैरात करके जो नेकी कमाते हैं, उससे कुछ भी उनके हाथ नहीं आता और काफ़िरों को सीधी राह दिखाना अल्लाह का दस्तूर नहीं है।

भाइयो ! आप ने सुना होगा कि अल्लाह तआला ने अपनी मर्ज़ी के कामों में मोमिन बन्दों को माल ख़र्च करने की ताकीद बार-बार फ़रमायी है। इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं है कि अल्लाह तआला कोई हमारी ख़ैरात का ज़रूरतमंद है, बल्कि ख़ैरात करने से इन्सान के अन्दर जो अख़्लाक़ी ख़ूबियां पैदा होती हैं, उनसे हमें सजाने के लिए बहुत-से दूसरे नेक कामों की तरह ख़ैरात करने का हुक्म दिया गया है। इस्लाम मोमिनों को दुनिया में जिस जगह पर देखना चाहता है और उन से वह जो काम लेना चाहता है, उसके लिए निहायत बुर्दबार और ऊंचे अख़्लाक़ के हमदर्द और नेक दिल इन्सान चाहिए। छिछोरे और थुड़ंले लोग उसके काम के नहीं, बिला किसी दुनिया के लालच के, ख़ालिस अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने से ये ख़ूबियां इन्सान के अन्दर पैदा होती हैं और ऐसे ही सदक़ों के लिए अल्लाह तआला अपने बन्दों को आख़िरत में अपने बे-इन्तिहा करम और फ़ज़्ल से नवाज़ेगा। इस तरह अल्लाह की राह में माल ख़र्च करना असल में सरासर बन्दे ही के फ़ायदे के लिए है, लेकिन शर्त यही है कि माल ख़ालिस अल्लाह की ख़ुशी के लिए उन तरीक़ों से ख़र्च किया जाए जो अल्लाह को पसन्द हैं और माल ख़र्च करके इन्सान न किसी की तारीफ़ का भूखा हो और न एहसान जताए।

जो लोग अपना माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं, वे तो ख़ुद अपने अमल से साबित करते हैं कि उन्हें जो कुछ लेना है, वह इन्सानों से लेना है। वे अपनी कुछ तारीफ़ सुनना चाहते हैं या इस पर्दे में कोई माद्दी फ़ायदा हासिल करना उन की नज़रों के सामने है।

अज़ीज़ो और दोस्तो ! जो लोग माल ख़र्च करके एहसान जताते हैं या दिखावे के लिये ख़र्च करते हैं, उन की मिसाल बयान फ़रमाते हुए

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है कि जैसे किसी चट्टान पर कुछ मिट्टी जमा हो जाए, बस कुछ इसी तरह उन के अन्दर नेकी का कोई जज़्बा उभरता है, लेकिन अगर मिट्टी की तह हल्की है और उस के अन्दर कोई पथरीली चट्टान छिपी हुई है, तो जब बारिश होती है तो मिट्टी बह जाती है और ख़ाली चट्टान रह जाती है। इसी तरह चूंकि उन की नेकी के जज़्बे की तह में नीयत की ख़राबी और मक़सद की ग़लती छिपी होती है, इस लिए उन्हें माल खर्च करने से भी वह फ़ायदा नहीं पहुंचता जो पहुंचना चाहिए। इस खर्च करने से उस के अन्दर वे ख़ूबियां पैदा नहीं होतीं, जो ख़ालिस अल्लाह की राह में माल खर्च करने वालों के अन्दर पैदा होती हैं। हम में से कोई भी ऐसा नहीं होगा, जो यह पसन्द करे कि उस का माल और मेहनत बर्बाद हो जाये। कोई नहीं चाहता कि उस का कमाया हुआ रुपया बर्बाद हो। हर आदमी जो कुछ खर्च करता है, किसी न किसी फ़ायदे के लिए खर्च करता है। अल्लाह की राह में खर्च करना भी हमारे अपने फ़ायदे के लिए है। इस से आख़िरत में हम अल्लाह के फ़ज़्ल व करम के हक़दार बनते हैं और दुनिया में हमारे अन्दर वह बुलन्द अख़्लाक़ पैदा होते हैं, जो हमें ज़िंदगी की तमाम राहों में सीधी और सच्ची रविश पर चलने में मददगार साबित होते हैं।

भाइयो! अल्लाह की राह में जो कुछ किया जाता है, उसे बर्बाद करने वाली सब से ख़तरनाक चीज़ दिखावा है। हर वक़्त इस बात पर नज़र रखिए कि किसी तरह भी आप के मन में यह चोर घुसने न पाये। कभी-कभी ऐसा होता है कि इन्सान अच्छे जज़्बे और नेक इरादे से किसी भलाई की तरफ़ क़दम बढ़ाता है, लेकिन शैतान तुरन्त कोई न कोई ऐसी शक्ल पैदा कर देता है कि उस की नेकी किसी न किसी तरह बर्बाद हो जाये। इस सिलसिले में शैतान का सब से कारगर हथियार दिखावा ही है। दिखावे की ख़्वाहिश, लोगों से तारीफ़ें सुन कर ख़ुशी महसूस करना, दिल में यह ख़्वाहिश पैदा हो जाना कि उस के भले कामों की सूचना किसी न किसी तरह लोगों को हो जाये या इसी तरह के और जज़्बे और ख़्याल दिल में पैदा होकर नेकियों को बर्बाद करने की वजह बन जाते हैं। हम सब को लाज़िम है कि जब अल्लाह तआला से किसी भलाई की तौफ़ीक़ तलब करें तो दिखावे से बचने के लिये भी उस से मदद तलब करें। इस ख़तरे से बचे रहने के लिए ज़ेहन का हर वक़्त जगाये रखना भी फ़ायदेमंद है। हम सब अल्लाह से दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला हमें

अपनी ख़ुशी के लिए ख़र्च करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और दिखावे की बुराई से बचाये रखे।

اَقُوْلُ قَوْلِیْ هٰذَا اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمْ اَجْمَعِیْنَ ۔ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ

अकूलु क़ौली हाज़ा अस्तग़फ़िरुल्ला-ह ली व लकुम अजमईन० इन्नहू हुवल ग़फ़ूर्रहीम०

———

# अल्लाह तआला की सिफ़ात

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدَانَا لِلْاِسْلَامِ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِیَ لَوْلَآ اَنْ هَدَانَا اللّٰهُ وَجَعَلَنَا خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهٰی عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُ بِاللّٰهِ۔

اَحْمَدُهٗ سُبْحٰنَهٗ وَاَشْكُرُهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ نَبِيَّنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا۔

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिल इस्लामि व मा कुन्ना लिन-हतदि-य लौला अन हदाना लिल्लाहि व ज-अ-लना ख़ै-र उम्मतिन उख़्रिजत लिन्नासि तअ्मुरु बिल मअ्रूफ़ि व तन्हा अनिल मुन्करि व तुअ्मिनु बिल्लाहि०

अह्मदुहू सुब्हानहू व अश्कुरुहू व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न नबी-य-ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्ला हुम-म सल्लि अला अब्दि-क व रसूलि-क मुहम्मदिव-व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरा०

बुज़ुर्गो और दोस्तो !

हमारे ईमान की बुनियाद अल्लाह की ज़ात और उसकी सिफ़तों पर क़ायम है। मोमिन उसी को कहते हैं जो अल्लाह की ज़ात और उस की उन तमाम सिफ़तों पर ईमान लाया हो, जिनका ज़िक्र हमें अल्लाह की किताब और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस में मिलता है। अभी क़ुरआन पाक की जो आयत मैंने आप के सामने तिलावत की है, उसमें अल्लाह तआला की कुछ सिफ़्तों का ज़िक्र आया है, उन्हीं के बारे में, मैं आज कुछ बातें आप के सामने रखूंगा।

इन दो आयतों में यह फ़रमाया गया है कि यह किताब यानी क़ुर-आन शरीफ़ अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल किया गया है, वह अल्लाह जो जबरदस्त है, सब कुछ जानने वाला है, गुनाह माफ़ करने वाला और तौबा

क़ुबूल करने वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला और बड़े फ़ज़्ल व करम वाला है। कोई माबूद उस के सिवा नहीं, उसी की तरफ़ सब को पलटना है।'

अल्लाह तआला की सिफ़तों पर गहरा यक़ीन इन्सान की ज़िंदगी पर असर डालता है। असल में उस की सिफ़तों पर यक़ीन करने से ही हमारे अमल पर असर पड़ता है और हमारी ज़िंदगी का एक रुख़ तै होता है। मिसाल के तौर पर आप उन सिफ़तों पर विचार करें जो इस आयत में बयान हुई हैं। फ़रमाया गया कि वह ज़बरदस्त है यानी सब पर ग़ालिब है, उस का जो फ़ैसला भी किसी के हक़ में हो, वह लागू ही हो कर रहता है। कोई ताक़त ऐसी नहीं जो उसके फ़ैसलों को टाल सके, किसी की यह मजाल नहीं कि उस से लड़ कर जीत सके, न कोई उस की पकड़ से बच सकता है। इसलिए उसकी नाख़ुशी मोल लेकर अगर कोई आदमी कामियाबी की उम्मीद रखता है, तो वह सख़्त ग़लती पर है। किसी को अगर गुमान है कि वह उस की मंशा के ख़िलाफ़ अपनी मनमानी कर सकेगा, तो वह बड़ी मूर्खता में पड़ा हुआ है। अब जिस आदमी को भी अल्लाह तआला की इस सिफ़त पर दिल से यक़ीन हो, वह कभी उस की नाफ़रमानी पर जम नहीं सकता, उस के दीन को नीचा दिखाने के लिए जोड़-तोड़ नहीं कर सकता, न खुल कर मुक़ाबले में आ सकता है। रहे वे लोग जो अल्लाह के दीन पर चल रहे हैं और अल्लाह की फ़रमांबरदारी में ज़िंदगी बसर करना चाहते हैं, वे इस यक़ीन के बाद कि अल्लाह सब पर ग़ालिब है, बड़ी से बड़ी कठिनाइयों को ख़्याल में नहीं ला सकते, हालात के दबाव से अपना रुख़ नहीं बदल सकते, कमज़ोर सहारों से उम्मीदें नहीं लगा सकते।

अब दूसरी सिफ़त को लीजिए। फ़रमाया कि वह सब कुछ जानने वाला है यानी वह जो कुछ करता है, अटकल और अन्दाज़े की बुनियाद पर नहीं करता, बल्कि इल्म की बुनियाद पर करता है, उसे हर चीज़ की सीधी जानकारी है, इसलिए उन चीज़ों के बारे में, जो हमारी पहुंच से बाहर हैं और जिन को हमारी अक़्लें पकड़ में नहीं ले सकतीं। उन के बारे में जो इल्म उस की तरफ़ से आ रहा है, वह बिल्कुल यक़ीनी है। जानने वाला जब कोई बात बताए तो न मानने वालों का सही रवैया यही है कि वे उसे मान लें। फिर चूंकि वह सब कुछ जानने वाला है, इस लिए यह बात भी वही जानता है कि इन्सान की असल कामियाबी किस चीज़ में है

और वे उसूल और क़ानून कौन-से हो सकते हैं जिन पर चल कर इन्सान कामियाबी तक पहुंच सके। वही यह जानता है कि किन हुक्मों की पैरवी इन्सान के लिए ज़रूरी है और किन बातों से उसे बचना चाहिए, इसलिए उस की तरफ़ से आयी हुई हिदायतों और उस के दिये हुए क़ानून पर चल कर ही इन्सान सच्ची कामियाबी तक पहुंच सकता है। उसकी हर तालीम की बुनियाद हिक्मत और सही इल्म पर है, जिसमें ग़लती नहीं हो सकती, इसलिए अगर इन्सान उसकी हिदायतों को क़ुबूल न करे तो इसका मतलब यही है कि आदमी खुद अपनी तबाही के रास्ते पर जाना चाहता है, फिर इस सिफ़त का दूसरा पहलू यह है कि चूंकि वह सब कुछ जानने वाला है, इसलिए हर-हर इन्सान जो कुछ कर रहा है, वह सब उसके इल्म में है, कोई चीज़ उससे छिपी नहीं रह सकती, यहां तक कि वह तो दिलों के भेद और इरादों तक को जानता है, इस लिए किसी इन्सान के लिए यही मुम्किन नहीं कि वह कोई बहाना बना कर उसकी सज़ा से बच सके। इस के अलावा इंसान हर एक को धोखा दे सकता है, हर एक से अपनी असल हैसियत को छिपा सकता है, लेकिन जो सब कुछ जानने वाला है, उस से बच कर वह कहीं नहीं जा सकता।

अल्लाह तआला की इस सिफ़त पर पूरा यक़ीन होने के बाद इंसान किसी हाल में अल्लाह की हिदायतों और उसके क़ानूनों से मुंह नहीं मोड़ सकता। किसी हुक्म या हिदायत के बारे में वह यह इत्मीनान तो कर सकता है कि वाक़ई वह ख़ुदा की तरफ़ से है या नहीं ? लेकिन जब उसे यह यक़ीन हो जाए कि वाक़ई ख़ुदा का हुक्म है, तो फिर वह उसे जानते-बूझते टाल नहीं सकता और न इस की ना-फ़रमानी पर जम सकता है। ना-फ़रमानियां उसी वक़्त होती हैं, जब इंसान का ईमान कमज़ोर पड़ जाता है, फिर इस सिफ़त पर यक़ीन इंसान को गुनाहों से भी रोक सकता है। अगर इंसान जानते-बूझते गुनाहों में पड़ा हुआ है, तो यक़ीनन उस के दिल में या तो ख़ुदा की इस सिफ़त का यक़ीन ही नहीं है और अगर है तो बहुत ही कमज़ोर और नाकारा है, जो नफ़्स की ख़्वाहिशों और ग़फ़लतों के पर्दे में दब कर रह गया है।

तीसरी सिफ़त यह बयान हुई है कि वह गुनाह माफ़ करने वाला और तौबा क़ुबूल करने वाला है। यह सिफ़त इन्सान को उम्मीद दिलाने वाली और उकसाने वाली है। बहुत-से लोग ऐसे होते हैं जो अपनी ग़फ़-लतों की वजह से बुरी तरह गुनाहों में फंस जाते हैं। अब अगर कभी उन

के दिल में नेकी का कोई ख्याल आता भी है, तो ये मायूस हो जाते हैं। सोचते हैं कि अब क्या हो सकता है ? अब तो पानी सर से ऊंचा हो चुका है। यह मायूसी और ना-उम्मीदी उन्हें सही रास्ते पर नहीं आने देती और वे बदस्तूर ज्यादा से ज्यादा खराबियों में फंसे चले जाते है। अल्लाह तआला की इस सिफ़त पर यक़ीन करने के बाद इंसान के अन्दर यह इरादा पैदा होता है कि वह अपने रवैए पर दोबारा ग़ौर करे और यह सोचे कि अगर अब भी मैं अपना रुख तब्दील करदूं और अपने रवैए से बाज आ जाऊं तो अल्लाह की रहमत के दामन में जगह पा सकता हूं। हक़ीक़त यही है कि अल्लाह तआला की यह सिफ़त इंसान के लिए बड़ी ढाढ़स है, बिगड़े हुए लोगों में सुधार के लिए एक सहारा है। जब बन्दे को यह यक़ीन हो जाता है कि अगर अब भी मैं पलट आऊं तो मेरे साथ मामला सजा और बदले का नहीं किया जाएगा, बल्कि पिछली तमाम कोताहियों को नज़रंदाज कर के मुझे यह मौक़ा दिया जाए कि मैं अपने आगे के रवैए से यह दिखाऊं कि मैं किस हद तक नेकी को राह पर चल सकता हूं, तो यह यक़ीन उसके अन्दर हिम्मत पैदा करता है और एक नए हौसले और नये इरादे के साथ वह आगे बढ़ता है।

भाइयो ! अल्लाह तआला की इन सिफ़ात में पहले 'ग़ाफ़िरिज्ज़म्बि' यानी गुनाह माफ़ करने वाला और इसके बाद 'क़ाबिलित्तौबि' यानी 'तौबा क़ुबूल करने वाला' का ज़िक्र आया है। इस से यह मालूम होता है कि गुनाह माफ़ करना अल्लाह तआला की एक अलग मुस्तक़िल सिफ़त है— और तौबा क़ुबूल करना दूसरी मुस्तक़िल सिफ़त। तौबा क़ुबूल करने का मतलब तो यही है कि बन्दे ने जो गुनाह भी किए हों, वे सब माफ़ हो जाएं, लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम का एक रुख यह भी है कि वह तौबा के बग़ैर भी गुनाह माफ़ फ़रमाता रहता है, जैसे एक आदमी खताएं भी करता है और नेकियां भी और अल्लाह तआला उसकी नेकियों को, उस की खताओं की माफ़ी का ज़रिया बना देता है, यहां तक कि वह बन्दे की उन खताओं को माफ़ कर देता है, जिन्हें वह भूल चुका है। इसी तरह वह दुनिया में जितनी तक्लीफ़ें, मुसीबतें, बीमारियां और तरह-तरह के रंज व ग़म पहुंचाने वाली आफ़तें झेलता है, वे सब भी उस की खताओं का बदला बन जाती हैं लेकिन यह याद रहे कि तौबा बग़ैर खताओं की माफ़ी की रियायत सिर्फ़ उन के लिए है, जो सरकशी और बग़ावत पर तैयार न हों और ईमान वाले हों और गुनाहों पर हठ करने वाले घमंडी, बाग़ी और

काफ़िर इस रियायत के हक़दार नहीं।

चौथी सिफ़त यह बयान की गयी है कि वह सख़्त सज़ा देने वाला है। इस तरह उन लोगों को तंबीह की गयी है, जो बग़ावत और सरकशी पर तुले हुए हैं कि अगर वह एक तरफ़ बन्दगी की राह अपनाने वालों पर मेहरबान है, तो दूसरी तरफ़ बाग़ियों और सरकशों के लिए वह इतना ही सख़्त है। इंसान की यह सब से बड़ी मूर्खता है कि वह अल्लाह तआला की रहमत और मुहब्बत के बजाए अपने आप को उस की सज़ा और पकड़ का हक़दार बना ले। इस सिफ़त पर यक़ीन करने के बाद यह मुम्किन नहीं कि इंसान ख़ुदा के मुक़ाबले में ना-फ़रमानी और बग़ावत के रवैए पर क़ायम रह सके।

पांचवीं सिफ़त यह बयान की गयी है कि वह बड़े फ़ज़्ल व करम वाला है। इन्तिहाई सख़ी-दाता है, जब देने पर आए तो बे-हिसाब दे सकता है। उस की नेमतों और एहसानों का कोई ठिकाना नहीं। वह अपनी मख़्लूक़ पर हर वक़्त अपने फ़ज़्ल व करम की बारिश करता रहता है। फ़रमांबरदार हों या ना-फ़रमान, हर एक को बे-हद व हिसाब नेमतें मिल रही हैं और जो कुछ मिल रहा है, उस के फ़ज़्ल व करम से मिल रहा है। दुनिया की इस ज़िंदगी में उस का फ़ज़्ल व करम किसी पर बन्द नहीं, वह बहुत ज़्यादा फ़ज़्ल व करम वाला है।

भाइयो और अज़ीज़ो! अल्लाह तआला ने अपनी इन पांच सिफ़तों का ज़िक्र फ़रमाने के बाद साफ़ लफ़्ज़ों में पहली बात तो यह फ़रमा दी कि इबादत का हक़दार उस के सिवा कोई दूसरा नहीं हो सकता। लोगों ने ख़्वामख़्वाह जो दूसरे झूठे माबूद बना रखे हैं, उन में से किस में ये सिफ़तें पायी जाती हैं? और अगर उन में ये सिफ़तें नहीं हैं, तो फिर वे माबूद कैसे? माबूद तो वही हो सकता है, जिस में ये सिफ़तें मौजूद हों और दूसरी बात यह फ़रमायी कि हर इंसान को आख़िर कार जाना उसी की तरफ़ है, मौत के बाद मामला ख़त्म नहीं हो जाता, बल्कि हर इंसान को लौट कर उसी की तरफ़ जाना है, जिस ने उन्हें पैदा किया है और जो उन्हें दोबारा ज़िंदा करने और अपने हुज़ूर जमा करने की क़ुदरत रखता है, उस के सिवा कोई दूसरी हस्ती ऐसी नहीं है, जो लोगो के आमाल का हिसाब ले और उन के हक़ में जज़ा या सज़ा का फ़ैसला करे। इस हक़ीक़त के होते अगर कोई शख़्स किसी दूसरी हस्ती को माबूद बनाएगा, तो अपनी इस मूर्खता की सज़ा ख़ुद भुगतेगा।

भाइयो ! आप ने देखा कि अगर हम अल्लाह तआला की इन सिफ़तों पर कुछ भी ग़ौर करें, तो हमें अपनी ज़िंदगी के लिए एक खुली रहनुमाई मिलती है और हमारे रवैए का एक ख़ास रुख़ तै हो जाता है। अगर ज़िंदगी ग़फ़लत और बे-परवाई के साथ गुज़र रही है और जानते-बूझते अल्लाह तआला की ना फ़रमानियां हो रही हैं, तो इस का मतलब इस के सिवा और कुछ नहीं कि अल्लाह तआला की सिफ़ात पर हमारा ईमान वैसा नहीं है, जैसा होना चाहिए। मोमिनाना ज़िंदगी बसर करने के लिए हमें अल्लाह तआला की सिफ़ात पर बराबर ग़ौर करते रहना चाहिए और कोशिश करना चाहिए कि हमारे अन्दर इन सिफ़ात का विचार और यक़ीन धुंधला न पड़ने पाए। इस ग़रज़ के लिए सोच-समझ कर क़ुरआन पाक का पढ़ना, अल्लाह की सिफ़ात का ज़िक्र और नमाज़ों का एहतिमाम ज़रूरी है। अल्लाह तआला मुझे और आप सब को इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन !

فَاتَّقُوا اللّٰهَ، عِبَادَ اللّٰهِ، وَأَخْلِصُوا لَهُ الْعَمَلَ، وَأَطِيعُوا اللّٰهَ وَرَسُولَهُ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ -

फ़त्तक़ुल्ला-ह अिबादल्लाहि व अख़्लिसू लहुल अ-म-ल व अतीअुल्ला-ह व रसूलहू लअल्लकुम तुर्हमून०

# ख़ुत्बा ईदुल फ़ित्र

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ
اَلْحَمْدُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْمُنْعِمِ الْمُحْسِنِ الدَّيَّانِ ذِى الْفَضْلِ وَالْجُوْدِ وَالْاِحْسَانِ
ذِى الْكَرَمِ وَالْمَغْفِرَةِ وَالْاِمْتِنَانِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ
اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु अल-हम्दु लिल्लाहिल मुह्‌सिनिद्दय्यानि ज़िल फ़ज़्लि वल जूदि वल इह्‌सानि ज़िल क-र-मि वल मग़्फ़ि-र-ति वल इम्तिनानि अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु०

भाइयो और अज़ीज़ो !

अल्लाह तआला का बहुत बड़ा एहसान है कि उस ने हमें यह ख़ुशी का दिन दिखाया। आज हमारी ईद का दिन है। इस्लाम ने हमें जो नेमतें अता की हैं, उन में एक नेमत उस के दिए हुए वे त्यौहार भी हैं, जो अपने मिज़ाज और अपनी कैफ़ियत के एतबार से सारी दुनिया के त्यौहारों में ज़्यादा मशहूर हैं। इस्लाम ने हमें दो त्यौहार दिए हैं। एक यही ईदुलफ़ित्र है, जिसे आज हम मना रहे हैं और दूसरा ईदे क़ुर्बां, जो १० ज़िलहिज्जा को हम मनाते हैं। हमारा यह त्यौहार इस ख़ुशी में मनाया जाता है कि हमारे आक़ा और मालिक ने हमें जो रमज़ान के तीस रोज़े रखने का हुक्म दिया था, हम उस की तौफ़ीक़ से इस हुक्म के पूरा करने में कामियाब हो गये, इस लिए इस हुक्म को पूरा कर के हम अपने मालिक का शुक्रिया बजा लाते हैं। हमें अल्लाह तआला ने फिर यह मोहलत अता फ़रमायी कि हमें रमज़ान जैसा मुबारक महीना मिला। यह वह बरकतों वाला महीना है, जिस में अल्लाह तआला ने इंसानों को उस नेमत से नवाज़ा, जो हक़ीक़त में उस की तमाम नेमतों से अफ़्ज़ल और बरतर है। यही वह मुबारक महीना है, जिस में क़ुरआन नाज़िल हुआ और क़ुरआन अल्लाह तआला

की वह नेमत है, जिस ने इन्सान को वह राह दिखायी, जिस पर चल कर इन्सान हक़ीक़ी कामियाबी पर पहुंच सकता है, यह तो आप जानते ही हैं कि अल्लाह तआला ने अपनी बे-इंतिहा मुहब्बत और मेहरबानी से हमारी ज़िंदगी बसर करने के अनगिनत इन्तिज़ाम किए, तनिक सोचिए तो सही कि हमारे भोजन के लिए, जो एक दाना धरती से आता है, तो उसे वजूद में लाने के लिए जमीन और आसमान की सारी ताक़तें मिल कर किस तरह काम करती हैं। फिर इसी मेहरबान खुदा ने हमारी ज़िंदगी की छोटी से छोटी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कैसे-कैसे इन्तिज़ाम किए हैं, किस में ताक़त है कि वह उन्हें पूरी तरह बयान कर सके। अगर सारी दुनिया के पेड़ों की लकड़ी के क़लम बना डाले जाएं और सारे समुद्र रोशनाई के काम में लाए जाएं और फिर अल्लाह की नेमतों को लिखने की कोशिश की जाए, तब भी इन सारी नेमतों का लिख डालना मुम्किन न हो सकेगा, तो जिस खुदा ने हमारी ज़िंदगी के लिए इतने कुछ इन्तिज़ाम फ़रमाए, हैं, उस की रहमत व शफ़क़त से यह बात नामुम्किन थी कि वह हमारी हिदायत और रहनुमाई के लिए और हमारी रूहानी और अख़्लाक़ी ज़िंदगी के लिए कोई इन्तिज़ाम न फ़रमाता। रमज़ान का मुबारक महीना ही वह मोहतरम महीना है, जिस में पूरी इन्सानियत को वह नेमत मिली, जो उस की रूहानी और अख़्लाक़ी ज़िंदगी के लिए और उस की रहनुमाई और हिदायत के लिए इन्तिहाई ज़रूरी थी।

اللّٰہ اکبر اللّٰہ اکبر لا الٰہ الا اللّٰہ واللّٰہ اکبر اللّٰہ اکبر وللّٰہ الحمد۔

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु०

भाइयो और अज़ीज़ो ! आज हम सब अपने मालिक के दरबार में हाज़िर हुए। हमने इस बात का शुक्र अदा किया कि उसने हमें रमज़ान के मुबारक महीने में रोज़े रखने की तौफ़ीक़ और हिम्मत अता फ़रमायी। हमने इस महीने में क़ुरआन से अपने ताल्लुक़ को ताज़ा किया, जहां तक हो सका, खुद भी क़ुरआन की तिलावत की और उस की दी हुई हिदायतों को समझने की कोशिश की। रात को तरावीह में अल्लाह का कलाम नमाज़ों में खड़े हो कर सुना और उस से दुआएं कीं कि वह हमें अपनी इस नेमत से पूरा-पूरा फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हमें यह जुरात और हिम्मत दे कि हम आज के जैसे ना-मुवाफ़िक़ हालात में भी

उस रास्ते पर चल सकें, जो उस ने अपनी आख़िरी किताब में हमारे लिए तज्वीज़ किया है और जिस रास्ते पर उस के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद चल कर हमारे सामने एक बेहतरीन नमूना पेश फ़रमाया है। हम इस पर अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं कि अल्लाह के बताए हुए इस रास्ते पर चलने के लिए जिन तफ़्सीली हिदायतों की हमें ज़रूरत थी, वे सब अल्लाह के आख़िरी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें देदी हैं और वे सब अल्लाह के फ़ज़्ल से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत की शक्ल में महफ़ूज़ हैं। हम इस नेमत पर अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं और उसी से ठीक-ठीक फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ तलब करते हैं।

اَللّٰہ اکبر اللّٰہ اکبر لَا اِلٰہ اِلَّا اللّٰہ واللّٰہ اکبر اللّٰہ اکبر وللّٰہ الحمد۔

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु०

भाइयो और अज़ीज़ो ! यह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल और इनाम ही तो था कि हम ने सिर्फ़ उस की ख़ुशी हासिल करने के लिए और सिर्फ़ उस से बदला पाने की उम्मीद पर पूरे महीने दिन को रोज़े रखे और रात को तरावीह में खड़े हो कर क़ुरआन सुना। जब तक किसी आदमी को अल्लाह की ज़ात पर ईमान न हो और जब तक वह इस बात का पूरा-पूरा यक़ीन न रखता हो कि उसे एक दिन अपने मालिक के हुज़ूर खड़ा होना है और जब तक वह ख़ूब अच्छी तरह यह न जानता हो कि मौत के बाद आने वाली ज़िंदगी में इंसान को वही कुछ मिलेगा, जो उस ने इस दुनिया की ज़िंदगी में कमाया हो, उस वक़्त तक यह कैसे मुम्किन है कि आदमी अपनी जायज़ और फ़ितरी ज़रूरतों पर पाबन्दी गवारा कर ले। दिन-दिन भर भूखा-प्यासा रहे और भूखा-प्यासा ही न हो, बल्कि खाने-पीने की क़िस्म की तमाम लज़्ज़तों से अपने आप को रोके रखे और रातों को अपना आराम छोड़ कर घंटों ख़ुदा के सामने क़ियाम, रुकूअ और सुजूद में वक़्त गुज़ारे, फिर अपनी मीठी नींद को छोड़ कर बे-वक़्त उठे और आदत के ख़िलाफ़ खाए-पिए। ये सारे काम वही लोग कर सकते हैं और वही करते हैं, जिन के दिलों में ईमान की रोशनी मौजूद है। हम अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं कि उस ने हमें यह दौलत अता फ़रमायी और हमें अपने हुक्म को पूरा करने की ताक़त बख़्शी, हम उस के इसी फ़ज़्ल व करम पर

उस का शुक्र अदा करते हैं और उस से दुआ करते हैं कि वह हमारे ईमानों को मज़बूती अता फ़रमाए और ज़िंदगी के तमाम कामों में अपनी रिज़ा और अपनी ख़ुशी के रास्ते पर चलने की हिम्मत अता फ़रमायी।

اللہ اکبر اللہ اکبر لا الٰہ اِلّا اللہ واللہ اکبر اللہ اکبر وللہ الحمد۔

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु०

भाइयो! हम सब जानते हैं कि इन्सान से ग़लतियां और कोताहियां हुई हैं। हम में से कोई भी ऐसा दावा नहीं कर सकता कि उस ने अल्लाह के हुक्मों को, जैसा कि करना चाहिए, पूरा कर दिया था। हम सब ख़ताकार हैं, हम से कोताहियां भी हुई हैं। रोज़ों में ऐसे काम भी हम से हो गये हैं, जो रोज़े की हालत में मुनासिब नहीं थे, फिर हम ने उन बरकत के दिनों से जैसा कुछ फ़ायदा उठाना चाहिए था, वैसा फ़ायदा भी नहीं उठाया है। हम में ऐसे लोग भी मौजूद हैं, जिन के रोज़ों में कमी रह गयी, जो नमाज़ों का एहतिमाम ठीक-ठीक नहीं कर सके और मुझे तो निहायत दुख और अफ़सोस के साथ यह कहना भी पड़ता है कि हम में ऐसे लोग भी मौजूद हैं, जो इस महीने की बरकतों से महरूम रह गये, जिन्होंने बहार के मौसम को पाया, लेकिन वे उस से फ़ायदा न उठा सके। आज उन के दामन में एक फूल भी नहीं है, वे जैसे ख़ाली हाथ पहले थे, वैसे ही अब भी हैं। बहरहाल आज का दिन मलामत करने का दिन नहीं है, अल-बत्ता आज का दिन तौबा व इस्तग़फ़ार करने का है। अल्लाह की रहमत का दामन बहुत बड़ा है। बन्दा जिस वक़्त भी पलटना चाहे, तो वह उस की रहमत की गोद को खुला हुआ पाएगा। आज हमारे लिए इस्तग़फ़ार का दिन है, अपनी कोताहियों की माफ़ी चाहने का दिन है, आगे के लिए अज़्म और इरादे का दिन है। हमें महसूस करना चाहिए कि अल्लाह के फ़ज़्ल से हम अभी ज़िंदा हैं, हमारे लिए अमल की मोहलत बाक़ी है। हालांकि अगर हम याद करें तो हमें ऐसे सैंकड़ों जान-पहचान के और मिलने-जुलने वालों के नाम याद आ सकते हैं, जो अब से पहले ईद में हमारे साथ थे, लेकिन उन के अमल की मोहलत ख़त्म हो गयी। वे अपने रब के हुज़ूर हाज़िर हो गये और वे अब हमारे साथ नहीं है। बस ऐसा ही एक दिन हमारे लिए भी मुक़र्रर है, हम तेज़ी के साथ अपनी उस मंज़िल की तरफ़ बढ़ रहे हैं और हम में से कोई नहीं जानता कि उस के अमल की

मोहलत कब ख़त्म हो जाएगी। यही वजह है कि हमें तौबा और इस्तग़फ़ार की तरफ़ फ़ौरन तवज्जोह देना चाहिए, हमें अपने रब की तरफ़ पलटना चाहिए, अपनी कोताहियों को महसूस करना चाहिए, अपनी ग़फ़लतों को दूर करना चाहिए और आज अपने रब से माफ़ी मांगते हुए और आज अपने रब के सामने गिड़गिड़ाते हुए उस से नेकी की तौफ़ीक़ तलब करना चाहिए और यह इक़रार करना चाहिए कि अब हमारी ज़िंदगी का रुख़ दूसरा होगा। हम जानते-बूझते उस के किसी हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करेंगे। ज़िंदगी में कोई ऐसा रवैया नहीं अपनाएंगे, जो उसे ना पसन्द हो। हमारी सारी इताअतें उसी के लिए होंगी, हम सिर्फ़ उस के वफ़ादार बन कर रहेंगे, उस की इताअत से मुंह मोड़ कर हम न अपने नफ़्स की पैरवी करेंगे और न अपने रस्म व रिवाज की, हम सिर्फ़ उस का बन्दा बन कर रहेंगे, उस के अलावा किसी की बन्दगी और ग़ुलामी अख़्तियार न करेंगे।

भाइयो ! अगर हम इस तरह आज ख़ुशी के दिन पर यह अहम फ़ैसला कर के उठें, तो फिर यक़ीन रखिए कि हमारे लिए आज का दिन सचमुच ईद का दिन है, ख़ुशी का दिन है, हमारी ज़िंदगी का सब से मुबारक दिन है, लेकिन अगर ख़ुदा-न-ख़्वास्ता ये सारी बातें हमारे कानों के परदों से टकरा कर यों ही वापस हो जाएं, उन का कुछ हिस्सा भी दिलों के अन्दर न उतर सके, तो फिर आज का दिन हमारे लिए धमकी और डरावे का दिन है, महरूमी और ना-मुरादी का दिन है। हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह हमारे इस दिन को ईद का दिन बनाए। हम उस के शुक्रगुज़ार हैं कि उस ने हमारे अमल की मोहलत को लम्बा किया। हमें फिर एक बार अपने हाल पर नज़र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमायी। हम सब उस के शुक्रगुज़ार हैं—

اللہ اکبر اللہ اکبر لا الٰہ اِلَّا اللہ وَاللہُ اکبر اللہ اکبر وَلِلّٰہِ الحمد.

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु०

साहिबो ! अल्लाह का तक़्वा तमाम नेकियों की बुनियाद है। जिस बन्दे को हर लम्हा यह ख़्याल लगा रहे कि कहीं उस से कोई ऐसा काम न हो जाए, जिस से उस का मालिक ना-ख़ुश होता है और जिसे हर वक़्त यह फ़िक्र लगी रहे कि मैं अपने मालिक की ना-फ़रमानी से बचूं और उसे ज़्यादा से ज़्यादा ख़ुश कर सकूं, वह बड़ा मुबारक बन्दा है।

हम सब ने अल्लाह की बन्दगी का इक़रार किया है, हम सब उसी को अपना आक़ा और मालिक तस्लीम करते हैं। हमारे लिए सबसे बड़ी खुश-क़िस्मती यह है कि हम उस की ना-ख़ुशी से बचें और उस के हुक्मों की पूरी-पूरी इताअत करते हुए ज़िंदगी बसर करें। यही तक़्वा सारी नेकियों की बुनियाद है। यही ईमान की शर्त है। यही हमारी तमाम मुश्किलों का सही हल है। यही वह इलाज है, जिस से सारे फ़साद दूर होते हैं। अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल व करम से तक़्वा की इसी कैफ़ियत को बढ़ाने के लिए रमज़ानुल मुबारक के रोज़े हम पर फ़र्ज़ किए।

अब जिन लोगों ने रोज़े इन ज़रूरी शर्तों के साथ रखे, जो रोज़े के लिए बतायी गयी हैं, तो यक़ीनन उन के अन्दर तक़्वा की कैफ़ियत पैदा हुई और वह अब पहले के मुक़ाबले में नेकी के रास्ते पर चलने की ज़्यादा हिम्मत अपने अन्दर पाएंगे। रमज़ान का पूरा महीना तर्बियत का महीना था, उस में आप को नेकी की राह पर चलने की मश्क़ करायी गयी। ख़ुदा के हुक्मों की इताअत करने की मश्क़ करायी गयी, अल्लाह की राह में तक्लीफ़ें उठाने और अपनी ख़्वाहिशों और दिलचस्पियों की क़ुर्बानी करने की मश्क़ करायी गयी। अब यह आप का काम है कि आप ने इस मश्क़ से जो फ़ायदा उठाया है, उसे आप आने वाले ग्यारह महीनों में बाक़ी रखने की कोशिश करें, यहां तक कि अल्लाह तआला आप को फिर एक बार अपनी नेमत से नवाज़े, लेकिन यह जभी हो सकता है कि जब आप ज़िंदगी के तमाम कामों में अल्लाह की नाफ़रमानी से बचने का एह-तिमाम करते रहें, जो रोज़े को तोड़ने वाली है। आप जानते हैं कि मोमिन की पूरी ज़िंदगी इबादत है, बस शर्त यह है कि वह ज़िंदगी का हर काम ख़ुदाई हिदायत के मुताबिक़ अंजाम दे और किसी मामले में जानते-बूझते ख़ुदा की ना-फ़रमानी न करे। यह अल्लाह का बेहद व हिसाब फ़ज़्ल है कि उस ने हमें उस दीन की नेमत से नवाज़ा जो इंसानी ज़िंदगी को दीन व दुनिया के दो खानों में बांटा नहीं करता, बल्कि जो इंसान की पूरी ज़िंदगी को दीन ही के दायरे में रखना चाहता है। यह अल्लाह का एहसान ही तो है कि जिस तरह उसने नमाज़, रोज़े और हज व ज़कात का बदला देने का वायदा फ़रमाया है, उसी तरह उस ने यह भी फ़रमाया है कि अगर हम अपनी रोज़ी इस तरह कमाएं कि ख़ुदा के बताए हुए हलाल व हराम का ध्यान रखें, किसी का कोई हक़ न मारें और कोई काम अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ न करें, तो वह हमें इसपर भी बदला देगा, यहां तक कि बीवी-

बच्चों के साथ ताल्लुक़ात रखना, समाजी कामों में हाथ बटाना, मुल्क का राज-काज चलाना, ग़रज़ यह कि वे सारे काम, जिन्हें आम तौर पर दुनियादारी के काम कहा जाता है, वे सब हमारे लिए अज्र व सवाब की वजह बन सकते हैं, अगर हम हर क़दम पर ख़ुदाई हिदायतों को याद रखें और हमारा हर काम ख़ुदा की ख़ुशी और उस की रिज़ा के लिए हो, तो यह अल्लाह तआला का कितना बड़ा एहसान है, जिस का शुक्र हम अदा नहीं कर सकते। जो लोग इस नेमत से महरूम हैं, वे या तो दुनिया के सारे मामलों को शैतानों के हवाले कर के ख़ुद अपने नज़दीक अल्लाह की इबादत में लग जाते हैं और कोनों में जा बैठते हैं या फिर ख़ुद शैतान बन कर दुनिया के लिए अज़ाब बन जाते हैं। हम अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं कि उस ने हमारी रहनुमाई के लिए अपनी किताब नाज़िल फ़रमायी। इस किताब की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ख़ुद ली और अल्लाह के फ़ज़्ल से हिदायत का यह नूर आज भी हमारे पास मौजूद है। हम सब उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं—

اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ۔

اَقُوْلُ قَوْلِیْ ھٰذَا وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الْعَظِیْم!

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु० अक़ूलु क़ौली हाज़ा व अस्तग़्फ़िरुल्लाहल अज़ीम०

---

# खुत्बा-ए-सानिया

الحمد لله الحمد لله الذى امر بذكره واشهد ان لا اله الا هو
مصفها بشكره واشهد ان سيدنا ومولانا محمدا عبده ورسوله الى
كافة الخلق صلى الله عليه وسلم وعلى اله واصحابه اللهم صل وسلم
على سيدنا محمد وعلى اله واصحابه خصوصا على اجل صاحب واسعد
رفيق الخليفة التام ابى بكر الصديق وعلى الامام الهمام امير المؤمنين
ابى حفص عمر الفاروق وعلى الشاكر الصابر امير المؤمنين عثمان ذى
النورين وعلى العالم النحرير امير المؤمنين ابى الحسن على بن ابى طالب
وعلى ريحانتى سيد الكونين ابى محمد الحسن وابى عبد الله الحسين
رضى الله عنهما وعلى امهما البتول الزهراء سيدة النساء وعلى الاسدين
المكرمين بين الناس حمزة والعباس والذين يكمل بهم عدد
العشرة المبشرين بالجنة رضوان الله عليهم اجمعين والازواج الطاهرات
واهل البيت المطهر وجميع الصاحب ومتبعيهم باحسان الى يوم
المحشر اللهم اغفر للمؤمنين والمؤمنات والمسلمين والمسلمات و
اصلح ذات بينهم والف بين قلوبهم واعز الاسلام وناصريه واذل
الشرك ومواليه وارحم الذين المرضى ومن حماه واخذل بقهرك
من خذله وعاداه واجعلنا من المؤتمرين بقولك ان الله يامر بالعدل
والاحسان وايتاء ذى القربى وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغى يعظكم
لعلكم تذكرون اذكروا الله العظيم يذكركم واشكروه نعمه
يزدكم ولذكر الله تعالى اعلى واولى واعز واجل واهم واتم واكبر.

अल-ह्म्दु लिल्लाहि अल-ह्म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अ-म-र बिज़िक्रिही व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला हु-व मुस्फ़िहन बिशुक्रिही व अश्हदु अन-न सय्यदना व मौलाना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू इला काफ़्फ़तिल ख़ल्क़ि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व अला आलिही व अस्हाबिही अल्लाहुम-म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना मुहम्मदिन-व अला आलिही व अस्हाबिही ख़ुसूसन अला अजल्लि साहिबिन-व अस-अदि रफ़ीक़िन अल-ख़लीफ़तित्तामी अबी बक्रि-नि-स्सिद्दीक़ि रज़ि० व अलल इमामिल हुमामि अमीरिल मोमिनीन-न अबी हफ़्सिन उ-म-रल फ़ारूक़ि व अलश्शाकिरिस्साबिरि अमीरिल मुअ्मिनीन उस्मा-न ज़िन्नूरैनि व अलल आलिमित्तह्रीरि अमीरिल मोमिनीन-न अबिल ह-स-नि अलीयिब्नि अबी तालिब रज़ि० व अला रैहानती सय्यिदिल कौनैनि अबी मुहम्मदि-नि ल-ह-स-नि व अबी अब्दिल्लाहिल हुसैनि रज़ियल्लाहु अन्हुमा व अला उम्मिहिमल बतूलिज़्ज़हराइ सय्यिदतिन्निसाइ व अलल अ-स-दैनिल मुकर्रमैनि बैनन्नासि हम-ज़-त वल अब्बासि वल्लज़ी-न यक्नलु बिहिम अ-द-दुल अ-श-र-तिल मुबश्शिरी-न बिलजन्नति रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अजमअीन वल अज़्वाजित्ताहिराति व अह्लिल बैतिल मुतह्हरि व जमीअिस्साहिबि व मुत्तबिअीहिम बि एह्सानिन इला यौमिल मह्शरि अल्लाहुम-मग़्फ़िर लिल मुअ्मिनी-न वल मुअ्मिनाति वल मुस्लि-मी-न वल मुस्लिमाति व अस्लिह ज़ा-त बैनहुम व अल्लिफ़ बे-न क़ुलु बिहिम व अअिज़्ज़िल इस्ला-म व नासिरीहि व अज़िल्लिश्शिर-क व मवालीहि वहमिद्दी-नल मर्ज़ी-य व मन हमाहु वख़्ज़ुल बिक़ह्रि-क मन ख़-ज़-लहू व आदाहु वज-अल-ना मिनल मुअ्तमिरी-न बिक़ौलि-क इन्नल्ला-ह यअ्मुरु बिल अदलि वल एह्सानि व ईता इज़िल क़ुर्बा व यन्हा अनिल फ़ह्शाइ वल मुन्करि वल बग़्यि यअिज़ुकुम लअल्लकुम तज़क्करून उज़्कुरुल्ला-हल अज़ीम यज़्कुरुकुम वश्कुरूहु निअ्मह्रू यज़िद कुम व-ल-ज़िक्रुल्लाहि तआला अअ्ला व औला व अअज़्ज़ु व अजल्लु व अहम्मु व अतम्मु व अक्बरु०

# ईदुल अज़्हा का ख़ुत्बा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا، اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا، سُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا۔ سُبْحَانَ
ذِى الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ۔ سُبْحَانَ ذِى الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ
وَالْجَبَرُوْتِ۔ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَنَامُ وَلَا يَمُوْتُ۔ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ۔
رَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ
اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ اَكْرَمُ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ۔ سَيِّدُ الْمُرْسَلِيْنَ وَخَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ
اُرْسِلَ بَيْنَ يَدَىِ السَّاعَةِ۔ اِلَى النَّاسِ كَافَّةً۔ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا وَّدَاعِيًا
اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا۔ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا۔ وَابْعَثْهُ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا۔ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔ وَلِكُلِّ
اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ۔
فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗ اَسْلِمُوْا وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ۔ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ
قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَا اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ

अल-हम्दु लिल्लाहि कसीरन अल्लाहु अक्बरु कबीरन सुब्हानल्लाहि बुक्रतंव-व असीला सुब्हा-न ज़िल्मुल्कि वल म-ल-कूति सुब्हा-न ज़िल अिज़्ज़ति वल हैबति वल क़ुदरति वल किब्रियाइ वल ज-ब-रूति सुब्हानल मलिकिल हय्यिल्लज़ी ला यनामु व ला यमूतु सुब्बूहुन क़ुद्दूसुन रब्बुल मलाइकति वर्रूहि अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु अश्हदु अल्लाइला-ह इल्ला हु-व वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अक्रमुल अव्वली-न वल आख़िरीन सय्यिदुल मुर्सली-न व ख़ात-मन्नबीयी-न उर्सि-ल बै-न य-द-यिस्साअति इलन्नासि काफ़्फ़तन शाहिदंव-व व मुबश्शिरंव-व नज़ीरंव-व दाअियन इलल्लाहि बिइज़्निही व सिराजम

मुनीरा० अल्लाहुम-म सल्लि अलैहि व सल्लिम तस्लीमा० वब अस्हु योमल क़ियामति मक़ामम्महमूदा अम्मा बअ्दु फ़ऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शै-तानिर्रजीम व लिकुल्लि उम्मतिन जअल-ना मन्सकल्लि-यज़्कुरुस्मल्लाहि अला-मा र-ज़-क़हुम मिम बहीमतिल अन आमि फ़इलाहुकुम इलाहुंव-वाहिदुन फ़लहू अस्लिमू व बश्शिरिल मुख़्बिती नल्लज़ी-न इज़ा ज़ुकि-रल्लाहु वजिलत क़ुलूबुहुम वस्साबिरी-न अला मा असाबहुम वल मुक़ी-मिस्सलाति व मिम्मा रज़क़्नाहुम युन्फ़िक़ून०

मुसलमानो ! आज बड़ी बरकत और ख़ुशी का दिन है। इन्तिहाई शुक्र के लायक़ है वह ज़ात जिस ने फिर हमें यह दिन नसीब किया और जिस ने हमारे अमल की मोहलत को इस हद तक बढ़ाया। बड़ी बरकत वाली है वह ज़ात जिस ने ख़ाना काबा को मोहतरम बनाया और हमारे लिए उस की ज़ियारत को अपने क़रीब होने का ज़रिया ठहराया। कैसे ख़ुशनसीब हैं वे लोग जो आज के दिन इस मोहतरम घर की ज़ियारत और तवाफ़ की सादत हासिल कर रहे हैं, जिन की ज़ुबानों पर लब्बैक के नारे हैं, जो कभी मिना में हैं, तो कभी अरफ़ात में, कभी मुज़दलफ़ा में क़ियाम है, तो कभी फिर मिना में। कभी अल्लाह के हुज़ूर क़ुर्बानियां पेश कर रहे हैं तो कभी उस का हुक्म बजा लाने और उस के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत को ताज़ा करने के लिए जमरात पर कंकरियां मार रहे हैं, कभी ज़ौक़ व शौक़ के साथ तौहीद के इस मर्कज़ का तवाफ़ कर रहे हैं, जिसे उस ने अपने ख़लील हज़रत इब्राहीम और उन के बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के हाथों बनवाया और कभी ज़मज़म के उस चश्मे का पानी पी रहे हैं जो अब से हज़ारों वर्ष पहले इस सूखी घाटी में अल्लाह तआला की ख़ास क़ुदरत और रहमत से ज़ाहिर हुआ।

اللّٰہُ اَکْبَرُ اللّٰہُ اَکْبَرُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ اللّٰہُ اَکْبَرُ وَلِلّٰہِ الْحَمْد۔

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु०

बड़ी बुज़ुर्ग व बरतर है वह ज़ात, जिस के हाथ में आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। क़ुदरत और ग़लबा उसी के लिए है। पाक है वह ज़ात जो हमेशा से ज़िंदा है और जिसे फ़ना नहीं। हम सब उस की तारीफ़ करते हैं, सब उस का शुक्र बजा लाते हैं और उस की रहमतों के तलबगार हैं।

भाइयो ! आज ईद का दिन है। हम सब ख़ुशी के साथ अल्लाह के हुज़ूर शुक्र अदा करने के लिए जमा हुए। इसी शुक्राने में हम ने दो रक्अत नमाज़ अदा की। बार-बार उसकी बड़ाई बयान की। हमारी इसी ख़ुशी का ताल्लुक़ हज और क़ुर्बानी से है। हमारे लाखों भाइयों ने इस मौक़े पर बैतुल्लाह का हज किया। अल्लाह तआला के हुज़ूर अपनी मुहब्बत और अक़ीदत का सबूत पेश किया। उस की ख़ुशी के लिए तरह-तरह की तक्लीफ़ें उठायीं और अपनी हर अदा और हर हरकत से यही साबित करने की कोशिश की कि वे अपने आक़ा और मालिक के इशारों पर किस तरह अपने आराम, अपने माल, और अपनी ख़्वाहिशों की क़ुर्बानी के लिए तैयार हैं। बन्दे के लिए इससे बड़ी ख़ुशी और क्या हो सकती है कि वह अपने आक़ा और मालिक का हुक्म बजा लाए, वह उसे ख़ुश कर सके। ग़ुलाम के लिए तो आक़ा की ख़ुशी ही सब से बड़ी दौलत है, लेकिन हज की सआदत तो उन लोगों के हिस्से में आयी जो इस सफ़र पर जा सके। हम दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला उन्हें क़ुबूलियत से नवाज़े और हमारे लिए भी इस सआदत से हिस्सा पाने की शक्लें पैदा फ़रमाए। हम बेशक हज की सआदत तो न पा सके, लेकिन इस का यह मतलब नहीं है कि हमारे हिस्से में सिर्फ़ महरूमी ही है। अल्लाह तआला का बड़ा फ़ज़्ल है कि उस ने क़ुर्बानी और नमाज़ को हमारे लिए क़ुर्ब हासिल करने का ज़रिया बनाया और जो लोग क़ुर्बानी की ताक़त भी न रखते हों, उन के लिए ईद की नमाज़ और तक्बीर और तस्बीह को अपना क़ुर्ब हासिल करने का ज़रिया बनाया। उस के हुज़ूर तो बन्दे का ख़ुलूस सब से ज़्यादा क़ीमती चीज़ है, चाहे यह हज और क़ुर्बानी की शक्ल में हो या नमाज़ और तस्बीह की शक्ल में।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु०

हम में से कौन ऐसा होगा, जिस ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नाम न सुना हो। यह भी आप जानते हैं कि हज़रत इब्राहीम अलैहि-स्सलाम को ख़लीलुल्लाह कहा जाता है यानी अल्लाह का दोस्त। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी पूरी ज़िंदगी से इस बात का सबूत दिया कि उन्हें अल्लाह की मर्ज़ी और उस की ख़ुशी से ज़्यादा कोई चीज़ प्यारी

नहीं थी। इस ख़ुशी के हासिल करने के लिए आप ने अपना वतन छोड़ा, फ़रमाया—

"إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ"

इन्नी ज़ाहिबुन इला रब्बी सयह्दीन०

'मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ जा रहा हूं।'

यानी मैं उस माहौल में सांस नहीं ले सकता, जहां मुझे अपने रब की मर्ज़ी पूरी करने का मौक़ा हासिल न हो। मैं इधर-उधर चला जाऊंगा जहां उस के हुक्मों के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार सकूं और मुझे यक़ीन है कि इस बारे में वही मेरी रहनुमाई फ़रमाएगा। मैं उस के लिए वतन छोड़ता हूं, वही मुझ पर अपनी राह खोलेगा।

अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करना आसान काम नहीं। मोमिन इस मक़्सद के लिए साथी ढूंढता है, चाहता है कि दूसरे उस का हाथ बटाएं। औलाद से ज़्यादा हाथ बटाने वाला और कौन हो सकता है। मोमिन औलाद की तमन्ना इसी लिए करता है कि वह अल्लाह का कलिमा बुलन्द करने में उस का हाथ बटाए। हज़रत ने दुआ की—

रब्बि हब ली मिनस्सालिहीन०　　رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ

'ऐ परवरदिगार! तू मुझे नेक औलाद अता फ़रमा।'

ताकि मैं उस को साथ ले कर तेरी राह पर चलूं और लोगों के लिए हक़ और हिदायत की राह हमारे हाथों खुले। यह एक बेहतरीन दुआ थी, बेहतरीन मक़्सद के लिए। इर्शाद हुआ—

फ़बश्शर्नाहु बिग़ुलामिन हलीम०　　فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ

'तो हमने इस को एक हलीम लड़के के जन्म की ख़ुशख़बरी दी।'

चुनांचे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَا بُنَيَّ إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانظُرْ مَاذَا تَرَىٰ۔

फ़ लम्मा ब-ल-ग़ म-अ-हुस्सअ्-य क़ा-ल या बुनय-य इन्नी अरा फ़िल मनामि अन्नी अज़बहु-क फ़ंज़ुर मा ज़ा तरा०

हज़रत इस्माईल अलै० होशियार हो गए। आप के मिशन में हाथ बटाने लगे, आप की दौड़-धूप में शिर्कत करने लगे। उस वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम एक और कड़ी आज़माइश से गुज़ारे गए। हज़रत इस्माईल से फ़रमाने लगे, 'बेटा! मैंने सपने में यों देखा कि तुम को

अल्लाह की राह में क़ुर्बान कर रहा हूं, तो बताओ तुम्हारी राय क्या है ?' अब यह इम्तिहान दोनों का हो गया। बाप के सामने यह सवाल कि वह अपने बुढ़ापे की दुआओं के नतीजे को अल्लाह का इशारा पाते ही अपने हाथों उस के लिए क़ुर्बान कर दे और बेटे का यह इम्तिहान कि वह अपनी जान अल्लाह की मर्ज़ी की ख़ातिर क़ुर्बान करने के लिए ख़ुशी-ख़ुशी तैयार हो जाए।

قَالَ يَا أَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ-

क़ा-ल या अ-बतिफ़-अल मा तुअ्मर स-त-जिदुनी इन शाअल्लाहु मिनस्साबिरीन०

नेक बेटे ने जवाब दिया, अब्बा जान ! आप को जो हुक्म मिला है उसे पूरा कीजिए। अल्लाह ने चाहा तो आप मुझ को साबित क़दम लोगों में पाएंगे। बन्दे की यही हैसियत है। मालिक की मर्ज़ी के सामने किसी चीज़ की अहमियत नहीं, न जान की, न माल की और न औलाद की, बाप तैयार हो गया कि अपने चहेते बेटे को, जो उसे दुनिया में सब से ज़्यादा प्यारा था, क़ुर्बान कर दे और बंदा तैयार हो गया कि अल्लाह की मर्ज़ी के लिए ख़ुशी-ख़ुशी अपने गले पर छुरी फिरवाए।

فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ-

फ़लम्मा अस्लमा व तल्लहू लिल जबीन० (जब दोनों अल्लाह के हुक्म के सामने झुक गए और बाप ने बेटे को माथे के बल गिरा दिया।) तो यह साबित हो गया कि दोनों अपनी इताअत और फ़रमांबरदारी में पूरे थे। दोनों सच्चे मुस्लिम थे और यही देखना था, इसी का इम्तिहान था।

وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ- قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ-

व नादैनाहु अंय्या इब्राही-म क़द सद्दक़्तर्रुअ्या इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल मुह्सिनीन इन-न हाज़ा ल हुवल बलाउल मुबीन०

'चुनांचे हम ने उस को पुकारा, ऐ इब्राहीम ! तुम ने ख़्वाब को सच कर दिखाया। बेशक हम भले लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक खुली हुई जांच यही है।'

दोनों इम्तिहान में कामियाब हो गये। दोनों ने वह कर दिखाया जो चाहा जा रहा था।

وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ

व फ़दैनाहु बिज़िब्हिन अज़ीम०

'और हम ने उस को एक बड़ी क़ुर्बानी के बदले छुड़ा लिया।'

अल्लाह ने इसी क़ुर्बानी की यादगार में क़ुर्बानी की पूरी दुनिया के लिए एक शानदार सुन्नत कर दी।

यह है इब्राहीम अलैहिस्सलाम की एक कहानी, जिसे अल्लाह तआला ने हमारे लिए अपनी आख़िरी किताब में महफ़ूज़ कर दिया है। क़ियामत तक इससे यह हक़ीक़त सामने आती रहेगी कि इस्लाम की असल रूह क्या है। ख़ुदा की इताअत के मुक़ाबले में बन्दा किसी चीज़ को बचा कर नहीं रख सकता और जब तक यह जज़्बा मौजूद न हो, ईमान और इख़्लास की तक्मील नहीं हो सकती।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ-

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु०

आज ईद का दिन है, जो इस कहानी की यादगार मनाने का दिन है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस यादगार को मनाने के लिए जानवरों की क़ुर्बानी का तरीक़ा हमें सिखाया। यह क़ुर्बानी हमारे इस्लाम की एक अहम निशानी है, हमारी इताअत और फ़रमांबरदारी का एक सबूत है। यह इताअत व फ़रमांबरदारी के एक शानदार वाक़िए की यादगार है। ईमान वाले जब अल्लाह की राह में अपनी क़ुर्बानियां पेश करते हैं, तो गोया वे अपने अमल से इस बात का इक़रार करते हैं कि अल्लाह की राह में हम अपनी जानें क़ुर्बान कर के इताअत और बन्दगी का सबूत जुटाने के लिए तैयार रहें। अल्लाह की मर्ज़ी के मुक़ाबले में हमें कोई चीज़ प्यारी नहीं, न अपनी जान, न अपना माल और न अपनी औलाद।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ-

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु०

भाइयो! यह क़ुर्बानी अगर ख़ुलूसे नीयत के साथ की जाए, तो आज के दिन अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करने का सब से बड़ा ज़रिया है।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है—

مَا عَمِلَ ابْنُ آدَمَ يَوْمَ النَّحْرِ أَفْضَلَ مِنْ إِهْرَاقِهِ دَمًا وَإِنَّهَا لَتَأْتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِقُرُونِهَا وَأَشْعَارِهَا وَأَظْلَافِهَا وَإِنَّ الدَّمَ لَيَقَعُ عِنْدَ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ بِمَكَانٍ قَبْلَ أَنْ يَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ

मा अमि-लब्नु आ-द-म यौमन्नह्रि अफ़्ज़-ल मिन इह्राक़िही दमन व इन्नहा ल-ताती यौमल क़ियामति बिक़ुरूनिहा व अशआरिहा व अज़्ला-फ़िहा व इन्नद्-म ल-य-क़अु अिन्दल्लाहि अज़्-ज़ व जल-ल बिमकानिन कब-ल अंय्य-क़-अ अलल अर्ज़ि०

'क़ुर्बानी के दिन इन्सान का कोई अमल इससे ज्यादा अफ़्ज़ल नहीं है कि वह अल्लाह की राह में जानवरों की क़ुर्बानी पेश कर के उन का खून बहाए और यह कि क़ुर्बानी के जानवर क़ियामत के दिन अपने सींगों, बालों और खुरों के साथ सही-सालिम हालत में आएंगे और यह कि क़ुर्बानी का खून ज़मीन पर गिरने से पहले अल्लाह तआला के यहां मक़्बूल हो जाता है।'

क़ुर्बानी हर उस शख्स के लिए ज़रूरी है, जिस के पास निसाब के जितना माल मौजूद हो। क़ुर्बानी के लिए ऊंट, गाय और भैंस में सात हिस्से हैं और बकरी, भेड़ और दुंबे में एक हिस्सा। क़ुर्बानी के लिए ऊंट पांच साल से कम न होना चाहिए और गाय और भैंस दो साल से, बकरी और भेड़ कम से कम एक साल की हो। अल-बत्ता दुम्बा या भेड़ छः महीने का भी हो सकता है, बस शर्त यह है कि वह ऐसा मोटा ताज़ा हो कि देखने में साल भर का मालूम होता हो। इन सब जानवरों के नर और मादा दोनों की क़ुर्बानी हो सकती है, लेकिन ऐबदार जानवर, जैसे अंधा, काना, लंगड़ा, इन्तिहाई दुबला और मरीज़ की क़ुर्बानी ठीक नहीं, क़ुर्बानी का जानवर चुनते वक़्त उस से मुताल्लिक़ मस्अले सामने रहना चाहिएं।

क़ुर्बानी का वक़्त ईद की नमाज़ के बाद से १२ ज़िलहिज्जा को सूरज छिपने से पहले-पहले तक है। क़ुर्बानी दिन में करना चाहिए, हां, कोई मजबूरी हो तो बात दूसरी है। क़ुर्बानी करने का सही तरीक़ा यह है कि वह शख्स, जिस की तरफ़ से क़ुर्बानी पेश हो, खुद अपने हाथ से ज़िब्ह करे। अल-बत्ता अगर किसी मजबूरी की वजह से ऐसा न कर सके तो अपने सामने दूसरे से ज़िब्ह कराए। ज़मीन पर पछाड़ते वक़्त जानवर

का मुंह क़िब्ले की तरफ़ रहे और क़ुर्बानी से पहले यह दुआ पढ़ी जाए—

إِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ - إِنَّ
صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ أُمِرْتُ
وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ - اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ - بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ أَكْبَرُ

इन्नी वज्जह्‌तु वज्हि-य लिल्लज़ी फ़-त-रस्समावाति वल-अर-ज़ हनीफ़ंव-व मा अना मिनल मुश्रिकीन इन-न सलाती व नुसुकी व मह्‌या-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन ला शरी-क लहू व बिज़ालि-क उमिर्तु व अना मिनल मुस्लिमीन॰ अल्लाहुम-म मिन-क व ल-क॰ फिर बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर कह कर ज़िब्ह करे। यह दुआ असल में क़ुर्बानी की असल रूह है, बल्कि यों कहिए कि मोमिन की ज़िंदगी की असल रूह है। आप कहते हैं कि मैंने हर तरफ़ से मुंह मोड़ कर अपना रुख उस ज़ात की तरफ़ कर लिया, जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है और मैं उन लोगों में से नहीं हूं, जो उस के साथ दूसरों को शरीक ठह-राते हैं। यह कैसा बड़ा एलान है! अगर सोच-समझ कर एलान किया जाए, तो फिर इसके बाद इसकी गुंजाइश ही क्या रह जाती है कि इन्सान अल्लाह से हट कर किसी राह पर चले और उससे मुंह मोड़ कर ज़िंदगी का कोई रुख तै करे। फिर आप कहते हैं कि मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना सब कुछ अल्लाह के लिए हैं, जो सारी दुनिया का पालनहार है। इख़्लास का एलान इस से बढ़ कर और क्या होगा? इसके बाद यह कैसे मुम्किन है कि आप की ज़िंदगी में किसी तरह भी दो रुख़ापन बाक़ी रह जाए। आप में तो सर से पैर तक इख़्लास ही इख़्लास होना चाहिए। इस इक़रार के बाद यह कैसे मुम्किन है कि आप ज़िंदगी का कोई काम अल्लाह के अलावा किसी और के लिए करें। आप तो इक़रार कर चुके कि मेरी ज़िंदगी का यही मर्कज़ है और वह है रब्बुल आलमीन (पूरी कायनात का रब!) की ख़ुशी, फिर आप एक हक़ीक़त का एलान करते हैं कि ऐ अल्लाह! यह जो कुछ भी तेरी ख़ुशी के लिए पेश कर रहा हूं, यह तेरा ही दिया हुआ तो है और तेरे ही लिए पेश है। आजिज़ी और सुपुर्दगी की यह कैसी ऊंची तस्वीर है। आप जो कुछ कर रहे हैं, इस इक़रार और एहसास के साथ कर रहे हैं कि मैं और मेरा सब कुछ अल्लाह ही का है और उसी के लिए है और ज़ाहिर है कि इसे उसी के

लिए होना ही चाहिए।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु०

आप ने क़ुर्बानी पेश कर दी। यह माल की क़ुर्बानी भी है और जान की भी। अब आप फिर अपने मालिक से अर्ज़ करते हैं—

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّيْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ وَّ خَلِيْلِكَ اِبْرَاهِيْمَ۔

अल्लाहुम-म तक़ब्बल मिन्नी क-मा तक़ब्बल-त मिन हबी-बि-क मुहम्मदिंव-व ख़लीलि-क इब्राहीम०

'ऐ अल्लाह ! तू इसे मेरी तरफ़ से क़ुबूल फ़रमा ले जैसा कि तू ने अपने हबीब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ुर्बानी को क़ुबूल फ़रमाया और अपने ख़लील इब्राहीम अलैहिस्सलाम की क़ुर्बानी को क़ुबूल फ़रमाया।'

यह दुआ भी है और इस बात का एलान भी कि आप ने जो कुछ किया वह कोई ऐसी बात नहीं है, जिसे आप ने अपने दिल से तै कर लिया हो, बल्कि यह यादगार है उस बड़ी क़ुर्बानी की जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पेश फ़रमायी और यह एक तरीक़ा है हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का, जिसे उम्मत के लिए ज़रूरी क़रार दिया गया है।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु०

भाइयो ! बड़े ख़ुश-नसीब हैं वे लोग, जो ज़िंदगी की मोहलत में अल्लाह की रिज़ा हासिल करने का एहतिमाम करें। अल्लाह तआला ने हर उस शख़्स पर हज फ़र्ज़ किया है जो उस के ख़र्च सह सके। हम में से अगर कोई शख़्स ताक़त के बावजूद इस भले काम से महरूम है, तो उसे तुरन्त फ़िक्र करनी चाहिए। अल्लाह ही बेहतर जानता है कि किस की ज़िंदगी की कितनी मोहलत बाक़ी है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसी लिए नेकी के कामों को जल्द से जल्द करने की ताकीद

फ़रमायी है। ऐसे लोगों को यह फ़ैसला कर लेना चाहिए कि वे जल्द से जल्द इस फ़र्ज़ को अदा करें। दुनिया और उस की उलझनें तो कभी कम होने वाली नहीं। पक्के इरादे की ज़रूरत है, सारी मुश्किलें आसान हो जाती हैं। इस के बाद वे लोग हैं, जिन्हें अल्लाह तआला ने इतना माल दिया है कि उन्हें क़ुर्बानी करना चाहिए। ऐसे लोगों को भी इस सआदत से महरूम न रहना चाहिए। माल और दौलत का बेहतरीन इस्तेमाल सिर्फ़ यही है कि वह अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करने के लिए ख़र्च हो। यों दुनिया की ज़रूरत की हद कब किसी ने क़ायम की है।

भाइयो! ये दिन अल्लाह तआला की तक्बीर और तस्बीह के लिए ख़ास तौर पर अहम हैं। आप ने ज़िलहिज्जा की सुबह से हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तक्बीरों के पढ़ने का एहतिमाम किया है। उसे पूरी चेतना के साथ हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद १३ ज़िलहिज्जा की अस्र तक पढ़िए और हर बार इस ख़्याल को ताज़ा करते रहिए कि आप ने सोच-समझ कर यह इक़रार कर लिया है कि अल्लाह सब से बड़ा है। अब उस की बड़ाई के मुक़ाबले में किसी दूसरे की बड़ाई आप के दिल में बैठने न पाए। आप ने उसी को अपना इलाह माना है, फिर यह कैसे हो सकता है कि आप किसी दूसरे के अल्लाह मानने का कोई असर क़ुबूल करें और किसी दूसरे को इस क़ाबिल समझें कि वह भी किसी दर्जे में बन्दगी का हक़दार है। सारी तारीफ़ें उसी के लिए हैं और शुक्र का हक़दार सिर्फ़ उसी की ज़ात है—

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاهْدِنَا وَارْزُقْنَا وَعَافِنَا اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ مُصِيْبَتَنَا فِيْ دِيْنِنَا وَلَا تَجْعَلِ الدُّنْيَا اَكْبَرَ هَمِّنَا وَلَا مَبْلَغَ عِلْمِنَا وَلَا تُسَلِّطْ عَلَيْنَا مَنْ لَّا يَرْحَمُنَا۔ اَنْتَ وَلِيُّنَا وَمَوْلَانَا بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔ وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु अल्लाहुम-मग़्फ़िर लना वर्हमना वह्दिना वर्ज़ुक़ना व आफ़िना अल्लाहुम-म ला तज-अल मुसीब-त-ना फ़ी दीनिना व ला तज अलिद्दुन्या अक्ब-र हम्मिना व ला मब-ल-ग़ अिल्मिना व ला तुसल्लित अलैना मल्ला यर्हमना अन-त वलीयुना व मौलाना बिरह-मति-क या अर्हमर्राहिमीन व आख़िरु दअ-वाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०

# निकाह का ख़ुत्बा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ـ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا
وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَا هَادِىَ لَهٗ ـ
وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ ـ

اَمَّا بَعْدُ ـ يٰاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ
وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ط وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ
بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ـ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ـ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ
تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ـ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا
سَدِيْدًا ـ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ـ

وَقَالَ النَّبِىُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ـ اَلنِّكَاحُ مِنْ سُنَّتِىْ فَمَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِىْ
فَلَيْسَ مِنِّىْ اَوْ كَمَا قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ـ

अल हम्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तअ़ीनुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नअ़ूज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना व मिन सय्यिआति अअ़मालिना मंय्यह्दि ल्लाहु फ़ला मुज़िल-ल लहू व मंय्युज़्लिल फ़ला हादि-य लहू व अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दु-हू व रसूलुहू०

अम्मा बअ़्दु या ऐयुहन्ना सुत्तक़ू रब्बकुमुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम मिन नफ़्सिव वाहिदतिंव-व ख़-ल-क़ मिन्हा ज़ौजहा व बस-स मिन्हुमा रिजालन कसीरंव-व निसाअन वत्तक़ुल्ला-हल्लज़ी तसाअलून बिही वल अर्हामि इन्नल्ला-ह का-न अलैकुम रक़ीबा या ऐयुहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह हक़्-क़ तुक़ातिही व ला तमूतुन-न इल्ला व अन्तुम मुस्लिमून या ऐयुहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व क़ूलू क़ौलन सदीदा युस्लिह लकुम अअ़मालकुम व

यग़्फ़िर लकुम ज़ुनूबकुम वमंय्युतिअिल्ला-ह व रसूल हू फ़क़द फ़ा-ज़ फ़ौज़न अज़ीमा०

व क़ालन्नबीयु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अन्निकाहु मिन सुन्नती फ़मन रग़ि-ब अन सुन्नती फ़-लै-स मिन्नी औ कमा क़ा-ल रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम०

बुज़ुर्गो और भाइयो ! अभी जो ख़ुत्बा मैं ने आप के सामने अरबी में पढ़ा। क़रीब-क़रीब यही ख़ुत्बा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निकाह के मौक़े पर दिया करते थे। आज भी हमारे यहां लगभग हर निकाह में यही ख़ुत्बा पढ़ा जाता है और आप में से बहुत-से लोगों को यह ख़ुत्बा याद भी होगा।

लेकिन जिस तरह हमारी पूरी ज़िंदगी से इस्लाम की रूह कम होते होते अब हमारा समाज लगभग बे-जान-सा हो कर रह गया है, इसी तरह इस एतबार से हमारी निकाह की महफ़िलें भी इस्लामी रूह से ख़ाली हो गयी हैं। आप सभी जानते हैं कि इस्लाम इन्सान की पूरी ज़िंदगी को उस रंग में ढालना चाहता है, जो अल्लाह तआला को पसन्द है। ज़िंदगी का यही रंग इंसान की सच्ची कामियाबी दिलाता है, इस ज़िंदगी में भी और इस के बाद आने वाली और हमेशा रहने वाली ज़िंदगी में भी। यही वजह है कि एक तरफ़ तो इस्लाम किसी तरह यह गवारा नहीं करता कि मुसलमान किसी वक़्त भी ऐसी ग़फ़लत में पड़ जाएं कि उसे अपनी हैसियत और अपनी याद न रहे, दूसरी तरफ़ वह हर उस मौक़े से फ़ायदा उठाना चाहता है, जब लोग जमा हों और इस का ख़तरा हो कि शैतान उन के दर्मियान दख़ल पा कर उन्हें उन की जगह से हटा दे। ऐसा ही मौक़ा यह निकाह की महफ़िल भी है, इस मज्लिस में मुसलमान जमा हो जाते हैं और आम तौर से ज़ेहनों पर एक ऐसी कैफ़ियत छा जाती है कि इस कैफ़ियत में शैतान को अपना काम करने का ज़्यादा मौक़ा मिल जाता है। प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर जिस तरह ख़ुत्बा पढ़ने की हमें तालीम दी है, वह हमारे लिए एक बड़ी नेमत है और इस में हमारे लिए अनगिनत ख़ैर व बरकत के पहलू हैं। ऐसे पहलू हैं, जिन से हमारी दुनिया भी बनती है और आख़िरत भी।

भाइयो ! अफ़सोस यह है कि हमारी कम इल्मी और बे-तवज्जोही की वजह से सारी बातें जो आम तौर पर निकाह के ख़ुत्बे की शक्ल में हमें सुनायी जाती हैं, हमारे लिए सिवाए बरकत भरे लफ़्ज़ों के और कुछ नहीं

रह गयी हैं, बस रस्म के तौर पर ये लफ़्ज़ पढ़ लिए जाते हैं और समझा जाता है कि मक़्सद पूरा हो गया।

आज इस महफ़िल में मैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ुत्बे के कुछ पहलू आप के सामने रख रहा हूं। मुझे उम्मीद है कि ये हमारे ईमान की ताज़गी और हमारी ज़िंदगियों के सुधार के लिए इन्शा-अल्लाहु फ़ायदेमंद साबित होंगे।

भाइयो ! ख़ुत्बे के शुरू के जुम्ले का तर्जुमा यह है कि शुक्र और तारीफ़ अल्लाह के लिए है। हम सब उस का शुक्र अदा करते हैं और उसी के गुन गाते हैं। अपने हर मामले में उसी से मदद मांगते हैं, उसी से अपने गुनाहों की माफ़ी चाहते हैं और अपने नफ़्स की शरारतों और अपने आमाल की बुराइयों के मुक़ाबले में हम अपने आप को उसी की पनाह में देते हैं। जिसको अल्लाह हिदायत दे (और वह उसी को हिदायत देता है, जो हिदा-यत हासिल करना चाहे) तो उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे वह गुमराह कर दे (और वह उसी को गुमराह करता है, जो ख़ुद गुमराह होना चाहता है) तो उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता।

यह है इस ख़ुत्बे के शुरू का हिस्सा। इस जुम्ले में मोमिन के सोचने का ढंग और उस की ज़िंदगी का रुख़ सब कुछ आ गया है। मोमिन की नज़र में शुक्र और तारीफ़ के लायक़ सिर्फ़ एक ज़ात है। मोमिन का ईमान है कि उसे जो कुछ मिलता है, उसी से मिलता है। ज़िंदगी की सारी नेमतें उसी की तरफ़ से हैं। उस के एहसान बे-इंतिहा हैं। इंसान की ताक़त नहीं कि वह उस की दी हुई नेमतों का ख़्याल भी कर सके। इंसान का काम सिर्फ़ यह है कि जहां तक हो सके, उस के एहसान को याद करे और हर वक़्त उस का शुक्र अदा करता रहे। शुक्र अदा करने के लिए ज़ुबान से तारीफ़ बयान करना और अपनी पूरी ज़िंदगी में इस एहसान करने वाले की पूरी-पूरी इताअत करना ज़रूरी है।

भाइयो ! हम सब का अक़ीदा है कि तमाम कायनात का असल करता-धरता सिर्फ़ अल्लाह तआला है, न सिर्फ़ इस कायनात के बनाने में कोई उस का शरीक है और न उस के इन्तिज़ाम में कोई उस का साझी, वह जो चाहता है, करता है, कोई उस के इरादे को टालने वाला नहीं। इसी लिए जगह-जगह हमको यह तालीम दी गयी है कि हम अपने हर काम में उसी से मदद मांगें और अपनी तमाम हाजतों के लिए सिर्फ़ उसी के आगे हाथ फैलाएं, देने वाला सिर्फ़ वही है, उस के अलावा जो कोई है, वह उस

का मुहताज है, हम सब गुनाहगार हैं, हम सब से खताएं होती रहती हैं। हमारा काम यह है कि उस से अपने क़ुसूरों की माफ़ी चाहें, वह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है, वह हर उस खतावार को माफ़ फ़रमा देता है, जो सच्चे दिल से अपनी ग़लतियों को तस्लीम करे, उन पर शर्मिंदा हो और आइन्दा उन से बचने का पूरा-पूरा इक़रार और इरादा करे। हर इन्सान के लिए हर वक़्त इसका इम्कान मौजूद है कि वह जब चाहे, अपनी ग़लत ज़िंदगी से पलट जाए और बुराइयों को छोड़ कर भलाइयां अपना ले। इसी का नाम तौबा है।

भाइयो ! हम सब को इस बात का एहसास है कि इंसान बड़ा कमज़ोर है, उस से बार-बार ग़लतियां हो जाती हैं, इस लिए हमें यह तालीम दी गयी है कि हम अपने नफ़्स की शरारतों और अपने आमाल की बुराइयों से बचने के लिए अल्लाह तआला से पनाह मांगें। बंदा जब उस की तरफ़ पलटता है और नेक राह पर चलने के लिए उस से मदद मांगता है तो वह ज़रूर उस की मदद फ़रमाता है। उस की मदद के बग़ैर कोई शख्स सीधे रास्ते पर चल नहीं सकता, लेकिन उस की मदद हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि हमारे अन्दर सच्ची ख्वाहिश हो और हम इस हद तक ज़रूर कोशिश भी करें, जहां तक हम कोशिश कर सकते हैं। ऐसे लोग कभी राह से नहीं भटकते—रहे वे लोग जो अपनी तरफ़ से कोशिश नहीं करते, बल्कि ग़लत रास्तों की तरफ़ क़दम बढ़ाते रहते हैं, उन्हें अल्लाह की तरफ़ से कोई मदद नहीं मिलती, वह रास्ते से भटक जाते हैं और फिर किसी के बस में नहीं रहता कि ऐसे लोगों को सीधे रास्ते पर ले आए।

अब खुत्बे के दूसरे जुम्ले का मतलब सुनिए। फ़रमाया, 'मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई और इलाह नहीं है और मैं इस बात की भी गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बंदे और रसूल हैं।'

बुज़ुर्गो ! हम सब जानते हैं कि यह जुम्ला तो हमारे ईमान की जड़ है। यही तो वह इक़रार है, जिसने हमें दुनिया के तमाम लोगों में नुमायां कर दिया है और यही तो वह कलिमा है, जिसने हम सब को आपस में जोड़ कर भाई-भाई बना दिया है। इसी कलिमे की बुनियाद पर तो अल्लाह के बंदे दो गिरोहों में बट जाते हैं। एक वे, जो उसे मानते हैं। ये सब आपस में मुसलमान भाई हैं और दूसरे वे जो उसे नहीं मानते। इस कलिमे में जिस सच्ची बात का इक़रार किया गया है, वह दुनिया की तमाम बातों में

सब से ज़्यादा सच्ची बात है।

इस में पहली बात तो यह कही गयी है कि यह दुनिया न तो बग़ैर बनाए यों ही आप से आप बन गयी है और न इसे दस-पांच ने मिल कर बनाया है, बल्कि इस का पैदा करने वाला एक अल्लाह है, वह अकेला है, वही सब का मालिक है, वही आक़ा है, तंहा वही इस लायक़ है कि इंसान उस के आगे सिर झुकाए, उसी को अपना माबूद जाने और अपनी हर ज़रूरत के लिए उसी की तरफ़ लपके।

दूसरी बात यह कही गयी है कि इस कायनात के मालिक की तरफ़ से तमाम इ सानों को उस की मर्ज़ी बताने और उस के हुक्मों से बा-खबर करने के लिए सब से आख़िर में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाए। वह अल्लाह के रसूल हैं, उस के बंदे हैं, सब बंदों से ज़्यादा अफ़्ज़ल और सारी मख़्लूक़ में सब से ज़्यादा बुलंद मर्तबा। हम सब आप को अल्लाह का रसूल मानते हैं। आप के हर क़ौल को इताअत के लायक़ जानते हैं और अपने दीन और दुनिया के आम मामले में आप के अलावा किसी की रहनुमाई और सरदारी क़ुबूल नहीं करते।

भाइयो ! हम सब इसी सच्ची बात के गवाह हैं और हर मौक़े पर हम यह याद कर लेते हैं कि दुनिया में वाक़ई हमारा मक़ाम क्या है। चुनांचे इस निकाह की महि्फ़ल में भी हम सब अपनी इस पोज़ीशन को याद कर लेते हैं और अपने ईमानों को ताज़ा कर लेते हैं।

खुत्बे के इस हिस्से के बाद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुरआन पाक की कुछ आयतें तिलावत फ़रमाते थे। उन में से एक सूरः निसा की पहली आयत है, जिस का तर्जुमा है, 'लोगो ! अपने रब की नाराज़ी से बचते रहना, जिसने तुम को एक जान से पैदा किया और उसी जान से उसका जोड़ा बनाया और इन दोनों के ज़रिए बहुत से मर्द व औरत दुनिया में फैला दिए और उस पालने वाले मालिक की नाराज़ी से बचने की पूरी-पूरी कोशिश करते रहना, जिस का वास्ता देकर तुम एक दूसरे से अपना हक़ मांगते हो और रिश्ते व क़राबत के ताल्लुक़ात को बिगाड़ने से परहेज़ करो। यक़ीन जानो अल्लाह तुम पर निगरानी कर रहा है।

भाइयो ! हम सब अच्छी तरह जानते हैं कि इंसान को सही मानों में इन्सान बनाने का इस के सिवा और कोई उपाय मुम्किन ही नहीं कि उस के दिल में यह ख़्याल बिठा दिया जाए कि उसे एक ऐसे मालिक और आक़ा की ख़ुशी हासिल करना है, जो उसका सब से बड़ा उपकारी है और

कोई ऐसा काम नहीं करना है, जो उस मालिक को नाखुश करने वाला हो। इसी का नाम तक़्वा है और यही तमाम नेकियों की बुनियाद है। तक़्वा के बग़ैर जो कुछ किया जाता है, अपने-अपने मतलब और स्वार्थ की बुनियाद पर किया जाता है और देर या सवेर इन कामों की क़लई खुल कर रहती है और आख़िरत में तो सिरे से किसी ऐसे काम का कोई बदला मुम्किन ही नहीं, जिस के पीछे अल्लाह की रिज़ा और उस की इताअत के अलावा कोई और जज़्बा काम कर रहा हो।

इस ज़मीन पर इन्सान ने अपनी ज़िंदगी कैसे शुरू की, इस सवाल के जवाब में बहुत-सी बातें कही गयी हैं, लेकिन जो हक़ीक़त अल्लाह तआला ने हमें बतायी है, वह यह है कि पहले अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से एक इंसान को पैदा किया। यह इंसान हज़रत आदम अलैहिस्सलाम थे। फिर अल्लाह तआला ने एक औरत हज़रत हव्वा को पैदा किया और फिर उस जोड़े से इंसानी नस्ल फैली। इस आयत में अल्लाह तआला इस हक़ीक़त का ज़िक्र फ़रमा कर यह बात ज़ेहनों में बिठाना चाहता है कि तमाम इंसान असल के एतबार से एक हैं। सब एक दूसरे के इंसानी भाई और एक दूसरे का खून और गोश्त-पोस्त हैं। जब तक यह हक़ीक़त नज़रों के सामने न रहेगी, न इंसानों के आपसी ताल्लुक़ात ठीक हो सकते हैं और न एक दूसरे की वह हिफ़ाज़त हो सकती है जो समाज के सुधार और बनाव के लिए इन्तिहाई ज़रूरी है। इस आयत का आख़िरी टुकड़ा खुसूसियत से तवज्जोह के क़ाबिल है। फ़रमाया कि 'यक़ीन जानो कि अल्लाह तुम पर निगरानी कर रहा है।' यही एक ख़्याल है जो इंसान को हर हाल में सही रास्ते पर क़ायम रख सकता है। नफ़्स की शरारतों और हर क़िस्म के शैतानी फंदों से बचाने के लिए भी यही यक़ीन काम दे सकता है और हक़ की राह पर चलते हुए मुसीबतों और आज़माइशों को झेलने में भी इसी ख़्याल से ताक़त मिल सकती है।

दूसरी आयत, जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर मौक़े पर तिलावत फ़रमाते थे, उस का तर्जुमा यह है, 'ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह के ग़ज़ब से बचने की पूरी फ़िक्र रखना और मरते दम तक अल्लाह की फ़रमांबरदारी और वफ़ादारी पर क़ायम रहना।'

इस में भी तक़्वा पर क़ायम रहने की ताकीद की गयी है और ज़िंदगी के तमाम मरहलों में अल्लाह तआला की इताअत और फ़रमांबर-

दारी पर और आख़िर दम तक उस के वफ़ादार ग़ुलाम की-सी ज़िंदगी बसर करने पर ज़ोर दिया गया है। यही बात मुसलमानों की शान के मुताबिक़ है। अगर यही कैफ़ियत उस के अन्दर पैदा न हो तो फिर उस में और दूसरे कमाने और खाने वाले इ सानों में फ़र्क़ ही क्या रह जाता है? मुस्लिम की तो ख़ास बात ही यही है कि वह अल्लाह का वफ़ादार है और इसी वफ़ादारी के बदले में उसे आख़िरत में अल्लाह तआला की रहमतों की उम्मीद है।

आख़िरी दो आयतों का तर्जुमा यह है कि—

'ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह से डरते रहना और सही बात अपनी ज़ुबान से कहना, तो अल्लाह तुम्हारे अमल को नेक बनाएगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा और जो लोग अल्लाह और रसूल की इताअत व फ़रमांबरदारी करेंगे, वे बड़ी कामियाबी पाएंगे।

भाइयो ! मोमिन की बुनियादी ख़ूबी यही है कि वह कभी कोई ग़लत बात मुंह से नहीं निकालता और अगर कभी ऐसी ग़लती हो जाए तो वह तुरन्त महसूस कर लेता है और तौबा करता है। जो लोग इस तरह अपनी ज़ुबान की हिफ़ाज़त करने में कामियाब हो जाते हैं, उनके दूसरे अमल भी दुरुस्त हो जाते हैं और सही बात मुंह से निकालने वाले की ज़िंदगी आम तौर पर ठीक ही हो जाती है। ऐसे शख़्स से अगर इत्तिफ़ाक़ से कुछ ग़लतियां हो भी जाएं, तो तौबा करने पर अल्लाह तआला उन्हें माफ़ फ़रमा देता है। इस्लामी ज़िंदगी गुज़ारने के लिए हर मोमिन को यह बुनियादी बात अपने सामने रखना चाहिए कि असल कामियाबी आख़िरत की कामियाबी है और वह किसी तरह हासिल नहीं हो सकती, जब तक ज़िंदगी के तमाम कामों में अल्लाह और उस के रसूल की इताअत न की जाए। इस के नतीजे में अल्लाह तआला मोमिन को दुनिया में भी सुकून और इत्मीनान अता फ़रमाता है और इसी से आख़िरत भी कामियाब होती है।

ख़ुत्बे के आख़िर में एक हदीस भी पेश की गयी है, जिस का तर्जुमा है कि 'अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि निकाह करना मेरी एक सुन्नत है, तो जो कोई मेरे इस तरीक़े को ना-पसन्द करता है, उस का मुझ से कोई ताल्लुक़ नहीं। यह हदीस इस बात को साफ़ कर देती है कि इस्लाम की नज़र में बे-निकाह रहना पसंदीदा नहीं, चाहे इस तरह अकेली ज़िंदगी बसर करना उनकी नज़र में कोई नेकी का काम

हो, जैसे कि बहुत से सन्यासी और पादरी सोचते हैं, या वे इस लिए निकाह से बचते हों कि खामखाह की ज़िम्मेदारी और झंझट कौन मोल ले या उन की नज़र में मुल्क को आबादी को महदूद रखने के लिए ऐसा करना कोई भला काम बन गया हो। इस्लाम लोगों को इधर-उधर भटकने और ग़लत रास्तों पर चलने से बचाने के लिए और समाज के अख़्लाक़ को बाक़ी रखने के लिए निकाह की ताकीद करता है और रोज़ी की तंगी के डर को यह बता कर बे-बुनियाद क़रार देता है कि असल रोज़ी देने वाला अल्लाह तआला है। वह तुम को भी खिलाता है और आने वाली नस्लों को भी खिलाएगा।

भाइयो! यह है थोड़े में मतलब उस ख़ुत्बे का जो निकाह के वक़्त पढ़ा जाता है। निकाह सिर्फ़ एक ख़ुशी का नाम नहीं है, बल्कि वह एक समझौता है जो एक मर्द और एक औरत के दर्मियान तै पाता है कि हम दोनों ज़िंदगी भर के साथी और मददगार बन गये। इस समझौते के वक़्त ख़ुदा और बंदे दोनों को गवाह बनाया जाता है और ख़ुत्बे में जो कुछ पढ़ा जाता है वह साफ़-साफ़ इस बात की तरफ़ इशारा करता है। अगर इस समझौते में शौहर या बीवी की तरफ़ से कोई ख़राबी पैदा हो गयी और उसे ठीक-ठीक न निभाया गया, तो यह बात अल्लाह तआला की ना-ख़ुशी की वजह होगी और इस का बुरा अंजाम आख़िरत की हमेशा रहने वाली ज़िंदगी में भुगतना पड़ेगा। आपने महसूस फ़रमाया होगा कि पूरे ख़ुत्बे में जिस बात पर सब से ज़्यादा ज़ोर दिया गया है, वह तक़्वा का एहतिमाम है। बार-बार ताकीद की गयी है कि लोगो! ऐसी बातों से बचो जो अल्लाह की नाराज़ी और ग़ुस्से की वजह होती है।

बुज़ुर्गो और भाइयो! हमें अल्लाह तआला से दुआ करनी चाहिए कि वह इस नए जोड़े के दर्मियान मुहब्बत और उल्फ़त पैदा करे। इन में से हर एक दूसरे के हक़ों का ख़्याल रखे और इन से जो नस्ल वजूद में आए, वह अल्लाह के रास्ते पर चलने वाली और उसके दीन को सर बुलंद करने वाली हो और हम सब को भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि हमारी ज़िंदगी की जो मोहलत बाक़ी है, वह उस की ख़ुशी हासिल करने में बीत जाए। अल्लाह तआला हमारी कोताहियों को माफ़ फ़रमाए और हमें मौत आए तो इस हाल में आए कि हम उस के फ़रमांबरदार और वफ़ादार की हैसियत से इस दुनिया से जाएं और सब उसके हुज़ूर सुर्ख़रूई हासिल करें।

وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ - وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ -

व आख़िरु दअ्‌वाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्स-लातु वस्सलामु अला सय्यिदिल मुर्सलीन मुहम्मदिंव-व अला आलिही व अस्हाबिही अजमईन०

# ख़ुत्बा सानी—१

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ - وَ
نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ
لَهٗ - وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ - وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ
لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ - اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى جَمِيْعِ الْاَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ - وَعَلٰى اَصْحَابِهِ السّٰبِقِيْنَ الْاَوَّلِيْنَ وَالَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ - خُصُوْصًا عَلَى الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ وَاٰلِهِ
الطَّاهِرِيْنَ - بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ - اَللّٰهُمَّ انْصُرْ مَنْ نَّصَرَ دِيْنَ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّاجْعَلْنَا مِنْهُمْ وَاخْذُلْ مَنْ خَذَلَ دِيْنَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّلَا تَجْعَلْنَا مِنْهُمْ
عِبَادَ اللّٰهِ - اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ - وَاذْكُرُوْهُ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ
لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ تَعَالٰى اَعْلٰى وَاَوْلٰى وَاَعَزُّ وَاَجَلُّ وَاَهَمُّ وَاَتَمُّ وَاَكْبَرُ -

अल-हम्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तअीनुहू व नस्तग़्फ़िरुहू व नुअ्-मिनु बिही व न-त-वक्कलु अलैहि व नअूज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना व मिन सय्यिआति अअ्‌मालिना मंय्यह्दिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल-ल लहू व मंय्युज़्लिलहु फ़ला हा दि-य लहू व नश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व नश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव-व अला जमीअिल अंबि-याइ वल मुर्सलीन अला अस्हाबिहिस्साबिक़ीनल अव्वलीन वल्लज़ी-

न स बअूहुम बिएह्सानिन इला यौमिद्दीन ख़ुसूसन अलल ख़ु-ल-फ़ाइर्रा-शिदीन व आलिहित्ताहिरीन बिरह्मति-क या अर्हमर्राहिमीन अल्ला-हुम्मन्सुर मन न-स-र दी-न सय्यिदिना मुहम्मदिंव-वज अलना मिन्हुम वख़्ज़ुल मन ख़-ज़-ल दी-न सय्यिदिना मुहम्मदिंव-व ला तजअलना मिन्हुम अिबादल्लाहि इन्नल्ला-ह यअ्मुरु बिल अद्लि वल इह्सानि व ईताई ज़िल क़ुर्बा व यन्हा अनिल फ़ह्शाइ वल मुन्करि वल बग़्यि यअि-ज़ुकुम लअ़ल्लकुल तज़क्करून वज़्क़ुरूहु यज़्कुरकुम वद अूहु यस्तजिब लकुम व ल-ज़िक्रुल्लाहि तआला अअ्ला व औला व अअज़्ज़ु व अजल्लु व अहम्मु व अतम्मु व अक्बरु०

# ख़ुत्बा सानी—२

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ اَشْرَفِ رُسُلِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ
صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ صَلّٰى وَصَامَ ـ وَصَلِّ عَلٰى
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ قَعَدَ وَقَامَ وَصَلِّ عَلٰى جَمِيْعِ
الْاَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَعَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ الْمُقَرَّبِيْنَ وَعَلٰى عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ خُصُوْصًا
عَلٰى خُلَفَائِهِ الرَّاشِدِيْنَ وَاٰلِهِ الطَّاهِرِيْنَ وَاَصْحَابِهِ الْمُكَرَّمِيْنَ وَعَلٰى مَنْ تَبِعَهُمْ
اَجْمَعِيْنَ ـ اَللّٰهُمَّ انْصُرْ مَنْ نَصَرَ دِيْنَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ ـ وَاخْذُلْ مَنْ خَذَلَهٗ ـ عِبَادَ اللّٰهِ
اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِى الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ـ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ
اللّٰهِ تَعَالٰى اَعْلٰى وَاَوْلٰى وَاَعَزُّ وَاَجَلُّ وَاَتَمُّ وَاَهَمُّ وَاَكْبَرُ ـ

अल-हम्दु लिल्लाहि वस्सलातु अला सय्यिदिना मुहम्मदिन अशरफ़ि रसूलिल्लाहि अल्लाहुम-म सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिंव-व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन बि अ-द दि मन सल्ला व साम व सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिंव-व अला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन बि अ-द-दि मन क़-अ-द व क़ा-म व सल्लि अला जमीअिल अम्बियाई वल मुर्स-ली-न व अलल मलाइकतिल मुक़र्रबीन व अला अिबादिकस्सालिहीन

ख़ुसूसन अला खु-ल-फ़ाइहिर्राशिदीन व आलिहि त्ताहिरीन व अस्हाबिहिल मुकर्रमीन व अला मन तबिअ हुम अजमईन अल्लाहुम-मन्सुर मन न-स-र दी-न सय्यिदिना मुहम्मदिन व रज़ुल मन ख-ज़-लहू अिबादल्लाहि इन्नल्ला-ह यअ्मुरु बिल अद्लि वल इह्सानि व ईताइ ज़िल क़ुर्बा व यन्हा अनिल फ़ह्शाइ वल मुन्करि वल बग़्यि यअिज़ुकुम ल अल्लकुल तज़क्करून वज़्कुरुल्ला-ह यज़्कुकुम वदअूहु यस्तजिब लकुम व ल-ज़िक्रुल्लाहि तआला अअला व औला व अअ़ज़्ज़ु व अजल्लु व अतम्मु व अहम्मु व अक्बरु०

## खुत्बा सानी-३

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ـ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ـ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ اَفْضَلَ صَلَوَاتِكَ عَدَدَ مَعْلُوْمَاتِكَ ـ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَاَوْلَادِهٖ وَاَحْفَادِهٖ اَجْمَعِيْنَ ـ خُصُوْصًا عَلٰى اَفْضَلِ النَّاسِ بَعْدَ النَّبِيِّيْنَ ـ اَبِىْ بَكْرِنِ الصِّدِّيْقِ وَعُمَرَ الْفَارُوْقِ وَعُثْمَانَ ذِى النُّوْرَيْنِ وَعَلِيِّ نِ الْمُرْتَضٰى وَالْحَسَنَيْنِ ـ وَعَلٰى سَيِّدَةِ النِّسَاءِ فَاطِمَةَ الزَّهْرَاءِ وَعَلٰى عَمَّيْهِ الْكَرِيْمَيْنِ ـ وَعَلٰى كُلِّ مَنِ اخْتَارَهُ اللّٰهُ بِصُحْبَةِ نَبِيِّهٖ بِالْاِيْمَانِ ـ عِبَادَ اللّٰهِ ـ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِى الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْىِ ـ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ـ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ تَعَالٰى اَعْلٰى وَاَوْلٰى وَاَعَزُّ وَاَجَلُّ وَاَهَمُّ وَاَتَمُّ وَاَكْبَرُ ـ

अलहम्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तअीनुहू व नश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व नश्हदु अन-न सय्यिदना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह अल्लाहुम-म सल्लि व सल्लिम अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिन अफ़्ज़-ल स-ल-वाति-क अ-द-द मअ्लूमाति-क व अला आलिही व अस्हाबिही व अज़्वा-जिही व औलादिही व अह्फ़ादिही अजमअीन० ख़ुसूसन अला अफ़्ज़लि-न्नासि बअदन्नबीयीन अबीबक्रि-निस्सिद्दीक़ि व उम-रल फ़ारुक़ि व उस्मान ज़िन्नूरैनि व अलीअि-निल-मुर्तज़ा वल ह-स-नैनि व अला सय्यिद

तिन्निसाइ फ़ातिमतज़्ज़हराइ व अला अम्मैहिल करीमैन व अला कुल्लि मनिख़्तारहुल्लाहु बिसुहबतिनबीयिही बिल ईमानि अिबादल्लाहि इन्नल्लाह यअ्मुरु बिल अद्लि वल इह्सानि व ईताइ ज़िल क़ुर्बा व यन्हा अनिल फ़ह्शाइ वल मुन्करि वल बग़्यि यअिज़ुकुम लअ़ल्लकुम तज़क्करून व ल ज़िक्रुल्लाहि तआ़ला अअ्ला व औला व अअ़ज़्ज़ु व अजल्लु व अहम्मु व अतम्मु व अक्बरु०

---

# क़ुरआन मजीद

## हिन्दी अनुवाद

- हर आयत का अनुवाद नम्बर डाल कर लिखा गया है।
- हर सूरत के आरम्भ में उसका परिचय दिया गया है
- छोटा साइज़ ताकि अपने पास रखने में आसानी रहे।

हदिया (मूल्य) 60/-

# क़ुरआन मजीद की विषय तालिका
## मुहम्मद अब्दुल हई

कुरआन में अलग-अलग विषयों पर कहाँ-कहाँ क्या कहा गया है कुरआन माजीद को समझने के लिये यह किताब बहुत उपयोगी है। मूल्य 15/-

# नबियों के हालात मुहम्मद अब्दुल हई

इस किताब में नबियों का संपूर्ण जीवन परिचय दर्शाया गया है। जिसमें नबियों के ऊपर गुज़री घटनाओं का विवरण किया गया है। मूल्य 12/-

# हज़रत मुहम्मद स० का जीवन परिचय
## मुहम्मद अब्दुल हई

हज़रत मुहम्मद स० का जन्म से आख़ीर तक का जीवन परिचय, हज़रत मुहम्मद स० के ऊपर घटने वाली घटनाओं का विस्तृत परिचय दिया गया है। मूल्य 10/-

## दीन की बातें

मुहम्मद अब्दुल हई

इस्लाम के पूर्ण परिचय के लिये एक अच्छी किताब।

मूल्य 20/-

## हदीस माला

हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की प्यारी बातें जिन में उनका सन्देश भी है। संक्षिप्त विवरण के साथ।

मूल्य 12/-

## आओ दीन सीखें

कम पढ़े लिखे लोगों के लिये दीन की बाते कहानी के रूप में।
मूल्य 20/-

## हज़रत मोहम्मद स० की पवित्र जीवनी तथा सन्देश

मुहम्मद अब्दुल हई

हज़रत मोहम्मद स० जो हज़ारों या करोड़ों के ही मार्ग दर्शक न थे बल्कि आप सम्पूर्ण मानवता के पथ-प्रदर्शन हेतु आये थे। आपके सन्देश और आन्दोलन ने एक आश्चर्य जनक महान क्रान्ति को जन्म दिया। यह पुस्तक एक महान पुरुष की जीवनी ही नहीं है बल्कि यह आपके लिये एक सन्देश भी है।

मूल्य 40/-

## दुआयें

कुरआन और हसीद से ली हुई छोटी-छोटी दुआऐं जो रोज़ाना काम आती है। पाकिट साइज़ में।

मूल्य 6/-

## इस्लाम की शिक्षा

मोहम्मद अब्दुल हुई साहब की लिखी हुई बहुत ही लोकप्रिय पुस्तक जिसमें लड़के और लड़कियों के लिये इस्लाम और नमाज़ रोज़े की भरपूर जानकारी है।

मूल्य 12/-

## इस्लामी इतिहास

इस किताब में इस्लामी इतिहास की ऐसी बड़ी घटनाएं जमा कर दी गयी हैं जो बहुत मशहूर हैं ज़िनका जानना बहुत मुफ़ीद और ज़रूरी है। मुसलमानों की हुकूमतें किस तरह टूटीं और फिर क़ायम हुईं यह सब बातें जानने के लिये किताब का पढ़ना बहुत ज़रूरी है।

मूल्य 12/-